Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

73

अ : 1/31

अष्टछापीय भक्तिसंगीत
[हवेली संगीत]

उद्भव और विकास

भाग-2

[खण्ड 3-4]

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

नय
सी-५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Rare
आर्य-ग्रन्थालय, भारतनिधि, करौंदी वाराणसी-5
प्रो. प्रेमलता शर्मा (निजी प्रति)

॥ श्रीहरिः ॥

अष्टछापीय भक्तिसंगीत

(हवेली-संगीत)

उद्‌भव और विकास

भाग—२ (खण्ड ३—४)

लेखक :

कीर्तनाचार्य

पं. चम्पकलाल छबीलदास नायक

B. Mus. (1st class), Bhatkhande University

निवृत्त प्रिन्सिपाल-भातखण्डे संगीत विद्यालय, अहमदाबाद

निवृत्त अध्यापक—एस. एल. यू. कोलेज फोर विमेन, अहमदाबाद

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में गुजरात सरकार की ओर से अनुदान मिला है। आभार

प्रकाशक :

चम्पकलाल छ. नायक
अष्टछाप संगीत कलाकेन्द्र
६०, नायकनगर
अहमदाबाद-३८० ०१४
(गुजरात)

मुद्रणव्यवस्थापक :
म. म., अध्या. के. का. शास्त्री,
विद्यावाचस्पति

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिवास, करौंदी
बाराबंकी-5

प्रथम मुद्रण :
प्रति १०००

वि. संवत् २०४१
ई. सन् १९८५

मूल्य : रु. [redacted]
६०-००

मुद्रक : श्री नवप्रभात प्रिन्टिंग प्रेस, घीकांटा रोड, नोवेल्टी टोकीज़, अमदावाद-३८० ००१

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्रीनाथजी

रूप देखि नेना पलक लागें नहीं ।
गोवरधनधरके अंग अंग प्रति,
दृष्टि परत मन रहत तहीं तहीं ॥

(गोविंदस्वामी)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

पूज्य गो. वा. माताजी रेवाबाई और
पूज्य गो. वा. पिताजी छबीलदासजी को

समर्पण

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

आमुख

"अष्टछापीय भक्तिसंगीत" भाग प्रथम का दर्शन गत वर्ष में हुआ ओर इसके दूसरे भाग के छपे हुए फर्मों का दर्शन अब हुआ। संगीताचार्य प.भ. श्रीचम्पकलालजी नायक का यह प्रयत्न न केवल शास्त्र तक मर्यादित है, अपितु वेद से लेकर पुष्टिमार्ग के प्रारम्भिक अष्टछाप महानुभाव भक्तवर्य कवियों ने कीर्तनगङ्गा का प्रबल प्रवाह बहाया वहां तक के समग्र भारतीय संगीत का इतिहास प्रस्तुत करता है। संगीत के इतिहास में यों श्रीनायकजी का प्रदान एक महत्त्वपूर्ण शोधग्रन्थ बन रहा है, जो अभिनन्दनीय है। रामपुर के नवाब के प्रयत्न से थाट-प्रद्धति का नया 'उत्तर हिन्दुस्तान का संगीत' व्यापक बना इस पूर्व १६ वीं शताब्दी में तो इन भक्तवर्यों ने हजारों पदों के रूप में पुष्टिमार्गीय संगीत को पुष्ट कर दिया था, जो प्रवाह आज तक स्वतन्त्र रूप से अबाधित चला आ रहा है। आनन्दाश्चर्य की बात तो यह है कि नये घरानों वाले अनेक उस्तादों ने अपने अपने घरानों में पसन्द की हुई चीजों में अष्टछाप कवियों के पद भी उपयोग में लिये हैं।

श्रीविट्ठलनाथजी गुसांईजी ने इन पदों का पुष्टिमार्गीय अष्ट समयों की सेवा में विनियोग शुरू किया तब से स्वतन्त्र रूप से पुष्टिमार्गीय मन्दिरों में नित्य के ऋतु-अनुसारी पद, वर्षोत्सव के पद एवं वसन्त धमार के पद गाये जाते हैं। उन पदों का गेय स्वरूप रागों और तालों की दृष्टिसे किस प्रकार का था यह जानने का इस पूर्व प्रयत्न हुआ है, तथापि ७२ जितने रागों के भी प्रत्येक के विभिन्न पद व्यवस्थित रेखांकन (notations) के रूप में तो, मेरी जानकारी में, यह प्रथम प्रयत्न है। इससे मन्दिरों में कीर्तन करने वाले गायकों को भी तालीम लेना सरल होगा। ख्याल में रखने जैसा है कि पुष्टिसम्प्रदायकी ७ पीठ एवं मुख्य नाथद्वारीय प्रधान पीठ के मन्दिरों में पांचसो वर्षों से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

...ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

गाने की चोकस प्रणाली चली आ रही है। इस प्रणाली को जानने की आकांक्षा हो तो श्रीचम्पकलालजी के इस ग्रन्थ के दूसरे भाग से पूर्ण होगी ऐसा मुझे अनुभव से कहने का प्राप्त होता है।

इस ग्रन्थ का दूसरा स्वरांकनलिपि वाला भाग यों पुष्टिमार्गीय संगीत का सप्रयोग पाठ्यपुस्तक वन गया है। थोड़े ही समय में ग्रन्थ पूर्ण होकर प्रकाशित होगा और तज्ज्ञों के हाथों में जायगा तभी श्रीचम्पकलालजी के प्रयत्न का खरा मूल्यांकन होगा।

इस ठोस प्रयत्न के लिए मैं श्रीनायकजी को साशीर्वाद फिर भी अभिनन्दन देकर सन्तोष लेता हूं।

नयी हवेली, (गो.) नटवरगोपाल
द्वारका–३६१ ३३० (ie. गो. श्रीनटवरगोपाल महाराज
दि. १–१–१९८५ of Dwarka)

नोंध : मुझे और श्रीचम्पकलालजी को वड़ा दुःख है कि पू.पा. महाराजश्री गोस्वामिकुलकौस्तुभ गो. श्रीनटवरगोपालजी महाराज आज अपने वीच नहीं हैं। इस 'आमुख' के लेखन से वरोबर २९ वे दिन उनका मोटर–ट्रक के अकस्मात में कुतियाना (जि. जूनागढ़–गुजरात राज्य) और जूनागढ़ के राजमार्ग पर सराड़िया स्टेशन नजदीक दूसरे दो सेवकों के साथ नित्यलीलावास हुआ। जिनमें अन्य दो साथ कनिष्ठतम भाई गो. श्रीशैलेशकुमार महाराजश्री बच गये।

हम इस दूसरे भाग को आपश्री के चरणों में परोक्ष रूप से अर्पण करके कृतार्थ होते हैं। हमारे बीच मौजूद होते तो उनकी भावना इस ग्रन्थ का विमोचन द्वारका में करने की थी। आज वह भावना निष्फल गई है। "तथैव तस्य लीला"।

नायकनगर–अमदाबाद केशवराम का. शास्त्री
(३८० ०१४) चम्पकलाल छ. नायक
दि. १९–३–१९८५

...रतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5
Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रास्ताविक

संगीत–कीर्तनाचार्य पं. चम्पकलालजी नायक के 'अष्टछापीय भक्ति-संगीत' के दूसरे भाग के प्रकाशनसमय यहाँ इनके गो. वा. पिताजी श्रीछबीलदास मोरारजी नायक के विषय में भी कुछ लिखना अभीष्ट मानता हूं, जिससे पितृदत्त वारसे का भी कुछ ख्याल हमें मिले।

गो. वा. कीर्तनकार एवं कवि श्रीछबीलदासजी का जन्म पाटण (उ. गुजरात) में पिताजी मोरारजी तथा माताजी दोलीबा से सं. १९३२ मार्गशीर्ष की पूर्णिमा के दिन हुआ था। आपकी ६ वर्ष की आयु में ही पिताजी का गौलाकवास हो गया था, अतः श्रीद्वारकाधीशजी की हवेली में ही अपने काकाजी श्रीहीरालालजी साथ कीर्तन में बेठते थे। बाद में वे डाह्याभाई धोलशा की नाटक–कम्पनी में रहे और अभिनय की तालीम लेने लगे। वहाँ नाट्यकला और अभिनयकला के शिक्षण साथ साथ काव्यलेखन भी करने लगे। इस पूर्व नृत्यकला और गरबियाँ गाने की कला उनको अपने श्वसुर, सुप्रसिद्ध भवाईकार डूंगर नायक पास से और सारंगीवादन श्रीरामचन्द्रजी पास से मिला। वड़ौदा राज्य की गादी के वे गायक थे और गायकी की स्पर्धा में वे प्रथम आये थे और प्रमाणपत्र प्राप्त किया था।

सं. १९५२ में अमदावादवाले नि.ली., गो. श्री मधुसूदनलालजी महाराज पाटण पधारे तब श्रीछबीलदासजी की नृत्य नाट्य गीत अभिनय वाद्य आदि कलाओंमें निपुणता देखकर उनको बड़ी प्रसन्नता हुई और आज्ञा की कि नाटककम्पनी छोड़ दो और पुष्टिमार्गीय कीर्तनों की सेवा में लग जाओ। पू. पा. आचार्यश्री ने श्रीनायकजी को निवेदन-दीक्षा दी और उपरणा उढ़ाया तथा आज्ञा की कि इन प्रभु को सर्वस्व मानकर प्रभु की सेवा में तुम्हारी विभिन्न कलाओं का विनियोग करो।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस से जीवन का सार्थक्य होगा । बम्बई मत जाओ । तुम्हारा योगक्षेम यहां सम्पन्न होगा । निश्चिन्त बन कर लग जाओ ।

योग भी मिला और श्रीनायकजी अपनी आयु के २० वे वर्ष में हीं पाटण की श्रीद्वारकाधीशजी की हवेली में कीर्तनों की सेवा में लग गये । यहाँ अच्छी तरह से स्थित हो जाने के बाद कीर्तनकारी की उनकी ख्याति व्यापक बन जाने के कारण अनेक नगरों एवं यात्राधामों की हवेलियों से पुष्टिमार्गीय कीर्तनसेवा देने के लिए मांग शुरू हो गई । श्रीद्वारकाधीशजी की हवेली के परमभगवदीय अधिकारीजी श्रीकेशवलालजीभाई के सत्संग से श्रीनायकजी ने असमर्पित पदार्थों एवं अन्याश्रय का त्याग कर वैष्णवी जीवन अपना लिया था, इस कारण वतन नहीं छोड़ कर यहाँ ही कीर्तनसेवा का निश्चय कर लिया था और निर्वाह से ज्यादा प्राप्त करने की आकांक्षा छोड़ दी थी, इस कारण ऐसी मांगो का सविनय अस्वीकार किया । एक प्रकार के विरक्त वैष्णवी कोटि के जीवन का उन्होंने स्वीकार कर लिया था ।

नृत्यकला के वे बचपन से ज्ञाता थे । जब सं. १९६२ में पाटण में वैष्णव परिषद् का अधिवेशन हुआ तब उन्होंने जोगीलीला साभिनय की थी । ढाढ़ीलीला में तो वे ढाढ़नी बनते थे । इस समय गीत नृत्य नाट्याभिनय का शास्त्रीय रीत्या संगम लोगों को भक्तिभाव से मग्न कर देता था । उस समय यह युवा कलाकार इतना भावविभोर बन जाता था कि आंखों से अश्रु की धाराएँ निकल आती थी । अनेक गोस्वामी आचार्य आज भी उनको इसी सेवा के कारण याद करते हैं ।

वे श्रीठाकोरजी की काछनी तनिया परदनी आदि फूलों के शृंगार अपने हाथों से करते थे, जो मुखियाजी श्री को निवेदित करते थे । इसी प्रकार हिन्दोला फूलमण्डली सांझी आदिक सुशोभनो में भी वे निष्णात थे । श्री की पाघ बनाने में एवं जन्माष्टमी के उत्सव में गोपीग्वाल का स्वांग बनाने में वे निष्णात थे । कीर्तनसमाज में प्रत्येक रात्रि वे नियमित जाते थे ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बचपन से काव्य करने का उन्होंने आरम्भ किया था । भक्ति ज्ञान वैराग्य और भगवन्माहात्म्य के अनेक पदों की उन्होंने गुजराती भाषा में रचना की थी । 'आनन्द एकादशी' शीर्षक से उनका नाटकों के लोकप्रिय रांग–रागिणियों में पदों और गरबियों का एक (८१ कृतियों का) संग्रह सं. १९६२ (३१ सालकी उम्र) में प्रसिद्ध हो चुका था । जब उन्होंने सूरदासादि अष्टछाप पुष्टिमार्गीय भक्तकवियों के कीर्तनों की गानसेवा में अलौकिक बानिक की महत्ता का अनुभव किया, तो बाद में गुजरातीरचना करने का बन्ध कर दिया ।

अपनी ६९ वर्षों की दीर्घ आयु में पाटण के श्रीद्वारकाधीशजी के मन्दिर में ही उन्होंने पुष्टिमार्गीय कीर्तनसेवा कर के असामान्य दृष्टान्त दिया है । हाँ, कभी कभी कांकरोली अमदावाद सुरत आदि के आचार्य विशिष्ट उत्सवों और प्रस्तावों में निमन्त्रित करते थे तब उत्साह से जा कर अपनी कीर्तनसेवा निवेदित करते थे, इतना ही अपवाद ।

अपना सारा जीवन उन्होंने कीर्तनसेवा में व्यतीत किया और जब जगत से विदा लेने का अन्तिम समय आया तब जपपाठ एवं मंगला और शृंगार के कीर्तन कर के जब राजभोग का समय आया तब टेरा खोलने के पूर्व ही आप मन्दिर के जगमोहन में ढल पड़े। यह दैवी जीव निश्चिन्ता से पूर्ण तन्दुरस्ती में भगवान् के चरणों के नित्यवासी बन गये ।

ऐसे संगीतमर्मज्ञ एवं कीर्तनविशारद पिताजी के वहाँ श्रीचम्पकलालजी का जन्म हुआ । इसी कारण पुष्टिमार्गीय कीर्तनप्रणाली का मार्ग तो पिताजी के द्वारा सुलभ हुआ और शास्त्र का ज्ञान स्व. पं. वाडीलाल शिवराम नायक द्वारा प्राप्त हुआ । इस द्विविध परम्परा का सत्फल हमें 'अष्टछापीय भक्तिसंगीत' के दो भागों में मिला है।

दूसरा ग्रन्थ विशेषतः पुष्टिमार्गीय मन्दिरों एवं हवेलियों में उत्तरांग एवं पूर्वांग रागो सब मिलाकर ७२ का शास्त्रग्रन्थ बन गया है । उन रागों की एक से ज्यादा रचनाएं मन्दिरों में गाई जाती हैं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उनका स्वरांकन के साथ यहाँ निरूपण हुआ, किन्तु इतने से पूर्णता नहीं है, श्रीनायकजी ने उदाहृत पदों के प्रास्ताविकों में प्रत्येक राग के विषय में शास्त्रीय चर्चा देते समय मतभेदों को भी प्रस्तुत करके पुष्टिमार्गीय प्रणाली में किस प्रकार के स्वरशुद्ध कीर्तन गाये जाते हैं वह भी बताया है। मैं समझता हूं कि इससे विद्यार्थी एवं जिज्ञासु को गानपद्धति का तारतम्य सुलभ होता है। इस प्रकार का निरूपण प्रथम बार ही तज्ज्ञों के समक्ष रखा गया है।

मेरे जैसे अल्पज्ञों के लिए इस प्रकार का निरूपण ज्ञानवृद्धि में सहायक है ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

परिशिष्टों में दी हुई माहिती के विषय में तो श्रीनायकजी ने अपने 'दो शब्द' में बताया है इस कारण यहाँ पुनरुक्ति नहीं करूंगा। 'ध्रुपदों' की बात अवश्यमेव उपयोगी है ऐसा यहाँ जरूर कहना चाहिये।

श्रीनायकजी की आंखों की तकलीफ ने उनके पास से संगीतविषयक जानकारी के अनेक फल मिलने में बाधा खड़ी की है, किन्तु इसका कोई उपाय नहीं है। जिज्ञासु विद्यार्थि-गण शिष्यभाव से उनके पास जाकर अपनी जिज्ञासा पूर्ण करने का प्रयत्न करे तो उनके पास से बहुत कुछ मिलेगा।

आनन्द की बात है कि पं. चम्पकलालजी के चार पुत्र 'संगीत-विशारद' हो चुके हैं और इनमें से तीसरा पुत्र चि. घनश्याम पिताजी की परम्परा को ध्यान में रखकर आगे बढ़ रहा है। मुझे विश्वास है कि उसकी इस विषय में प्रगति होगी।

'अष्टछापीय भक्तिसंगीत' के दो भागों (चार खण्डों) का जनता समक्ष रखने का उनका उद्योग सर्वथा अभिनन्दनीय है और मैं तो उनसे उम्र में बड़ा हूँ अतः उनको मेरे हृदय के आशीर्वाद दे कर कृतार्थता का अनुभव करता हूं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बचपन से काव्य करने का उन्होंने आरम्भ किया था। भक्ति ज्ञान वैराग्य और भगवन्माहात्म्य के अनेक पदों की उन्होंने गुजराती भाषा में रचना की थी। 'आनन्द एकादशी' शीर्षक से उनका नाटकों के लोकप्रिय रांग-रागिणियों में पदों और गरबियों का एक (८१ कृतियों का) संग्रह सं. १९६२ (३१ सालकी उम्र) में प्रसिद्ध हो चुका था। जब उन्होंने सूरदासादि अष्टछाप पुष्टिमार्गीय भक्तकवियों के कीर्तनों की गानसेवा में अलौकिक बानिक की महत्ता का अनुभव किया, तो बाद में गुजरातीरचना करने का बन्ध कर दिया।

अपनी ६९ वर्षों की दीर्घ आयु में पाटण के श्रीद्वारकाधीशजी के मन्दिर में ही उन्होंने पुष्टिमार्गीय कीर्तनसेवा कर के असामान्य दृष्टान्त दिया है। हाँ, कभी कभी कांकरोली अमदावाद सुरत आदि के आचार्य विशिष्ट उत्सवों और प्रस्तावों में निमन्त्रित करते थे तब उत्साह से जा कर अपनी कीर्तनसेवा निवेदित करते थे, इतना ही अपवाद।

अपना सारा जीवन उन्होंने कीर्तनसेवा में व्यतीत किया और जब जगत से विदा लेने का अन्तिम समय आया तब जपपाठ एवं मंगला और शृंगार के कीर्तन कर के जब राजभोग का समय आया तब टेरा खोलने के पूर्व ही आप मन्दिर के जगमोहन में ढल पड़े। यह दैवी जीव निश्चिन्ता से पूर्ण तन्दुरस्ती में भगवान् के चरणों के नित्यवासी बन गये।

ऐसे संगीतमर्मज्ञ एवं कीर्तनविशारद पिताजी के वहाँ श्रीचम्पकलालजी का जन्म हुआ। इसी कारण पुष्टिमार्गीय कीर्तनप्रणाली का मार्ग तो पिताजी के द्वारा सुलभ हुआ और शास्त्र का ज्ञान स्व. पं. वाडीलाल शिवराम नायक द्वारा प्राप्त हुआ। इस द्विविध परम्परा का सत्फल हमें 'अष्टछापीय भक्तिसंगीत' के दो भागों में मिला है।

दूसरा ग्रन्थ विशेषतः पुष्टिमार्गीय मन्दिरों एवं हवेलियों में उत्तरांग एवं पूर्वांग रागो सब मिलाकर ७२ का शास्त्रग्रन्थ बन गया है। उन रागों की एक से ज्यादा रचनाएं मन्दिरों में गाई जाती हैं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उनका स्वरांकन के साथ यहाँ निरूपण हुआ, किन्तु इतने से पूर्णता नहीं है, श्रीनायकजी ने उदाहृत पदों के प्रास्ताविकों में प्रत्येक राग के विषय में शास्त्रीय चर्चा देते समय मतभेदों को भी प्रस्तुत करके पुष्टिमार्गीय प्रणाली में किस प्रकार के स्वरशुद्ध कीर्तन गाये जाते हैं वह भी बताया है। मैं समझता हूं कि इससे विद्यार्थी एवं जिज्ञासु को गानपद्धति का तारतम्य सुलभ होता है। इस प्रकार का निरूपण प्रथम वार ही तज्ज्ञों के समक्ष रखा गया है ।

मेरे जैसे अल्पज्ञों के लिए इस प्रकार का निरूपण ज्ञानवृद्धि में सहायक है ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है ।

परिशिष्टों में दी हुई माहिती के विषय में तो श्रीनायकजी ने अपने 'दो शब्द' में बताया है इस कारण यहाँ पुनरुक्ति नहीं करूंगा । 'ध्रुपदों' की बात अवश्यमेव उपयोगी है ऐसा यहाँ जरूर कहना चाहिये।

श्रीनायकजी की आंखों की तकलीफ ने उनके पास से संगीतविषयक जानकारी के अनेक फल मिलने में बाधा खड़ी की है, किन्तु इसका कोई उपाय नहीं है । जिज्ञासु विद्यार्थि-गण शिष्यभाव से उनके पास जाकर अपनी जिज्ञासा पूर्ण करने का प्रयत्न करे तो उनके पास से बहुत कुछ मिलेगा।

आनन्द की बात है कि पं. चम्पकलालजी के चार पुत्र 'संगीत-विशारद' हो चुके हैं और इनमें से तीसरा पुत्र चि. घनश्याम पिताजी की परम्परा को ध्यान में रखकर आगे बढ़ रहा है। मुझे विश्वास है कि उसकी इस विषय में प्रगति होगी।

'अष्टछापीय भक्तिसंगीत' के दो भागों (चार खण्डों) का जनता समक्ष रखने का उनका उद्योग सर्वथा अभिनन्दनीय है और मैं तो उनसे उम्र में बड़ा हूँ अतः उनको मेरे हृदय के आशीर्वाद दे कर कृतार्थता का अनुभव करता हूं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस दूसरे भाग के प्रकाशन में हमें निम्न आर्थिक सहाय मिली है । यथा

१.	गो. श्रीश्याममनोहरजा महाराज, बम्बई	रु. २१००
२.	गो. श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज, जामनगर	१०००
३.	शेठ हरिलाल हरिवल्लभ ट्रस्ट, अमदावाद	२५००
४.	शेठ हरजीवनदास पुरुषोत्तमदास ट्रस्ट, अमदावाद	२५००
५.	शेठ अचरतलाल गिरधरलाल चेरिटी ट्रस्ट, अमदावाद	२०००
६.	श्री कल्याण चेरिटेबल ट्रस्ट, अमदावाद	५००
७.	इन्डियन नेशनल थियेटर, बम्बई	१०००
८.	प. भ. जयाबहेन जीवणलाल गांधी, बम्बई	४०००
९.	श्री वैष्णव मण्डल, मद्रास	२००
१०.	श्री विश्ववल्लभ सर्वोदय संस्था, अमदावाद	१०००
११.	मान. श्री प्रभुदास बालुभाई पटवारी, अमदावाद	१०००
१२.	मान., न्या. मू. श्रीनारायणलाल हिं. भट्ट, अमदावाद	१०००
१३.	श्री श्यामलाल वाडीलाल पटेल, अमदावाद	२०००
१४.	श्री उमादेवी खत्री, हा. श्री शारदाबहेन पटवारी, कलकत्ता	१०००
१५.	श्री तुलसीदेवी चितलागिया, कलकत्ता	१०००
१६.	शेठ चतुर्भुजदास चिमनलाल, अमदावाद	१०००
१७.	शेठ गिरधरदास चतुर्भुजदास, हा. श्री घनश्यामदास	१०००
१८.	गो. वा. जमनाबाई घनश्यामदास गिरधरदास, मद्रास	५००
१९.	शेठ हर्षितभाई गोविन्दलाल शाह, अमदावाद	१०००
२०.	श्री हीरालाल वी. पटेल, अमदावाद	५००

इन सभी महानुभावों का उपकारस्मरण करता हूं ।

विशेषतः गुजरात सरकार की युवक सेवा और सांस्कृतिक प्रवृत्ति की ओर से भी दोनों ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए जो अनुदान मिला है उस के लिए हम अत्यधिक उपकृत हैं ।

दि. ११–५–’८५

केशवराम का. शास्त्री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

[stamp] ...निधि, ... वाराणसी-5

दो शब्द

पुष्टिमार्ग के प्रणेता श्रीमद्वल्लभचार्य महाप्रभुजी तथा अष्टछाप-स्थापक परमदयालु श्रीविट्ठलनाथ गुसांईजी की कृपा से तथा गुरुजनों और जन्मदाता पू. माता-पिता के आशीर्वाद से "अष्टछापीय भक्तिसंगीत" का यह द्वितीय भाग-खण्ड ३-४ प्रसिद्ध करते समय अत्यानन्द हो रहा है। यद्यपि आज तक मेरे कीर्तनसंग्रह और कीर्तनसंगीतके लिपिबद्ध छोटे-बड़े १७ ग्रन्थ प्रसिद्ध हो चूके हैं, तथापि मुझे कुछ असन्तोष रहा करता था। वर्षों पूर्व जिन महानुभावों ने शास्त्र, परम्परा और ऐतिहासिक दृष्टि से सम्प्रदाय के संगीत का शोधग्रन्थ प्रसिद्ध करने का खास आदेश दिया था कि "कीर्तन की परम्परा, शास्त्रग्रन्थो का ज्ञान एवं वड़ौदा उपरांत लखनौ भातखण्डे युनिवर्सिटी की डिग्री प्राप्त कर चूके हैं तथा संगीत के उद्धारक पं. भातखण्डेजी के पट्टशिष्य पं. वाड़ीलालजी से भातखण्डे-रचित क्रमिक ग्रन्थों के छ भागों और सिद्धान्त (थियरी) के अन्य ग्रन्थों का भी अध्ययन किया है अतः इस प्रकार के ग्रन्थ तैयार करने की योग्यता तुम्हारे में है।" इस प्रकारके सूचन के साथ मुझे उत्साहित करने वाले १. पू. पा. तृतीयपीठाधीश्वर नि. ली., गो. श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज, २. भारतवर्ष के अग्रगण्य हार्मोनियमवादक और संगीत के मर्मज्ञ पू. पा. मथुरा-पोरबन्दरस्थ नि.ली., गो. श्रीद्वारकेशलालजी महाराज तथा वैष्णव विद्वानों में सम्प्रदाय के प्रसिद्ध लेखक, मेरे गो.वा. मित्र श्री द्वारकादास परीख आदि आज भूतल पर होते तो अन्य कठिनाइयों के साथ आर्थिक चिन्ता से मुक्त होने से यह ग्रन्थ कुछ वर्ष पहिले प्रसिद्ध हो सकता था।

तथापि भगवत्कृपा से अष्टछाप संगीतकलाकेन्द्र के मानार्ह मन्त्री, सुप्रसिद्ध विद्वान्, म.म., अध्या. केशवराम का. शास्त्री का उत्साहपूर्ण बल तथा नि.ली., गो. श्रीनटवरगोपाल महाराजश्री (द्वारका वाले) का सर्वप्रथम आर्थिक योगदान समयसर प्राप्त न होता तो मेरे स्वास्थ्य और नेत्रों की दुर्बलता की परिस्थिति में यह ग्रन्थ इस समय भी प्रगट होना असम्भव था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस ग्रन्थ में मुझे जो प्रास्ताविक कहना था वह अधिकतर प्रथम भाग में कह चुका हूँ, तथापि संक्षिप्त में कहता हूँ ।

पुष्टिमार्ग की स्थापना के साथ ही संगीतसामग्री भोगसामग्री और शृंगारसामग्रीपूर्वक सेवा का आरम्भ हुआ है अतः भगवत्सेवा सम्प्रदाय का मुख्य कर्तव्य है । श्रीवल्लभप्रभु ने सिद्धान्तमुक्तावली के आरम्भ में स्पष्ट कहा है कि "कृष्णसेवा सदा कार्या मानसी सा परा मता।" मानसी सेवा आज के यन्त्रयुग में सिद्ध होना मुश्किल है । सेवा की व्याख्या "चेतस्तत्प्रवणं सेवा" यथार्थ मन को सेवामें एकाग्र करना है। विविध प्रकारों में मन को एकाग्र करने का उत्तम मार्ग भगवद्गुणगान की सेवा सर्वश्रेष्ठ साधन है ।

शास्त्र में मन को एकाग्र करने के लिए योगमार्ग बताया है, किन्तु योगसाधक महान् योगिजनों के अपवाद सर्वसामान्य भक्तजनों का भगवद्-गुणगान द्वारा शीघ्र भगवत्प्राप्ति के संख्याबन्ध उदाहरण भागवतधर्म में प्राप्त होते हैं, जिनमें से यहां एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा । स्वयं भगवान् ने कहा है कि

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

अतः श्रीवल्लभ महाप्रभु के पुष्टिमार्ग में संगीत को प्रथम स्थान दिया गया है, किन्तु अन्य सम्प्रदायों से पुष्टिमार्ग में कीर्तनगान की प्रणाली में अनोखी भाँत दृष्टिगोचर होती है, जिसमें संगीत के स्वरों की सूरावली, राग की शुद्धि, शास्त्रीयता, ताल और लय की विविधता, ध्रुपदशैली की काव्यरचना, प्राचीन व्रजभाषा-साहित्य के शब्दों की भव्यता और रस और राग की सुसंगतता के दर्शन होते हैं ।

सम्प्रदाय की सेवाप्रणाली में प्रातःकालीन और सायंकालीन दो विभाग हैं तदनुसार कीर्तनगान के रागों को भी दो प्रकारों में इस ग्रन्थ में बांटा गया है । तृतीय खण्ड में प्रातःकालीन और चतुर्थ खण्ड में सायंकालीन सेवा में गाये जाने वाले रागों के कीर्तनों को स्वरलिपि में निबद्ध किये गये हैं । शास्त्र में रागों का समयचक्र २४ घण्टो में बांटा गया है, तथापि और राजमहल जनसमाज की मेहफिलों में इस

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रकार की मर्यादा का यथार्थ पालन नहीं हो सकता, क्योंकि अधिकतर कार्यक्रम रात्रि के समय में ही होते रहते हैं। सम्प्रदाय में गूढ़ भावना की दृष्टि से देखा जाय तो अष्टयाम यानि आठों प्रहरों की भावना होती है। दिन के पूर्व भाग की सेवा में उत्तरांगवादी राग तथा दिन के उत्तरभाग की सेवा में याने उत्थापन से पोढने तक की सेवा में पूर्वांग-वादी राग गाये जाते हैं।

प्रचलित शास्त्रीय संगीत के प्रकाण्ड पण्डित श्रीभातखण्डेजी की सीधी परम्परा के अभ्यासी होते हुए भी इस ग्रन्थ में अष्टछाप की प्राचीन परम्परा की ओर ही अधिक ध्यान दिया गया है, अतः इस ग्रन्थ में दिये हुए रागों के अतिरिक्त अन्य प्रकारों के विविध रागों का गायन जो गत शताब्दी के किसी भी कीर्तनगायक से सुना न हो या प्राचीन कीर्तनसंग्रह के ग्रन्थों में जिसका उल्लेख न हो ऐसे अन्य रागों का जो प्रचार हो रहा है वह आकर्षक और कर्णप्रिय होते हुए भी सेवाप्रणाली में स्थान दे कर रागसंख्या बढ़ाने की चेष्टा करना अनुचित समझ कर केवल श्रीजी संमुख गाये जाने वाले ७२ रागों में तथा प्राचीन परम्परा के तालों में ऋतु-ऋतु, उत्सव, बधाई, त्यौहार एवं नित्यक्रम के ही सभी पदों को ध्यान में रखकर १८५ पदों का स्वरांकन किया गया है।

स्वरलिपि से गायकी का पूरा ज्ञान प्राप्त होना मुश्किल है, क्योंकि संगीत गुरुमुख की विद्या है, जो वर्षों तक की साधना के बाद ही सिद्ध होती है। आज के जीवनव्यवहार में समयाभाव की विषम परिस्थिति के समय कीर्तनसंगीत की सुरक्षा के अंधकारमय वातावरण में प्रकाश के किरणों की झांखी कराने के लिए स्वरलिपि ही सरल, सुलभ और उत्तम साधन है।

हमारे यहाँ अष्टछाप-परम्परागत पदों का जो गान किया जाता था इसमें गत शताब्दी तक कोई मतभेद नहीं था, किन्तु आजकल सीधी परम्परा की शिक्षा की दुर्लभता से धनाश्री में दोनों धैवत तथा ललित में कोई कोमल और कोई शुद्ध धैवत लेने लगे हैं, अतः राग-ताल की अशुद्धि बढ़ती जा रही है। तदुपरांत काव्यदृष्टि से लघु,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गुरु, ह्रस्व, दीर्घ और मात्रादि के स्थान की ओर भी दुर्लक्ष होता जा रहा है, इस परिस्थिति में शक्य वहां तक प्राचीन परम्परा की ओर ध्यान दिया गया है।

पुष्टिमार्ग के सेवाक्रम के साथ ओतप्रोत बने हुए अष्टछापीय परम्परा के ध्रुपद-धमार शैली के जो पद मंदिर की निर्मित मर्यादा में गाये जाते हैं उनकी समान कक्षा में आजकल गुजरात के लोक-संगीत की शैली के गुजराती भाषा के साम्प्रदायिक धोल-धवलों को भी हवेलीसंगीत गान से प्रचार हो रहा हो तो वे अष्टछाप परम्पराकी प्राचीन शैली का ही नहीं, किन्तु ध्रुपद-धमार घराने का भी गौरव-भंग प्राचीन नहीं है, तदुपरांत गुजराती गरबी इत्यादि ढंग में होने से उनको हवेली का लोकसंगीत कहना उचित होगा।

इस ग्रन्थाभ्यास के पूर्व प्रथम भाग खण्ड १-२ का अध्ययन करना आवश्यक है, क्योंकि हवेलीसंगीत का इतिहास, शास्त्र, प्रणाली और परम्परा की अधिक माहीती का ज्ञान होने के बाद पद गाने में अधिक आनन्द होता है।

उपरांत आवश्यक शास्त्रीय माहीती, स्वरलिपि एवं स्वरों और तालों का प्राथमिक ज्ञान आवश्यक होने के कारण हमारे पूर्वप्रकाशन "संगीतसुबोधिनी" का अभ्यास करने से सरलता प्राप्त होगी। इस ग्रन्थ में स्वर-ताल-लिपि के चिह्न इत्यादि पं. भातखण्डेजी की पद्धतिअनुसार है तथापि "संगीतसुबोधिनी" ग्रन्थ का अवलोकन करने से अधिक सरलता होगी।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन की ओर योग्य ध्यान दिया गया है, किन्तु अन्तिम चार सालों से नेत्रों की दृष्टि कुण्ठित हो जाने से लिखने पढ़ने में स्वयं असमर्थ होने के कारण स्वरलिपि का निरीक्षणकार्य हमारे शिष्य जनकभाई पटेल को सौंपा गया था, वे विद्यार्थी-अवस्था में होने से उनसे कुछ भूल रहना सम्भवित है इस कारण पढ़ते पहिले शुद्धिपत्र देख लेना जरूरी है।

सम्प्रदाय की प्राचीन प्रणालीअनुसार विविध रागों और तालों में पदों को लिपिबद्ध करते समय अनेक कठिनाइयाँ दृष्टि समक्ष उपस्थित होती हैं, जिनका उल्लेख इस ग्रन्थ के प्रथम भाग की प्रस्ता-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चना में पृष्ठ ६ पर किया गया है, अतः यहाँ उसका पुनः उल्लेख करना उचित नहीं समझा है ।

ग्रन्थ में पृष्ठ बढ़ जाने के कारण पद्दों के आभोग का स्वरांकन की जगह केवल "आभोग अन्तरानुसार" ही अंकित किया गया है, तथापि किसी उत्साही अभ्यासी को आवश्यकता हो तो लेखक का सम्पर्क साधने से मार्गदर्शन दिया जायेगा ।

मेरे शिष्यवर्ग में से 'अमृत उत्सव समारोह' के लिए जिनके द्वारा भेट के रूप में सहाय प्राप्त हुई है उनका सद्भाव कभी भूल नहीं सकता, जो निम्नप्रकार है-

(१) गो. श्री अनिरुद्धलालजी महाराज, बरसाने वाले	२५१-००
(२) सौ. सरोजबहेन वीरेन्द्र शाह, बम्बई	१०००-००
(३) श्री. जीतुभाई जीवणलाल गांधी, बम्बई	१०००-००
(४) सौ. श्रीमती कुजवाला हर्षितभाई शाह, अमदावाद	१०००-००
(५) प्रो. शांतिलाल नागरदास वांभणिया, अमदावाद	२५१-००
(६) श्री. जनकभाई एच. पटेल, अमदाबाद	२५००-००
(७) आचार्य जितुभाई अेम. त्रिवेदी	५००-००
(८) श्री. वसंतलाल दयालजी सोनी, अमदाबाद	२५१-००
(९) डो. शशिकला एन. वाणी, अमदाबाद	२५१-००
(१०) श्री रमणिकलाल मणिलाल नायक, अमदाबाद	२५१-००

अन्त में हमारे प्रमुख माननीय प्रभुदासजी पटवारी (तामिलनाडु के निवृत्त राज्यपाल) तथा मेरे वडील वन्धु समान श्री के. का. शास्त्रीजी का आभार मानता हूं ।

साम्प्रत में लुप्त होती जाती हमारी परम्परा के ध्रुपद-धमार-शैली को मेरे इस ग्रन्थ से शीखने की सरलता होगी । रुचि वाले भावुक शिक्षार्थियों एवं व्यवसायी-अव्यवसायी कीर्तनकार भी परम्परागत शैली को प्राप्त करने में समर्थ होंगे । ऐसा हो तो मेरा यह श्रम सफल हुआ समझूंगा ।

श्रीकृष्णार्पणमस्तु ।

कृपाकांक्षी

चम्पकलाल छ. नायक

६०, नायकनगर
अमदाबाद-३८००१४
रामनवमी, दि. ३१/३/८५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

अनुक्रमणिका

तृतीय खण्ड

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	(१)	
	राग-भैरव, विवरण	३
१	गाऊँ श्रीवल्ल ध्याऊँ	४
२	जै जै जै श्रीवल्लभ प्रभु	६
३	तुम वेगि स्याम भले आये	९
४	एरी ब्रज खेलत धमार	१२
५	लालन जागो हो	१३
६	छगन मगन प्यारे लाल	१५
	(२)	
	राग-प्रभात (प्रभात भैरव) विवरण	१७
७	भोर भये नन्दलाल	१८
	(३)	
	राग-रामकली, संक्षिप्त विवरण	२०
८	देखो-देखोरी नागर नट	२२
९	पालनें गोविंद झूलो	२४
१०	नंदको लाल ब्रज	२६
	(४)	
	राग-रामकली (प्रकार-२)	
११	हरिजस गावत चलि	२८
	(५)	
	राग-बिमास, संक्षिप्त विवरण	२९
१२	रतनजटित कनकथाल	३६
१३	प्रातसमें नंदलाल खेलत	३८
	(६)	
	राग-खट, संक्षिप्त विवरण	४०
१४	आज नन्दलाल मुखचंद	४०
१५	आज उठि भोर नवकुंज	४३
	(७)	
	राग-परज, संक्षिप्त विवरण	४६
१६	रंगभरी मुख अनंगभरी	४७
१७	सुनोरी आज मंगल वधायो	५०
	(८)	
	राग-ललित, संक्षिप्त विवरण	५१
१८	कमलसी अखियाँ लाल	५५
१९	आज सगरी निसा कहाँ	५६
२०	साँझजु आवनि कहि गये	५८
२१	अहो हरि होरीमें जब	६०

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	(९)	
	राग–ललित पंचम, संक्षिप्त विवरण	६१
२२	कहो तुम सांचि कहाँ ते	
	(१०)	
	राग–पंचम, संक्षिप्त विवरण	६२
२३	देखो देखो ब्रजकी वीथनि	६४
	(११)	
	राग–मालकौंस, संक्षिप्त विवरण	६५
२४	चन्द कमल पर भँवर दोऊ	६६
२५	पीर न जानी अहो पिय	६७
२६	नख कहाँ लागे बन	६९
	(१२)	
	राग–देवगंधार, संक्षिप्त विवरण	७२
२७	आजु बधाई मंगल चार	७३
२८	अद्भूत डोल बनी	७५
	(१३)	
	राग–हिंडोल, संक्षिप्त विवरण	७६
२९	थेई ता थेई थेई करत	७८
३०	निरतत गावत बजावत	७९
	राग–हिंडोल, प्रकार–२, विवरण	८२
	स्वरमालिका	८४
	(१४)	
	राग–सूहा, संक्षिप्त विवरण	८५
३१	मदगजराजकी सी चाल	८५
३२	कोनकी उपरनी ओढ आये	८७
३३	बरस उघरि गयो मेह	८७
३४	जानी मै आज तू मिली	८९
	(१५)	
	राग–सुघराई, संक्षिप्त विवरण	९०
३५	नई रितु आई माई	९२
	(१६)	
	राग–सूहा बिलावल,	
३६	सुवा तेरी सोने चौंच	९३
	(१७)	
	राग–बिलावल, संक्षिप्त विवरण	९४
३७	मोहन घूमत रतनारे रैन	१००
३८	सांझ के सांचे बोल	१०१
	(१८)	
	राग–शंकराभरण, संक्षिप्त विवरण	१०४

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
३९	आजुको सिंगार देख्यौ	१०७
४०	आजु अरुन अरुन डोरे	११०
४१	कोन लई कोन दई	११२
४२	महामहोच्छव श्रीगोकुल-	११४
	(२०)	
	राग–नट विलावल,	
	संक्षिप्त विवरण	११६
४३	गोद बैठे गोपाल कहत	११७
	(२१)	
	राग–कुकुभ विलावल,	
	संक्षिप्त विवरण	११९
४४	घाटपर ठाडे मदनगोपाल	१२२
४५	गोकुलकी पनिहारी	१२३
	(२२)	
	राग–गौड विलावल,	
	संक्षिप्त विवरण	१२४
४६	गोपी हो नंदराय घर	१२५
	(२३)	
	राग–देवगिरि विलावल,	
	विवरण	१२६
४७	गढते ग्वालिनि उतरी	१२७
	(२४)	
	राग–धनाश्री संक्षिप्त	
	विवरण	१२९
४८	सबे मिलि मंगल गावो	१३०
४९	रंगीलेरी छबीले नेना	

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	(२५)	
	राग–आसावरी,	
	संक्षिप्त विवरण	१३३
५०	सुभग ललना माई (जोंनपूरी)	१३४
५१	सब मिलि आवो गावो	१३६
५२	कृष्णनाम जब तें श्रवन	१३९
५३	तुम नंदरानीके लाला	१४१
५४	जाकोमन लाग्योगोपाल	१४२
५५	गिरिधरलाल पालने झूलें	१४४
	(२६)	
	राग–सामेरी, संक्षिप्त विवरण	१४६
	(२७)	
	राग–तोडी, संक्षिप्त विवरण	१४७
५६	हेलीरसमय श्रीवल्लभ	१४८
५७	सप्तसुरन तीनग्राम	१५०
५८	बहुत प्रसन्न भये पिय	१५२
५९	कहुँ उमडघूमड गरजत	१५३
६०	हो पनियां न जैहों	१५४
६१	नीको बन्यो गोकुलगाम	१५६
	(२८)	
	राग–सारंग (बृन्दावनी) विवरण	१५९
६२	जाको वेद रटत ब्रह्मा	१६५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
६३	एसी बंसी बाजींरी बन	१६८
६४	वृन्दावन कुंजनिमें मध्य	१६९
६५	बलि वामन हो जग	१७१
६६	श्रीलक्ष्मनगृह महामंगल	१७३
	(२९)	
	राग–मधमाध सारंग, संक्षिप्त विवरण	१७६
६७	जमुनातट नवनिकुंज	१८०
६८	एसी धूपनमें कहां चली	१८२
६९	सूर आयो सिर पर	१८४
७०	अपने अपने घरके	१८६
	(३०)	
	राग–सामंत सारंग, संक्षिप्त विवरण	१८८
७१	अनत न जैये अहो पिय	१९२
	(३१)	
	राग–गौड सारंग, संक्षिप्त विवरण	१९४
७२	भलेई मेरे आये हो पिय	१९७
७३	हों नहिं जान्यो री माई	१९९
	(३२)	
	राग–नूर सारंग, संक्षिप्त विवरण	२०१
७४	चलो सखी कुंज गोपाल	२०३
७५	आजु दधि कंचन मोल लई	२०४
	(३३)	
	राग–बडहंस सारंग, विवरण	२०४
७६	बलोकिनि देखन कुंजकुटी	२०६
	राग–मधमाध सारंग,	
७७	स्याम नकवेसर	२०७
७८	राग माला, सारंग नेनीरी तू	२०९
	(३४)	
	राग–मेघ, प्राचीन मल्हार विवरण	२१३
	(३५)	
	राग–शुद्ध मल्हार, विवरण	२१६
७९	इन भोरनकी भांत देखि	२१७
८०	यह नागर नंदलाल	२१९
	(३६)	
	राग–गौड मल्हार, संक्षिप्त विवरण	२२१
८१	माई तेसोई वृंदावन	२२२
८२	माईरी घन मृदंग रस	२२४
८३	तुम घन से हो	२२६
	(३७)	
	राग–सोरठ मल्हार, संक्षिप्त विवरण	२२८
८४	सखीरी (मोहि) बूंद	२२९

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्रमांक	विगत	पृष्ठ
८५	क्यों न भये हम मोर (३८)	२३०
	राग–सूर मल्हार, संक्षिप्त विवरण	२३२
८६	सरस हिंडोरना माई (३९)	२३२
	राग–धूलिया मल्हार, संक्षिप्त विवरण	२३४

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
८७	जहां तहां बोलत मोर (४०)	२३४
	राग–नट मल्हार, विवरण	२३६
८८	वा पट पीत की फहरान (४१)	२३६
	राग–जोगिया आसावरी, विवरण	२३७
८९	में जोगी जस गाया	२३८

चतुर्थ खंड

	(४२)	
	राग–नट, संक्षिप्त विवरण	२४१
९०	प्रीतम प्रीति ही तें पैयें	२४१
९१	रुप देखा नेना पलक	२४३
	(४३)	
	राग–पूर्वी, संक्षिप्त विवरण	२४४
९२	कदंबचठि कान्ह बुलावत	२४६
९३	अहो कैसे जान पावोगे	२४७
९४	हमे व्रजराज लाडिलेसों	२४८
९५	आइ हों अकेली आज	२५०
	(४४)	
	पूर्वी कल्याण	
९६	आगें गाय पाछें गाय	२५२
	(४५)	
	राग–जेतश्री, संक्षिप्त, विवरण	२५४
९७	सोभा सकल सिरोमनि	२५४
	(४६)	
	राग–गौरी (पूर्वी थाट) संक्षिप्त विवरण	२५६
९८	चल सखी चल अहो	२५७
९९	बनते आवत गावत	२५८
१००	लटकत चलत जुवति	२५९
१०१	वे देखो आवत हे	२६०
	४७	
	राग गौरी (भैरव थाट)	१
१०२	स्याम सनेही गाइये	२६४
१०३	मेरे मन आनंद भयो	२६३
१०४	सब दिन तुम व्रजमें	२६

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	(४८)	
	राग–श्री, संक्षिप्त विवरण	२६५
१०५	श्री राग–गावत ब्रज-	२६६
१०६	जयति जयति हरि-	२६७
	(४९)	
	राग–मारु, संक्षिप्त विवरण	२६९
१०७	हिंडोरे झूलत बंसीवाला	२७०
१०८	आज रघुवीरको वीर	२७२
१०९	कृष्ण जनम सुनि अपने	२७३
	(५०)	
	राग–सोरठ, संक्षिप्त विवरण	२७६
११०	देखरी देख आननचंद	२७७
१११	मैया मेरी कांवर कोन	२७८
११२	जूलत सांवरे संग गोरी	२८०
११३	पौढे हरि राधिका	२८१
	(५१)	
	राग–मालव, संक्षिप्त विवरण	२८२
११४	रास विलास गहें	२८५
११५	पद्म धर्यो जनताप	२८६
	(५२)	
	राग–जंगला, संक्षिप्त विवरण	२८८
११६	अरी तुम कोन हो री	२८८
	(५३)	
	राग–हमीर, संक्षिप्त विवरण	२९०
११७	गये पाप ताप दूर	२९२
११८	गिरिधर सब ही अंग को	२९४
११९	कहो जू कान्ह गैयां कित	२९५
	(५४)	
	राग–यमन, संक्षिप्त विवरण	२९६
१२०	रुचिर पदकमल श्री	२९९
१२१	स्याम सजनी सरदरजनी	३०१
१२२	बलबल हो तनक तनक	३०३
१२३	लालसंग रासरंग कैत	३०५
१२४	माई होरी खेलै कान्ह	३०७
	(५५)	
	राग–खमाज, संक्षिप्त विवरण	३०८
१२५	गायो न गोपाल मन	३०९
	राग–कल्याण, संक्षिप्त विवरण	३१२
१२६	डोल झूलत हैं गिरिधरन	३१३
१२७	कही न परे हो कुंवरकी	३१४
१२८	मेरे तो कान्ह हे री	३१५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	(५७)	
	राग-श्याम कल्याण	
	सं. विवरण	३१७
१२५	हिंडोरे झूलत स्यामा	३१९
	(५८)	
	राग केदार, संक्षिप्त विवरण	३२०
१३०	कदंब बन बीथन	३२२
१३१	राधिका आज आनंदमें	३२३
१३२	बनठनि कहा जु चले हो	३२५
१३३	अदभुत नटभेख धरें	३२७
१३४	चलों क्यों न देखें री	
१३५	भली भई ब्रज होरी आई	३३१
	(५९)	
	राग-काफी, संक्षिप्त विवरण	३३२
१३६	औरन सों खेले धमार	३३२
१३७	भरोरे न भरोरे लंगरवा	३३४
१३८	होरी खेलें लाल डक	३३६
१३९	मन मोहन रंग हिंडोरना	३३८
१४०	एरी सखी झूलत नवलकिंसोर	३४०
३४१	हो हो हो होरी खेले लाल	३४१
	(६०)	
	राग जयजयवन्ती, सं. विवरण	३४३
१४२	माइ फूलको हिंडोरो बन्यो	३४४

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
१४३	झूलत नवललाल झूलावत	३४६
१४४	माई आज तो गोकुल	३४८
	(६१)	
	राग कान्हरा, संक्षिप्त विवरण	३४९
१४५	बन्यो मोरमुकुटनटवर	३५०
१४६	आज धनि भाग हमारे	३५२
१४७	कांपर ढोटा नेन नचावत	३५४
१४८	यह धन धर्महीते पायो	३५६
१४९	श्रीगोकुल जुग जुग	३५८
१५०	दूध पियो मनमोहन	३६१
१५१	सोहत नासिका गिरिधर	३६३
	(६२)	
	राग-बागेश्री कान्हरा	
१५२	नेन छबीले तरुन	३६४
	(६३)	
	राग-नायकी, संक्षिप्त विवरण	३६६
१५३	सुधर सहेली सब मिलि	३६७
१५४	मेरो पिय रसियारी	३६९
१५५	लोचन लालची भये	१३७
१५६	ठाडे कुंजभवन	३७२
	(६४)	
	राग-अडाना, संक्षिप्त विवरण	३७३
१५७	जलको गई सुघट	३७६
१५८	तेरी भौंहकी मरोरनतें	३७९

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
१५९	बेनी निरखत भुजंग तजि	३८०
१६०	काल्ह तुम हा हा करि	३८२
१६१	सब गोकुलको जीवन	३८३
१६२	ततथेई बोलत डोलत	३८५
	(६५)	
	राग रायसा, संक्षिप्त विवरण	३८७
१६३	झूलत राधामोहन	३८८
	(६६)	
	राग सिंधूरा कान्हरा सं. विवरण	३८९
१६४	आज रघुपति चढे	३९०
१६५	कान्ह कुंवरके करपल्लव	३९२
१६६	जुगल वर आवत हें	६९४
	(६७)	
	राग बिहाग, संक्षिप्त विवरण	३९५
१६७	बेठे व्रजराजकुंवर	३९५
१६८	पौढे माई मदन मोहन	३९७
१६९	जैसे हो तैसो तिहारो	३९८
	(६८)	
	राग बिहागरा सं. विवरण	४००
१७०	प्यारी पग होलें होलें	४०२
१७१	सुन्दर जमुनातीररी	४०४

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
१७२	प्रगट व्हे मारगरीति	४०५
१७३	भरोसो दृढ इन चरन	४०७
	राग बसन्त सं. विवरण	४१०
	(६९)	
	राग ललित बसन्त	
१७४	श्रीवल्लभ प्रभुकरुनासागर	४१४
१७५	खेलत बसन्त निस पिय	४१५
	(७०)	
	राग बसन्त (शुद्ध थाट)	
१७६	लाल ललित ललितादिक	४१६
१७७	गिरिधरनलालकी बानिक	४१८
१७८	खेलतबसन्त—गिरिधरन	४२०
१७९	बसन्त रितु आई	४२२
	(७१)	
	राग बसन्त (हिंडोल बसन्त)	
१८०	हरिरिह व्रजयुवतीशतसंगे	४२३
	(७२)	
	राग बसन्त (पंचम अंग)	
१८१	ऋतु बसन्त तरु लसन्त	४२५
१८२	जसोदा नहि बरजे	४२७
१८३	खेलत खेलत पोठी राधा	४२८
१८४	हमारे विट्ठलनाथ धनी	४२९

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
परिशिष्ट १	इस ग्रन्थमें आई हुई तालोकी मात्रा व बोल	४३१
परिशिष्ट २	प्राचीन रागमालाए	४३५
परिशिष्ट ३	द्रुपदगान शैलीकी परम्परा	४३८
परिशिष्ट ४	संदर्भ ग्रन्थसूचि	४४५
परिशिष्ट ५	(अ) पृष्ठ ३८०, पृष्ठ ७६ तथा पृष्ठ ३१४ के पदकी संचारीकी स्वरलिपि	४४७
	(ब) होरीको रसिया स्वरलिपि सहित	४४८

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	१३	रे	रे	३१४	५	-झु	झु-
१४	२	रे	रे	३१४	११	सां - -	गं रें सां
१९	१४	ध-रें सांध	ध-रें सां ध	३१४	१३	सारे-ग-रेसांरें	-गं-रें
२४	१४	मग मग	मग म ग	३२२	१४	प मप ध	प मप ध
४८	३	ध प ध	ध प ध	३२२	१७	२,-	२, क
४८	७	धनिसांनिध	धनिसांनिध	३४६	१२	प	प
४८	१०	ध	ध	३४६	१४	म - रे	म - रे
४८	१३	धसांनिधमध	धसांनिधमध	३४६	१६	नि धप	नि धप
४८	१८	ध	ध	३४६	१६	गरे ग	रेग रे
४८	२२	ध	ध	३४७	५	गरे ग	रेग रे
४९	२०	रे	रे	३४७	१३	प	प
७५	८	रे	रें	३४७	१५	गरे ग	रेग रे
८०	१०	सां	सा	३४८	५	गरे ग	रेग रे
८०	१८	ग	गं	३७१	१	गगमरे-	ग ग म रे रे
८१	९	साध-म-ध	साध-म-ध	३७७	१०	जप	जन
८१	१७	गंमं	गंमं	३७७	११	गंगं	गं गं
८१	१९	ग-सां	ग-सा	३७७	१२	रे	रें
१५५	१	ध	ध	३७८	११	ध	ध

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२०८	५	निममप	निमपप				
२२३	६	सासां	सांसां	३७८	१३	गं गं गं	गं गं गं
२३७	१९	आसावयी	आसावरी	३७९	१४	गग	ग ग
२३८	१९	ध	ध	३७९	१६	नि साग ग	नि सा ग ग
२४९	९	म	मं	३८०	७	गं गं	गं गं

अन्तराकी पहली आवृत्ति

२५५

प प प ध प	मं मप	नि नि नि	सां–सां–
क न क खं म	म रे–	क त म	नि– हो–

२५६	४	चाका	चौकी	३८१	५	गग	ग ग
२६६	१६	रें	रें	३८१	१६	गंगं	गं गं
२६८	५	रें	रें	३८२	११	गग	ग ग
२७३	१२	ते	ग	३८३	९	गंगँ	गं गं
३१३	१४	रे–सा–	रे–सा	३८४	११	गं	गं
३१४	३	–नि	नि–	३८९	११	पध	प ध
				४०९	१३	स्वर ज्ञान	स्वरज्ञान
				४०९	१६	भारखंडे	भातखंडे

वाजिंत्रोके रेखा चित्र प्रथम पंक्ति अशुद्ध पदों में शुद्ध पदोंमें

४३७ १० ❀ संग ९ पंकित ॥६॥ ❀.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ऐसी बंसी बाजी—भयो ब्रह्मनाद (पृ. १६८)

नाद—वृक्ष

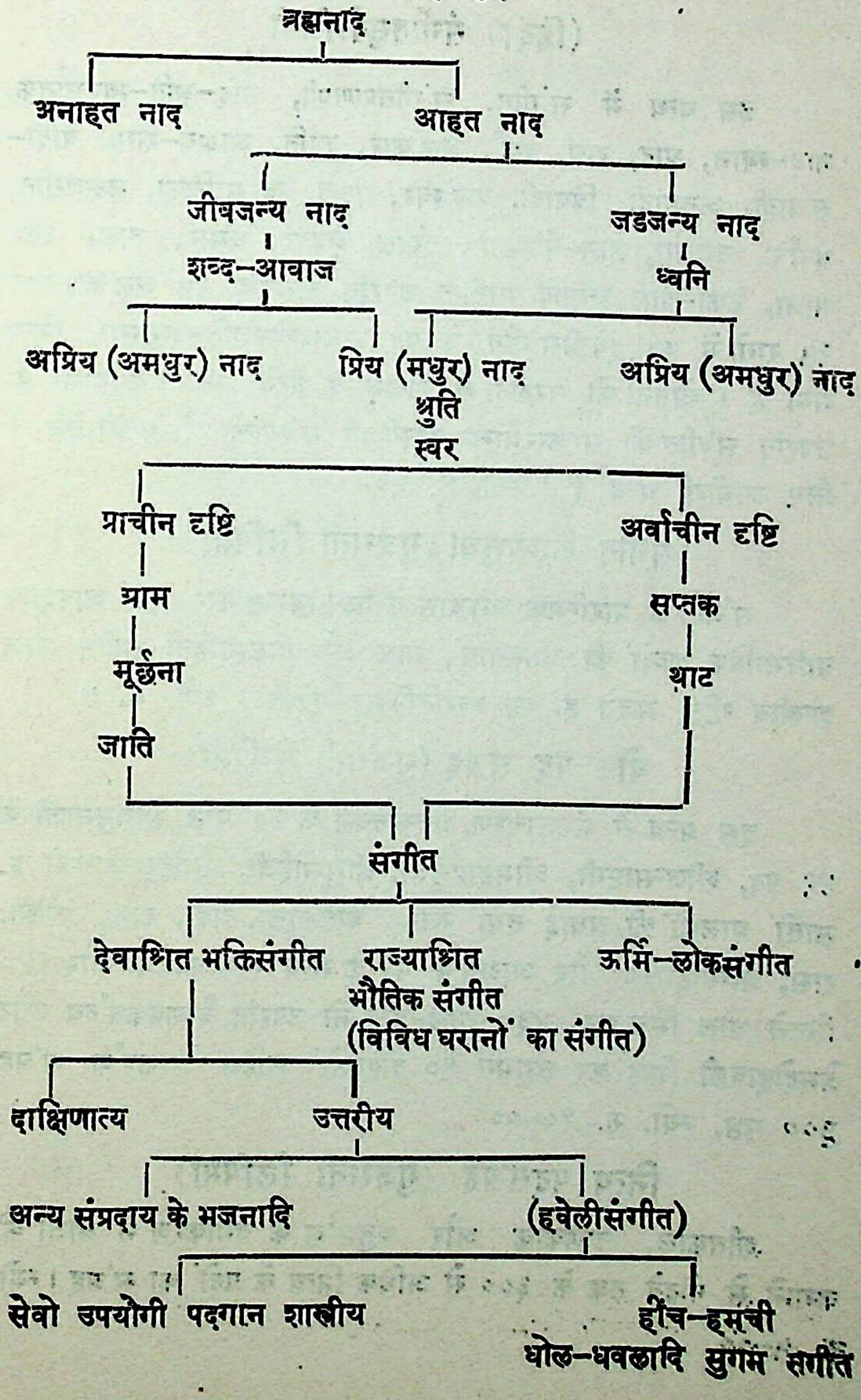

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(हिंदी) संगीतसुबोधिनी

इस ग्रन्थ में संगीत, संगीतप्रणाणी, नाद-श्रुति-स्वरसप्तक, नाद-स्थान, थाट, राग, वर्ण, अलंकार, जाति, आश्रय-राग, वादी-संवादी, अनुवादी, विवादी, वक्र स्वर, पकड़, स्वरमालिका, लक्षणगीत, पूर्वांग, उत्तरांग, तान-बोलतान, ख्याल, ध्रुवपद, धमार, ताल, लय, मात्रा, ठेका-बोल इत्यादि माहीती उपरांत तालबद्ध १५ अलंकार तथा १५ रागो में ७५ हवेलीसंगीत के पद भातखण्डेपद्धति-अनुसार किया गया है। कीर्तनो को सरलता से शीखने के लिये अत्यन्त उपयोगी है, उपरांत संगीत की सरकारमान्य कीसी भी संस्थाकी परीक्षा भी देने के लिए उपयोगी ग्रन्थ है। न्यो. रु. २०-००

संगीत काव्यसुधा (गुजराती लिपिमां)

संगीत के प्रारम्भिक अभ्यास के लिए स्वरालंकार एवं आवश्यक पारिभाषिक शब्दों की व्याख्याएं, ताल और तालमाहिती सहीत सरल शास्त्रीय गीत, भजन इ. का स्वरलिपिबद्ध संग्रह। न्यो. रु. ४

धोळ-पद संग्रह (गुजराती लिपिमां)

इस ग्रन्थ में मंगलाचरण, नित्यनियम के १० पाठ, श्रीयमुनाजी के ४१ पद, श्रीजन्माष्टमी, श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगुसांईजी, श्रीगोकुलनाथजी इ. सातों बालकों की बधाई तथा पलना, बाललीला, ढाढी, दान, सांझी, रास, व्रजमाहात्म्य और आश्रय के पद के साथ २२५ कीर्तनों और २४० जितने धोल मिल कर ४३५ धोल-कीर्तनो उपरांत वैष्णवकर्तव्य और प्रेमदोहावली मिल कर लगभग ९० दोहाओं सहित आकर्षक संग्रह ३०० पृष्ठ, न्यो. रु. १०-००

नित्य पदसंग्रह (गुजराती लिपिमां)

शीतकाल, उष्णकाक और चतुर्मास के वर्गीकरण में श्रीजी को जगाने से पोढवे तक के ३०० से अधिक नित्य के पदों का संग्रह। न्यो. रु. ५-००

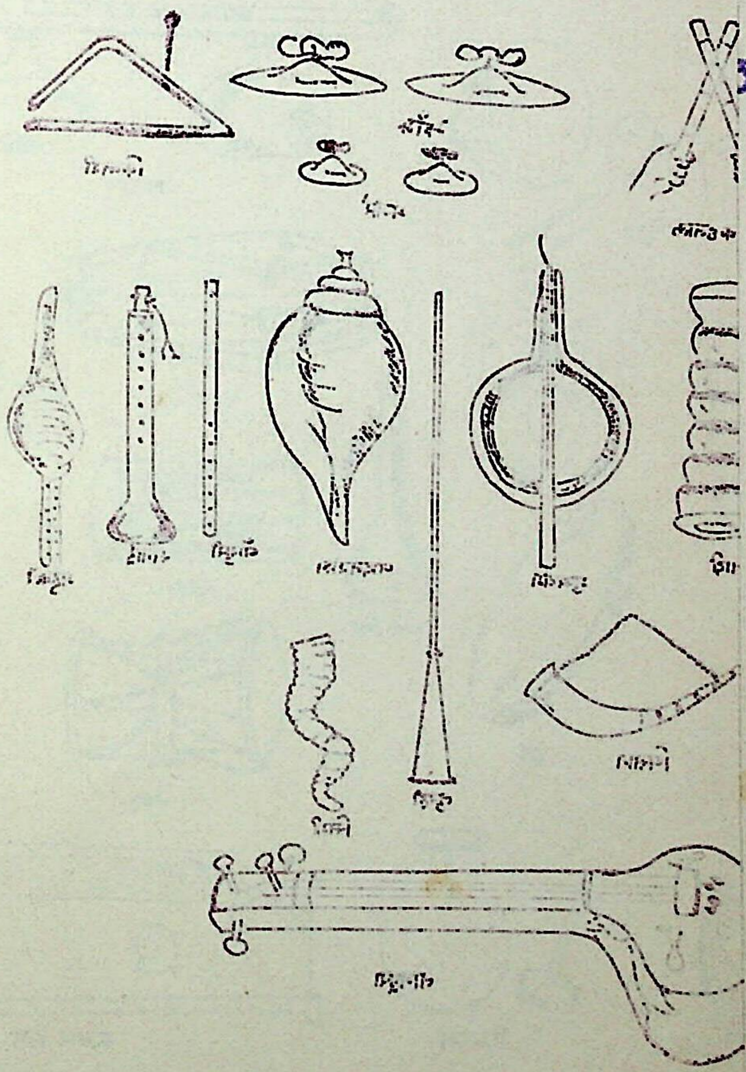

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सम्प्रदायी सेवाप्रणाली में गाये जाने वाले तदों में जिन वाद्यों के नामोल्लेख प्राप्त होते हैं तद्विषयक विवरण हम शास्त्र के प्रथम भाग खण्ड १–२ में प्रसिद्ध कर चूके हैं, जिनमें से अधिकांश वाद्यों के रेखाचित्र निम्न प्रकार अंकित किये जा रहे हैं।

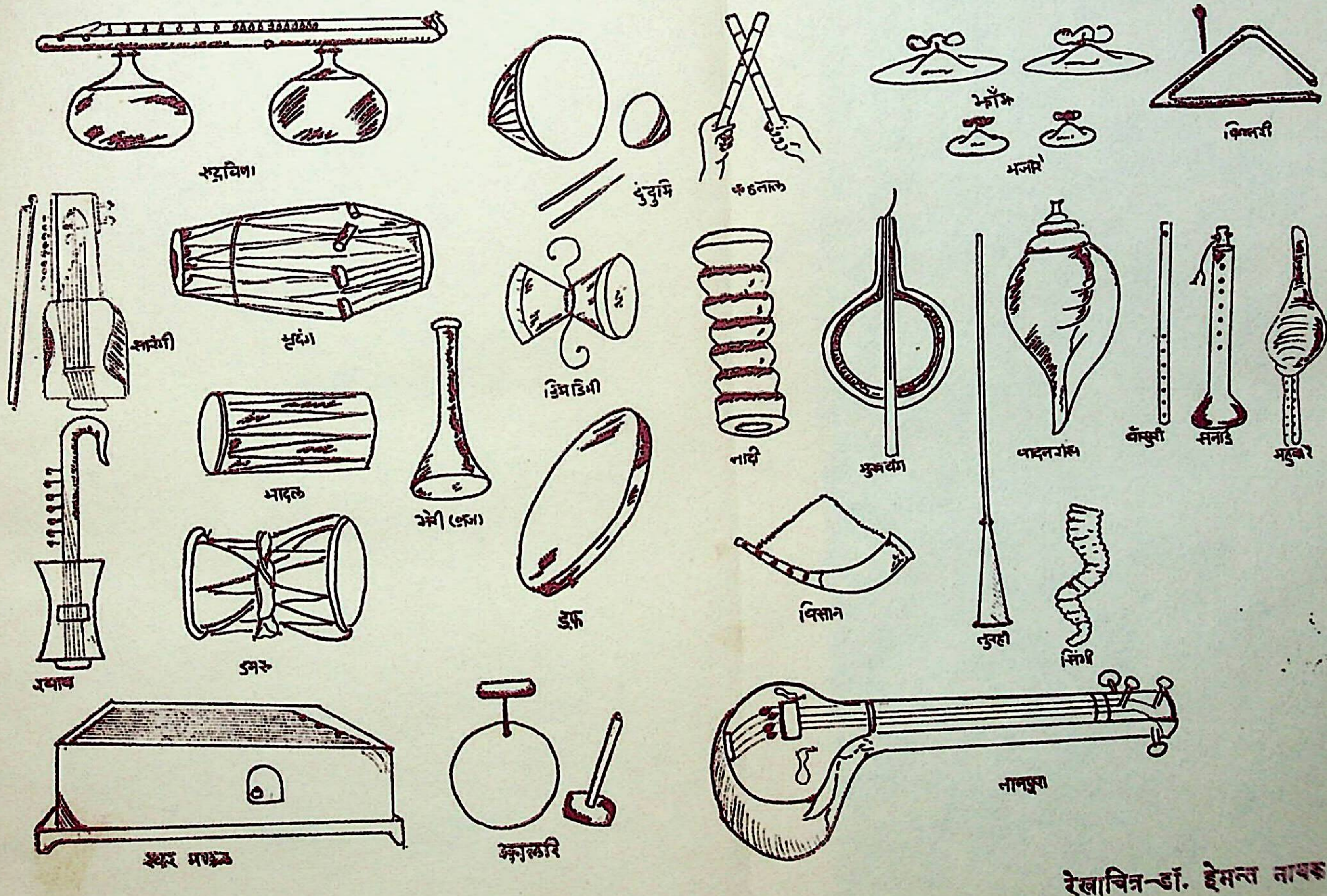

रेखाचित्र–डॉ. हेमन्त नायक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

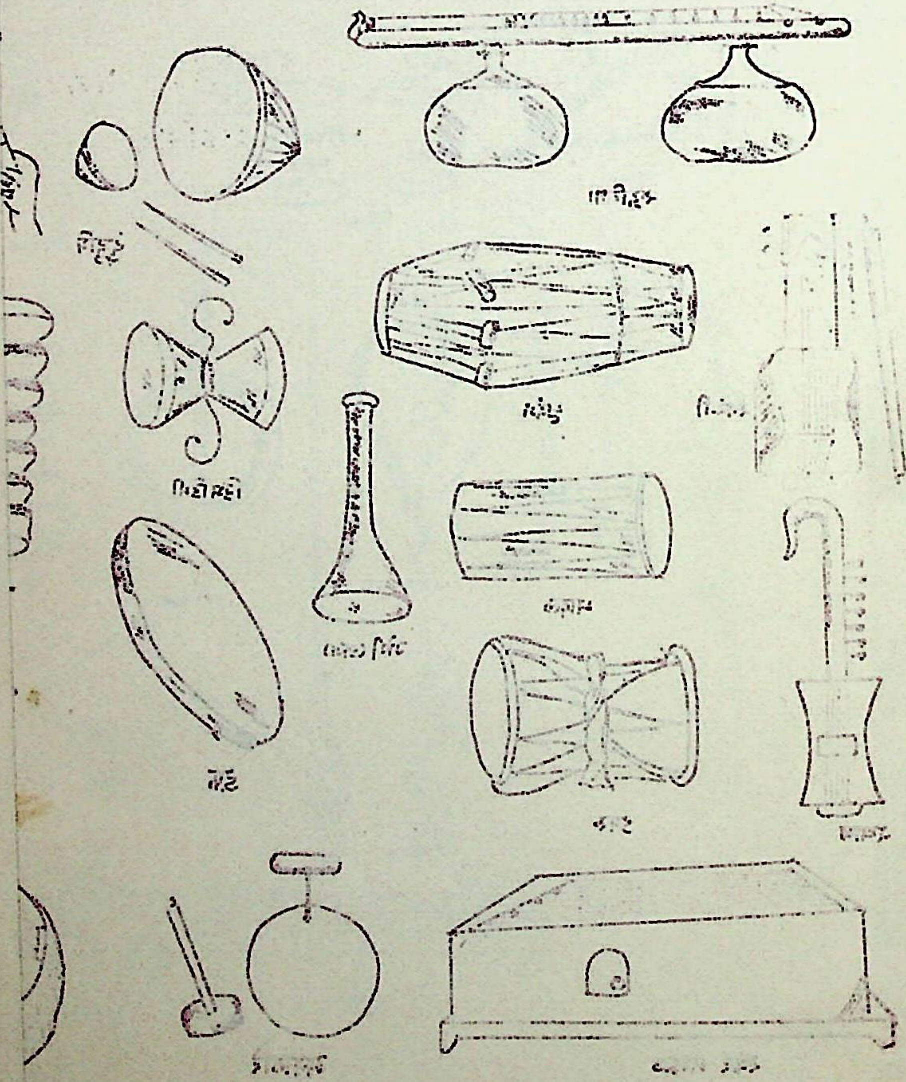

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टछापीय भक्तिसंगीत

उद्भव और विकास

आम्नाय–ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

तृतीय खण्ड

चम्पकलाल छ. नायक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी

वाराणसी-5

राग भैरव–संक्षिप्त परिचय

यह राग प्राचीन काल से अद्यावधि सुप्रचलित है। शास्त्रानुसार इसका गान-समय ब्राह्ममुहूर्त या अरुणोदय-वेला है। अन्य मतानुसार सूर्योदय के पूर्व तथा बाद का समय भी कहा जाता हैं। पुष्टिमार्गीय मन्दिरों में शीतऋतु में श्रीठाकुरजी के जगाने के समय तथा अन्य ऋतुओं में भी अरुणोदय या उसके कुछ समय पूर्व अथवा बाद में भैरव का गान-समय माना गया है। दिन का प्रथम प्रहर भी इस राग के गान के लिए प्रचार में है।

भैरव राग मुख्य छः रागों में प्रथम है तथा गायकों की चीजों में भी इसका स्थान पहला ही है। संस्कृत के सभी प्राचीन ग्रंथों में इस राग का प्रमुख रागों में समावेश किया गया है। पुष्टिमार्गीय मन्दिरों में भी प्रायः बारहों महीने प्रभुको जगाने के समय इसी राग से गान आरंभ किया जाता है।

भैरव राग की जाति सम्पूर्ण और वादी स्वर धैवत है तथा संवादी स्वर ऋषभ है। इसका थाट भैरव माना गया है। ऋषभ और धैवत स्वर कोमल कोमल तथा शेष शुद्ध हैं। कतिपय गायक कुशलतापूर्वक इस राग के अवरोह में कोमल निषाद् का प्रयोग भी क्वचित् करते हैं। भैरव राग की प्रकृति गंभीर है। ऋषभ और धैवत स्वरों पर आन्दोलन लेने से यह राग अति रंजक होता है। मध्यम से ऋषभ पर मींड लेने से इस में बहुत माधुर्य आता है। रे और ध स्वरों पर इस राग की विशिष्टता है।

पकड़ स्वर :— सा ग, म, पध, प

आरोहावरोह :— सारे, गम, पध, निसां।

सांनिध, प, मगरे, सा ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(१) सा–, रेसा–,गमरेसा–,गमध–,प–,मगरे–, सा–

(२) सारेसा–,ध–निसा–,गरे–,गमपमगरे–रे, सा–,
मप–ध–प–, ।

(३) सा–, ग– म– प–,ध– प–,निध–प–, सां–ध, निध–
प–,मपमगरे–रे,सा–,ग–मप–, ध–प– ।

(४) मप– ध–निसां–,धनिसां–, रें–सां–,सांरेंसांनिध–,मप–,
मगरेसा,ग–मप–,ध–प– ।

राग भैरव, ताल—चर्चरी (झपताल—अंग)

गाऊँ श्रीवल्लभ ध्याऊँ श्रीबल्लभ, श्रीवल्लभचरनरज़ तन लपटाऊँ ।
श्रीवल्लभसंतति नित्य प्रति निरखूँ, श्रीवल्लभदासनि दास कहाऊँ ॥
कृष्णलीलासेवा नित्य करके जगत सबें तृन तुल्य धराऊँ ।
"व्यासदास" की यही प्रतिज्ञा, श्रीगोविंदकृपा तें पाऊँ ॥

स्थायी

ध	–	ध	–	ध	प	–	प	म	–
गा	–	ऊँ	–	श्री	व	–	ल्ल	भ	–
×		२			०		३		
ग	रे	ग	म	प	म	रे	रे	सा	–
ध्या	–	ऊँ	–	श्री	व	–	ल्ल	भ	–
×		२			०		३		

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा	—	म	ग	म	प	प	प	म	म
श्री	—	व	ल्ल	भ	च	र	न	र	ज
×		२			०		३		
ध॒	ध॒	ध॒	प	ध॒	सां	—	ध॒प	मग	म
त	न	ल	—	प	टा	—	ऊँ—	—	—
×		२			०		३		

अंतरा

ध॒	—	ध॒	प	ध॒	सां	—	सां	सां	—
श्री	—	व	ल्ल	भ	सं	—	त	ति	—
×		२			०		३		
रें॒	—	रें॒	रें॒	रें॒	गं	रें॒	सां	—	—
नि		त्य	प्र	ति	नि	र	खूँ	—	—
×		२			०		३		
सां	—	ध॒	ध॒	ध॒	प	—	म	ग	म
श्री	—	व	ल्ल	भ	दा	—	स	नि	—
×		२			०		३		
ध॒	—	ध॒	प	ध॒	सां	—	ध॒प	मग	म
दा	—	स	:—	क	हा	—	ऊँ	—	—
×		२			०		३		

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

म	—	म	ग	म	प	—		म	ग	म
कृ	—	ष्ण	ली	—	ला	—		से	—	—
×		२			०			३		
ध॒	—	ध॒	—	ध॒	प	म		प	—	—
वा	—	नि	—	व्य	क	र		के	—	—
×		२			०			३		
सां	सां	ध॒	—	ध॒	प	—		म	—	म
ज	ग	त	—	स	वे	—		तृ	—	न
×		२			०			३		
ग	रे॒	ग	म	प	म		ग	रे॒	—	सा
तु	—	ल्य	—	ध	रा		—	ॐ	—	—
×		२			०			३		

‘आभोग’ अंतरानुसार

राग—भैरव, ताल—चौताल

जै जै जै श्रीवल्लभ प्रभु विट्ठलेस साथे ।
निज जन पर करत कृपा धरत हाथ माथें ॥ध्रु॥
दोस सबे दूर करत भक्तिभाव हियें धरत,
काज सबे सरत सदा गावत गुन—गाथें ॥१॥
काहेकों देह दमत साधन कर मूरख जन,
विद्यमान आनंद तजि चलत क्यों अपाथें ।
‘रसिक’ चरन-सरन सदा रहत हैं भडभागि जन,
अपनों कर गोकुलपति भरत ताहिं बाथें ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

ध —	ध ध	— प	ध प	म ग	म म
जै —	जै जै	— श्री	व ल्ल	भ प्र	— भु
×	०	२	०	३	४
रे —	रे ग	म प	म ग	म रे	— सा
वि —	ठ्ठ ले	— स	सा —	— थैं	— —
×	०	२	०	३	४
सा सा	ध ध	सा सा	रे रे	रे रे	सा —
नि ज	ज न	प र	क र	त कृ	पा —
×	०	२	०	३	४
सा सा	म ग	म प	म ग	रे ग	म प
ध र	त हा	— थ	मा —	— थैं	— —
×	०	२	०	३	४

अंतरा

प —	प ध	— ध	नि सां	सां नि	सां सां
दो —	स स	— बे	दू —	र क	र त
×	०	२	०	३	४
ध —	ध नि	सां सां	रें रें	— सां	ध प
भ —	क्ति भा	— व	हि यें	— ध	र त
×	०	२	०	३	४

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध॒	प	म	प	—	प	ध॒	ध॒	ध॒	नि	सां	—
का	—	ज	स	—	बे	स	र	त	स	दा	—
×		०		२		०		३		४	
रें॒	सां	ध॒	प	म	प	म	ग	रे॒	ग	म	प
गा	—	व	त	गु	न	गा	—	—	थें	—	—
×		०		२		०		३		४	

संचारी

म	—	प	—	—	प	ध॒	—	ध॒	ध॒	प	प
का:	—	—	हे	—	कौं	दे	—	ह	द	म	त
×		०		२		०		३		४	
प	—	ध॒	ध॒	नि	नि	सां	नि	ध॒	प	—	प
सा	—	ध	न	क	र	मू	र	ख	ज	—	न
×		०		२		०		३		४	
म	ग	रे॒	ग	म	प	म	ग	रे॒	रे॒	—	सा
वि	—	द्य	मा	—	न	आ	नं	द	त	—	ज
×		०		२		०		३		४	
सा	सा	सा	म	—	म	प	—	—	ध॒	प	—
च	ल	त	क्यों	—	अ	पा	—	—	थें	—	—
×		०		२		०		३		४	

आभोग

प	प	प	ध	ध	ध	नि	सां	सां	रें	सां	—
र	सि	क	च	र	न	स	र	न	स	दा	—
×		०		२		०		३		४	
ध	ध	ध	नि	सां	सां	रें	—	सां	ध	—	प
र	ह	त	है	ब	ड	भा	—	गि	ज	—	न
×		०		२		०		३		४	
ध	प	म	प	—	प	ध	ध	ध	नि	सां	सां
अ	प	नो	क	—	र	गो	कु	ल	प	—	ति
×		०		२		०		३		४	
ध	प	म	ग	म	प	म	ग	रे	ग	म	प
भ	र	त	ता	—	हि	बा	—	—	थैं	—	—
×		०		२		०		३		४	

राग भैरव, ताल—धमार

तुम बेगि श्याम भले आये हो, होरी खेलत रंग भरी ।
चोवा चन्दन और अरगजा, केसर गागरि भरि ढोरी ॥१॥

उडत गुलाल लाल भये बादर, पिचकाइन लगी झरी ।
'सूरदास'प्रभु तुम बहुनायक, चेरी व्है पाँयन परी ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

ग म प —	ध̲ — — ध̲ —	प —	म म —
तु — म —	वे — — गि —	स्या —	— म —
३	×	२	०
ग — म प	म — — ग —	म —	रे̲ — —
भ — ले —	आ — — — —	— —	ये — —
३	×	२	०
सा — — —	सा रे̲ — ग —	म —	प — —
हो — — —	हो — — री —	— —	खे — —
३	× ×	२	०
ध̲ — ध̲ —	सां — — ध̲ —	प —	प म —
ल — त —	रं — — ग —	भ —	री — —
३	×	२ —	०

अंतरा

ध̲ — — ध̲ —	नि —	सां — —	सां — सां —
चो — — वा —	— —	चं — —	द — न —
×	२	०	३
सां — — गं —	मं —	रें̲ रें̲ —	सां — — —
औ — — र —	अ —	र ग —	जा — — —
×	२	०	३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें — — सां —	नि —	ध — —	म — ग —
के — — स —	र —	गा — —	ग — रि —
×	२	०	३

ध ध नि सां —	ध —	प म —	ग म प —
भ री — — —	ढो —	री — —	तु — म —
×	२	०	३

संचारी

सा रे — ग म	प —	प — —	प — ग म
उ ड — त —	गु —	ला — —	ल — ला —
×	२	०	३

ध ध — ध —	प —	ग म —	प — प —
— ल — भ —	ये —	बा — —	द — र —
×	२	०	३

ग ग — म —	— —	ग रे —	रे — सा —
पि च — का —	— —	इ — —	न — — —
×	२	०	३

ध — — सा रे:	ग म	प म —	रे — सा —
ल — — गा —:	— झ	री — —	— — — —
×	२	०	३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग भैरव, ताल—धमार

एरी व्रज खेलत धमार प्यारो नंद को ।
संग बनी गोपी ओपी कहिन परत कछु प्रगट्यो है
सार सब छंद को ॥१॥

बाजत बाँसुरी चंग उपंग डफ बाढ्यो उर आनंद को ।
'नंददास'प्रभु प्रिय प्यारी को कौतिक देखि गयो
गर्व मैन चंद को ॥२॥

स्थायी

म		म	
ग	म	प	प
ए	री	ब्र	ज
३			

नि			नि										
ध	—	—	ध	—	प	म	गम	प	—	म	ग	म	—
खे	—	—	ल	—	त	—	ध—	मा	—	र	—	—	—
×					३		०			३			

ग							ग			म			
रे	—	—	सा	—	नि	सा	रे	—	सा	ग	म	प	प
प्या	—	—	रो	—	नं	—	द	—	को	ए	री	ब्र	ज
×					२		०			३			

अन्तरा

म नि			
प — — ध —	— नि	सां — —	नि सां सां —
सं — — ग —	— ब	नी — —	स — ब —
×	२	०	३
ध — — नि —	सां —	रें — सां	नि सां ध प
गो — — पी —	ओ —	पी — क	हि न — प
×	२	०	३
नि सां		नि	
प ध — नि नि	सां सां	ध — ध	प म गम प
र त — क छु	प्र ग	टचो — हे	सा — — इ
×	२	०	३
		ग	म
म ग म रे —	सा —	रे — सा	ग म प प
स ब — छँ —	द —	को — —	ए री ब्र ज
×	२	०	३

राग—भैरव, ताल—तीव्रा

लालन जागो हो भयो भोर ॥
बिकसे कमल बिमल बानी सब, बोलन लागे पंछी चहुँओर ॥२॥
दूध दही पकवान्न मिठाई, लीजे माखन रोटी बोर ॥
'रसिक' प्रीतम सों कहत नंदरानी, उठि बैठो हो नंदकिशोर ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

ग म	प मप	ध – प	मग रे	ग म	रे – सा
ला –	ल न–	जा – गो	हो– –	भ या	भो – र
२	३	×	२	३	×

अन्तरा

ध ध ध	नि नि	सां सां	रें रें सांरें	गं रें	सां सां
विकसे	क म	ल वि	म ल बा-	नी –	स व
×	२	३	×	२	३
सां सां सां	ध –	प म	ध – –	नि सां	ध प
बो ल न	ला –	गे –	पं – –	छी –	च हुं
×	२	३	×	२	३
गम प म	ग म	पम प			
ओऽ – र	ला –	ल न			
×	२	३			

संचारी

ध ध ध	प –	ग म	ध ध प	गम गम	प –
म धु मे	वा –	प क	वा न मि	ठा- - -	इ –
×	२	३	×	२	३
ध – प	ग म	प प	म ग म	रे –	सा –
ली - जे	मा –	ख न	रो – टी	बो –	र –
×	२	३	×	२	३

'आभोग' अन्तरानुसार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग–भैरव ताल–चौताल

छगन मगन प्यारे लाल कीजिये, कलेवा ।
छींकेते सगरी दधि उखल चढ़ि काढ़ि धरी,
पहरि लेहो झगुली फेंट बांधि लेहो मेवा ॥२॥
ग्वालन संग खेलन जावो खेलन मिस भूख न लागे,
कौन परी प्यारे लाल निसदिना की टेवा ।
'सूरदास मदनमोहन' घर ही क्यों न खेलो ललन,
देहों चकडोर बंगी हंस मोर परेवा ॥२॥

स्थाया

ध	ध	ध	प	प	म	गम	प	ग	म	–	म
–	–	–									
छ	ग	न	म	ग	न	प्या–	–	रे	ला	–	ल
×		०		२		०		३		४	
ग	रे	रे	ग	म	प	मग	म	ग	रे	–	सा
	–	–					म		–		
की–		जि	ये	–	क	ले–	–	–	वा	–	–
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

ध	–	ध	–	प	ध	नि	नि	सां	सां	–	सां
–		–			–						
छीं	–	के	–	तें	–	स	ग	री	द	–	धि
×		०		२		०		३		४	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें	रें	रें	रें	—	सां	सांरें	ग	रें	सां	सां	—
उ	ख	ल	च	—	ठि	का—	—	ठि	ध	री	—
×		०		२		०		३		४	
सां	सां	सां	नि	ध	प	ध	ध	ध	प	ग	म
प	ह	रि	ले	—	हो	क्ष	गु	ली	फं	—	ह
×		०		२		०		३		४	
सां	—	नि	ध	—	प	ध	प	म	ग	गम	प
वां	—	धि	ले	—	हो	मे	-	—	वा	- -	—
×		०		२		०		३		४	

संचारी

सां	—	सां	सां	नि	ध	प	नि	ध	प	—	प
ग्वा	—	ल	न	सं	ग	खे	ल	न	जा	—	वो
×		०		२		०		३		४	
ध	—	ध	ध	प	ध	नि	नि	सां	ध	—	प
ख	—	ल	न	मि	स	भू	ख	न	ला	—	मै
×		०		२		०		३		४	
ग	म	ग	रे	ग	प	म	ग	म	रे	—	सा
कौ	—	न	प	री	—	प्या	—	रे	ला	—	ल
×		०		२		०		३		४	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग प्रभात या प्रभात भैरव : संक्षिप्त परिचय

अष्टछाप-संगीत-परम्परा में कहीं-कहीं 'प्रभात' राग का उल्लेख भी मिलता है, जिसे 'प्रभात भैरव' भी कहा जाता है। प्राचीन ग्रंथों में इसका वर्णन नहीं है, किन्तु यह राग पन्द्रवीं शताब्दी (विक्रम) में प्रचलित था। भक्त नरसिंह के पदों में तथा भवाई वंशों की गरबियों में, उस समय की परम्परा का यह राग, गत शताब्दी तक ठीक प्रकार से प्रचार में था। सोलहवीं शताब्दी में अष्टछाप के सूरदास द्वारा रचित 'सूर-सारावली' में 'राग प्रभात प्रभात ही गायो' इस उल्लेख के द्वारा प्रभात राग को मान्यता दी गयी हैं। गत शताब्दी के कीर्तनकारों के मतानुसार अष्टछाप परम्परा में इस राग में खंडिता के पद भी गाये जाते थे। कीर्तनकारों की हस्तलिखित पोथियों में भी कहीं-कहीं इस राग का नामोल्लेख मिलता है। इसे शुद्ध रूप से गानेवाले नहीं मिलते फिर भी हवेली संगीत के मान्य रागों में स्वीकृत होने के कारण इसका विवरण दिया जा रहा है।

प्रभात नामकरण ही इसका गान-समय प्रातःकाल होने का संकेत करता है। भैरव का ही प्रकार होने से थाट भैरव सुप्रसिद्ध है। इसकी जाति सम्पूर्ण है। इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी षड्ज हैं। इस राग में किंचित् तीव्र मध्यम लगता है। शुद्ध मध्यम की अवरोह की संगति में तीव्र मध्यम का क्वचित् प्रयोग होता है; वहाँ ललितांग का कुछ भास होता है। शुद्ध मध्यम पर मुकाम सुन्दर दिखाई देता है। स्वर रे, ध कोमल, मध्यम दोनों का प्रयोग यथा-वसर होगा।

उठाव का चलन—ग म ग, रे, सा, रे सा, ध, नि सा,

ग, म, ध, प, म ग, रे, ग म, म

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

होरी-धमार का निम्न पद, जो प्रातःकाल मंगला दर्शन में गाया जाता है।

प्रभातभैरव—ताल चौताल

भोर भये नन्दलाल, संग लिए ग्वाल-बाल,
फेंटन भरि लिए गुलाल, बोलत मुख होरी।

केसरि भरि कलस साथ, पिचकारी लिए हाथ,
छिरकत है सौंधो बहु डारत ब्रज खोरी॥

जुवतिन के जूथ मांहि, धसि काढत पकरि बाँए,
मन में कछु सकुच नाहिं, लीने भर कोरी।

बाजत डफ मृदंग ताल, कूजत मुरली रसाल,
झुण्डन जुरि गावत बिच महुवरि धुनि थोरी॥

स्थायी

म	ग	रे	रे	ग	मम	ग	म	ग	रे	—	सा
भो	—	र	भ	ये	—	नं	—	द	ला	—	ल
×		०		२		०		३		४	
ध	—	ध	नि	सा	सा	रे	—	रे	सा	—	सा
सं	—	ग	लि	—	ये	ग्वा	—	ल	बा	—	ल
×		×		२		०		३		४	
सा	—	ग	म	ध	ध	ध	प	म	ग	म	मं
फें	—	ट	न	भ	रि	लि	ये	गु	ला	—	ल
×		०		२		०		३		४	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	—	रें	सां	ध	प	म	ग	रे	ग	म	मं
चो	—	ल	त	मु	ख	हो	—	—	री	—	—
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

म	म	प	ध	—	ध	नि	सां	नि	सां	—	सां
के	स	र	भ	—	रि	क	ल	स	सा	—	थ
×		०		२		०		३		४	
ध	ध	—	नि	सां	सां	रें	रें	सां	निसां	ध	प
पि	च	—	का	—	रि	लि	ए	—	हा—	—	थ
×		०		२		०		३		४	
म	म	म	म	प	—	ध	—	नि	सां	ध	प
छि	र	क	त	है	—	सौं	—	धो	—	ब	हु
×		०		२		०		३		४	
ध	—	रें	सां	ध	प	म	ग	रे	ग	म	मं
डो	—	ल	त	ब्र	ज	खो	—	—	री	—	—
×		०		२		०		३		४	

संचारी

सा	सा	ध	ध	ध	—	ध	—	ध	प	—	प
जु	व	ति	न	के	—	जू	—	थ	मां	—	ह
×		०		२		०		३		४	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध॒	ध॒	ध॒	—	नि	सां	ध॒	ध॒	प	म	—	म
ध	सि	का	—	ढ	त	प	क	रि	बाँ	—	ह
×		०		२		०		३		४	
ग	रे॒	ग	म	म॑	म	ग	म	ग	रे॒	—	सा
म	न	में	—	क	छु	स	कु	च	ना	—	हि
×		०		२		०		३		४	
ध॒̣	—	सा	ग	म	म॑	म	ग	रे॒	रे॒	—	सा
ली	—	ने	—	भ	र	को	—	—	री	—	—
×		०		२		०		३		४	

"अभोग अन्तरानुसार"

राग रामकली : परिचय

रामकली भैरव थाट का एक प्राचीन राग है। हवेली संगीत परम्परामें प्रातःकालीन सेवा के प्रारंभ में भैरव और रामकली ये दोनों राग अधिकतर गाये जाते हैं। आजकल इस राग में दोनों मध्यम और दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है, किन्तु अष्टछाप परम्परा की प्राचीन रामकली में भैरव के समान स्वर होते हुए भी भिन्न स्वरूप स्पष्ट होता है। भैरव में मन्द्र और मध्य सप्तक का अधिक चलन है। ऋषभ का विशिष्ट आन्दोलन एवं धैवत का बादित्व और ऋषभ आन्दोलन रहित है। इस प्रकार का उल्लेख पं. भातखंडेजी ने भी अपनी क्रमिक पुस्तक चतुर्थ में रामकली के विवरण में किया है। तदुपरान्त संगीतशास्त्र की तृतीय पुस्तक में भी निम्नानुसार उल्लेख मिलता है—" यह राग रामकली

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एक सरल परन्तु उलझन में डाल देने वाला स्वरूप सम्पूर्ण रामकली है।" रामकली में सा, म, प, स्वरों का प्राबल्य खास तौर से ध्यान खींचने वाला है। कभी यह राग भैरव के पहले और कभी पीछे गाया जाता है।

आजकल कुछ कीर्तनकार दोनों मध्यम, दोनों निषाद के प्रयोग वाली रामकली में कुछ पद गाने का प्रायत्न कर रहे हैं। यह कृत्य प्राचीन परम्परा से सुसंगत नहीं है। अंतिम ५० वर्षों से ही यह कुछ कीर्तनकारो पर आधुनिक रामकली की छाया का असर कारणभूत होना संभवित है।

रामकली में पुष्टिमार्गीय सेवा को नित्य के, बधाई के और उत्सवों के पद प्राप्त होते हैं, जिनके मंगला दर्शन के पूर्व सेवा-समय, मंगला के दर्शन के समय और तत्पश्चात् के अवसर में बारहों महीने गाने की प्रथा है।

रामकली का थाट भैरव, जाति सम्पूर्ण, वादी पंचम, संवादी ऋषभ है। स्वर रे, ध कोमल, शेष शुद्ध है। क्वचित् विवादी के नाते से निषाद कोमल का अल्प प्रयोग किया जा सकता है। रामकली का गान-समय दिनका प्रथम प्रहर है।

आरोहावरोह :-साग, मप, ध, निसां/सांनिध, प, म, ग रे सा

पकड :- धप, मप, गमप, म, रे सा

पकड (प्रकार-२) ध प, मप, धनि धपग, म, रे सा

स्वर-विस्तार :- साग, मप, पध, प, पग, म, ध, प, ग, मप, गमप, रे सा। प प ध, धसां, निसां, ध, धसां, निसां, रेंसां, निसां, ध, प, ग, मप, पध, सां, ध, निधप, मप, म, गम, रे, गमप, मरे, सा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग रामकली—ताल चौताल

देखो—देखोरी नागर नट निर्तत कालिंदीतट,
गोपिन के मध्य राजें मुकुट की लटक ॥
काछिनी किंकिनी कटि पीतांवर की चटक,
कुंडल किरन रवि रथ की अटक ॥१॥
ततथेई तत्ताथेई सब्द सकल घट,
उरप तिरप लेत पग की पटक ॥
रास में श्री राधे—राधे मुरली में येही रट,
'नंददास' गाये तहाँ निपट निकट ॥२॥

स्थायी

प	गम	ध
दे	—	खो

ध॒	—	ध॒	प	—	प	म	—	रे॒	म	रे॒	सा
दे	—	खो	री	—	ना	ग	—	र	न	—	ट
×		०		२		०		३		४	
नि़	सा	ग	म	—	प	ग	म	रे॒	रे॒	सा	—
नि	—	र्तं	त	—	का	लिं	—	न्दी	त	ट	—
×		०		२		०		३		४	
रे॒	—	सा	म	—	गम	प	—	प	ध॒	—	पध॒
गो	—	पि	न	—	के—	म	—	ध्य	रा	—	जें
×		०		२		०		३		४	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	सां	रे	सां	ध	ध	ध	प	—	प	गम	प
झु	कु	ट	की	—	ल	ट	क	—	दे	—	ख
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

प	—	प	ध	—	ध	सां	सां	—	नि	सां	—
का	—	छि	नी	—	किं	कि	नी	—	क	टि	—
×		०		२		०		३		४	
ध	ध	—	सां	—	सां	रें	सां	—	नि	सां	सां
पी	तां	—	व	—	र	की	—	—	च	ट	क
×		०		२		०		३		४	
रें	—	रें	गं	मं	रें	रें	सां	—	ध	—	प
कुं	—	ड	ल	—	कि	र	न	—	र	—	वि
×		०		२		०		३		४	
सां	सां	—	ध	—	ध	प	प	—	म	गम	प
र	थ	—	की	—	अ	ट	क	—	दे	—	खो
×		०		२		०		३		४	

संचारी

सां	सां	—	ध	—	प	ध	ध	—	प	—	प
ता	त	—	थे	—	ई	त	त्ता	—	थे	—	ई
×		०		२		०		३		४	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध॒	–	–	सां	–	सां	ध॒	ध॒	–	प	–	प
स	–	–	ब्द	–	स	क	ल	–	ध	–	ट
×		०		२		०		३		४	
म	मग	रे॒	रे॒	ग	प	म	ग	म	रे॒	–	सा
उ	र	–	प	–	ति	र	प	–	ले	–	त
×		०		२		०		३		४	
नि़	सा	–	ग	म	प	ध॒	–	–	प	–	–
प	ग	–	की	–	प	ट	–	–	कृ	–	–
×		०		२		०		३		४	

"आभोग" अंतरानुसार

राग रामकली–ताल चंपक यानि अर्धआडाचौताल

पालनें गोविंद झूलो पालनें गोविंद ॥
दधि मथों नवनीत काढ़ों, तुमकों आनंदकंद ॥१॥

कंठ कठुला ललित लटकन, भ्रकुटि मनके फंद ॥
निरखि छबि छिन–छिन झुलाऊँ, गाऊँ लीला छंद ॥२॥

द्वै दूधकी दतियाँ सुख की निधियाँ, हसत जव कुछ मंद ॥
'चत्रभुज'प्रभु जननी बलि, गिरिधरन गोकुलचंद ॥३॥

स्थायी

सां – सां	ध॒ –	प ध	सां – सां	ध॒ प	गम म
पा ऽ ल	नें ऽ	गो ऽ	विं ऽ द	झू ऽ	लोऽ ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

× २	३	४	× २	३	४
ध – ध	प –	गम पम	ग रे सा	ग म	ध –
पा ऽ ल	नँ ऽ	गोऽ ऽऽ	वि ऽ द	झू ऽ	लोऽ ऽ
× २	३	४	× २	३	४

अंतरा

ध प ध	सां –	सां सां	सांरें गंमं मं	रें –	सां –
द धि म	थौं ऽ	न व	नीऽ ऽऽ त	का ऽ	ढौं ऽ
× २	३	४	× २	३	४
सां नि सां	ध प	प ध	सां – सां	ध प	ग म
तु म कों	आ ऽ	नँ द	कं ऽ द	झू ऽ	लो ऽ
× २	३	४	× २	३	४

संचारी

सां – सां	ध प	ग म	ध ध प	ग म	प ध
कं ऽ ठ	क ठु	ला ऽ	ल लि त	ल ट	क न
× २	३	४	× २	३	४
ध प मप	म रे	सा –	सारे गम पध	प –	– –
भ्रृ कु टिऽ	म न	के ऽ	फंऽ ऽऽ ऽऽ	द ऽ	ऽ ऽ
× २	३	४	× २	३	४

'आभोग' अंतरानुसार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग रामकली—ताल चर्चरा

(प्राचीन अंग)

नंद को लाल ब्रज पालनें झूलें ॥
अलक अलकावली तिलक गोरोचना,
चरण अंगुष्ठ मुख किलकि फूलें ॥१॥
नैन अंजन रेख मेख अभिराम सुठ,
कंठ केहरि किंकिनी कटि मूलें ॥
'नंददास' नि नाथ, नंद नंदन कुंवर,
निरखि नागरि देह गेह भूलें ॥२॥

स्थायी

सा	–	ग	ग	म	प	–	प	प	ध॒
नं	ऽ	द	को	ऽ	ला	ऽ	ल	ब्र	ज
×			२		०		३		
सां	–	रें॒	सां	–	ध॒	–	प	ग	म
पा	ऽ	ल	नें	ऽ	झू	ऽ	लें	ऽ	ऽ
×			२		०		३		
ध॒	–	ध॒	म	प	प	–	प	ग	म
नं	ऽ	द	को	ऽ	ला	ऽ	ल	ब्र	ज
×			२		०		३		
ग	रे॒	रे॒	ग	प	म	ग	म	रे॒	सा
पा	ऽ	ल	नें	ऽ	झू	ऽ	लें	ऽ	ऽ
×			२		०		३		

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

प	प	प	प	ध	नि	सां	सां	सां	—
अ	ल	क	अ	ल	का	ऽ	व	ली	ऽ
×			२		०		३		
सां	रें	गं	मं	—	गं	रें	रें	सां	—
ति	ल	क	गो	ऽ	रो	ऽ	च	ना	ऽ
×			२		०		३		
रें	सां	नि	ध	—	प	—	प	ग	म
च	र	ण	अं	ऽ	गु	ऽ	ष्ट	मु	ख
×			२		०		३		
प	ध	नि	सां	—	ध	प	म	ग	म
कि	ल	क	फू	ऽ	लें	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		०		३		

संचारी

म	—	म	ग	म	प	प	प	—	प
नै	ऽ	न	अं	ऽ	ज	न	रे	ऽ	ख
×			२		०		३		
ध	—	ध	नि	सां	ध	—	ध	प	प
भे	ऽ	ख	अ	भि	रा	ऽ	म:	सु	ठ
×			२		०		३		
सां	—	सां	ध	—	ध	प	म	—	म
कं	ऽ	ठ	के	ऽ	ह	रि	किं	ऽ	कि
×			२		०		३		

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	रे	ग	गम	प	ग	म	रे	सा	—
नी	ऽ	क	टीऽ	ऽ	मू	ऽ	लें	ऽ	ऽ
×			२		०		३		

'आभोग' अंतरानुसार

राग रामकली प्रचलित प्रकार—ताल धमार

हरिजस गावत चलीं ब्रजसुंदरी, नदी जमुनाके तीर ।
लोचन लोल बांह जोरी कर, स्रवनन झलकत बीर ॥१॥
वेनी सिथिल चारु कांधे पर, कटिपट अंबर लाल ।
हाथन लिये फूलन की डलियाँ, उर मुक्तामनि—माल ॥२॥
जलप्रवेस करि मज्जन लागी, प्रथम हेम के मास ।
जासो प्रीतम होय नंदसुत, ब्रत ठान्यो इहि आस ॥३॥
तवहीं चीर हरे नंदनंदन, चढे कदम की डारि ।
'परमानंद'प्रभु वर देवेकों उद्यम कियो हे मुरारि ॥४॥

स्थायी

ग	म	पम	प	ध	ध	प	मम	मरे	गम	प	मग	मग	
ह	रि	जऽ	स	गा	व	त	चऽ	लीऽ	ब्रऽ	ज	सुंऽ	ऽ	द्
३				×					२		०		
रे	सा	नि	सा	ग	म	—	प	ध	नि	ध	प	म	प
री	ऽ	न	दी	ज	मु	ऽ	ना	ऽ	के	ऽ	ती	ऽ	र
३				×					२		०		

अंतरा

पध	प	ध	नि	सां	सां	सां	रें	रें	सांरें	गं	मं	रें	सां
लोऽ	च	न	लो	ऽ	ल	बां	ऽ	ह	जोऽ	री	ऽ	क	र
×					२					३			

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सांनि	ध	पम	प	ध	नि		ध	प	मं	प	गम	म	गम	प
स्रव	न	नऽ	झ	ल	क		त	बा	ऽ	र	ह	रि	जऽ	स
×					२									

संचारी

सां	—	नि	ध	ध	प	गम	ध	पध	प	गम	पध		प	प
बे	ऽ	नी	सि	थि	ल	चाऽ	ऽ	रुऽ	कां	धेऽ	ऽऽ		प	र
×					२					३				

मग	म	म	ग	रे	सा	सा	सारे	गम	पध	प	मं		प	—
कटि	प	ट	अं	ऽ	ब	र	लाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ल	ऽ		ऽ	ऽ
×										३				

'आभोग' अंतरानुसार
राग बिभास : संक्षिप्त परिचय

विभास राग प्राचीन एवं प्रचलित राग है। 'विभास' शब्द प्रकाशवाचक है, क्योंकि सूर्य का नाम विभावसु है। अतः इस राग का गान-समय प्रातः-काल होना सुसंगत एवं सर्वमान्य है। विभिन्न मतों के अनुसार विभास के चार स्वरूप दृष्टिगोचर होते हैं—१. विलावल, २. भैरव, ३. मारवा तथा ४. पूर्वी थाटोत्पन्न। उक्त प्रकारों में पूर्वी तथा मारवा थाटोत्पन्न विभास का प्रचार अल्प प्रमाण में होने से ये दोनों प्रकार अप्रचलित से हो गये हैं। आज 'भैरव' थाट का विभास विशेष-रूप से प्रचार में है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भैरव, पूर्वी तथा मारवा थाटोत्पन्न विभास का वर्णन पं. भातखंडे-जी ने अपने ग्रंथ में किया है । भैरव थाट के विकास का उल्लेख अन्य आधुनिक पंडितों ने भी किया है, परन्तु विलावल थाटोत्पन्न विभास वर्षों तक पुष्टिमार्गीय मंदिरों की चार दीवारों तक ही सीमित रहा । फलतः कुछ हिन्दी गायक-वादकों में ही इसका प्रयोग पाया जाता है । मुसलमान गायक भी विलावल थाट के विभास से बिन-वाकेफ नहीं रहे होंगे, किन्तु औरंगजैव के पश्चात् राज्याश्रित गायक—वादकों में इस राग से मिलते-झुलते 'देशकार' नामक रागका काफी प्रचार हो चुका था। ज्यों—ज्यों देशकार का प्रचार और प्रसार बढ़ता गया त्यों—त्यों इस विभास का प्रचार कम होता गया और दोनों रागों का स्वरूप एक—जैसा होने के कारण कुछ लोग विभास को ही देशकार के नाम से जानने लगे । स्वयं पं. भातखंडेजी ने 'भातखंडे संगीत-शास्त्र' भाग-२ के पृष्ठ-१ पर लिखा है—'मैंने एक बार एक प्रसिद्ध गायक के सामने बिभास गाया था । उसने उसको 'देशकार' कहा, यह मुझे स्मरण में है।' इस प्रकार विभास को देशकार समझने वालों की संख्या बढ़ जाने से इस प्राचीन विभास का स्थान देशकार ने ले लिया । ऐसी स्थिति में अष्टछाप—परंपरा के विभास की चर्चा करना मैंने अपना कर्त्तव्य समझा है।

विलावल थाट का यह प्राचीन विभास विशेषतः अष्टछाप की परंपरा में ही दृष्टिगत होता है । विगत लगभग पांचसो वर्षों से यह राग उस परंपरा में प्रयुक्त हो रहा है । मंदिरों तथा हवेलियों के बाहर लगभग दोसों वर्षों से प्रचार में है । संभवतः पुष्टि—संप्रदाय की पीठों के अधि-ष्ठाता श्रीनाथजी का स्वरूप और तृतीय गृह की पीठ के श्री द्वारकाधीश व्रज से पधारने से पश्चात् ही अधिकतर गुजरात महाराष्ट्र के गायकों ने शुद्ध विभास को अपनाया है तथा कुछ पंडितों ने अपने ग्रंथों

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

में भी उसका उल्लेख किया है। 'संगीत–कलाधर' (मुद्रित सन् १९०१) नामक बृहद् ग्रंथ के रचयिता गुर्जर पंडित ने विभास के स्वर इस प्रकार बताये हैं –सा, रे, ग, प, ध, सां। ये सब बिलावल थाट के हैं। म–नि वर्ज्य हैं। 'मूलाधार' (मुद्रित सन् १९०१) के ग्रंथकार ने भी सा, रे, ग, प, ध, सां स्वर शुद्ध ही बताये हैं। स्वरलिपि-सहित कुछ चीजें भी प्रकाशित की हैं और हिन्दुस्तानी विभास अथवा कर्नाटक के मोहन राग का नामोल्लेख किया है। सन् १९२० के लगभग श्री गणपतराव बर्वे द्वारा लिखित 'गायन-वादन पाठमाला' पुस्तक में शुद्ध विभास को देशकार से भिन्न बताकर सा, रे, ग, प, ध, सां स्वर शुद्ध बताये हैं। 'संगीत-शास्त्र' नामक ग्रंथ के कवि राजकवि नथुराम ने भी विभास के शुद्ध रूप का काव्यात्मक वर्णन भिन्न–प्रकार किया है–
म–नि त्याग करि स–प शुद्ध करि स्वर तीव्र रि ग ध सुधारना।
सुप्रसिद्ध पं. आदित्यरामजी ने विभास का वर्णन करते हुए लिखा है कि 'यहां निषाद–मध्यम वर्ज्य है यह ओढव रूप है, स्वर–मिलाप में शुद्ध थाट है, शान्त रस है और सूर्योदय के अव्वल उसका गाने का समय है।' पं. दामोदर मास्टर–रचित 'गायन–संग्रह' ग्रंथ (सन् १९१३) में निम्न उल्लेख किया गया है–' सा, रे, ग, प, ध, : सां। सां, ध, प, ग, रे, सा। वादी ध, संवादी रे, मध्यम–निषाद वर्ज्ये, कोई कोमल 'रे–ध' कहते हैं। परन्तु आजकल 'रे-ध' तीव्र का भी उपयोग होता है। पकड़–'ग, प, ध, सां।' रस–भक्ति एवं शान्त।

भरतमत एवं हनुमतमत में 'विभास' को हिंदोल का पुत्र कहा गया है। हिंदोल का थाट कल्याण है। उस थाट में से 'म–नि' वर्ज्य करने पर उसमें से उत्पन्न होने वाले विभास के सभी स्वर शुद्ध ही रहते हैं। मध्यकाल में नाटकों के आरंभ में कुछ गीतों को राग-रागिनियों में गाने की प्रथा थी। गत शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 'संगीत–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लीलावती' नामक गुजराती नाटक विशेष लोकप्रिय था । इसमें लेखक ने 'आ भरवाडण अजब अपार दीठी' गीत पर राग विभास लिखा है । इसकी बंदिश हवेली-संगीत के विभास के स्वरूप से मिलती-झूलती है । शुद्ध विभास से मिलते हुए राग हैं भूपाली और देशकार । भूपाली का थाट बिलावल । भूपाली पूर्वांग-प्रधान राग है, जब कि शुद्ध विभास उत्तरांग—प्रधान राग हैं । भूपाली सायंकालीन राग है और शुद्ध विभास प्रातःकालीन । भूपाली के वादी-संवादी स्वर गांधार धैवत हैं और शुद्ध विभास के धैवत तथा ऋषभ । इस भेद को ध्यान में रखने से भूपाली से शुद्ध विभास की भिन्नता समझ में आ जाती है । फिर भी दोनों राग गाते समय एक—दूसरे से भिन्न रखने में सावधानी रखना आवश्यक है । देशकार का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में नहीं है । तेरहवीं शताब्दी के महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'संगीतरत्नाकर' में भी इसका वर्णन नहीं मिलता है । मध्यकालीन कुछ ग्रंथों में उल्लेख अवश्य मिलता है । ग्रंथों के अनुसार देशकार षड्ज अंश (वादी) तथा—आदि-अंत (ग्रहन्यास) भी षड्ज स्वर है । संपूर्ण जाति है, संध्याकाल में गाया जाता है । मध्यम-निषाद दोनों स्वरों पर कंपन होता है । पं. सोमनाथ ने इसी ग्रंथ में रामक्री मेल का वर्णन इस प्रकार किया है :—

शुचिरामक्रीमेले मृदुमय तीव्रतम म मृदुसा शुद्धम् ।
सरिपधम..........(रागविनोदे)

अर्थात् शुद्ध रामक्री थाट में मृदु 'म' (तीव्र), तीव्रतम 'म'

* सांशाद्यंतोऽन्हौंतः कम्प्रमनिदेशकृत्पूर्णाः ।

और मृदु 'सा' (तीव्र नि) विकृत है ! 'सा, रे, प, ध' स्वर शुद्ध हैं । 'राग—विबोध' ग्रंथ का वह रामक्री—मेल अपना आधुनिक पूर्वी थाट होगा, जिसका स्वरूप निम्न—प्रकार बताया गया है :—

सां सां, नि ध प, प ध प, ग प ध, सां ध प, प प ध ग प, गरे सा, सा रे सा, ग प ध प, ग रे सा । म ध सां, सां नि ध,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां गं मं गं रें सां, सां रें सां, रें रें सां, नि ध, नि ध प, ग ध

ध सां सां नि ध प ध ध प, ग प ध प, ग रे सा ।

उपर्युक्त स्वरूप के संबंध में पं. भातखंडेजी ने अपना मत लिखा है कि "इस प्रकार का देशकार कान को खराब नहीं लगता हैं । इस प्रकार का देशकार कभी तुमको दृष्टिगोचर होनेवाला नहीं है, ऐसा मैं कहता नहीं हूँ ।"

'संगीत–रागतरंगिणी' में देशकार का थाट गौरी माना गया है । तोडी मेल के गांधार स्वर में दो श्रुतियां मध्यम की ली जाएं और काकलीनिषाद लिया जाए, तो 'गौरी' थाट होता है:। इस गौरी थाट में से मालव, श्री, गौरी एवं 'देशकार' उत्पन्न होता हैं । तोडी थाट (जो अपना आधुनिक भैरवी थाट है) में गांधार–निषाद तीव्र हो जाने से आधुनिक भैरव थाट बन जाता है । अतः इस ग्रंथकार से देशकार का स्वरूप भैरव थाट का होना स्पष्ट होता है ।[१]

'अनुपविलास' ग्रन्थ में भावभट्ट पंडित ने देशकार में तृतीय गति 'नि, ग, म' कहकर उसके समप्रकृतिक रागों का उल्लेख किया है, जिनमें विभास भी एक है । देशकार को उसने संपूर्ण जाति का तथा पूर्वी थाटोत्पन्न माना है ।

'संगीतदर्पण' में उसकी जाति संपूर्ण, षड्ज ग्रह, अंश प्रथम मूर्च्छना तथा वेराटी–मिश्रित कहा गया है । वेराटी का थाट पूर्वी होने

(१) देशी तोडी देशकारो गोरी रागेषु सत्तमैः ।
तृतीयगतिनिगमा देशकारस्य मेलके ।
देशकारश्रावणीयदेशी ललितदीपकौ ॥
विभासो जयतश्रीश्च संभवत्यन्यमेलतः ।
देशिकारोऽपवराह्णे स्यात् सात्रः संपूर्णको भवेत् ॥ (पृष्ठ १६४)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

से देशकार का थाट भी पूर्वी माना गया है। 'संगीतपारिजात' में कहा है-'देशकार्या ग नि तीव्रधाँशोह्यादि कमूर्च्छान्तः॥ ३३२.५ अर्थात् देशकार में गांधार-निवाद दोनों तीव्र धैवत स्वर अंश तथा धैवत आदिक मूर्च्छान्त हैं, यथा-'ध, नि, सा, रे, ग, म, प। प, म, ग, रे, सा, नि, ध आदि। इसी ग्रंथ के पृष्ठ १३४ पर लिखा है :

भूपाल्यारोहणं देश्यां कृत्रिमधावरोहणम्। प नी तत्र चुनम्चौ लौ द्वावेतौ चौनवोदनवौ॥ सं. वि. अर्थात् देशी-देशकारी में भूपाली का (मध्यम-निषादहीन) आरोहण और अवरोहण में ऋषम-धैवत दोनों कोमल कर दिए जाते हैं। 'प ग' की पुनरुक्ति होती है। यह दोनों और से औडुव-औडुव रहती है। अतः आरोहावरोह-स्वरूप इस प्रकार होगा- सा, रे, ग, प, ध, सां,। सां ध प ग प ग रे सा। पूर्वी के मेल में मध्यम चढ़ी तथा ऋषभ-धैवत कोमल लगाकर रात्रि के चतुर्थ प्रहर में इसके गीत पंडित लोग गाते हैं। इस आधार पर तीव्र मध्यम का संपूर्ण पूर्वी थाट होता है। देशकार में निषाद वर्जित है। मध्यम तीव्र लगता है और ऋषभ कोमल, शेष स्वर शुद्ध। षाडव जाति है और यह दिन के उत्तरार्द्ध में गाई जाती है। इस आधार से 'सा रे ग म प ध सां' स्वर बनते हैं। अर्थात् पंचम-सहित मारवा थाट का स्वरूप बनता है। मुसलमान घरानों में गाए जानेवाले भैरव थाटोत्पन्न विभास के स्वरूप का समर्थन करने वाले ग्रन्थों में पं. भातखंडेजी ने केवल 'लक्ष्यसंगीत' 'कल्पद्रुमांकुर' एवं 'रागचंद्रिका' के नाम गिनाए हैं। परन्तु ये तीनों ग्रन्थ आधुनिक काल की कृतियां हैं।

---

(२) देशकारी सुसंपूर्णषड्जन्यासग्रहांशिका।
मूर्छन्ती प्रथमा ज्ञेया वेराटीमिश्रिता भवेत्॥ (अ. २, श्लोक. ७)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मध्यकालीन ग्रन्थकारों में किसी ने आधुनिक देशकार के स्वरूप का वर्णन नहीं किया है, यह उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है। अठारहवीं शती के पूर्व जो देशकार पूर्वी अथवा मारवा थाट के स्वरों में गाया जाता था, उसका स्वरूप विलावल थाट में कैसे परिवर्तित हुआ, यह विचारणीय है। पं. भातखंडेजी ने 'क्रमिक पुस्तक-मालिका' भाग-४ में देशकार की अधिकांश चीजें 'चतुर' 'मनरंग' और 'हररंग' छाप की दी हैं। 'चतुर' छापवाली पं. भातखंडेजी की रचना है। अष्टछाप-घराने के 'विभास' राग की दो चीजें भी उसमें दी गई हैं।

यदि आज के संगीत-शोधकर्ता पूर्वी और मारवा थाट के लुप्तप्राय देशकार को अथवा षाड़व जाति के (ग वर्ज्य) प्रकार को अथवा संपूर्ण जाति के प्रकार को प्रचार में लाने का प्रयत्न करेंगे तो देशकार की परंपरा को पुनर्जीवन प्राप्त होगा। चार-चार प्रकार के विभास के स्थान पर बिलावल थाट और भैरव थाट के विभास तथा पूर्वी और मारवा थाट के देशकार का प्रचार होने पर दोनों के दो-दो प्रकारों की एक उत्तम परंपरा प्रवर्तमान होगी।

भारतीय संगीत में घरानों के पारस्परिक मतभेद के कारण दो स्वरूप दिखाई देनेवाले और भी कुछ राग हैं, जैसे-ललित, वसंत, अडाना, नायकी आदि। किन्तु एक राग के चार-चार स्वरूपों को चार घरानों की परंपरा से जोड़कर इन मतों को स्वीकार करना हमारी समझ में नहीं आता। न कोई आज का प्रबुद्ध संगीतज्ञ इसे पसंद करेगा। बिलावल थाटोत्पन्न अष्टछाप के परंपरागत विभास को प्राचीन मानकर इसी को सर्वप्रथम स्थान दिया जाना चाहिए। विशेष प्रकार में होने के कारण भैरव थाटोत्पन्न विभास को भी उसके बाद का स्थान दिया जा सकता है। प्रकारों का प्रचलन ही वांछनीय हो सकता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बिलावल थाटजनित विभास राग का स्वरूप निम्न प्रकार है। 'म नि' वर्ज्य होने से जाति औडुव। वादी–संवादी धैवत तथा ऋषभ। गायन–समय प्रातःकाल। प्रकृति शीतल एवं शान्त होने से फाल्गुन से ज्येष्ठ मास तक गाया जाता है। प्रायः मंगला–आरती के तथा खंडिता के पद गाए जाते हैं। अष्टछाप के कवि श्री चतुर्भुजदास-रचित प्रथम मंगला–आरती का ध्रुवपद स्वरलिपि–सहित नीचे दिया जा रहा है।

राग का आरोहावरोह–स्वरूप :–

सा रे ग प ध सां। सां ध प ग रे सा ॥

पकड़ : सां, ध, प, ग, रे, सा।

राग–विभास, ताल–चौताल

रतनजटित कनकथाल, मध्य सोहे दीपमाल,
अगर आदि चंदन सों अति सुगंध मिलाई।

घनन–घनन घंटा घोर, झनन–झनन झालर झकोर,
ततथेई–ततथेई बोलति, ब्रज की नारि सुहाई ॥

तनन–तनन तान मान, राग–रंग सुर बंधान,
गोपी सब गावत हैं, मंगल वधाई।

'चतुर्भुज'–गिरिधरनलाल, आरती बनी रसाल,
तन–मन–धन वारति हैं जसुमति नंदराई ॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सा	ध	ध	ध	ध	प	ग	ग	ध	ध	–	ध
र	त	न	ज	टि	त	क	न	क	था	ऽ	ल

सां	—	ध	प	—	प	ध	प	प	ग	रे	सा
म	ऽ	ध्य	सो	ऽ	हे	दी	ऽ	प	मा	ऽ	ल
		सा									
सा	सा	ध़	सा	—	रे	ग	ग	प	प	ध	—
अ	ग	र	आ	ऽ	दि	चं	ऽ	द	न	सो	ऽ
ध						प					
सां	ध	सारें	सां	ध	प	ग	प	ध	प	गरे	सा
अ	ति	सुऽ	गं	ध	मि	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ईऽ	ऽ

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
प	प	ग	प	ध	ध	सां	सां	—	सां	—	सां
घ	न	न	घ	न	न	घं	टा	ऽ	घो	ऽ	र
सां											
ध	ध	सां	सां	रेंरें	सांरें	गं	रें	सां	ध	—	प
झ	न	न	झ	नन	झाऽ	ल	र	झ	को	ऽ	र
प	ग	प	प	ध	ध	सां	—	ध	सां	रें	सां
त	त	थे	ई	त	त	थे	ऽ	ई	बो	ल	ति
सां	रेंगं	रें	सां	ध	प	ध	प	ग	प	गरे	सा
ब्र	ज	की	ना	ऽ	रि	सु	हा	ऽ	ऽ	ईऽ	ऽ

संचारी

×		०		२		०		३		४	
ध	ग	ग	प	प	प	ध	—	ध	ध	—	प
ब	न	न	त	न	न	ता	ऽ	न	मा	ऽ	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

		सां						प			
पव	सां	सां	ध	—	प	सां	ध	ध	प	—	ग
राऽ	ऽ	ग	रं	ऽ	ग	सु	र	बं	धा	ऽ	न
सा	—	ग	—	ग	ग	प	—	प	प	ध	—
गो	ऽ	पी	ऽ	स	ब	गा	ऽ	व	त	हैं	ऽ
सां	—	ध	प	ग	रे	सा	रे	—साध		सा	—
मं	ऽ	ग	ल	ऽ	ब	धा	ऽ	ऽ ई ऽ		ऽ	ऽ

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	ग	प	प	ध	ध	सां	ध	सां	सां	—	सां
च	तु	भु	ज	गि	रि	ध	र	न	ला	ऽ	ल
सां											
ध	—	सां	सां	रें	रें	सारें	गं	रें	सां	—	ध
आ	ऽ	र	ती	ऽ	ब	नीऽ	ऽ	र	सा	ऽ	ल
सांध	प	ध	ध	प	ध	सां	—	ध	सां	सां	—
तऽ	न	म	न	ध	न	वा	ऽ	र	ति	हैं	ऽ
						ध					
गं	रें	सां	ध	प	ध	सां	ध	प	ग	रे	सा
ज	सु	म	ति	नं	द	रा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ

राग—बिभास, ताल—धमार

प्रातसमें नंदलाल खेलत हैं हरि होरी ।
सीस पाग झुकि रही केसर रंग बोरी ॥ १ ॥
हाथन पिचकाइ लिये अबीर भरि झोरी ।
सब नारि जुरिके आई, नंदराय की पोरी ॥ २ ॥
राधा जु खेलत डोलत, सांकरी सी खोरी ।
सूरदास—मदनमोहन, भली बनी है जोरी ॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

प ग प ध	सां – ध प –	ग प	ध – प
प्रा – त स	मैं – – नं –	द –	ला – ल
३ ०	× ०	२	०
ग रे सा सा	प ग प ध –	प गप	रे – सा
खे – ल त	है – – हो –	हो ––	हो – री
३ ०	× ०	२	०

अंतरा

प – ध सां –	सां –	रें सां ध	सां – सां –
सी – स पा –	ग –	झु कि –	र – ही –
× ०	२	०	३ ०
ध सां ध प गप	ध प	रे – सा	प ग प ध
के – – स र–	रं ग	बो – री	प्रा – त स
× ०	२	०	३ ०

संचारी

प ग – प –	प –	ध प ध	सां – ध प
स बे – ना –	री –	जु रि कें	आ – ई –
× ०	२	०	३ ०
ध – प ग प	ध प	ग रे ग	प ग प –
नं – द जु –	की –	पो – –	रा – – –
× ०	२	०	३ ०

'आभोग' अन्तरानुसार।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग खट : संक्षिप्त परिचय

खट एक प्राचीन राग है ।

इसके दो प्रकार प्रचार में हैं—एक है भैरव थाट का और दूसरा आसावरी थाट का । अष्टछाप संगीत परम्परा के अनुसार भैरव थाट का प्रकार प्राचीन है । इस राग के पद अधिकतर मंगला एवं शृंगार-दर्शन के पूर्व ही गाये जाते हैं । विषयवस्तु की दृष्टि से भी इन पदों में दिन के प्रथम प्रहर तक की लीला का ही वर्णन मिलता है; जैसे "पाछली रात परछांहि पातन की ।" "आज उठि भोर नवकुंज कानन सखी ।" "आज नंदलाल सुख—चन्द" इत्यादि । इन पदों को भैरव राग के समय की मर्यादा में ही गाने कीं प्रणाली है ।

खट का वादी स्वर धैवत और संवादी स्वर गांधार माना जाता है, परन्तु भैरव थाट के प्रकार में वादी स्वर पंचम मानना ही सुसंगत होगा । खट के इस प्रकार का गान—समय दिन का प्रथम प्रहर मानना उपयुक्त है । खट राग में छः रागों की छाया होने की मान्यता के कारण इसका थाट भैरव होते हुए भी दोनों गांधार, दोनों धैवत का तथा अवरोह में कोमल निषाद का भी प्रयोग किया जाता है । इसकी जाति सम्पूर्ण है । गांधार से उठाव, पंचम स्वर पर न्यास तथा धैवत आन्दोलित दिखाई देता है ।

चलन :—रे नि़ सा, ग म, प, प, <u>ध</u>, <u>ध</u> प, सां, ध, प, ग, म,

<u>नि</u>, <u>ध</u>, प, <u>ध</u> प, ग, म, प, ग म <u>रे</u> सा

राग—खट, ताल—चर्चरी (प्राचीन अंग)

आज नंदलाल मुखचंद नैनन निरखि, परम मंगल भयो भवन मेरे ।
कोटि कंदर्पलावण्य एकत्र करि, वारुं तवही जवहिं नेंक हेरें ॥१॥
सकल सुखसदन हरखित सुंदर वदन, गोपवर प्रबलदल मदन संग घेरें ।
कहो कोउ कैसेहु नाहिं सुधबुध बने, 'गदाधर मिश्र' गिरिधरन टेरें ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

सा	—	सा	म	म	प	—	प	प	प
आ	ऽ	ज	नं	द	ला	ऽ	ल	मु	ख
×			२		०		३		
ध	—	ध	ध	—	सां	सां	सां	ध	प
चं	ऽ	द	नै	ऽ	न	न	नि	र	ख
×			२		०		३		
ग	म	नि	ध	प	प	प	ग	म	—
प	र	म	मं	ऽ	ग	ल	भ	यो	ऽ
×			२		०		३		
ग	म	ध	प	—	गम	गप	म	रे	सा
भ	व	न	मे	ऽ	रेंऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		०		३		

अंतरा

ध	—	ध	ध	—	नि	सां	सां	सां	—
को	ऽ	टि	कं	ऽ	द	ऽ	पं	ला	ऽ
×			२		०		३		
ध	—	ध	नि	सां	रें	सां	सां	ध	प
व	ऽ	ण्य	ए	ऽ	क	ऽ	त्र	क	र
×			२		०		३		

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	नि	नि	ध	म	प	ध	नि	सां	—
ना	ऽ	रु	त	ब	ही	ऽ	ज	ब	ऽ
×			२		०		३		
रें	नि	ध	प	मप	गम	प	म	रे	सा
नें	ऽ	क	हे	ऽऽ	रेंऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		०		३		

संचारी

म	म	ग	म	म	प	प	प	—	—
स	क	ल	सु	ख	स	द	न	ऽ	ऽ
×			२		०		३		
ध	ध	ध	सां	सां	रें	सां	सां	ध	प
ह	र	खि	त	सुं	द	र	ब	द	न
×			२		०		३		
नि	—	ध	ध	म	प	ध	नि	ध	प
गो	ऽ	प	व	र	अ	व	ल	द	ल
×			२		०		३		
ग	म	ध	प	म	ग	म	रे	—	सां
स	द	न	सं	ग	घे	ऽ	रें	ऽ	ऽ
×			२		०		३		

'आभोग' अंतरानुसार ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग—खट, ताल—चर्चरी (झपताल अंग)

आज उठि भोर नवकुंज कानन सखी ठाडि भइ राधिका रंगमीनी ।
विलस सुख संग नवरंग पिय स्यामघन कामकी सेन सब जीत लीनी ॥१॥
सुभग बिकसत वदन नेन अति रसमसे मोरि मुख हसि कछु सकुच कीनी ।
श्रीविट्ठल गिरिधरन संग नव नागरी जागि सब रेनि आनंद दीनी ॥२॥

स्थायी

नि									
			म						
सा	—	सा	ग	म	प	—	प	प	प
आ	—	ज	उ	ठि	भो	—	र	न	व
×		२			०		३		
नि		नि	नि					नि	
ध	—	ध	ध	—	सां	सां	सां	ध	प
कुं	—	ज	का	—	न	न	स	खी	—
×		२			०		३		
म									
ग	म	म	नि	धप	नि	धप	प	ग	म
ठा	—	डि	भ	इ—	रा	——	धि	का	—
×		२			०		३		
ग	म	नि	ध	प	ग	मग	म	रे	सा
रं	—	ग	भी	—	नी	——	—	—	—
×		२			०		३		

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

			नि	नि					
प	प	प	ध	ध	नि	सां	सां	सां	सां
वि	ल	स	सु	ख	सं	—	ग	न	त्र
×		२			०		३		
नि								नि	
ध	—	नि	सां	सां	रें	सां	सां	ध	प
रं	—	ग	पि	य	स्या	—	म	ध	न
×		२			०		३		
सां		सां	सां		ध				
नि	—	नि	नि	—	प	ध	नि	सां	सां
का	—	म	की	—	से	—	न	स	ब
×		२			०		३		
रें	सां	नि	ध	म	प	ध	नि	सां	—
जी	—	त	ली	—	नी	—	—	—	—
×		२			०		३		
ध	—	प	ग	म					
आ	—	ज	नं	द					
×		२							

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

म	म	म	म	म	प	प	प	प	प
सु	भ	ग	वि	क	स	त	ब	द	न
×		२			०		३		
नि		नि	नि	नि					
ध	—	ध	ध	ध	सां	सां	सां	ध	प
ने	—	न	अ	ति	र	स	म	से	—
×		२			०		३		
		नि			ग	म			
ग	म	ध	प	प	म	रे	रे	ग	म
मो	—	र	मु	ख	ह	सि	क	छु	—
×		२			०		३		
							म		
ध	प	प	ग	म	मग	मग		रे	सा
स	कु	च	की	—	नी	—	—	—	—
×		२			०		३		

आभोग

नि		नि	नि	नि					
ध	—	ध	ध	ध	नि	सां	सां	सां	सां
श्री	—	वि	ठ	ल	गि	रि	ध	र	न
×		२			०		३		

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	—	नि	सां	सां	रें	सां	सां	सां	—
सं	—	ग	न	व	ना	—	ग	री	—
×		२			०		३		
सां नि	सां नि	सां नि	ध	म	प	ध	नि	सां	—
जा	—	गि	स	व	रे	—	नि	आ	—
×		२			०		३		
रें	सां	सां	नि	ध	प	ध	नि	सां	—
नं	—	द	दी	—	नी	—	—	—	—
×		२			०		३		

राग परज—संक्षिप्त परिचय

जहाँ कोमल धैवत रिखब, तीव्र गंधार निखाद ।
द्वै मध्यम मंडित परज, परि संवादी वादि ॥

परज पूर्वी थाट का प्राचीन राग है । इस राग में दोनों मध्यम का स्पष्ट प्रयोग किया जाता है । इसकी जाति सम्पूर्ण और वादी स्वर षड़्ज तथा संवादी पंचम हैं । गान–समय रात्रि का अन्तिम प्रहर माना जाता है । यह राग उत्तरांग-प्रधान है अतः तार षड़्ज स्वर वैचित्र्यप्रदायक लगता है । इसकी प्रकृति चंचल है । प्रचलित वसन्त राग से यह राग सहज ही अलग दिखाई देता है । इस राग के गान में बहुत कुछ तानें निषाद पर पूर्ण की जाती हैं । 'सां रें सां रें नि नि ध नि' — यह स्वर–संगति अनेक बार दिखाई देती है, तथा 'ध प, ग म ग प ध नि सां' – यह स्वर—समुदाय भी रागवाचक है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आरोहावरोह :—नि़ सा ग, म ध नि सां, सां नि ध प, म प ध प

ग म ग, म ग रे सा,

पकड़ :—सां नि ध प, मे प ध प, ग म ग

विस्तार :—(१) नि़ सा ग, मे ध नि, सां, ध नि सां रे नि सां, नि ध प, मे प

ध प, ग म ग, मे ग रे सा

(२) प, मे प, ध नि ध प, ध नि सां नि ध प रें नि सां, ध प,

मे ध नि रें ग, रे सां, ध प मे ग रे सा

(३) सां, रें सां, रें नि सां ध नि सां, ध नि सां रें नि़ सां,

मे ध नि सां रें सां, रें ग मे ध नि, सां, गं मं गं, में गं

रें सां, ध रें सां रें नि

अन्य रागों की अपेक्षा यह राग आजकल कम सुनने में आता है। अष्टछाप संगीत प्रणाली में यह राग शीतकाल में मंगला—शृंगार—समय में गाया जाता है, जब कि ललित और मालकौंस गाये जाते हैं। शीतकाल में मंगला के दर्शन सूर्योदय के पूर्व होने की परम्परा है। रात्रि के अन्तिम प्रहर में इन रागों के गायन से मन्दिर का वातावरण मधुर बन जाता है! यहां परज राग के पदों में से अष्टछाप के महाकवि नन्ददासजी—रचित खंडिता नायिका के भाव का एक पद तथा दूसरा पद जन्म बधाई का स्वरलिपि के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

राग—परज, ताल—चौताल (ध्रुपद)

रंगभरी मुरत अनंगभरी अँखियां संग लिये प्यारी कों महल मेरे आये हो ।।

बेठोजु पलंग पर पलकनसों झारूं पाय तन मन नौछावर करि भागिनतें पाय हो ।।१।। ऐसी है जो कौन नारि बदन बिलोक्यो जाहि वाहीकें रहोजु लाल मन मुसिकाय हो ।। नंददासप्रभु प्रिय रसिक मुकुट मनि मोहिनी कें मोहिवेकों मोहन बनि आये हो ।।२।।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

				सां			
सां नि	—	सां रे	सां —	नि सां	नि ध	प	ध
रं	—	ग भ	री —	मु —	र त	—	अ
×		०	२	०	३	४	
		सां		प			
ध्र म̍	म̍	ध नि	सां नि	ध प	ग म	ग	—
नं	—	ग भ	— री	अ खि	— यां	—	—
×		०	२	०	३	४	
ग	रे	सा ग	— ग	म̍ ध्र	नि सां	—	सां
सं	—	ग लि	— ये	प्या —	री कों	—	म
×		०	२	०	३	४	
रें		रें नि	सां नि	ध्र सां	नि ध्र	म̍	ध्र
ह	—	ल भ	— रे	आ —	— ये	—	हो
×		०	२	०	३	४	

अंतरो

		ध्र		सां			
ध्र म̍	—	ग म̍	— ध्र	नि सां	सां सां	—	सां
वै	—	ठो जु	— प	लं —	ग प	—	र
×		०	२	०	३	४	
					सां		
नि सां	रें	सां रें	नि सां	नि —	ध्र नि	—	नि
प	ल	क न	सों —	झा —	पा	—	य
×		०	३	०	३	४	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(सां) नि	नि	रें	गं	गं	गं	मं	मं	गं	रें	रें	सां
त	न	—	म	—	न	नो	छा	व	र	क	रि
×		०		२		०		३		४	
नि	सां	रें	नि	सां	नि	ध	सां	नि	ध	मं	ध्र
भा	—	गि	न	—	तें	पा	—	—	ये	—	हो
×		०		२		०		३		४	

संचारी

मं	—	ग	ग	म	म	ग	—	म	ग	—	ग
ए	—	सी	हे	—	जो	को	—	न	ना	—	रि
×		०		२		०		३		४	
ग	ग	रे	(मं) ग	—	मं	ग	—	रे	सा	—	सा
व	द	—	न	—	वि	लो	—	क्यो	जा	—	हि
×		०		२		०		३		४	
सा	नि़	रे	ग	म	ग	मं	ध	नि	(ध) ध	प	मं
वा	—	ही	कें	—	र	हौं	—	जु	ला	—	ल
×		०		२		०		३		४	
ग	ग	रे	ग	—	मं	ग	—	रे	ग	रे	सा
म	न	—	मु	—	सि	का	—	य	हो	—	—
×		०		२		०		३		४	

* इसके स्थायी अंतरा में ध स्वर के नीचे कोमल का चिह्न रह जाने से सुधार लेना ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग परज–ताल खटताल (प्राचीन)

अष्टछाप के महाकवि परमानन्ददासजी–रचित जन्माष्टमी की वधाई का निम्नांकित पद संगीत की मुद्रित पुस्तकों में रामकली राग के नाम से प्रकाशित किया गया है लेकिन नाथद्वारा–कांकरोली के घरानों में यह परज राग में गाया जाता है। लेखक ने नाथद्वारा के मुख्य कीर्तनकार गोविन्दरायजी से इसे परज में ही सुना था।

सुनोरी आज मंगल बधायो है।
नंदमहर–घर रानी जसोदा ढोटा जायो हे ॥१॥

✿ ✿

हरखें देव सुमन बरखें नभ निसान बजायो हे।
'परमानन्द' नन्दनन्दन को सुजस सुनायो हे ॥१०॥

स्थायी

×	२	३	०	४	५	६	०	×	२	३	०	४	५	६	०
सा	सा	ग	ग	मं	ध	नि	सां	रें	सां	नि	ध	सां	नि	ध	प
मं	ग	ल	ब	धा	–	यो	–	हे	–	–	सु	नों	री	आ	ज
मंध	निसां	नि	ध	मं	ध	नि	ध	नि	–	–	ध	प	ग	म	ग
मं	ग	ल	ब	धा	–	यो	–	हे	–	–	सु	नो	री	आ	ज

अंतरा

×	२	३	०	४	५	६	०	×	२	३	०	४	५	६	०
–	ध	मं	ध	नि	नि	सां	सां	–	रें	सां	रे	नि	ध	नि	–
–	नं	द	म	ह	र	घ	र	–	रा	नी	ज	सो	–	दा	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निसां रें ग म	ग रे सां रे	सां नि ध नि	सां रें सां नि
ढो – टा –	जा – यो –	हे – – सु	नो री आ ज
मध निसां नि ध	म ध नि सां	रें सां नि ध	नि – – –
मं ग ल व	धा – यो –	हे – – –	– – – –

राग ललित : संक्षिप्त परिचय

प्राचीन ग्रंथों में ललित राग का नाम ललिता भी मिलता है। राग-परिवार पद्धति के ग्रंथों में ललित को शिवमतानुसार बसंत राग की तथा हनुमन्मतानुसार ललिता को हिंडोल राग की पाँचवीं भार्या कहा गया है। हवेली संगीत प्रणाली में ललित राग शीतकाल में मंगला और शृंगार के समय गाया जाता है, इन पदों में प्रायः खंडिता नायिका के भावों का वर्णन होता है।

पुण्डरीक ने 'रागमाला' में ललित का वर्णन निम्नानुसार किया है—

भाले धत्ते सुबिन्दुं कनकसमनिभं शुभ्रवस्त्रं दधानो
गौरांगश्चापमल्ली कुसुमभरशिराः पंकजाक्षो विलासी।
कामी ताम्बूलहस्तः प्रतिदिनमुपतिप्रार्थकः खंडितानां
हस्ते पद्मं दधानः शुचिवसनरतः श्लिष्टशृंगारसर्वः।
मुग्धस्त्रीणां समक्षं हसति सकपटं पूर्णताम्बूलवक्त्रः
कामी कामापणाटः कुटिलसुललितो भाति धृष्टः प्रभाते ॥

'संगीतदर्पण' में ललित का उल्लेख नीचे दिये गये प्रकार से है—

प्रोत्फुल्लसप्तच्छदमाल्यधारी युवा च गौरोऽब्जदलायतताक्षः।
विनिःश्वसन्दैववशात्प्रभाते यस्याः पतिः सा ललिताप्रदीपः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टसखादि महानुभावों ने ललित राग में खंडिता नायिका का वर्णन किया है, वह उपर्युक्त शास्त्रीय वर्णन के अनुसार उपयुक्त ही है। पुष्पों की माला, तरुण अवस्था, गौर वर्ण, कमल के समान नेत्र, प्रभात के समय दैवयोग से पति का आगमन, कापट्यपूर्ण संभाषण आदि शृंगार रसानुकूल भाव खंडिता नायिका के वर्णन की दृष्टि से उचित है।

ललित राग के स्वरों के सम्बन्ध में संगीतशास्त्र के ग्रंथों में मतैक्य नहीं है। कहीं रे प वर्ज्य धैवत कोमल का उल्लेख है तो कहीं धैवत शुद्ध का उल्लेख हुआ है। इस विषय में विस्तृत चर्चा के उपरान्त पं. भातखंडेजी ने हिं. सं. प. शास्त्र पुस्तक ३ में शुद्ध धैवत का समर्थन किया है। प्रतापसिंह ने हिंदोल की रागिनी ललित का वर्णन निम्नानुसार किया है– "शास्त्र में तो यह पाँच सुरन सों गायो है– 'सा ग प ध नि सा'। यातें औड़व है अथवा सा रे ग म प ध नि यातें सम्पूर्ण है और कोई याको आरंभ धैवत सों कहत हैं। ध नि सा ग प ध। याको सूरज के उदय पहिले एक घड़ी में गाइये। रात के चौथे पहर में चाहो जब गावो।"

"संगीतदर्पण" से ग्रहांशन्यास षड्ज। आलापचारी। सा रे ग म, गम, ध, म। ध प म, गमग। रे नि रे ग रे सा। भैरवपुत्र ललित के वर्णन में आलापचारी अलग नहीं बताई गयी है परन्तु शास्त्रानुसार "यह पाँच सुरन सों गायो है। सा ग म प ध नि सा।" (संगीतशास्त्र, भाग ३, पृष्ठ ३०३)

उपर्युक्त मतों के अध्ययन, 'लक्ष्यसंगीत' 'कल्पद्रुमांकुर' 'चन्द्रिका' 'चन्द्रिकासार' इत्यादि ग्रंथों तथा परम्परागत प्रचलित ललित के आधार पर तीव्र धैवत का ही प्रचार माना जाता है। 'नादचिन्तामणि' (पृ. ७६)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

में ललित के स्वरों में धैवत शुद्ध है। सा रे ग म म ध सां।

सां नि ध म म म रे सा।

मेरे गुरुजी पं. वाडीलालजी का मत था कि ललित में आधुनिक कोमल धैवत से कुछ ऊँचा और शुद्ध धैवत से कुछ नीचा स्वर लगाते हुए गायकों को सुना है। अतः हमारे मतानुसार इस प्रकार का धैवत का स्थान पंचम की चौथी श्रुति पर होना वास्तविक होगा। इस सन्दर्भ में पं. भातखंडेजी के शास्त्रग्रंथ भाग ३ (पृ. ३०२) में लिखा है– "नवीन श्रुतिव्यवस्था में षड्ज पहिली श्रुति पर आ जाता है। उसके निकट चौथी श्रुति पर २७० का ऋषभ होगा और इसी प्रकार ४०५ का धैवत पंचम के आगे चौथी श्रुति पर जाएगा।" किन्तु इस प्रकार धैवत आधुनिक शुद्ध धैवत के निकट होने से पं. भातखंडेजी इत्यादि ग्रंथकारों ने शुद्ध या तीव्र धैवत को मान्य किया है। हवेली संगीत प्रणाली में भी शुद्ध धैवत के प्रयोग की परम्परा है।

उपर्युक्त परम्परा के अनुसार 'लक्ष्यसंगीत' में दिया गया ललित राग का निम्नलिखित वर्णन उपयोगी होगा।

मारवामेलनोत्पन्ना रागिणी ललिता मता।
आरोहे चावरोहेऽपि पंचमेन विवर्जिता॥

शुद्धमध्यमवादित्वं सर्वेषामेव संमतम्।
अमात्यत्वं भवेत् षड्जे शास्त्रोक्तनियमागतम्।

उत्तरांगप्रधानत्वे तारषड्जविचित्रिता।
संगतिर्धमयोर्नित्यमपूर्वां रक्तिमावहेत्॥

मध्यमस्य प्रमुक्तत्वं कस्य न द्रावयेन्मनः।
तत्स्वरेणैव लक्ष्यं स्याल्ललितांगं स्वतंत्रकम्॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ललित राग मारवा थाट से उत्पन्न होता है। पंचम वर्ज्य होने से जाति षाडव मानी जाती है। वादी स्वर शुद्ध मध्यम और संवादी षड्ज है। यह राग उत्तरांगप्रधान है अतः इसका गानसमय रात्रि का अन्तिम प्रहर माना जाता है। इसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। ध म॑ ध म॑ म–इस प्रकार के स्वर वार–बार दिखाई देते हैं तथा नि रे॑ ग म, म॑ म ग— इन स्वरों से यह राग शीघ्र पहचाना जा सकता है। कुछ ग्रंथों में कोमल धैवत का उल्लेख है किन्तु हवेली संगीत में तीव्र धैवत लेने का प्रचलन है। धैवत और मध्यम की संगति संभालना कुशलता का काम है। ध म॑ म ग स्वरों पर मींड़ लेने से परिणाम सुन्दर दिखाई देता है। आरोह में ऋषभ को दुर्बल बना कर कभी नि सा ग म॑, म ग स्वर भी ले सकते हैं किन्तु मन्द्र स्थान में अधिक नीचे ले जाना ठीक नहीं है। इस राग में सामान्यतः निषाद स्वर का गौणत्व रहता है। यदि निषाद को आगे लाने का प्रयत्न होगा तो सोहनी राग का अंग दिखाई देगा।

आरोहावरोह—नि रे ग म, म॑ म ग, म॑ ध, सां।

रें नि ध, म॑ ध म॑ म ग, रे सा।

पकड़ स्वर—नि रे ग म, ध म॑ ध म॑ म ग

स्वरविस्तार—

(१) सा, रे सा, ग म, म॑ म ग, म॑ ध, म, ग, रे सा, नि रे ग म

(२) नि रे, ग, म॑, म, ध, म॑ ध, म, म, ग म, म॑ म, म ग, नि, रे ग, म।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(३) नि रे ग, म, गम, म ध, सां, रें, नि ध, म, म, गंम, म ध:म,

म, मग, रे सा, नि रे ग म।

(४) ग, म ध, सां, सां, नि रें सां गं रें सां, नि रें नि ध, म ध नि ध,

म ग, म ध, म ग, म, म म ग, ध ग, रे सा, नि रे ग, म।

राग ललित—ताल त्रिताल

कमलसी अखियाँ लाल तिहारी।
तिनिसों तकि-तकि तीर चलावत बेंधति छतियाँ हमारी ॥१॥
इन्हें कहा कोउ दोस लगावत ये अजहूँ न संभारी ॥
'श्रीविट्ठलगिरिधारी' कृपानिधि सुरत ही तें सुखकारी ॥२॥

स्थायी

०				३				×				२			
गम	ग	रे	सा	नि	रे	ग	म	म	ऽ	म	म	ग	रे	ग	—
कऽ	म	ल	सी	अ	खि	याँ		ला	—	ल	ति	हा	—	री	—

अंतरा

०				३				×				२			
—	ध	म	ध	सां	सां	नि	ध	सां	ऽ	सां	सांनि	रें	—	सां	सां
—	ति	नि	सों	त	कि	त	कि	ती	—	र	चऽ	ला	—	व	त
नि	रें	गं	रें	सां	रें	सां	सांसां	नि	—	ध	म	म	म	ग	—
बें	—	ध	ति	छ	ति	याँ	ह	मा	—	—	—	री	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

०				३				×				२			
म	म	ऽ	मं	म	ग	म	म	म	ध	म	म	ग	रे	ग	म
इ	न्हें	—	क	—	हा	को	उ	दो	—	स	ल	गा	—	व	त
ग	रे	सा	सा	नि	रे	ग	म	मं	—	—	—	ग	रे	ग	—
ये	—	अ	ज	हूँ	—	न	सं	भा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	—

आभोग—"श्रीविट्ठल गिरिधर" अंतरानुसार

राग ललित—ताल चर्चरी

आज सगरी निसा कहाँ जागे लाल,
कहोन साँची सुभग साँवरे माधो ।
घोख मंथन सव्द प्रानपति गहगह्यो
रह्यो मोहन सूर प्रगट भयो आधो ॥१॥
कमल विकसित भये, चक्रवाकी हसी
सुमुखि पुलकित जपत कानन आराध्यो ।
विश्वमोहन वदन निरखि नभ चंद्रमा,
सगवा लज्जित भयो प्रेम गुन बांधो ॥२॥
ललित सुंदर राग ताल चर्चरी धरि,
मधुप गावत सुजस, पिकनि स्वर सांधो ।
कहे 'कृष्णदास'प्रभु लाल गिरिवरधरन
पाये व्रजसुंदरी कृपन धन लाध्यो ॥३॥

स्थायी

×			२		०		३		
सां	—	सां	नि	ध	म	ध	म	म	—
आ	—	ज	स	ग	री	—	नि	सा	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म॑	म	ग	ग	—	म॑	ध	सां	—	सां
क	हाँ	—	जा	—	गे	—	ला	—	ल
सां	सां	सां	सां	—	नि	रें	नि	ध	ध
क	हो	न	साँ	—	ची	—	सु	भ	ग
म॑	—	ध	नि	ध	म॑	म	ग	म	मम॑
साँ	—	ब	रे	—	मा	—	धो	—	——

अंतरा

×			२		०		३		
ध	म॑	ध	सां	—	सां	सां	सां	—	सां
घो	—	ख	मं	—	थ	न	स	—	ब्द
नि	रें	ग	रें	सां	नि	रें	नि	ध	—
प्रा	—	न	प	ति	ग	ह	ग	ह्यो	—
म॑	ध	—	सां	सां	नि	रें	नि	ध	ध
र	ह्यो	—	मो	ह	न	—	सू	—	र
सांम॑	ध	ध	नि	ध	म॑	म	ग	म॑	मम॑
प्र—	ग	ट	भ	यो	आ	—	—धो	—	——

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×			२		०		३		
गम	ग	रे	नि	सा	ग	म	मं	म	—
क—	म	ल	वि	क	सि	त	भ	ये	—
ध	मं	ध	सां	—	निरे	नि	ध	मं	म
च	—	क्र	वा	—	कि—	—	हँ	सी	—
सां	सां	सां	नि	ध	नि	ध	म	म	ग
सु	मु	खि	पु	ल	कि	त	ज	प	त
मं	ग	रे	सां	निसा	ग	म	मं	म	—
का	न	न	—	आ—	रा	—	ध्यो	—	—

आभोग "विश्वमोहन वदन" अंतरा मुजब, "ललित सुंदर" संचारी मुजब, 'कहे कृष्णदास' अंतरानुसार ।

राग ललित—ताल सूलताल

साँझजु आवनि कहि गये मोहन भोर भये देखें ।
गिनत नछत्र नेन अकुलाने चारि पहर मानो जुगते बिसेखे ॥१॥

कीनी भली जु चिह्न मिटाये अधरनि रंग उरे नख रेखे ।
'कुंभनदास'प्रभु रसिकसिरोमनि गिरिधर तुम्हारे ही कहा लेखे ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		०		२		३		०	
ग	रे॒	नि़	सा	ग	म	मं	मं	—	—
सां	—	झ	ज़ु	आ	—	—	व	—	नि
ग	ग	मं	ध	मं	ध	नि	सां	—	सां
क	हि	ग	ये	मो	—	—	ह	—	न
रें॒	सां	नि	ध	मं	ध	मं	म	ग	मंम
भो	—	र	भ	ये	—	दे	—	खें	—

अंतरा

×		०		२		३		०	
मं	ध	सां	सां	सां	—	नि	रें॒	सां	—
गि	—	न	त	न	—	छ	—	त्र	—
नि	रें॒	गं	रें॒	सां	सां	रें॒	नि	ध	—
ने	ऽ	न	ऽ	अ	कु	ला	—	नि	—
सां	नि	ध	मं	म	ग	मं	ध	सां	—
चा	—	र	प	ह	र	मा	—	नो	—
सां	रें॒	नि	ध	मं	ध	मं	म	ग	मंम
जु	ग	तें	—	वि	से	ऽ	ऽ	खे	ऽऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		०		२		३		०	
म	—	म	मं	म	ग	म	—	—	—
की	—	नी	भ	ली	जु	—	—	—	—
नि	ध	मं	म	ग	रे	ग	—	—	—
चि	—	ह्व	मि	टा	—	ये	—	—	—
मं	ग	रे	सा	नि	रे	ग	—	—	म
अ	ध	र	नि	रं	—	ग	—	—	कि
मं	ध	नि	ध	मं	म	म	रे	ग	—
ये	—	न	ख	रे	—	ख	—		—

"आभोग" अंतरानुसार ।

राग ललित—ताल धमार

अहो हरि होरी में जब जो गये तुम भाज ।

गारी देहूँ भरूँ भराऊँ, मुख माँडौंगी आज ॥१॥

हौं अपनो मन भायो करिहौं, सुन कुंवर ब्रजराज ।

'जगन्नाथ कविराय' के प्रभु माई, सकल घोख सिरताज ॥२॥

स्थायी

३				×					२		०		
नि	रे	ग	म	मं	—	—	म	—	ग	—	ध	मं	ध
अ	हो	ह	रि	हो	—	—	री	—	में	—	ज	ब	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा – – सा	रे सां – नि ध	म ध	म म ग
जो – – ग	ये – – तु म	भा –	– – ज

अंतरा

×	२	०	३
ध म ध सां –	सां सां	रें सां सां	नि ध म ध
गा – री दे –	हूँ भ	रुँ – भ	रा – उँ –
निं रें सां नि ध	म ध	म म ग	नि रें ग म
सु ख माँ डो गी	– आ	– ज –	अ हो ह रि

संचारी

×	२	०	३
म म म म ग	म ध	नि ध म	ग रे ग –
हो अ प नो –	म न	भा – यौ	क रि हों –
म ग रे नि सा	ग म	म – म	– – म –
सु न कुँ व र	ब्र ज	रा – –	– – – ज

'आभोग' अंतरानुसार ।

राग ललित पंचम

यह राग भैरव थाटमेंसे उत्पन्न होने वाला एक मिश्र राग माना जाता है । आरोह में पंचम वर्ज्य है । अवरोह पूर्ण एवं वक्र है । इस राग में दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है । वादी स्वर शुद्ध मध्यम और संवादी षड्ज है । समय रात्रि का अन्तिम प्रहर है । यह राग ललितांग से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गाया जाता है । मुक्त मध्यम से ललित का उद्भव होता है किन्तु साथ में पंचम स्वर का अवरोह में प्रयोग होने से ललित से यह स्वतंत्र दिखाई देता है । प्रचलित ललित पंचम से सम्प्रदाय की भिन्न परम्परा प्राप्त न होने से पं. भातखंडेजी के मतानुसार यह प्रकार मान्य करना यहाँ उचित समझा है.

उठाव :— गमगरेसा, निसागम, मग, प, मधनि, धप, धमम, पग, रेसा.

राग ललित पंचम—ताल त्रिताल

कहो तुम सांचि कहाँते आये भोर भये नंदलाल ।
पीक कपोलन लागि रही हे घूमत नेन बिसाल ॥२॥
लटपटी पाग अटपटे पेचन उरसि मरगजी माल ।
'कृष्णदास'प्रभु रसबस करि लीने धन्य वे हें व्रजबाल ॥२॥

स्थायी

०				३				×				२			
ध	ग	रे	सा	नि	सा	ग	म	म	—	म	—	म	गम	ग	—
क	हो	तु	म	सां	—	चि	क	हाँ	—	तें	—	आ	—	ये	—
—	प	प	प	म	ध	रें	नि	सां	निध	प	म	ग	म	ग	रे
क	हो	तु	म	सां	—	चि	क	हाँ	—	तें	—	आ	—	ये	—

अंतरा

०				३				×				२			
प	—	ग	ग	म	—	ध	मध	सां	—	सां	सां	नि	रें	सां	—
पी	—	क	क	पो	—	ल	न—	ला	—	गि	र	ही	—	हे	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां — सां सां	नि ध ध सां	रें निध प मं	ग म ग रें
घू — म त	नें — न वि	सा — — —	— — — ल

संचारी

०	३	×	२
प प प मं	ध ध ध प	प प मं मं	ग म ग ग
ल ट प टी	— पा — ग	अ ट प टे	पे — च न
प ग रे सा	नि सा ग म	मं — म —	ग म ग —
उ र सो हे	म र ग जी	मा — — —	— — ल —

आभोग

०	३	×	२
प मं ध सां	— सां सां सां	नि रें गं मंमं	गं रें सां सां
कृ — ष्ण दा	— स प्र भु	र स न स—	क रि ली ने
सां सां नि ध	मं ध सां सां	रें निध प मं	ग म ग रे
ध नि वे —	हैं — व्र ज	वा — — —	— — — ल

राग पंचम

यह राग ग्रन्थोक्त एवं प्राचीन है। थाट मारवा है। समय रात्रि का उत्तर भाग माना जाता है। सम्मप्रदाय में यह राग सीतकाल में प्रातः काल मंगला-शृंगार समय तक तथा वसंत होरीके दिनोंमें गाया जाता है।

दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। जाति औडव-षाडव है। पंचम स्वर वर्ज्य है। संपूर्ण जाति का भी एक प्रकार प्रचार में है। रे स्वर आरोह में

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वर्ज्य है और अवरोह में दुर्बल रूप से लिया जाता है। ललितांग से यह राग गाया जाता है। वादी स्वर मध्यम, संवादी षड्ज है।

आरोहावरोह :—साग, म, ग, मधनि, मध, सां। सांनिध, मग, रेसा.

विस्तार :— (१) साग, मधसां, निध, मध, निमध, सांनिध, मग रेसा.

(२) निसाम, म, मग, मधसां, निधनिमध, मग, मगरेसा.

(३) मध, सां, सां, सांनिधम, मग, मधनिधममग,

मम, रेसा, साम, ग, निधमग, मधनिमधसां.

राग पंचम—ताल धमार

देखो—देखो ब्रजकी वीथनि—वीथनि खेलत हैं हरि होरी।
गति विचित्र कोलाहाल कौतिक संग सखा लखकोरी ॥१॥
आईं झूमि झूमि झुंडन जुरी अगनित गोकुल गोरी।
तिनमें जुवतिकदंबसिशेमनि राधा नवलकिसोरी ॥२॥
छिरकत ग्वाल बाल अबलन पर बूका वंदन शेरी।
अरुन आकास देखि संध्या भ्रम मुनिमनसा भई बोरी ॥३॥
रपटत चरन कीच अरगजाकी केसरि कुंकुम घोरी।
कही न जाय 'गदाधर' पैं कछु वुद्धिबल मति भई घोरी ॥४॥

स्थायी

×					२		०				३			
सां	—	नि	ध	म	ग	—	म	ग	म		ग	रे	सा	सा
दे	—	खो	ब्र	ज	की	—	वी	थ	नि		वी	—	थ	नि
सा	म	म	म	ग	म	ध	निध	म	ग		रे	सा	म	ध
खे	ल	त	हैं	—	ह	रि	हो—	—	—		री	—	दे	खो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×					२		०			३			
म	ध	सां	सां	—	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां	सां
ग	ति	चि	चि	—	त्र	को	ला	ह	ल	को	—	ति	क
सां	नि	ध	म	ग	म	ध	सां	नि	ध	म	ग	म	ध
सं	ग	स	खा	—	ल	ख	को	—	—	री	—	दे	खो

संचारी

×					२		०			३			
सा	म	म	म	म	म	म	म	ग	ग	म	ध	सां	सां
आ	—	इ	झू	मि	झू	मि	झुं	ड	नि	जु	रि	जु	रि
मध	सां	सां	नि	ध	म	ग	ग	—	म	ग	—	सा	—
अग	नि	त	गो	—	कु	ल	नो	—	—	री	—	—	—

राग मालकौंस

मालकौंस राग प्राचीन है। ग्रंथों में 'मालवकौशिक' नाम से इसका उल्लेख दिखाई देता है। प्राचीन मान्यता अनुसार कहा गया है कि इस राग के गाने से पत्थर भी पिघल जाता है। ऐसा कुछ भी हो, परन्तु यह राग उष्ण प्रकृति का है। राग होने से पुष्टिभक्तिमार्ग के मन्दिरों में शिशिर और हेमंत ऋतुओं में अधिकतर मंगला के दर्शन में गाया जाता है। यह राग अधिकांश प्रबोधिनी से वसंतपंचमी तक ही गाया जाता है। इस राग में खंडिता (नायिका) के भाव के पद अधिक संख्या में हैं। काव्य का अर्थभाव, समय और शीतल ऋतु के साथ गहरा संबंध होने के कारण पुष्टिमार्ग के मन्दिरों में यह राग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दृष्टिगोचर होता है । इस राग में बधाई और जन्मोत्सव इत्यादि के पद प्राप्त नहीं होते । अतः यह राग गाने की प्रणाली नहीं है । गंभीर प्रकृति का यह राग अति लोकप्रिय है । विवरण इस प्रकार है ।

१. यह राग भैरवी थाट से उत्पन्न होता है ।

२. इस राग में ऋषभ पंचम वर्ज्य होने से जाति औडव है ।

३. वादी स्वर मध्यम है और संवादी षड्ज है ।

४. समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है । आरोह अवरोह स्वरूप

नि सा, ग म, ध नि सा । सा नि ध म ग म ग सा

पकड़ : म ग, म ध, नि ध, म ग सा

राग मालकौंस—ताल मत्तताल, मात्रा १८

चंद कमल पर भँवर दोऊ बेठे, चंद गयो है लजाई (माई) ।
कळा विमल भई, छिप गई जोति, उडुगन गगन लगे हे जाई ।।१।।
बेंनी निरखत भुजंग पाताल गये, दृग देख मीन जल में दूरे जाय ।
छिनक केहरि कटि, "घौंघी' के प्रभु निहार, बारं—बार बलि—बलि जाय ।।२।।

स्थायी

×	०	२	३	०	४	५	६	०
सां —	ध नि	ध म	ग म	— म	ग सा	ध नि	सा —	म —
चं —	द क	म ल	प र	— भँ	व र	दो ऊ	बे —	ठे —
म							म	ग सा
ग —	म म	नि ध	नि सां	— गं	सां नि	ध म	ग म	ध नि
चं —	द ग	यो —	हे —	— ल	जा —	ई —	मा —	ई —

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×	०	२	३	०	४	५	६	०	
ग	म—	निध	नि—	सांसां	—सां	गंसां	निध	निध	म
क्ष	ला—	विम	ल—	भई	—छि	पग	ईजा	—ति	—
ध	निसां	मंगं	—गं	—सां	सांनि	—ध	मग	मग	सा
उ	डुग	नग	गन	——	लगे	—हे	—ज्ञा	—ई	—

संचारी

×	०	२	३	०	४	५	६	०	
म	—म	धम	गम	मध	—नि	निध	निध	मम	—
वें	—नी	निर	खत	भुजं	—ग	पाता	—ल	गये	—
ध	मग	मग	सा—	साध	निसा	—म	ग—	म—	म
ह	गदे	—खि	मी—	नज	लमें	—दू	रें—	जा—	य

आभोग

×	०	२	३	०	४	५	६	०	
ग	गम	मध	धनि	निनि	सां—	सांगं	सांनि	निध	म
छि	नक	केह	रिक	टिधौं	धी—	केप्र	भुनि	हा—	र
ध	—नि	सांसां	—मं	—गं	—सां	निध	मग	मध	नि
वा	—रं	—वा	—र	—व	—लि	ब—	लिजा	—य	—

राग मालकौंस–ताल चौताल

पीर न जानी अहो पिय, देखि तिहारी एसी अनोखी प्रीत ।

हंमसों अवधि बदी, अनत बिलम रहे, कोन गाँव की यह रीत ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तारे गिनत मोहि चार जुग बीते, कोन के भवननि सिधारे हो मीत ।
'तानसेन' के प्रभु अब न पत्याऊँ, तुमें करि राखों रसरीत ।।२।।

स्थायी

सां	ध	नि	ध	मग
पी	—	र	—	—न—

×		०		२		०		३		४	
म	—	—	(म) ग	—	म	ग	सा	—	सा	म	म
जा	—	—	नी	—	अ	हो	—	—	पि	—	य
(म) ग	—	—	म	ध	नि	सां	—	नि	सां	—	सां
दे	—	—	खि	—	ति	हा	—	री	ए	—	सी
गं	सां	नि	ध	नि	ध	म	सां	—	ध	नि	ध
अ	ना	खी	प्री	—	त	—	पी	—	र	—	न

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
ग	म	—	ध	—	नि	नि	सां	—	सां	सां	—
ह	म	—	सौं	—	अ	व	धि	—	ब	दी	—
नि	नि	—	सां	—	गं	सां	नि	नि	ध	म	—
अ	न	—	त	—	वि	ल	म	—	र	हे	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	सां	—	मं	—	गं	मं	गं	—	सां	—	—
को	—	—	न	—	गाँ	—	व	—	की	—	—
गं	सां	—	ध	नि	ध	म	सां	—	ध	नि	ध
य	ह	—	री	—	त	—	पी	—	र	—	न

संचारी

×		०		२		०		३		४	
सां	—	—	म	—	म	ध	म	—	म	—	म
ता	—	—	रे	—	गि	न	त	—	मो	—	हि
ग	—	ग	म	ध	नि	ध	नि	ध	म	—	—
चा	—	र	जु	—	ग	बी	—	—	ते	—	—
ग	—	—	म	—	म	ग	म	ग	सा	—	सा
को	—	—	न	—	के	भ	व	—	न	—	नि
सां	ध	नि	सा	—	सा	ग	सा	म	म	—	—
सि	धा	—	रे	—	हो	मी	—	—	त	—	—

'आभोग' अंतरानुसार ।

(इस राग के अधिक पदों की स्वरलिपि के लिए हमारे "संगीतकीर्तन-पद्धति" एवं "संगीतसुबोधिनी" देखिये)

राग मालकौंस—ताल चर्चरी (झपतालअंग)

नख कहाँ लागे बन बानरा लगाये नख,
चख क्यों राते प्रांत देख्यो ताते मान को ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चंदन लग्यो है कहाँ, विघ्नहरन पूजा कीनी,
बंदन लग्यो है कहाँ, परस भयो थान को ॥२॥
रैन रहे कहाँ नट नृत्य जहाँ,
अरबरे क्यों बोलो मोसों डर भयो आन को ।
गुजरी सो गुजरी अब आगे आय ठाडे "सूरु",
थैंगरी कहाँलों देत फाटे असमान को ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
सा	सा	निसा	ध	नि	सा	म	म	म	ग
न	ख	क—	हाँ	—	ला	—	गे	व	न
म	ग	म	ध	नि	सां	ध	नि	ध	म
वा	न	रा	—	ल	गा	ये	न	—	ख
म	ग	म	नि	ध	नि	सां	सां	—	सां
च	ख	क्यों	—	रा	—	ते	प्रा	—	त
गं	सां	निध	मध	नि	ध	नि	ध	मग	म
दे	ख्यो	ता—	—	ते	भा	—	न	कों—	—

अंतरा

×		२			०		३		
म	ग	म	निध	नि	सां	सां	सां	सां	—
चं	द	न	—	ल	ग्यो	हे	क	हाँ	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	सां	सां	गं	सां	निध :	नि	ध	म	ग
बि	घ्न	ह	र	न	—	पूजा	की	—	नी
ध	ध	नि	सां	मं	गं	मं	गं	सां	सां
बं	द	न	—	ल	ग्यो	हे	क	हाँ	—
गं	सां	निध	सध	नि	ध	नि	ध	मग	म
प	र	स—	भ—	यो	था	—	न	को—	—

संचारी

×		२			०		३		
ग	म	ध	नि	सां	गं	सां	नि	ध	म
रे	—	न	—	र	हे	—	क	हाँ	—
सां	—	नि	—	सां	गं	सां	निध	नि	ध
न	—	ट	—	नृ	—	त्य	ज—	—	हाँ
म	ग	म	ध	नि	सां	ध	नि	ध	म
अ	र	ब	रे	क्यों	बो	लो	मो	—	सों
ग	सा	सा	ध	नि	सा	म	ग	मग	म
ह	र	भ	—	यो	आ	—	न	को—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आभोग

×		२			०		३		
ग	म	ध	—	नि	सां	सां	सां	सां	सां
गु	ज	री	—	सो	गु	ज	री	अ	ब
सां	सां	सां	—	निसां	गं	सांनि	नि	—	ध
आ	गे	आ	—	य—	ठा	डे—	ठू	—	र
ध	नि	सां	मं	मं	गं	गंमं	गं	—	सां
थें	ग	री	—	क	हाँ	लों—	दे	—	त
सां	सां	सांनि	ध	नि	ध	नि	ध	मग	म
फा	टे	अ—	—	स	मा	—	न	को—	—

राग देवगंधार

देवगंधार राग प्राचीन है। प्रचार में यह राग आसावरी थाट का माना जाता है परन्तु पुष्टिसम्प्रदायकी कीर्तनप्रणाली अनुसार यह राग का थाट भैरव माना जायगा। अतः गानसमय दिनका प्रथम प्रहर है। सम्प्रदाय की प्रातः-कालीन सेवामें यह राग शृंगार के दर्शन तक गाया जा सकता है। सम्प्र-दाय के मुख्यत : रागों मे यह राग है। नित्यकीर्तन, जन्मबधाई तथा त्यौ-हारादि के कीर्तनों में भी यह राग के पद अधिकतर पाये जाते हैं।

वादी स्वर धैवत और संवादी ऋषभ माना जायगा। जाति सम्पूर्ण है। स्वर रिषभ धैवत कोमल है तथा इस राग के अवरोह में निषाद कोमल तथा शुद्ध ऋषभ केवल तार सप्तक में रंजक होता है। रे कोमल शुद्ध रे की ओर जुकता सा रहता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आरोहावरोह—

सा, रे, गं, म, प, ध, निसां। सांनिधप, निधप, मग, रे, सां.

चलत : (१) सां, सां, नि, ध, पध, सां, निध, प, मप, मग, रे, सा.

(२) मम, ; प, ध, ध प, म ध, सां, सां नि ध प, रें सां नि ध प, मप, मगरे, सा

(३) ध ध म ध, सां, नि ध, रें सां, रें नि ध, प, म, प, ध प, म, गम, रे, सा.

राग देवगंधार—ताल आडचौताल (तीव्रा)

आजु बधाई मंगल चार ।
गावत मंगल गीत जुवतिजन, नवसत साज सिंगार ॥१॥
मंगल कनक कलस सुभ मंगल, बांधे बंदनवार ।
मंगल मोतिन चोक पुराये, पंचशव्द गृहद्वार ॥२॥
घर घर मंगल महा महोत्सव, श्रीवल्लभ अवतार ॥
'हरजीवन'प्रभु यज्ञपुरुष श्रीलछमनभूप—कुमार ॥२॥

स्थायी

										म	ग	म	पध
										आ	ऽ	जु	बऽ
×	२		३		४		×	२		३		४	
सां	—	सां	ध	प	पध	रें	सां	—	सां	ध	प	गम	प
धा	ऽ	ई	मं	ऽ	गऽ	ल	चा	ऽ	र	आ	ऽ	जुऽ	ब
नि	—	ध	पम	गरे	गम	प	मग	रे	सां	म	गम	प	पध
धा	ऽ	ई	मंऽ	ऽऽ	गऽ	ल	चाऽ	ऽ	र	आ	ऽऽ	जु	बऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

× २ ३ ४ × २ ३ ४

स म गम|प ध|सां सां | रें रें सांरें | गं रें|सां सां

गा व तऽ|मं ऽ|ग ल | गी त जुऽ | व ति|ज न

निसां सां सां|ध प|पध धरें | सां — सां | निध पम|गम प

नव स त|सा ऽ|ज— सिंऽ | गा ऽ र | आऽ ऽऽ|जुऽ व

संचारी

× २ ३ ४ × २ ३ ४

सां सां सां|ध ध|प प | ध ध धप | ग म|प प

मं ग ल|क न|क क | ल स सुभ | मं ऽ|ग ल

नि — ध|पम ग|म प | म — — | — —|सा —

वां ऽ धि|बंऽ ऽ|द न | बा ऽ ऽ | ऽ ऽ|र ऽ

आभोग

× २ ३ ४ × २ ३ ४

म म म|प ध|सां सां|सांरें गंमं मं|रें रें| सां —

मं ग ल|मो ऽ|ति न|चोऽ कऽ पु|रा ऽ| ये ऽ

सांरें रें नि|ध प|प पध|सां — सां|ध प| गम प

घंऽ च स|ऽ ब्द|गृ ह|ऽद्वा ऽ र|आ ऽ| जुऽ व

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग देवगंधार—ताल धमार

अद्भुत डोल बनी मनमोहन अद्भुत डोल बनी ।
तुम झूलो हौं हरखि झुलाऊँ, वृंदावनचँद धनी ॥१॥
परम बिचित्र रच्यो विश्वकर्मा हीरालाल मनी ।
'चत्रभुज'प्रभु गिरिधरनलाल-छबि का पे जात गनी ॥२॥

स्थायी

×					२		०			३			
सां	—	—	सां	—	सां	—	नि	ध	—	प	—	ध	रे
अ	ऽ	ऽ	द्भु	ऽ	त	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ब
सां	—	—	नि	ध	प	—	म	—	—	प	—	प	—
नी	ऽ	ऽ	म	ऽ	न	ऽ	मो	ऽ	ऽ	ह	ऽ	न	ऽ
नि	ध	—	ध	—	प	—	ध	प	म	ग	—	प	म
अ	ऽ	ऽ	द्भु	ऽ	त	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ब
ग	—	—	म	—	ग	—	रे	—	—	सा	—	—	—
नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा

×					२		०			३			
म	म	—	म	—	प	—	ध	—	—	सां	—	—	—
तु	म	ऽ	झू	ऽ	ऽ	ऽ	लो	ऽ	ऽ	हौं	ऽ	ऽ	ऽ
सां	रें	—	रें	—	रें	—	गं	रें	—	सां	—	सां	ऽ
ह	र	ऽ	खि	ऽ	झु	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऊँ	ऽ	वृं	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	—	—	सां	—	सां	—	नि	ध	—	प	ध	ध	रें
दा	ऽ	ऽ	ब	ऽ	न	ऽ	चं	ऽ	ऽ	द	ऽ	ध	ऽ
सां	नि	—	ध	—	प	—	म	—	—	प	—	प	—
नी	ऽ	ऽ	म	ऽ	न	ऽ	मो	ऽ	ऽ	ह	ऽ	न	ऽ

राग हिंडोल

यह प्राचीन राग है। हनुमन्मतानुसार मूल छः रागों में हिंडोल को तीसरा राग बताया है! ग्रन्थों में हिंडोल के स्वरों में कुछ मतभेद दिखाई देता है किन्तु रि प वर्ज्य के लिये अधिक मतभेद नहीं हैं। 'संगीतपारिजात[१] तथा 'संगीतसारामृत'[२] इत्यादि ग्रन्थों में रि प वर्ज्य का स्पष्ट उल्लेख है। प्रचार में अष्टछापघराना में तथा भारतीय संगीत के अन्य घरानों में हिंडोल के स्वरूप में कोई भिन्नता नहीं है। अतः लक्ष्यसंगीतकार ने किया हुआ हिंडोल का सर्वसम्मत वर्णन इस प्रकार है।[३]

"हिंडोल राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। प्रातःकाल में गाया जाता है। वादी स्वर धैवत और संवादी गांधार है। रि प स्वर वर्ज्य हैं। अवरोही वर्ण में अधिक वैचित्र्य दिखाई देता है।

अष्टछाप के श्रीकृष्णदासजी ने भी हिंडोल की एक पदरचना में भी यही वर्णन किया पाया जाता है। यह पद और उसकी स्वरलिपि यहाँ प्रसिद्ध की जा रही है।

---

१ "हिन्दोलेऽथ रिपौ त्याज्यौ, कोमलो धैवतो भवेत्। ४३०॥

२ "हिन्दोलो भैरवीमेलसंजातो रिपवर्जितः।
औडवः सर्वदा गेयः संगीतागमकोविदैः॥
[संगीतसारामृत. पृ. २३. प्रका० सन् १९११]

३ लक्ष्यसंगीत—पृ. ९० [प्रकाशन—ई० १९२४]

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टछाप परंपरा में यह राग वसंतोत्सव के दिनों में गाया जाता है। वंगाल के प्रसिद्ध ग्रन्थकार ने इस बात का समर्थन इस प्रकार किया है[४] "हिंडोल राग संस्कृत ग्रन्थ का ही हिंडोल राग है। वह औडवजाति का है। रिषभ पंचम वर्ज्य हैं। इस राग को वसन्त ऋतु की 'दोलयात्रा' के महोत्सवप्रसंग में गाने की प्रथा है[५]। सम्प्रदाय में प्रातःकालीन एवं खंडिता की भावना इत्यादि के पद उसी हिंडोल राग में गाये जाते हैं। जिस का विवरण निम्न प्रकार है।

वादी स्वर–धैवत, संवादी–गान्धार. थाट—कल्याण

गानसमय–दिन का प्रथम प्रहर, जाति–औडव

स्वर–म तीव्र, अन्य शुद्ध, नि वक्र, वर्ज्यस्वर–रे और प

आरोहावरोह :

सा, ग, मधनिध, सां। सां, निध, मग, सा.

पकड–स्वर–सा, ग, मध, निध, मग, सा.

स्वरविस्तार :

१. सा, ग, मग, ध, मग, मधनिध मग, मग सा.

२. सा, धसा, मधसा, ग, सा. सागमगसा, ध, मग, सा.

३. साध, निमध, सांध, मधमसां, ध, मगं, सां, ध, निधमग, मग, सा.

---

४ भातखंडे संगीतशास्त्र–भाग–१

५ दोलोत्सव (डोल) के वसंत समय झूलन के पदों में तथा चातुर्मास में हिंडोला (झूला) के दिनो में गाये जाने वाला हिंडोलप्रकार–२ का विवरण इस राग के साथ ही पीछे दिया गया है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४. सांध, मग, सा.गंसां; धम, ग; सा. मग, सा, धम, मग, सा.

५. सां, धसां, मधमसां, मगं, सां—गमधम धसां, ध, ध, निमध, सां. सांध, धम, मग, गसा. ध, सा ।

इस प्रकार के हिंडोल राग के पदों में से नृत्य के भाव के दो पद उदाहरण के लिये स्वरलिपिसहित यहाँ दिये जा रहे हैं । प्रथम हैं टिपारे के शृंगार का और दूसरे में मुकुट—काछनी शृंगार का सुंदर वर्णन किया है ।

राग हिंडोल—ताल चर्चरी

थेई ता थेई थेई करत निर्तत नटवरलाल गावत हिंडोल रस रंग रह्यो भारी ।
मुरलिका अधर धरी बजावत संगीत सों, नाद सुनि विवस हो चली व्रजनारी ॥१॥
आप ठाडी भई लालके ढिंग, पाठके गुलाल कछु मोहन पें डारी ।
काछिनी खुलि गई चंद्रिका लटकि कें मदनमोहन की लेत बलिहारी ॥२॥

स्थायी

×			२		०		३		
सां	सां	सांध	सांम	ध	सां	ध	म	ग	सा
थे	ई	ताऽ	थे	ई	थे	ई	क	र	त
सा	सा	ध	सा	सा	ग	म	ग	—	सा
निर्त	—	त	न	ट	ब	र	ला	—	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा	सा	ग	म॑	ग	म॑	ध	सां	सां	सां
गा	व	त	—	हिं	डो	—	ल	र	स
गं	—	सां	सां	नि	ध	म॑	ग	—	सा
रं	—	ग	र	ह्यो	भा	—	री	—	—

अंतरा

×			२		०		३		
म॑	ध	ध	सां	—	सां	सां	सां	सां	सां
सु	र	लि	का	—	अ	ध	र	ध	रि
सां	ध	सां	गं	गं	मं॑	गं	सां	सां	ध
व	जा	व	त	सं	गी	—	त	सों	—
मं॑	—	गं	म॑	गं	गं	सां	सां	सां	सां
ना	—	द	सु	—	नि	—	वि	व	स
सां	—	सांध	सांम॑	ध	नि	ध	म॑	ग	सा
हो	—	च—	ली—	—	व्र	ज	ना	—	री

राग हिंडोल–ताल चौताल

निरतत गावत बजावत सासा गग मग मध निध मध औडव सुर राग हिंडोल । ध्रिगडधिंग, ध्रिगडध्रिग, घररर कुहु कुहु कुहु धिधिकिट बाजत मृदंग बोल ॥१॥ सोहे टिपारो लाल काछिनी कमलवरन, खेलत बसंत राधा करत कलोल । केलि करत वृंदावन 'मदनमोहन' जमुनातट बारत हैं मुक्तामनिमाल अमोल ॥२॥

स्थायी

							सां	ध	नि	म॑	ध
							नि	र	त	—	त
×		०		२		०		३		४	
सां	—	ध	म॑	—	ध	नि	ध	म॑	ग	—	सा
गा	—	—	व	—	त	ब	जा	—	व	—	त
सा	—	सा	ग	—	ग	म॑	ग	—	म॑	—	ध
नि	ध	—	म॑	—	ध	सां	—	गं	सां	म॑	ध
						औ	—	ड	व	सु	र
नि	ध	म॑	ग	—	सां	—	सां	ध	नि	म॑	ध
रा	ग	हिं	डो	—	ल	—	नि	र	त	—	त

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म॑	ग	ग	म॑	—	ध	सां	सां	सां	सां	—	सां
ध्रि	ग	ड	ध्रि	—	ग	ध्रि	ग	ड	ध्रि	—	ग
सां	सां	गं	गं	सां	सां	सां	—	सां	सां	—	ध
घ	र	र	र	कू	हु	कू	—	हु	कू	—	हु
सां	सां	गं	गं	मं॑	मं॑	गं	ग	सां	—	ध	ध
धि	धि	कि	ट	धि	धि	कि	ट	बा	—	ज	त
सां	ध	म॑	ग	—	सा	—	सां	ध	नि	म॑	ध
मृ	दं	ग	बो	—	ल	—	नि	र	त	—	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		०		२		०		३		४	
सा	–	ध	ध	–	ध	नि	ध	म॑	ध	–	ध
सो	–	–	हे	–	टि	पा	–	रो	ला	–	ल
म॑	ध	सां	सां	–	ध	नि	ध	नि	ध	म॑	ग
का	–	छि	नी	–	क	म	ल	–	ब	र	न
ध	–	म॑	ग	–	म॑	ग	–	सा	सा	–	सा
खे	–	ल	त	–	ब	सं	–	त	रा	–	धा
सा	ध	–	म॑	–	ध	सा	–	–	ग	–	सा
क	र	–	त	–	क	लो	–	–	–	–	ल

आभोग

×		०		२		०		३		४	
म॑	–	ग	ग	म॑	ध	सां	–	सां	सां	–	सां
के	–	लि	क	र	त	वृं	–	दा	व	–	न
सां	सां	गं	–	सां	सां	सां	सां	सां	सां	ध	ध
ज	मु	ना	–	त	ठ	म	द	न	मो	ह	न
सां	–	गं	मं॑	मं॑	गं	मं॑	सां	सां	ध	म॑	ध
वा	–	र	त	है	–	मु	–	क्ता	म	–	नि
नि	ध	म॑	ग	–	सां	–	सां	ध	नि	म॑	ध
मा	ल	अ	मो	–	ल	–	नि	र	त	–	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग हिंडोल–प्रकार २

सम्पदाय में दोलात्सव के तथा हिंडोला के पदों में इस प्रकार का हिंडोल प्रचलित होने का असंभवित नहीं हैं। किन्तु आजकल यह प्रकार अप्रचलित दिखाई देता है। जिस प्रकार मल्हार राग गानेका फल बरसात होना सुप्रसिद्ध है, उस प्रकार हिंडोल का फल "झूले हिंडोला आपते' गावत राग हिंडोल" कहा गया है। अर्थात् इस राग गाने से झूला अपने आप झूलने लगता है। सम्प्रदायमें [१]दोलोत्सव के पदों में तथा [२]हिंडोलके पदोमें हिंडोल का उल्लेख जो प्राप्त होता हैं, यह हिंडोल–प्रकार २ का सूचन है।

इसके पूर्व हिंडोल का जो वर्णन हम कर चुके हैं, वह उत्तरांग अंगका है। वह दिनके बारह बजे पूर्व गाया जाता है। किन्तु यह हिंडोल का पूर्वांग अंग होने से दूपहर के बारह बजे से पश्चात् गाने का समय है।

इस प्रकार के हिंडोल को कोई सांझ का हिंडोल कहते हैं। सम्प्रदाय में 'दोल' का तथा हिंडोला का समय दिन का चौथा प्रहर सुप्रसिद्ध है। अतः इनको सायंकालीन हिंडोल कहना समुचित्त कहा जायगा। प्रातर्गेय हिंडोल में वादी स्वर धैवत और संवादी निषाद है। प्रातर्गेय हिंडोल में निषाद का प्रयोग जितना कम किया जाय उतना उस राग का सौन्दर्य बढ़ता है और वह भी अवरोह में ही किया जाता है। इसमें निषाद स्वर महत्त्व का है और आरोह अवरोह दोनों में प्रयोग किया जाता है। जोकि मन्द्र और मध्यसप्त की फिरत में निषाद का प्रयोग इतना अधिकतर नहीं होना चाहिए कि जिससे पूर्या राग की स्पष्ट छाया उत्पन्न हो। अन्य लोगोंका कहना है कि इसमें ऋषभ स्वर

---

१ झूलत जुगकमनीय किसोर, सखी चहुं ओर झूलाव डोल॥ × × ×
"उंची धुनि सुनि चकत होत मन, सब मिल गावत राग हिंडोल"॥

२ झूलत दोऊ नवल किसोर × × ×
"अबला अति सुकुमार डरपत, सुर हिंडोला झकोर"॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वर्ज्य होने से पूर्या अलग हो जाती है । सम्प्रदाय की परंपरा अनुसार देखा जाय तो इनमें मन्द्र, और मध्य सप्तक में निषाद की इस प्रकार की फिरत होनी न चाहिए कि जिससे पूर्या की स्पष्ट:छाया उत्पन्न होती हो। केवल कुछ आभास उत्पन्न हो सकता है ।

पं. आदितरामजी ने राग हिंडोल में "हिंडोरे झूलत व्रजपति" अपनी यह पदरचना प्रसिद्ध की है ।[१] जिसकी पाद-टीप में किया हुआ निम्न उल्लेख से पूर्वांग-वादी हिंडोल का ही समर्थन होता है ।

"यह राग षाडव-जाति का है और **रिषभ** व पंचम बाद है. मध्यम तीव्र लेना और सब शुद्ध हैं । निषाद और गांधार प्रधान सुर हैं । निषाद से ग्रह गांधार पे न्यास है"

अतः सम्प्रदायपरंपरा में दोलोत्सव के तथा हिंडोलाके उत्सवों में हिंडोल राग के जो पद गाये जाते होंगे वह हिंडोल का दूसरा प्रकार अर्थात् पूर्वांग का हिंडोल कहा जायगा । इस सायंगेय हिंडोल को ही अन्य गायक लोग सांझ का हिंडोल कहते हैं ।

हिंडोला-प्रकार २ का संक्षिप्त वर्णन

आरोहावरोह :-

सा, ग, म, ध, नि, सां | सां, नि, ध, म, ग, सा.

पकड :- सा, ग, सा, नि ध, म ध नि सा ।

स्वरविस्तार :

(१) सा, ग, निसाग, मधनिसाग, मग, मध, मग, ग, सा.

(२) सा, मधसा, निधनिसा, ग, मधनिध, मग, मधनिसां,

---

१ संगीतादित्य, पृष्ठ-५९

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निध, मंध, सा, धनिसा, ग.

(३) सा, ग, मंध, नि, मंध, सां, मंधनिसां, गं, सां, मंगं, सां,

निध, मंग, सा, निधनि, मंध, सा.

राग हिंडोल (प्र. २) + स्वरमालिका

स्थायी

०				३				×				२			
ग	–	सा	–	ध	–	नि	सा	ग	–	–	–	–	–	मं	ध
नि	ध	मं	ग	मं	ध	नि	सां	नि	ध	मं	ग	नि	ध	–	मं
ग	–	सा	–	ध	–	नि	सा	ग	–	–	–	–	–	सा	–

अंतरा

०				३				×				२			
मं	मं	ग	मं	मं	ग	मं	ध	सां	–	–	–	–	–	–	–
गं	–	–	–	सां	–	–	–	ग	–	–	–	सा	–	मं	ध
नि	ध	मं	ग	मं	ध	नि	सां	नि	ध	मं	ग	नि	ध	–	मं
ग	–	सा	–	ध	–	नि	सा	ग	–	–	–	–	–	सा	–

+ (अ) आजसे लगभग ६० वर्ष पूर्व पाटन में आई हुई रासमंडली के स्वामी मोहनलालजी एवं सुकदेवजी से लेखक ने इस सरगम को सिखा था। जिस समय सखी बनने वाला लडका बीमार हो जाने से कुछ दिनों तक सखी बनने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ था।

(ब) इस प्रकार में किसी कीर्तनकार से कीर्तन–पद सुना नहीं है अतः उदाहरण में उपर्युक्त सरगम प्रसिद्ध की गई है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग सूहा

सूहा राग ग्रन्थोक्त है। ग्रन्थों में देशी सुहा, सूहू इत्यादि नाम प्राप्त होते हैं। हवेली-संगीतपरंपरामें जो सूहा का विशिष्ट प्रकार पाया जाता है वह प्रचार के सूहा से कुछ भिन्न दिखाई देता है, जिसका विवरण इस प्रकार है।

थाट काफी है। स्वर ग नि कोमल तथा शुद्ध निषाद का भी प्रयोग किया जाता है। ध वक्र एवं अवरोह में ग वक्र रहता है। यह रात्रि में गाये जाने वाला नायकी कानड़ेका दिन का प्रतिरूप कहा जाता है। वादी म एवं संवादी सा है। गानसमय दिन का दूसरा प्रहर माना जाता है। सांधनिप इस प्रकार धैवत का अल्प प्रयोग किया जाता है। जाति सम्पूर्ण है।

हवेली-संगीत में यह राग चातुर्मास के प्रारम्भसमय यानि ज्येष्ठ शुक्ल १५ से रथयात्रा तक शृंगार दर्शन की सेवा तक गाया जाता है। सोरठ की माफिक सूहा भी वर्षा-आगम का राग माना जाता है। इसको कोई "सूहा-सुघराई" ऐसा संयुक्त नाम से भी पहचानते हैं। वृद्ध कीर्तनकारों से मेरी किशोरावस्था में "सूहा-बिलावल" का प्रकार भी सुना है। *

आरोह :— निसा, ग, म, प, निसां

अवरोह—सां, ध, निष, मप, ग, मरे, सा

राग सुहा-सुघराई—ताल-अर्ध आडा चौताल (प्राचीन चंपक ताल)

मदगजराज की सी चाल।

भुजवर दंड सूंढकी सोभा हर लीनी नंदलाल ॥२॥

चलत कचकुंचित अनेक अंकुश से लटकत भाल।

---

* यहां यह प्रकार भी दिया गया हैं। जिसकी परम्परा प्रचारमें अलभ्य हो रही हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चमर चारु अवतंस पंजरी मदकण श्रमजलजाल ॥२॥
मुरलीरव गुंजार सुनत ही कंपत चित-व्रजबाल ।
रसिकसनो गदाधरयोंही वनवेली बेहाल ॥७॥

स्थायी

३		४		×	२	
नि	प	निम	प	नि	प	मप
म	द	ग—	ज	रा	—	ज—
प	ग	ग	गम	रे	—	सा
की	—	सी	——	चा	—	ल

अंतरा

३		४		×	२	
म	प	नि	प	नि	सां	सां
भु	ज	व	र	दं	—	ड
रें	—	नि	सां	निप	नि	प
सूं	—	ढ	कैं	सो—	—	भा
म	म	प	मप	सां	—	नि
ह	र	ली	——	नी	—	—
प	—	ग	गम	रे	—	सा
नं	—	—	द—	ला	—	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग सुहा–सुघराई–ताल त्रिताल

कोनकी उपरनी ओढ आये हो, पिय सांचि कहो मोसों ।
अटपटी पाग लटपटे पेचन विनगुन माल अधरन अंजन लाये हो ॥१॥
जानत जिनके दुराये चाहत हो छुपत नांहि छुपाये ।
अति चतुराई जिन करो माहन मोसों कहो अब कोन त्रिया बिरमाये हो ॥२॥

स्थायी

०	३	×	२
– म – रे	प म नि प	सां – निप	म प – ग
– कौ – न	की उ प र	ना – – –	– ओ – ठि
म – रे सा	रे – सा सा	सा म म म	रे रे सा सा
आ – ये –	हो – पि य	सां – चि क	हो मो – सों

अंतरा

×	२	०	३
म रे प प	– प नि मप	नि सां सां सां	रें – सां सां
अ ट प टी	– पा – ग–	ल ट प टे	पे – च न
निप पनि प ग	म रे – सा	सा सा म रे	प म नि प
वि– न– गु न	– मा – ल	अ ध र न	अं – ज न
सां – नि प	– ग म रे	सा म – रे	प म नि प
ला – – ये	– हो – –	– को – न	की उ प र

राग सुहा–सुघराई–ताल धमार

बरस उघरि गयो मेह टपकत पात दुमवेली ॥
झमकत झार नीर भरे देखियत, सोभा देखि सहेली ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लाल मनावन तू नहीं मानत, तोसों प्रीति नवेली ।
"तानसेन" के प्रभु तुम बहुनायक याहितें गर्वगहेली ॥२॥

स्थायी

३				×					२		०		
ग	गम	रे	सा	रे	—	सा	—	—	म	प	पनि	मप	ग
ब	रऽ	स	उ	घ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ग	यो	मेंऽ	ऽऽ	ह
म	म	प	प	नि	प	नि	सां	—	नि	प	गम	रे	सा
ट	प	क	त	पा	ऽ	ऽ	त	ऽ	टु	म	बेऽ	ऽ	ली

अंतरा

×					२		०			३			
म	प	—	नि	प	नि	—	सां	—	—	सां	—	नि	सां
झ	म	ऽ	क	ऽ	त	ऽ	झा	ऽ	ऽ	र	ऽ	नी	ऽ
गं	मं	—	रें	—	सां	—	नि	सां	सां	नि	—	प	—
र	ऽ	ऽ	भ	ऽ	रे	ऽ	दे	ऽ	खि	य	ऽ	त	ऽ
म	प	—	सां	—	—	—	नि	सां	—	नि	—	प	—
सो	ऽ	ऽ	भा	ऽ	ऽ	ऽ	दे	ऽ	ऽ	खि	ऽ	स	—
नि	प	—	ग	—	म	—	रे	सा	—	रे	रेग	रे	सा
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ब	रऽ	स	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×					२		०			३			
ध	–	–	ध	–	नि	प	प	–	–	प	म	प	–
ला	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	म	ना	ऽ	ऽ	ब	ऽ	त	ऽ
सां	–	–	सां	–	सां	–	नि	सां	–	नि	–	ध	–
तू	ऽ	ऽ	न	ऽ	हीं	ऽ	मो	ऽ	ऽ	न	ऽ	त	ऽ
नि	प	–	ग	–	म	–	रे	–	–	सा	–	रे	–
तो	ऽ	ऽ	सौं	ऽ	ऽ	ऽ	प्री	ऽ	ऽ	त	ऽ	न	ऽ
ग	–	–	म	–	रे	–	नि	सा	–	–	–	–	–
वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

'आभोग' अंतरानुसार ॥

राग–सुहा–सुघराई–ताल धमार

जानी मै आज तू मिली प्यारे सों अपनो भामचो हरि किये ।
सकल रेन रतिरंग रसभरे खेलत [1]पलकसों पलक नां लागनि दियो ॥१॥
कंठ लगाय भुज है सिरहाने रसिक लालको अधररस पियो ।
कुंभनदास–प्रभु गिरिधरधर को अंग भरि भेंटि जुडायो हियो ॥२॥

स्थायी

३				×					२		०		
नि	प	ग	म	प	सां	–	नि	प	सां	–	नि	सां	–
जा	नी	में	–	आ	–	–	ज	–	तू	–	मि	ली	–

१. पाठांतर–पलकु पल-पल लागन दियो ।

नि – प –	ग ग – ग म	रे सा	रे सा –
ध्या – रे –	सों – – अ –	प –	नो – –
	म प		
म – म –	प – – नि ध	ग म	रे – सा
भां – म –	तो – – ह री	– कि	यो – –

अंतरा

×	२	०	३
म प – नि प	सां –	सां – –	सां – नि सां
स क – ल –	रे –	न – –	र – ति –
नि नि सां रें –	सां –	रें नि सां	प – नि प
रं – ग र ऽ	स –	भ रे –	खे – ल त
ध प – ग ग	म –	प नि –	म प सां –
प ल – क –	सों –	प ल –	क – नां –
नि प – ग ग	ग म	रे – सा	
ला ग – नि –	– दि	यो – –	

राग सुघराई—संक्षिप्त विवरण

यह प्राचीन राग है। अष्टछापीय परंपरा में यह राग वर्षाऋतु के आगमसमय यानि रथयात्रा के पूर्व के दिनों में सूहा और सुघराई शृंगार के दर्शनसमय तक गाने की प्रणाली है। किन्तु आज उसकी यथार्थ परंपरा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्राप्त करना दुर्लभ है। फिर भी नाथद्वारा—कांकरौली के वृद्ध कीर्तनकारों से सुना हुआ स्वरूप के आधार पर यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

आधुनिक संगीत–क्षेत्र में जो सुघराई प्रचार में है उससे यह स्वरूप कुछ भिन्न है। सुघराई के दो प्रकार माने जाते हैं (१) ध वर्ज्य का और (२) धैवतयुक्त। इसमें धैवत बाला प्रकार हमारी परंपरा से मिलता झूलता है। यह सुघराई राग अडाना और सारंग मिलकर बना हुआ है। हमारी परंपरामें शुद्ध धैवत का अडाना गाया जाता है। अतः शुद्ध धैवत का सुघराइ राग सुसंगत कहा जायगा।

यह राग का थाट काफी है। वादी पंचम और संवादी षड्ज हैं। गानसमय दिन का दूसरा प्रहर हैं। ग नि कोमल है तथापि आरोह में शुद्ध नि का प्रयोग किया जाता हैं। आरोह में धैवत वर्ज्य हैं और अवरोह में वक्र रूप से लिया जाता हैं। तार सां से। अवरोह करते समय सांध, नि प इस प्रकार वक्ररूप नि प की संगति ली जाती हैं। क्वचित् सरल रूप से भी प्रयोग किया जा सकता है। गांधार कोमल और गमरेसा इस प्रकार वक्र भी है, तथापि विवादी के नाते से क्वचित् शुद्ध गांधारका प्रयोग किया जाय तो वह आह्लादक होगा।

आरोह :—सारे, म प, नि सां।

अवरोह :—सांध नि प, म प, ध प, ग, मरे, सा.

पकड़ :— सांध, नि प, म प, रेमप, धप, मष, ग, मरेसा.

विस्तार :—

सा, रेसा, मप, ध निधप, प्रगमप, निधप, मप, ग, मरेसा।

पध, निधप, मपनिसां, निधनिसा, निधप, पम, पग, म, रे, सा।

मप, निसां, रें, सां, निध, निधप, मप, धनिधप, पम, ग, मरे, सा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग सुधराई—ताल चौताल

नई रितु आई माई परम सुहाई ।
नवसिंगार सज चलोरी सबे मिल जहां प्रीतम सुखदाई ॥१॥
तन मन भेट करन रुचि वाढी बिरहनि बिरह सताई ।
"कुंभनदास"प्रभु मानगढ तोरन व्रजजन सजत चढाई ॥२॥

स्थायी

०		३		४		×		०		२	
नि	प	—	म	म	प	सां	—	सां	नि	—	प
न	ई	ऽ	रि	तु	ऽ	आ	ऽ	ई	मा	ऽ	ई
ध	प	म	ग	म	प	ग	—	म	रे	—	सा
प	र	ऽ	म	ऽ	सु	हा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	—	नि	—	नि	सां	—	सां	सां	—	सां
न	ऽ	ऽ	व	ऽ	सिं	गा	ऽ	र	स	ऽ	ज
नि	नि	सां	रें	—	सां	नि	सां	—	नि	ध	प
च	लो	ऽ	री	ऽ	स	बे	ऽ	ऽ	मि	लि	ऽ
म	म	ऽ	प	म	प	निध	प	म	रे	म	प
ज	हां	ऽ	प्री	ऽ	ऽ	तऽ	म	ऽ	सु	ऽ	ख
ग	म	—	रे	—	सा	नि	प	—	म	म	प
दा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	न	ई	ऽ	रि	तु	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	—	प	—	ध	नि	ध	प	मग	म	प
त	न	ऽ	म	ऽ	न	भे	ऽ	ऽ	टऽ	ऽ	क
ध	प	—	म	म	प	ग	—	म	म	प	—
र	न	ऽ	रु	चि	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ढी	ऽ	ऽ
नि	ध	—	म	—	म	प	प	—	ग	—	म
वि	र	ऽ	ह	ऽ	नि	वि	र	ऽ	ह	ऽ	स
नि	म	—	ग	—	म	रे	—	—	सा	—	—
ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	इ	ऽ	ऽ

"आभोग" अंतरानुसार ।

राग सूहा-बिलावल—ताल धमार

सुवा तेरी सोनें चोंच मढाऊं ।
कहेगो संदेशो प्रानप्यारी सों तब में वहुत रिझाऊं ॥२॥
फरकत भुजा नेन रतनारे यह धों काहे सुमाऊं ।
'मुरारिदास'प्रभु सांझ समे सुपनो जु भयो सो जाग परे गुन गाऊं ॥२॥

स्थायी

३				×					२		०		
मग	म	रे	सा	रे	—	सा	म	प	निध	नि	सां	धनि	प
सु—	हा	ते	री	सो	—	नें	चों	—	च—	म	ढा	——	ऊं
ग	म	रे	सा	म	प	प	धनि	सांरें	सां	धनि	प	मग	म
सु	हा	ते	री	सो	—	नें	चों	——	च	म—	ढा	——	ऊं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×					२		०			३			
म	पं	—	नि	प	नि	नि	सां	—	—	सां	—	—	—
क	हे	—	गो	—	—	सं	दे	—	—	सो	—	—	—
नि	सां	—	मं	—	रें	सां	रें	—	—	सां	—	धनि	प
आ	—	—	न	—	—	पि	या	—	—	रे	—	को—	—
म	म	—	प	—	—	प	मप	धनि	सां	—	—	ध	प
त	ब	—	में	—	—	ब	हु—	——	—	—	—	त	रि
म	प	—	मग	म	रे	—	सा	—	—	मग	म	रे	सा
झा	—	—	——	—	—	—	ऊं	—	—	सु—	हा	ते	री

राग बिलावल

बिलावल राग अति प्राचीन है । संस्कृत ग्रन्थों में इसका नाम बेलावली—बेलावल–बिलावली से दृष्टिगत होता हैं । पुष्टिसम्प्रदाय के हवेली-संगीतपरंपरा में यह राग प्रातःकालीन रागो में मुख्य माना जाता है । यह राग मंगला के दर्शन के बाद शृंगार के अवसरों में एवं शृंगारदर्शन के समय अधिकतर गाया जाता हैं । क्वचित् उत्सवादि की विशिष्ट प्रणाली अनुसार मंगलादर्शन में भी यह गाये जाने की भी प्रथा है । किन्तु वह अपवाद के रूप में ही माना जायगा ।

इस राग का गान-समय शास्त्रोक्त नियम अनुसार दिन का प्रथम प्रहर माना जाता है । यही मर्यादा अनुसार इस राग के सभी प्रकारों के गाने की प्रथा आज तक दिखाई देती हैं । वर्षभर की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सेवाप्रणाली में यह राग गाया जा सकता है। किन्तु हेमंत शिशिर बसंत और वर्षा ऋतु की कीर्तनप्रणाली में यह राग कुछ समय के लिए गौण बन जाता है; अर्थात् उन दिनों में इस राग का गान बंद हो जाता है। केवल बधाई उत्सवादि त्यौहारों में बारहों मास गाने का रिवाज है। नित्य उत्सव त्यौहार आदि वर्षभर की सेवाप्रणाली में यह राग के पदों का साहित्य विपुल प्रमाण में प्राप्त होता है। अधिकतर यह साहित्य केवल 'राग–बिलावल' इस शीर्षक के अन्तर्गत संगृहीत होते हुए भी प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों में इस राग के अन्य प्रकारों का उल्लेख भी पाया जाता हैं। इस उल्लेख के अतिरिक्त गान-बंदिश के आधार पर राग के ६ प्रकार दिखाई देते हैं। इन प्रकारों की चर्चा के आरम्भ पहले राग 'बिलावल' के संबंध में विचार करें।

सम्प्रदाय की गानप्रणाली में बिलावल राग का सबसे पहले विनियोग हुआ है। श्रीमद्वल्लभाचार्यजी ने अष्टछाप के प्रथम गायक श्री कुम्भनदासजी को सर्वप्रथम वि. सं. १५५५ में कीर्तनगान की जब आज्ञा की थी तब उन्होंने प्रथम बिलाबल राग में ही 'सांझ के सांचे बोल तिहारे' यह पद का गान किया था। तदुपरान्त श्रीसूरदासजी ने भी श्रीमद्वल्लभाचार्यजी की शरन में आने के बाद 'चकहरी चल चरन सरोवर' इस पद का ही प्रथम राग बिलावल में ही गान किया था।

भारतीय संगीत में राग–कुटुम्ब की व्यवस्था नष्ट होने के बाद मेल(थाट)पद्धति का प्रचार हुआ। उत्तर हिन्दुस्तान की इस मेल-(थाट)पद्धति अनुसार इस राग का शुद्ध सप्तक माना जाता है। उत्तरीय पद्धति का मुख्य थाट 'बिलावल' ही है। इस हकीकत की प्राचीन मान्यता के लिये श्रीकुम्भनदासजी तथा श्रीसूरदासजी को ही प्रथम अधिकारी माना जायगा। हिं. सं. पद्धति का महत्त्वपूर्ण 'तोके तुल हिन्द' नामक उर्दू ग्रन्थ में अपना शुद्ध स्वरसप्तक बिलावल होना चाहिए

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ऐसा स्पष्ट उल्लेख किया गया है। ई. स. १८ वीं शती में आजमखान के आश्रित मिरज़ाखान ने इस ग्रन्थ की रचना की। संस्कृत ग्रन्थों में भी शुद्ध स्वर-सप्तक 'बिलावल' होने का राजा सुरेन्द्र मोहन टागोर के गायक गुरु क्षेत्रमोहन स्वामी मानते थे।

रागों की कुटुम्बव्यवस्था के समय में राग-रागिनियों के ध्यानस्वरूप का वर्णन भी पाया जाता है। "संगीत–दर्पण" ग्रन्थ में वेलावली राग का स्वरूपवर्णन निम्न प्रकार किया गया है :

संकेतदीक्षां दयिते च दत्त्वा वितन्वती भूषणभंगकेषु ।
मुग्धाः स्मरन्ती स्मरमिष्टदेवंमु वेलावली नीलसरोजकान्तिः ॥
(अ. २, पृ. ६१)

स्वरूपवर्णन के बाद प्राचीन ग्रन्थों में इस वेलावली (बिलावल) के विषय में "संगीतरत्नाकर" में उल्लेख है कि वेलावली कुकुभ राग की भाषा भोगवर्धिनी में से उत्पन्न होती है।[१]. ग्रह, अंश और न्यास–स्वर धैवत है। गान्धार, पंचम अपन्यास है। रिवर्जित है। तारस्थान में ध और म प्रस्थानावधि गान्धार है।

बिलावल के विषय में प्राचीन ग्रन्थों का उल्लेख देख लेने के बाद आज का प्रचलित स्वरूपके समर्थन करने वाले ग्रन्थों में से कुछ के उदाहरण देखें।

"राग-कल्पद्रुमांकुर" ग्रन्थ में विलावल का वर्णन करते हुए कहा है
रागो वेलावलीति प्रथित इह सदा मान्यतीव्रस्वरेषु
षड्जन्यासग्रहोऽयं प्रकृतिसुरचिरो धैवतांशो गमंत्री ।
आरोहेऽथो गनी स्तो विलसति निगयोर्वक्रिता चावरोहे
प्रातर्गेयोऽभिगीतो रमयति हृदयं शृण्वतामेष पूर्णः ॥६॥

---

१. विभाषा कुकुभे भोगवर्धनो तारमन्द्रगा ।
धैवतांशग्रहन्यासा गापन्यासा रिवर्जिता ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बेलावली (बिलावल) राग में मध्यम कोमल और बाकी सभी स्वर शुद्ध लगते हैं । षड्ज स्वर न्यास होता है तथा अधिकतर इसी स्वर से ही आरम्भ होता है । निषाद और गान्धार स्वर वक्र रहते हैं । धैवत स्वर वादी और गान्धार संवादी है । प्रकृति अति मधुर है तथा संपूर्ण जाति का यह राग है । जो कि प्रातःकालीन समय में गाने से श्रोताओं के मन को आनंदित करता है ।

तथा 'राग-चंद्रिकासार' ग्रन्थ में भी इसी प्रकार कहा है :

मृदु मध्यम तीवरी सबही, सुर सोहत जेहि मांहि ।
धग वादी संवादी है, कहत बिलावल ताहि ॥३॥

बिलावल-राग के विषय में उपर्युक्त उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि इस राग की परंपरा प्राचीन समय में थी और आज भी यह राग विशेष प्रचार में है । इतना ही नहीं किन्तु इस राग के स्वरों की मेलपद्धति में मुख्य एवं प्रथम मेल (थाट) के तोरसे माना जाता है । उत्तरभारतीय संगीतपद्धति में शुद्ध स्वर का मुख्य मेल बिलावती ही कहा जाता है । इस बिलावल राग में से जो विभिन्न प्रकार उत्पन्न होते हैं उनमें से भारतीय संगीत की अष्टछापपरंपरा में प्रायः ६ प्रकार का गान किया जाता है ऐसा लेखक का मानना है:। उनमें से यहां (१) शुद्ध बिलावल (शंकराभरण) और (२) अल्हैया बिलावल के विषय में हम प्रथम चर्चा करेंगे । इसके बाद (३) नट—बिलावल, (४) कुकुभ—बिलावल, (५) गौड—बिलावल और (६) देवगिरि बिलावल के विषय में आगे जाकर विचार करने का होने से उसकी चर्चा यहाँ पर स्थगित रक्खेंगे ।

अष्टछाप के आठों संगीत—कीर्तनकारों ने बिलावल राग में भगवल्लीला का गुणगान किया है । इतना ही नहीं परन्तु पुष्टिमार्गीय हवेली-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संगीत के अन्य पद–गानकर्ताओंने भी अधिकतर इस राग में ही गान किया है। जो सुप्रसिद्ध है।

किन्तु एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि सम्प्रदाय के संग्रहों में केवल 'राग–बिलावल' शीर्षक से प्राप्त होने वाले विविध प्रकारों की चर्चा हम कर रहे हैं। शुद्ध बिलावल राग में गाये या गाये जानेवाले पदों की संख्या अल्प प्रमाण में ही है और वह आज हवेलीसंगीत के मुख्य स्थानों में अमुक कीर्तनकारों से ही नहीं, परन्तु भारतीय संगीत के प्रसिद्ध घरानेवाले गायकों में भी यही परिस्थिति दिखाई देती है। यह चर्चा करते समय यहाँ शुद्ध 'बिलावल' के विषय में शास्त्रीय पहिचान समझ लीजिए :–

राग–शुद्ध बिलावल आरोहावरोहस्वरूप :–

सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां। सां, नि, ध, प, म, ग रे, सा

सामान्य स्वरस्वरूप :–

सा, रेसा, गप, धनिप, निसां, सानिधपध, मग, मरे, सा

"लक्ष्यसंगीत" ग्रन्थ के द्वितीय अध्याय में से निम्नलिखित वर्णन उपयोगी होगा।

[1]शंकराभरण थाट में से बिलावल राग निकलता है। षड्ज वादी माना

---

१ शंकराभरणे मेले रागो वेलावलः स्मृतः।
षड्जांशको बुधैः प्रोक्तो धैवतांशी अपि संमतः॥
अस्य गानं मतं आरोहणं भवेत्तत्र अल्पस्वरसंयुतम्।
प्रातरुत्तरांगप्रधानकम्॥
प्रातःकालीयकल्याण इति केचिद्वदन्त्यमुम्।
अवरोहे गदौर्बल्यं कल्याणे च निवरिते॥
गमयोः संगतिस्तत्र नित्यं वैचित्र्यकारिणी।
आरोहे तु निवक्रत्वं केषांचित्सुमतं सताम्॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जाता है और कोई कोई धैवत को मानते हैं। आरोह में मध्यम और निषाद स्वरों का अल्पत्व है। इस राग का गान उत्तरांगप्रधान होने से प्रातःकालीन समय उचित माना जाता है। पंडितजन उसे सुबह का कल्याण भी कहते हैं। अवरोह में गान्धार स्वर होने से कल्याण से बचाया जा सकता हैं।

बिलावल राग का स्वरस्वरूप अर्थात् स्वरविस्तार इस प्रकार से होगा।

१. सा, रेसा, गमरेसा, गमप, मग, मरे, सा

२. सा, रेसा, गमरेसा, निध, निधप, पध, सा, सारेगम, ग, मरे, सा

३. साग, मग, मरे, सा, धधप, धमग, मरे, सा

४. सारेगम, रेगम, पमगमरे, धधप, निधप, धमग, रेगमप, म, ग, मरे, सा

५. सारेगमरे, सः, सारेगमधप, पमगमरेसा,
सारेगमपधनिसां, सांनिधपमग, मरे, सा

६. सा, गम, रेगम, प, धध, निध, सां, निध, प, धधमग
मरें, गम, धमग, मरे, गम, रेसा।

७. पप, व, निसां, सारेसां, सांरेंगंमंरें रेंसां, निध, पमगमरे, गमध, प
मग, मरे, सांनिमपधनिध, सां, धनिसां, सारेगम, रेंरेंसां, रेंसां, धम,
मग, मरे, रेग मप, गमग, मरे, रेसा,

अब (शुद्ध) बिलावल राग में श्रीचतुर्भुजदासजी का खंडिता के गान का हवेलीसंगीत के क्रम में गाये जाने वाला निम्न पद उदाहरण-रूप स्वर-लिपि के साथ यहाँ प्रस्तुत कर रहें हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग बिलाचल–ताल चौताल

मोहन घूमत रतनारे नेन सकुचत कछु कहत बेन
सेनही सें न उत्तर देत नंद के दुलारे ।
भूखन बसन भांति–भांति अनुपम छबि कही न जात
लटपटी सुदेस पाग चित्तको चुरावे ॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
									ग	प	म
									मो	ह	न
नि	ध	नि	सां	रें	सां	सां	—	सां	ध	ध	प
घू	—	म	त	र	त	ना	—	रे	नें	—	न
ध	म	ग	म	रे	सा	सा	रे	ग	म	ग	रे
स	कु	च	त	क	छु	क	ह	त	बे	—	न
ग	प	प	नि	ध	नि	सां	रें	गं	रें	सां	सां
सें	न	ही	सें	—	न	उ	त्त	र	दे	—	त
रें	सां	ध	प	ध	म	ग	रे	सा	ग	प	प
नं	—	द	के	दु	ला	ऽ	रे	—	मो	ह	न

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
प	प	म	ध	नि	नि	सां	—	सां	सां	—	सां
भू	ख	न	व	स	न	भां	—	ति	भां	—	ति
सां	रें	गं	मं	पं	मं	गं	मं	रें	सां	—	सां
अ	नु	प	म	छ	बि	क	ही	न	जा	—	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें सां	सां ध	प ध	ग म	प नि	ध नि
ल ट	प टी	— सु	दे —	स पा	— ग
सांनि सां	ध म	ध म	ग रे	सा ग	प प
चि— —	त कों	चु रा	— वे	— —	— —

राग विलावल—ताल धमार

सांझ के सांचे बोल तिहारे,
रजनी अनत जागे नंदनंदन आये निपट सवारें ॥१॥
आतुर भये नीलपट ओढें, पीरे बसन बिसारे,
'कुम्भनदास' प्रभु गिरधरन लाल तुम, भलें जु बचन प्रतिपारें ॥२॥

स्थायी

×	२	०	३
			ग रे गम प
			सां — झ के
धनि सां धप मग मरे	गम प	मग मरे सा	ग रे गम प
सां — चे— बो— ——	ल— ति	हा— —— रे	सां — झ के

अंतरा

×	२	०	३
प प निध नि नि	सां सां	सांरें गं मं	गं रें सां सां
र ज नी— अ न	त जा	गे— नं द	नं — द न
रें सां — ध प	प ध	मग म रे	ग रे गम प
आ ये — नि प	ट स	वा— — रे	सां —झ— के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×	२	०	३
म म मग प प	— प	ध ग म	ग प ध नि
आ तु र— भ ये	— नी	ल प ट	आ — ढें —
सां ध प म ग	रे गप	प ग म	रे — सा —
पी रे — च स	न वि—	सा — —	— — रे —

'आभोग' अन्तरानुसार ।

शंकराभरण

बिलावल के स्वरूप से मिलता जूलता ही एक शंकराभरण राग भी हवेलीसंगीत के प्राचीन संग्रहों में क्वचित् देखने में आता है । जब कि 'शंकराभरण' संज्ञा के पदों की संख्या अल्प है । परन्तु हवेली-संगीत के जन्मदाताओं में से गोविन्द स्वामी तथा चतुर्भुजदासजी-रचित पदसंग्रहों में इसका उल्लेख प्राप्त होने से यहां शंकरामरणे के विषय में संक्षिप्त विवरण देना उचित होगा ।

शंकराभरण राग अपनी उत्तरभारतीय पद्धतिका नहीं हैं किन्तु कर्णा-टकी पद्धति का एक प्राचीन राग हैं । इस पद्धति में यह राग लोकप्रिय है । वहाँ पर इस राग की परंपरा आज तक वैसी ही दिखाई देती है । अपनी उत्तरभारतीय पद्धति में जैसे बिलावल को शुद्ध—स्वर का मुख्य थाट मानने में आता है उसी प्रकार दक्षिणी पद्धति में शंकराभरण मेल (थाट) माननें में आता है ।

पंडित दामोदरने अपने ग्रन्थ में कहा भी है :

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बैलावल्याः स्वराः प्रोक्ताः शंकराभरणे बुधैः ॥

शंकराभरण के स्वरों को पंडित लोग बिलावल ही मानते हैं।

''लक्ष्यसंगीत'' में भी चतुर पंडित (भारतखण्डेजी) ने लिखा है :

शंकराभरणे मेले रागो वेलावलः स्मृतः ।

बिलावल राग शंकराभरण थाट में से निकलता है। इस प्रकार के ग्रन्थकारों के विद्वानों से ही नहीं, परन्तु प्रचार में भी आज शंकराभरण और बिलावल का स्वर–स्वरूप एक जैसा दिखाई देता है, अर्थात् इन दोनों का गान–समय, जाति वगेरह एक ही होने से बिलावल के पदों को संग्रहकर्ता ने शंकराभरण संज्ञा के अन्तर्गत रख दिया ऐसी संभावना है।

सम्प्रदाय के शुरू से ही श्रीमद्वल्लभवंश के गोस्वामी बालकों का दक्षिण प्रदेश के साथ संबंध सुप्रसिद्ध है। इस संपर्क के कारण दाक्षिणात्य संगीत का अच्छा ज्ञान होने से तथा दोनों रागों में साम्य होने के कारण बिलावल के कोई पद को शंकराभरण शीर्षक के अन्तर्गत लिखना या लिखाया गया हो तो भी असंभवित नहीं है।

इसके सिवाय अन्य कारण भी संभवित हैं :

हवेली–संगीत में शुद्ध बिलावल सिवाय के अन्य सभी प्रकारों में दोनों निषादों का प्रयोग होता है और ये सभी प्रकार बिलावल के शीर्षक के अन्तर्गत देखने में आते हैं। उससे कोमल निषाद के प्रयोग वाले अन्य प्रकारों से अलग रख कर बिलावल शुद्ध स्वरूप बताने के लिए बिलावल के शुद्ध पदों के साम्य से शंकराभरण शीर्षक के अन्तर्गत लिए गए हों तो वह भी असंभवित नहीं है। चाहे जो भी कारण हो, परन्तु शंकराभरण दक्षिणी संगीत का राग और बिलावल उत्तरभारतीय संगीत का राग होने से शंकराभरण शीर्षक के अन्तर्गत लिखे पदों का शुद्ध बिलावल में ही समावेश करेंगे तो वह लेखक के मतानुसार उचित होगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग अल्हैया बिलावल

सम्प्रदाय की प्रणाली के अन्तर्गत गाये जाने वाले राग के षड्-विध प्रकारों में से पदसंग्रह ग्रन्थों में बहुधा विलावल संज्ञा से ही समावेश हुआ है। यह हकीकत पूर्व प्रकरण में देखने के बाद अब इस अल्हैया विलावल के विषय में समझेंगे। शास्त्रदृष्टि से देखने से अल्हैया नाम प्राचीन ग्रन्थों में मिलेगा नहीं, परन्तु मात्र 'रागतरंगिणी' नाम के मध्यकालीन ग्रन्थ में विलावल और अल्हैया बिलावल ऐसे दो नाम दृष्टिगोचर होंगे। सारांश यही है कि अल्हैया बिलावल को भिन्न समझकर गाने वाले गायकों की परंपरा भी अल्प मात्रा में देखने में आती थी। इस हकीकत की पुष्टि के लिए पंडित भातखंडेजी–लिखित शास्त्र-ग्रन्थ भाग–१ में से निम्न अवतरण उपयोगी होगा। वे लिखते हैं कि........."प्रचार में शुद्ध बिलावल और अल्हैया बिलावल ऐसे निराले गाने वाले गायक आप को कहीं ही मिलेंगे। आष किसी भी गायक को बिलावल गाने का कहेंगे तो वह उसी दम अल्हैया गाने लगेगा। उसके बाद शुद्ध बिलावल गाने की बंदिश करना मुझे आता नहीं है ऐसा ही कहेगा। किन्तु कोई उसके जैसा ही गाने लगेगा और समय पसार कर देगा।"

भारतवर्ष के लगभग सभी गायक–वादकों में जब उपर्युक्त विधा-नानुसार परिस्थिति देखने में आती थी तब अष्टछापसंगीत–घरानाओं में भी यह हकीकत प्रवर्तमान थी, और दो या तीन पच्चीसी पहले के अर्वाचीन ग्रन्थों में बहुधा यही हकीकत दृष्टिगत होती है। इसके लिए नीचे लिखे दो–तीन उदाहरण बस हो जायेंगे।

प्रो. ववें ने अपने ग्रन्थ में बिलावल का वर्णन करते हुए लिखा हैं कि 'तार स्थानों के आसपास विशेष गति, अवरोह में ग कम लिया

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जाता है और नि कोमल कभी कभी किसी समय अवरोह में ही लिया जाता है।'[१]

पंडित आदित्यरामजी ने बिलावल राग के वर्णन में बताया है कि 'यह राग संपूर्ण हैं। आरोह में मध्यम व निषाद कम मिलाया जाता हैं। निषाद दो हैं और सब बाकी के शुद्ध स्वर हैं! आरोह में दो निषाद साथ भी अच्छे दिखाई पडते हैं। अवरोह में कोमल निषाद लेना। पहिले तो आधार अवरोह में वर्ज्य था, परन्तु अब तो मिलाया जाता है और प्रधान सुर गिना जाता है।'[२]

'संगीतकलाधर' ग्रन्थ में भी बिलावल राग के वर्णन में दोनों निषाद मानने में आये हैं।

उपर्युक्त उल्लेखों में बिलावल राग में दोनों निषादों का प्रयोग स्पष्ट रूप से बताया है, जिसको आजकल अल्हैया बिलावल से पहिचाना जाता है। यह सब देखते हुए स्पष्ट होता है कि सम्प्रदाय की परंपरा में तथा अन्य घरानाओं में भी अधिकतर अल्हैया बिलावल को बिलावल की संज्ञा से पहिचानने का व्यवहार पांच सात शती पहले से ही विशेष प्रसिद्ध था।

सम्प्रदाय के प्राचीन पदग्रन्थों मे अल्हैया बिलावल के विषय में अलग अल्हैया बिलावल का नामोल्लेख देखने में आया नहीं है, परन्तु विक्रम की १८ वी शताब्दी और उसके बाद लिखे गये पदसंग्रहों मे किसी किसी स्थान पर अल्हैया बिलाबल का नाम दृष्टिगोचर होता है। सम्प्रदाय में लिखे हुए पदसंग्रहो के दो प्रकार देखने में आते हैं (१) लहिया के हाथ से लिखाया हुआ और (२) गायन–कीर्तनकारों ने अपने ही हाथ से लिखा हुआ। जिसमें लहिया के हाथ से लिखे संग्रहों में लेखन की शुद्धि विशेषतः दिखाई देती है, जब कि गायक कीर्तनकारों ने अधिकतर लेखन–ज्ञान और अक्षर–ज्ञानविहीन होने के कारण उनके लिखे संग्रहों

१. गायन वादन पाठ्य, पृष्ठ–२७४

२. संगीतादित्य, पृष्ठ–५८

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

में मात्रा, शब्दों की बहुत सी भूलें दृष्टिगोचर होती हैं, यह स्वाभाविक कहा भी जा सकता है । ऐसे ही एक सामान्य अक्षरज्ञान वाले कीर्तनकार के हाथ से १८ वी शताब्दी मे लिखे संग्रह में 'बिलाओल अलइयो' इस शीर्षक के अन्तर्गत कितने ही पद लिखे दिखाई देते हैं, और किसी संग्रह मे 'राग अल्हैया' अथवा 'अल्हैया बिलावल' ऐसा संयुक्त नाम भी देखने में आता है ।

ये सब देखते हुए स्पष्ट होता है कि उत्तरभारतीय संगीत-घरानें के गायकों और अष्टछाप—संगीतपरंपरा के गायकों ने भी निषाद के प्रयोग वाले स्वरूप को बिलावल नाम से ही बताया और बताते आये। परन्तु इसवी सन की बीसवीं शताब्दी के आरंभ के बाद से धीरे-धीरे भारतीय संगीत के गायकों में बिलावल और अल्हैया बिलावल इन दोनों के भिन्न स्वरूपों को समझकर गाने का व्यवहार मे प्रचार में आने लगा । परिणामस्वरूप आज अपने वर्तमान गायक–वादको के गायन–वादन तथा संगीतशिक्षा देती पाठशालाओं के शिक्षण में बिलावल और अल्हैया बिलावल इन दोनों का स्वरूप स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है । इस प्रकार उत्तरभारतीय संगीत के सभी क्षेत्रों से इन दोनों स्वरूपों का स्पष्ट प्रकार गाया गया हो तब हवेलीसंगीत के गायक-वादकों को भी प्राचीन व्यवहार में से बाहर आना उचित ही होगा ।

क्योंकि सम्प्रदाय में बिलावल और अल्हैया बिलावल इन दोंनों रागों में विविध तालों में गाए जानेवाली परंपरा उसी प्रकार से है । इससे इन दोनों रागों का स्वरूप और भेद जानना आवश्यक है । बिलावल राग के शुद्ध स्वरूप के विषय में इससे पहले हम देख चुके हैं । इस लिए अल्हैया बिलावल के विषय की जानकारी और उसका स्वरूप पर यहाँ पर विचार करेंगे ।

मृदु मध्यम सब तीव्र सुर, मध्यम से न चढैया ।
कहुं निषाद कोमल लगत, ध ग संवाद अल्हैया ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अल्हैया बिलावल में गानसमय–स्वर–वादी–संवादी वगैरह बिलावल के ही होते हैं। सिर्फ बिलावल के आरोह में मध्यम स्वर छोड कर अवरोह में कोमल निषाद का कभी–कभी थोडे प्रमाण में प्रयोग करने से अल्हैया बिलावल कहा जाता है। जब कि बिलावल के प्रकार में बहुधा धैवत की संगत से अवरोह में वीच–वीच में कई वार निषाद कोमल वक्र लिया जाता है। परन्तु अल्हैया में कोमल नि का अवरोह में 'सां, ध नि ध प,' जैसा स्पष्ट प्रयोग अल्पप्रमाण में किया जाता है। गान्धार स्वर का भी अवरोह में वक्र प्रयोग है, जैसे कि–'गप, मग मरे,' इस राग का अंग उत्तरांगप्रधान कहा जाता है।

न्यासस्वर–षड्ज ऋषभ और पंचम हैं। जाति संपूर्ण है।

पकड स्वर–गरे, गप, ध, निसां

आरोह–अवरोह – सा रे, गरे, गप, ध, निध, सां, सांनिधप,
धनिधप, मग, मरे, सा

अब पुष्टिसम्प्रदाय के सेवाक्रम में प्रातः शृंगार के समय गाये जाने वाले 'अल्हैया बिलावल' राग के पद–कीर्तनों में से सुप्रसिद्ध जैसे निम्न पद स्वरांकन सहित उदाहरणरूप से देखेंगे :

राग अल्हैया बिलावल–ताल चौताल

आजु कौ सिंगार देख्यौ लाडिले गोपालजू को,
धर्यो है टिपारो सीस सोभा अति भारीजू।
तेसोई बन्यो मल्ल–काछ कटि क्षुद्र घंटिकाजू,
परम मधुर नाद कोऊ उचारीजू ॥१॥
पग नूपुर रुनझुनात चलत घोष शब्द सुहात,
नटवर घनस्याम वरन देखत ब्रजनारीजू।
'कुंभनदास' आएं पास करत हैं सुख मधुरहास,
बिलावल तान एक मुरली में ललकारीजू ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	—	सां	ध	नि	प	ध	नि	ध	प	म	ग
आ	—	जु	को	—	सिं	गा	—	र	दे	—	ख्यो
ग	म	रे	ग	म	प	म	ग	म	रे	सा	सा
ला	—	डि	ले	—	गो	पा	—	ल	जू	—	को
सा	सा	—	ग	म	रे	ग	प	ध	नि	सां	सां
ध	यौं	—	है	—	टि	पा	—	रो	सी	—	स
सां	रें	गं	रें	सां	सां	निध	नि	प	प	निध	नि
सो	—	भा	—	अ	ति	भा—	—	—	री	——	जू

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
प	प	प	सां	—	सां	सां	—	सां	रें	सां	सां
वे	सो	ई	ब	—	न्यो	म	—	छ	का	—	छ
नि	नि	—	नि	ध	नि	सां	रें	सां	ध	नि	ध
क	टि	—	क्षु	—	द्र	घं	—	टि	का	—	जू
ध	ध	—	प	म	ग	ग	प	ध	नि	सां	सां
प	र	—	म	—	म	धु	—	र	ना	—	द
सां	रें	गं	गं	रें	सां	निध	नि	प	प	निध	नि
को	—	—	ऊ	—	उ	चा—	—	—	री	——	जू

संचारी

×		०		२		०		३		४	
ध	ध	प	मग	प	प	ध	नि	ध	प	—	प
प	ग	नू	पु—	—	र	रु	न	झु	ना	—	त
ध	प	प	ध	नि	सां	रें	सां	सां	ध	नि	प
च	ल	त	धो	—	ख	स	ब्द	सु	हा	—	त
ग	गरे	गम	प	म	ग	म	रे	रे	सा	रे	सा
न	ट	व—	र	घ	न	स्या	—	म	ब	र	न
सा	—	ध	ध	प	प	ध	नि	सां	ध	नि	प
दे	—	ख	त	व्र	ज	ना	—	—	री	—	जू

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	प	प	सां	—	सां	रें	सां	सां	सां	—	सां
कुं	भ	न	दा	—	स	आ	—	ये	पा	—	स
सां	सां	रें	गं	गं	गं	मं	रें	सां	सां	ध	प
क	र	त	है	सु	ख	म	धु	र	हा	—	स
ग	ग	—	ध	—	ध	ध	नि	प	ध	नि	सां
बि	ला	—	ब	—	ल	ता	—	न	ए	—	क
सां	रें	गंमं	रें	सां	सां	निध	नि	प	प	निध	नि
सु	र	ली—मैं		—	ल	ल	का	—	री	—	जू

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग अल्हैया बिलावल–ताल चौताल

ए आजु अरुन–अरुन डोरे द्रगनि लालके लागत अतिभले ।
बंदन–भरे पगनि अलि मानों कंज दलनि परसत चले ॥१॥
लालकी पगिया बीच न समात कुटिल अलक आलस झलभले ।
'नंददास'प्रभु पहोपनि मधि मानों मधुप गुंज सोभित तें कलमले ॥२॥

स्थायी

							ग	प	नि	ध	नि
							ए	–	आ	–	ज
×		०		२		०		३		४	
सां	सां	सां	सांध	नि	प	ध	प	म	प	म	ग
अ	रु	न	अ–	रु	न	डो	–	रे	द्र	ग	नि
म	ग	म	रे	–	सा	सा	म	ग	प	नि	नि
ला	–	–	ल	–	के	ला	–	–	ग	–	त
रें	सां	–	ध	नि	प	ध	ग	प	नि	ध	नि
अ	ति	–	भ	ल	–	–	ए	–	आ	–	ज

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
प	–	–	नि	ध	नि	सां	–	–	सां	रें	सां
बं	–	–	द	–	न	भ	–	–	रे	–	प
सां	–	रें	गं	मं	रें	सां	–	–	ध	नि	प
ग	–	ज	अ	–	लि	मा	–	–	नों	–	–

ध	धनि	ध	प	म	ग	ग	प	ध	नि	सां	सां
कं	—	—	ज	—	द	ल	—	नि	प	—	र
रें	सां	—	ध	नि	प	ध	ग	प	नि	—	ति
स	त	—	च	ल	—	—	ए	—	आ	—	ज

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	—	—	प	—	प	ध	ध	नि	ध	प	—
ला	—	—	ल	—	की	प	गि	—	यां	—	—
प	—	ध	नि	सां	सां	सां	—	—	ध	नि	प
में	—	—	न	—	स	मा	—	—	त	—	—
ध	प	म	ग	म	प	म	ग	म	रे	—	सा
कु	—	टि	ल	—	—	अ	—	—	ल	—	क
सा	—	ध	ध	नि	प	सां	सां	—	ध	नि	प
आ	—	ला	स	—	—	झ	ल	—	म	—	ले

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	—	—	नि	ध	नि	सां	—	सां	सां	रें	सां
नं	—	—	द	—	—	दा	—	स	प्र	—	भु
सां	रें	गं	मं	रें	रें	सां	—	सां	ध	नि	प
ध	हो	—	प	—	नि	म	—	ध्य	मा	—	नों

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	धनि	ध	प	म	ग	ग	प	ध	नि	सां	—
म	धु—	प	गुं	—	ज	सो	—	भि	त	तें	—
रें	सां	—	ध	नि	प	ध	ग	प	नि	ध	नि
क	ल	—	म	—	ल	—	ए	—	आ	—	ज

राग अल्हैया विलाबल—ताल चर्चरी (झपतालअंग)

कोन लई कोन दई ईंडुरिया गोपाल मेरी ग्वालबाल सखन मांझ तुम ही हँसत हो।

महिपत मुधे रहो कोन लई कासों कहो,

लेत कोन देख्यो सखी कहाँ तुम बसत हो ॥१॥

दई है दुराइ धरत घोस में कहा चोर परत,

एसी होय कबहु लाल कोन पे रिसत हो ।

'नंददास' बसत बास ब्रज में गिरिराज पास,

टेडो फेंटा आडबंध कोन पे कसत हो ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
सां	—	सां	ध	प	ध	नि	ध	प	प
को	—	न	ल	ई	को	—	न	द	ई
म	ग	रे	गम	प	मग	म	रे	सारे	सा
ई	डु	रि	यां—	गो	पा—	—	ल	मे—	री
सा	सा	ग	म	रे	ग	प	ध	नि	प
ग्वा	ल	वा	ल	स	ख	न	मां	—	झ
ध	नि	सां	रें	सां	ध	प	प नि	ध	नि
तु	म	ही	—	हँ	स	त	हो	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×		२	नि		०		३		
प	प	प	ध	नि	सां	सां	सां	सां	—
ग	हि	प	त	—	सु	धे	र	हा	—
सांध	निध	सां	सां	रें	सां	सां	सां	ध	प
को—	——	न	ल	ई	का	सों	क	हो	——
ग	म	ध	—	ध	सां	सां	ध	नि	प
ले	त	को	—	न	दे	ख्यो	स	खी	—
ध	नि	सां	रें	सां	ध	प	नि	ध	नि
क	हा	तु	म	ब	स	त	हो	—	—

संचारी

×		२			०		३		
ग	ग	प	—	प	ध	ध	ध	नि	प
द	ई	हे	—	दु	रा	ई	ध	र	त
(प)ग	प	नि	ध	नि	सां	सां	सां	धनि	प
घो	स	में	क	हा	चो	र	प	र—	त
सां	सां	ध	प	प	म	प	म	ग	मरे
ए	सी	हो	य	क	व	हु	ला	—	ल—
ग	म	प	ग	मग	म	रे	सा	—	—
को	न	पें	—	रि—	स	त	हो	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आभोग

×		२			०		३		
प	प	प	ध	नि	सां	सां	सां	—	सां
नं	द	दा	स	ब	स	त	बा	—	स
सां	रें	गं	गं	मं	रें	सां	सां	ध	प
ब्र	ज	में	गि	रि	रा	ज	पा	—	स
ग	म	ध	ध	प	ध	नि	सां	धनि	प
टे	डो	फें	टा	—	आ	ड	बं	—	ध
ध	नि	रें	सां	सां	ध	प	नि	ध	नि
को	न	पें	—	क	स	त	हो	—	—

(अल्हैया–बिलावल राग के अन्य पदोंकी स्वरलिपिके लिये 'संगीत-सुबोधिनी" एवं "संगीतकीर्तनपद्धति" ग्रन्थको देखिये ।)

राग अल्हैया–बिलावल–ताल धमार

महामहोच्छव श्रीगोकुल गाम ।
प्रेममुदित जुवती जस गावत, स्यामसुंदरको ले ले नाम ॥१॥
जहां तहां लीला अवगाहत, खरिक खोरि दधिमंथन धाम ।
करत कुतूहल निस अरु बासर, आनंदमें बितत सब याम ॥२॥
नंदगोपसुत सब सुखदायक, मोहन मूरति पूरनकाम ॥
"चत्रभुज"प्रभु गिरिधर आनंदनिधि, नखसिख रूप सुभग अभिराम ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
ध	ध	—	ध	—	ध	नि	ध	प	—	म	ग	म	रे
म	हा	—	म	—	हो	—	च्छ	व	—	श्री	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	प	—	ध	—	नि	—	सां	—	—	सां	—	—	—
गो	—	—	कु	—	ल	—	गा	—	—	म	—	—	—
रें	रें	—	सां	नि	सां	—	ध	नि̲	ध	प	म	ग	—
म	हा	—	म	—	हो	—	च्छ	व	—	श्री	—	—	—
म	रे	—	ग	म	प	—	म	ग	म	रे	—	सा	—
गो	—	—	कु	—	ल	—	गा	—	—	—	—	म	—

अंतरा

×					२		०			३			
गं	—	—	गं	—	गं	—	रें	रें	—	सां	—	सां	—
प्रे	—	—	म	—	मु	—	दि	त	—	ज़ु	—	व	—
नि	रें	—	गं	—	रें	—	सां	रें	—	सां	—	सां	—
ती	—	—	ज	—	स	—	गा	—	—	व	—	त	—
ध	—	—	ध	—	ध	नि̲	ध	प	—	म	ग	म	रे
स्या	—	—	म	—	सुं	—	द	र	—	को	—	—	—
ग	प	—	ध	—	नि	—	सां	—	—	सां	—	—	—
ले	—	—	ले	—	—	—	ना	—	—	म	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
ध	ध	—	ध	—	ध	नि̲	ध	प	—	म	ग	म	रे
ज	हां	—	—	—	त	—	हां	—	—	ली	—	—	—
ग	प	—	ध	—	नि	—	सां	—	—	सां	—	सां	—
ला	—	—	अ	—	व	—	गा	—	—	ह	—	व	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें	रें	—	सां	नि	सां	—	ध	नि	ध	प	म	ग	—
ख	रि	—	क	—	खो	—	—	रि	—	द	—	धि	—
म	रे	—	ग	म	प	—	म	ग	म	रे	—	सा	—
मं	—	—	थ	—	न	—	धा	—	—	म	—	—	—

'आभोग' अंतरानुसार।

राग नट-बिलावल

हवेली(अष्टछाप)संगीत घराने में बिलावल का यह प्रकार भी प्राचीन और परंपरागत माना जाता है। नट-बिलावल राग नट और बिलावल के संयोग से बना हुआ है। इस सम्बन्ध में लक्ष्यसंगीतकार का शास्त्रीय उल्लेख निम्न प्रकार है :—

'नटबिलावल राग शंकराभरण (बिलावल) थाट से उत्पन्न होता है। वादी स्वर 'मध्यम' है। पूर्वांग में जब नट का भाग लिया जाता है तब गौड की कुछ छाया दिखाई देती है। परन्तु अवरोह में बिलावल का अंग स्पष्ट लगने पर यह रागस्वरूप निश्चित हो जाता है। नट की तरह 'मध्यम' व्यस्त (खुला) आता है। रे ध की संगति विचित्र है। यह राग दिन के प्रथम प्रहर में गाया जाता है। *

पं. भातखंडेजी ने इस राग का चलन निम्न प्रकार कहा है :—
सा, ग, गम, म, मप, मग, मरे, निधप म, पमग, रे, ग, मप, मग मरेसा, तथा उठाव में सा, ग, गम स्वर लेकर आगे अवरोह में बिलावल (अल्हैया) जोड दिया जाता है।

---

* शंकराभरणान्मेलाज्जातिरागसुनामकः ।
बिलावलो नट्टपूर्वो मध्यमांशो गुणिप्रियः ॥
(देखिये हिं. सं. प. भाग—१)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस आधार पर उसका प्रचलित स्वरस्वरूप निम्न प्रकार होगा। सा, ग, गम, मप, धनिसां, पप, धनिसां, सांगं गं मं, रेंसां, धनिप, मपमग, मरे, रेसा।

हवेलीसंगीत परंपरा में उपर्युक्त स्वरस्वरूप के अतिरिक्त पंचम से ऋषभ (परे) की मींड तथा धप, रेगमप, मगमरे, सारेसा इस प्रकार पूर्वांग में छायानट का अंग भीं दिखाई देता है तथा गान्धार स्वर बक्र और सरल गति से लिया जाता है। अवरोह में कोमल निषाद भी धनिधप और निधप इस तरह वक्र और सरल लिया जाता है। बाकी के स्वर शुद्ध हैं। वादी स्वर मध्यम और संवादी षड्ज माना जाता है।

सम्प्रदाय में प्रायः इस राग का गान होली और अन्नकूट के अवसर पर सुनने में आता है।

उदाहरणार्थ अत्र अन्नकूटवर्णन का निम्न पद स्वरलिपिसहित निम्न प्रकार दिया गया है :—

राग नट-बिलावल—ताल त्रिताल,मात्रा ८

गोद बेठे गोपाल कहत व्रजराजसों।
अहो तात एक बात स्रवण दे सुनोजो मेरी।
भवन मांझ हों गयो धरी जहां सोंज घनेरी।
में हँसि मांग्यो मायपें भोजन देरी मोहि।
कर लकुटी ले यों कह्यो यह क्यों देहों तोहि ॥२॥

(अधिकके लिये कीर्तनसंग्रहोंमें गोवर्धनलीला के पदों में देखिये)

स्थायी

× २ ० ३ × २ ० ३
ग गम|ग रे गम प|ध नि|सां निसां|नि ध|प गम|रे ग
गो ——|द बे ठे— —|गो —|पा ——|ल का|ह त—|ब्र ज

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग म	धनि	ध पप	रेग	मप	म	—गम	रेसा	— —	—
रा	— —	जसों	— —	— —	—	— —	— —	— —	—

अंतरा

×		२	०	३	×	२	०	३	
प	धनि	ध पध	निसां	रेंनि	सांसां	निधप	मग	रे	ग
सु	नो—	— ता—	तऽ	कबा	—त	स्व—व	न—	दे	—
गम	नि	ध पम	रेग	मपम	गम	रेसा	—	—	—
सु—	नो—	जुमे	— —	— —री	— —	— —	— —	—	—

संचारी

×		२	०	३	×	२	०	३	
ग	गमग	रेगम	पध	निसां	सांधनि	धप	मग	रे	ग
भ	वृ—न	मां—	झहों	—ग	यो—	वरी	—	ज	हां
म	निध	पप	रेरेग	मपम	ग म	रे सा	रेसा	—	—
सां	—झ	घने	— —	— —री	—	— —	—	—	—

आभोग प्रकार—१

×	२	०	३	×	२	०	३	
प	—नि	निनि	— —	धनि	सां—	सांसांरें	गंगं	मं
में	—ह	सिमां	—त्यो	— —	मा—	य पें—	— —	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अथवा प्रकार—२

× २ ० ३ × २ ० ३
गं —गं गंगं —मं —— गं— रेंसां रेंगं मं
में —ह सिमां —ग्यो —— मा— यपें —— —

रें गंरेंसां सांप —नि धनिसां —— —गं रेंसां —
— भो—ज नदे् —री ——मो —— —— —— हि

— सांरेंगं रेंसां —नि धप धग मप —नि ध
— करल कुटी —ले —— यों— कहो —— —

नि सांरेंगंमं रेंसांनिधपध निसां —धनि धप मगरे ग
— यहक्यों —दे्- ——हों — तो —हि— कह त—ब्र ज

गम पनिध पप रेरेग मपग मरे —सा —— —
रा— —— जसों —— —— —— —— —— —

राग कुकुभ-विलावल

यह राग प्राचीन है। संगीतरत्नाकरादि ग्रन्थों में इसका[१] नामोल्लेख प्राप्त होता है। कुकुभ को कोई ककुभ भी कहते हैं। कुकुभ राग बिलावल का एक प्रकार होने से व्यवहार में 'कुकुभ-विलावल' ऐसा

---

१. मध्यमापंचमीधैवत्युद्भवः ककुभो भवेत्। (रत्नाकरे)

२. पंचमोद्ग्राहसम्पन्ने धहीने ककुभं पुनः।
तीव्रगान्धारराहित्यमारोहे चावदन्बुधाः ॥४०५॥
(संगीतपारिजात)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संयुक्त नाम प्रचलित है। इस राग को जैजैवन्ती और बिलावल (अल्हैया) का मिश्रण तथा झिंझोटी और बिलावल का संयोग से उत्पन्न हुआ माना जाता है। यह दोनों प्रकार से यह राग गाया जाता है।

जैजैवन्तीमिश्र प्रकार में रे, रे, गम गरे, सा, ध, नि प, तथा म प, ध म प, सां, ध, प, ध म ग, म रे, सा यह स्वरों का महत्त्व रहता है और झिंझोटीमिश्र प्रकार में सा ग, म, म प, म ग रे ग सा, रे, ग म प तथा ग म, ध निसां, सां ध नि प, सां, नि ध प, ध म, ग, सा, ग, म इन स्वरों का महत्त्व दिखाई देता है।

पं. अहोबल ने कुकुभ राग में धैवत स्वर वर्ज्य तथा आरोह में गान्धार वर्ज्य करने का कहा है। कुकुभ का स्वरूप ध्यान पं. भावभट्ट ने 'अनूपसंगीतबिलास' में इस प्रकार कहा है :—

मानिनि मामवमानितमेका ते कान्तमीदृशम्।
दीने संभावयत्ययं पीतांगः ककुभरागोऽयम् ॥३८६॥

परन्तु परंपरा और प्रचार की दृष्टि से धैवत स्वर वर्ज्य नहीं है तथा आरोह में गान्धार स्वर का प्रयोग किया जाता है। सा—म और सा—प की स्वरसंगति महत्त्वपूर्ण दिखाई देती है, जैसे—सा, ग, ग म सा, रे ग, म तथा सा, रे, ग, म प इत्यादि अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग अल्हैया-बिलावल का संयोग स्पष्ट करता है।

यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। गानसमय (बिलावल के अनुसार) प्रातःकाल का माना जाता है। वादी स्वर पंचम तथा संवादी स्वर ऋषभ है। कोई वादी मध्यम और संवादी षड्ज मानते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हैं । दोनों निषादों का प्रयोग होता है । जाति सम्पूर्ण है । [1]

पं. भातखण्डेजी के मतानुसार कुकुभ के दोनों प्रकारों का चलन इस प्रकार है :—

झिंझोटीमिश्र प्रकार–१ । साग,म,निधप,मप,गम,सा,ग,गम,धनिसां, सांधनिप,धम,ग,सा,गम

जैजैवन्तीमिश्र प्रकार–२ ।

रेरे, गमगरे, सा, निसारे, सा, ध, निप, गम, मप, धमप, सां, ध, प, धमग, मरे, सा

लगभग ४० साल पूर्व कांकरोली में श्रीजी के संमुख कीर्तनिया के मुखियाजी श्रीमन्नालालजी से 'घाट पर ठाडे मदनगोपाल' यह बिलावल राग का पद गाते हुए सुना था, किन्तु कुछ अलग ढंग होने से बाद में मुखियाजी से सुनकर कुछ कंठस्थ भी कर लिया था । उस समय किसी को बिलावल के यह कुकुभ प्रकार का ख्याल नहीं था । संशोधन के बाद उस बंदिश का जो कुछ ढंग स्मरण में रहा है उस आधार पर कहा जाता है कि यह कुकुभ-बिलावल का प्रकार था ।

'संगीतादित्य' में भी 'पारिजात' का यही उदाहरण दिया है और लिखा है कि 'यह संपूरन है तथापि धैवत कम लगाया जाता है । निषाद

---

१. वैलावल्याः प्रभेदः ककुभ इति मतो मान्यतीव्रस्वराढ्यः ।
संवादी पंचमोऽस्मिन् विलसति नितरां पंचमो वादिपीठे ।
संमिश्रो जैजवंत्यामभवदिति सुधियो यद् वदन्ति ध्रुवं तद्
गायन्ति प्रातरेव प्रतिदिवसममुं गानशास्त्रप्रवीणाः ॥२३॥
(रागकल्पद्रुमांकुर)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कोमल है और सब शुद्ध है। रिषभ प्रधान सुर है । आरोह में गन्धार धैवत नहीं हैं वैसा ही पारिजात में लिखा हैं'

जिसकी स्वरलिपि भी यहां पर दी गई है :–

राग कुकुम-बिलावल—ताल धमार

घाट पर ठाडे मदनगोपाल ।
कोन जुगति कर भरोंरी जमुनाजल पर्यो हे हमारे स्याल ॥१॥
घोस बढ्यो घर सास रिसेहें चलि न सकत एक चाल ।
कहा करूं अब यों नहीं मानत सुंदर नंदको लाल ॥२॥
कछुक संकोच कछु चोंप मिलनकी परी प्रेमकी जाल ।
"परमानंदस्वामी" चित्त चोर्यौ बेनु बजाई रसाल ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
सां	—	—	नि	ध	प	—	ध	म	—	ग	—	रे	ग
ठा	—	—	डे	—	—	—	म	द	—	न	—	—	गो
म	—	—	ग	रे	ग	सा	रे	ग	—	म	—	प	—
पा	—	—	ल	—	—	घा	—	ट	—	प	—	र	—

अंतरा

×					२		०			३			
ध	—	—	नि	—	नि	—	सां	सां	रें	सां	—	सां	—
को	—	—	न	—	जु	—	ग	ति	—	क	—	र	—
सां	ध	—	सां	—	सां	रें	सां	—	ध	नि	ध	प	—
भ	रों	—	री	—	ज	मु	ना	—	—	ज	—	ल	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

											सां			
प	प	—	ध	म	ग	रेग	म	प	—	ध	नि	सां	नि
ष	यों	—	हे	—	—	हू—	मा	—	—	रे	—	—	—
ध	प	ध	म	गरे	ग	सा	रे	ग	—	म	—	प	—
ख्या	—	—	ल	—	—	घा	—	ट	—	प	—	र	—

राग ककुभ-बिलावल–ताल चर्चरी (झपताल अंग)

गोकुलकी पनिहारी पनियां भरन चली बडे बडे नेना तामें सुभ रख्यो कजरा। पहिरें कसूंभी सारी अंग अंग छबि भारी गोरी गोरी बहियनमें मोतिनके गजरा॥१॥ सखीसंग लिये जात हस हस बूझत बात तन हूंकी सुधि भूली सीस धरें गगरा। "नंददास" बलहारी बीच मिले गिरिधारी नयनकी सेननमें भूल गई डगरा॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
सां	सां	सां	नि	धप	प	ध	म	—	ग
गो	कु	ल	की	——	प	नि	हा	—	री
रे	रे	ग	म	प	म	ग	रे	ग	सा
प	नि	यां	—	भ	र	न	च	ली	—
सा	रे	ग	म	रेग	म	प	—	निध	नि
ब	डे	ब	डे	——	ने	ना	—	ता—	में
सां	नि	धप	ध	म	ग	सा	रे	गम	प
सु	भ	र—	ख्यो	—	क	ज	रा	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×		२			०		३		
प	प	नि	—	नि	सां	सां	सां	—	सां
प	हि	रें	—	क	सूं	भी	सा	—	री
सां	गं	गं	—	मं	गं	रें	सां	—	सां
अं	ग	अं	—	ग	छ	बि	न्या	—	रा
		प	ध						ध
सां	ध	ध	नि	धप	ध	म	प	निध	नि
गो	री	गो	—	री—	व	हि	य	न—	में
सां	नि	धप	ध	म	ग	सा	रेग	मरे	मप
मो	ति	न—	के	—	ग	ज	रा—	——	——

राग गौड-बिलावल

गौड-बिलावल राग गौड-मल्हार और अल्हैया-बिलावल के संयोग से उत्पन्न होता है । इस राग को कोई 'बिलावल-मल्हार' भी कहते हैं । थाट बिलावल है, कोई खमाज थाट भी मानते हैं ।[१]

इस राग में सातों स्वरों का प्रयोग किया जाता हैं अतः इसकी जाति सम्पूर्ण है । शुद्ध निषाद आरोह अवरोह में सरलता से लिया जा सकता हैं, किन्तु विशेषतः आरोह में ही दिखाई देता है । कोमल निषाद का प्रमाण कुछ कम रहता है और अवरोह में सरल एवं वक्र स्वरूप से ध नि ध प अथवा धनि प इस प्रकार प्रयोग किया जाता

---

१. पं. भावभट्ट के 'अनूप संगीतबिलास' ग्रन्थ के रागाध्याय में गौड-बिलावल का 'गौडो विलावलाज्जातः कामोदः पंचधा भवेत्' (श्लोक–२१५) ऐसा उल्लेख पाया जाता है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

है। उसी तरह गान्धार भी अवरोह में वक्र रूप से और सरल रूप से भी लिया जाता हैं। 'मध्यम स्वर' अधिकतर मुक्त सा रहता हैं।

अल्हैया-बिलावल के गपध, निध,प,ध,ग,मरे, गप, धनिसां, धनिध,प इस प्रकार के स्वरों के साथ गौड-मल्हार के मरे, प, मपधसां, ध, निप, मपम इस तरह के स्वरों का संयोग होने से यह राग स्पष्ट होता हैं।

वादी स्वर धैवत और संवादी गान्धार हैं। गानसमय दिवस का प्रथम प्रहर हैं।

आरोह :–

सा, रेग, मरे, ग, प, ध, निसां ।

अवरोह :–

सांधनिधप, म,ग,म, मरे, प,म,ग, रेसा ।

पकड स्वर :– गरे, गप, ध, निसां, धनिप, मपधसां, प, निधप, मपम, ग, मरे, सा ।

होली की धमारों में इस राग के कीर्तन–पद प्रायः अधिकतर प्राप्त होते हैं। जो होरीदंडारोपनी (माह सुदि–१५) से डोल तक के समय में गाये जाते हैं। होरी के दूसरे रोज (डोल के दिन) होरी-धमार के कीर्तन इसी राग में जिस पद से सम्पन्न होते हैं, उस पद को यहां स्वरलिपिसहित निम्न प्रकार प्रकाशित कर रहे हैं।

राग गौड-बिलावल–ताल त्रिताल, मात्रा–८

गोपी हो नंदराय-घर मांगन फगुवा आई ।
प्रमुदित करत कुलाहल, गावत गारि सुहाई ॥१॥
× × × निकसी देत असीस, जीयो तेरो मोहनराई ।
यह व्रज 'माधोदास' रहों नित नंद दुवाई ॥१५॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

गप	ध	नि
गो–	पी	–

×	२	०	३	×	२	०	३	
सां	नि–	––	धनि	धप	–म	गम	मरे	सा
हो	––	––	नं–	दरा	–य	––	घ–	र
–	––	म–	मग	मप	धनि	धप	मप	म
–	––	मां–	ग–	नफ	––	गु–	वा–	–
म	––	प–	गपध	नि				
आ	––	ई–	गो–पी	–				

अंतरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
–	––	––	रेंरेंरें	रेंसां	–रें	––	गं–	गंमं
–	––	––	प्रमुदि	तक	–र	––	त–	कु–
पं	गंमं	रें–	सांसां	–नि	प–	म–	मम	म
ला	––	––	हल	––	––	गा–	व–	त
प	धसां	––	निधप	मम	रेप	प–	गमध	नि
गा	––	––	री––	सुहा	––	ई–	गो–पी	–

राग देवगिरि–बिलावल (एक प्रकार)

सम्प्रदाय में दानवर्णन के कुछ भावात्मक पद बिलावल के अन्तर्गत पाये जाते हैं। प्राचीन संग्रहोंमें इस प्रकार के पदों का बिलावल के अन्तर्गत ही

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समावेश किया गया है तथापि दान के पद राग 'देवगिरि' शीर्षक के अन्तर्गत भी दृष्टिगोचर होते हैं प्रचलित 'देवगिरि' बिलावल से यह भिन्न थाट, जाति, वादी, संवादी, समय एवं अवरोहमें निषाद कोमल का प्रयोग तथा चलन इत्यादिमें कोई विशेष भिन्नता दृष्टिगत नहीं होती। अतः यहां इस प्रकार को 'देवगिरि-बिलावल' से ही प्रसिद्ध कर रहे हैं।

राग देवगिरि-बिलावल (दान का बिलावल)

ताल—त्रिताल (आठ मात्रा)

गढतें ग्वालिनि उतरी (हो) माथें :महीको माट।
आडो कन्हैया व्हे रह्यो, सो रोकत है बनवाट॥
नागरी दान दै॥१॥
कहाँकी हो तुम ग्वालिनी, हो कहा तिहारो नाम।
बरसाने की ग्वालिनी प्यारी राधा मेरो नाम।
मोहि घर जान दै॥२॥

× × × × × × × × × सुख बाढ्यो आनंद भयो, रही श्याम गुन गाय। सुन्दर सोभा देखि के, जन 'सूरदास' बलि जाय॥९॥ *

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३
नि़	धनि़	—सा	—नि़	सा—	गरे	मगरे	गनि़ सा
ग	ढते	—ग्वा	—लि	नी—	उ—	तरी—	—हो —
नि़	धपनि़	नि़सा	—नि़	सारे	——	—नि़	रेंसा —
—	सी—स	मही	—को	—मा	——	——	—ट —

० इस प्रकार के पद मध्यम ग्राम से यानि मध्यम को षड्ज बनाकर गाये जाते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×		२		०		३		×		२		०		३	
—	गरे	म	म	प	—	ध	प	नि	सां	—	रें	नि	धप	मग	रे
—	आ—	डो	क	न्है	—	या	—	—	न्हे	—	र	ह्यो	——	सो	——
—	ग	ग	ग	मरे	ग	म	प	म	गरे	ग	रेसा	—	म	ग	रे
—	रो	क	त	ब्र—	ज	ब	धू	वा	——	—	ट—	—	ना	ग	री
नि̣	—	ध̣	रे	सा	—	—	—								
दा	—	—	न	दे	—	—	—								

संचारी

×		२		०		३		×		२		०		३	
नि̣	ध̣	नि̣	—	सा	—	नि̣	सा	—	ग	रे	म	गरे	ग	नि	सा
क	हाँ	की	—	हो	—	तु	म	—	ग्वा	—	लि	नी—	—	हो	—
—	म	रे	म	प	—	ग	म	नि	ध	नि	प	—	—	प	—
—	क	हा	ति	हा	—	रो	—	ना	—	—	—	—	—	म	—

आभोग

×		२		०		३		×		२		०		३	
—	मप	नि	—	नि	—	सां	—	—	रें	—	सां	नि	प	ध	प
—	वर	सा	—	ने	—	की	—	—	ग्वा	—	लि	नो	—	प्या	री
म	ग	ग	रे	ग	प	म	—	गरे	ग	—	सा	म	म	ग	रे
रा	—	धा	—	मे	—	रो	—	ना—	—	—	म	मो	हि	घ	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग निध रेंसा — —

जा — न दे — —

प्रत्येक तूक क्रमशः संचारी आभोग अनुसार।

राग धनाश्री

यह राग ग्रन्थोक्त तथा प्राचीन राग है। इस राग में भक्त नरसिंह के पद पाये जाते हैं, किन्तु परम्परा की दृष्टि से हवेलीसंगीत में आज भी उस परम्परा की स्पष्ट झांखी होती है। आजकाल प्रचार में काफी थाट की धनाश्री अधिक दृष्टिगत होती है जो भीमपलासी के अंग से मिलती हैं। किन्तु अष्टछापपरंपरा में यह राग आसावरी थाट का है। आरोह में रे ध स्वर वर्ज्य हैं। जाति औडुव सम्पूर्ण है। स्वर ग ध नि कोमल है, किन्तु आरोह में निषाद स्वर तीव्र लिया जाता है। आरम्भ एवं कानडे इत्यादि बहुत कुछ रागोंमें इसी प्रकार आरोह में निषाद शुद्ध का प्रयोग होता ही है। अवरोह में प ग की संगति अवरोह में मनोहर दिखाई देती है। न्यास स्वर एवं वादी स्वर भी पंचम है, संवादी षड्ज है। षड्ज–पंचम का प्राधान्य के साथ मध्यम का भी महत्त्व है। उठाव नि स्वर से अधिक होता है। समय दिन का दूसरा प्रहर है। आसावरी थाट होने से तथा सम्प्रदाय के मंदिरों मे दूसरे प्रहर के सेवाप्रणाली में ही अधिकतर गाया जाता है। अतः समय सुसंगत कहा जायगा। धनाश्री राग को मांगल्कि राग माना गया है।

आरोहावरोह : निसा, गम, प, नि, सां। निधपमग, पग, रेसा.

स्वरविस्तार :

(१) निसाग, मप, पधप, म, पग, गमप, ग, रेसा.

(२) रेनिसा, मप, गमप, नि ध प, प, धम, पग, गमप, गमग, रे.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(३) पप, गम, प, निसां, धप, गम, पग, रेसा.

(४) प, म प ग म, पनि, सां, निसां, मं गं रेंसां, रेंसां,
निधप, प निसां, गं गं रें सां, निसांरें, सां ध प,
रें निधप, ग म प नि ध प, म प ग, नि, सा, ग म प ग
प ग, रे सा, नि सा ग म प,

राग धनाश्री–ताल आदि (त्रिताल मात्रा–८)

सबे मिलि मंगल गावो माई ।
आज लालको जन्मद्योस हे, बाजत रंग बधाई ॥१॥
आंगन लीपो चोक पुरावो, बिप्र पढन लागे वेद ।
करो सिंगार स्यामसुंदरको, चोवा चंदन मेद ॥२॥
आनंद–भरी नंदजूकी रानी, फूली अंग समाई ॥
'परमानंददास' तिहि अवसर, बहोत न्योछावरि पाई ॥३॥

स्थायी

×		२		०		३		×		२		०		३	
नि	–	नि	नि	सां	–	सां	–	गं	–	रें	सां	सां	नि	ध	प
मं	ऽ	ग	ल	गा	ऽ	वो	ऽ	मा	ऽ	ई	स	बे	ऽ	मि	लि
–	नि	ध	ध	प	–	म	–	म	–	ग	म	प	ग	रे	सा
ऽ	मं	ग	ल	गा	ऽ	वो	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ

अंतरा

×		२		०		३		×		२		०		३	
प	–	प	प	म	प	ग	म	प	प	नि	नि	सां	गं	रें	सां
आ	ऽ	ज	ला	ऽ	ल	को	ऽ	ज	न	म	द्यो	ऽ	स	हे	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	–	नि	नि	|	सां	–	सां	रें	||	सां	नि	ध	प	|	ग	म	प	प
या	ऽ	ज्ञ	त	|	रं	ऽ	ग	ब	||	धा	ऽ	ई	स	|	बे	ऽ	मि	लि

संचारी

×		२			०		२			×		२			०		३	
ध	–	ध	ध	|	नि	ध	प	–	||	प	–	प	म	|	प	नि	सां	–
आं	ऽ	ग	न	|	ली	ऽ	पो	ऽ	||	चो	ऽ	क	पु	|	रा	ऽ	वो	ऽ
नि	–	सां	रें	|	सां	नि	ध	प	||	म	–	ग	म	|	प	–	ग	सा
वि	ऽ	प्र	प	|	ढ	न	ला	गे	||	बे	ऽ	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	द	ऽ

"आभोग" अन्तरानुसार ।

राग धनाश्री–ताल धमार

रंगीलेरी छबीले नेना रसभरे, मानों (नेना) नाचत मुदित अनेरे रे ।
खंजरीट मानों महामत्त दोउ, केसेहु थिरत न घेरे रे ॥१॥
स्याम सेत राते रंग रंजित, मानों चित्र चितेरे रे ।
'कुम्भनदास' प्रभु गोवरधनधर, स्याम सुभग तन हेरे रे ॥२॥

स्थायी

सां –
रं –

×						२			०				३			
नि	–	–	नि	–	|	–	–	|	सां	–	–	|	–	–	सां	रें
गी	ऽ	ऽ	ले	ऽ	|	ऽ	ऽ	|	री	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	छ	ऽ
नि	सां	–	ध	–	|	प	–	|	प	म	–	|	म	–	–	–
बी	ऽ	ऽ	ले	ऽ	|	ऽ	ऽ	|	ने	ऽ	ऽ	|	ना	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	–	ग	म	|	प	म	|	प	ग	–	|	ग	रे	सा	–
र	स	ऽ	ऽ	ऽ	|	ऽ	भ	|	रे	ऽ	ऽ	|	मा	ऽ	नों	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	—	—	प	—	प	—	म	प	—	ग	—	म	—
ना	ऽ	ऽ	च	ऽ	त	ऽ	मु	दि	ऽ	त	ऽ	अ	ऽ
प	—	—	नि	—	—	—	सां	—	—	—	—	सां	—
ने	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ

अंतरा

×					२		०			३			
ध	—	—	प	—	प	—	म	प	—	ग	—	म	—
खं	ऽ	ऽ	ज	ऽ	री	ऽ	ऽ	ट	ऽ	मा	ऽ	नों	ऽ
प	नि	—	सां	—	सां	—	रें	नि	—	सां	—	सां	—
म	हा	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	त्त	ऽ	दा	ऽ	उ	ऽ
गं	—	—	गं	—	गं	—	रें	रें	—	सां	—	सां	—
के	ऽ	ऽ	से	ऽ	हु	ऽ	घि	र	ऽ	त	ऽ	न	ऽ
नि	ध	—	प	—	म	—	प	नि	—	सां	—	सां	रें
घे	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ

संचारी

×					२		०			३			
ध	—	—	ध	—	ध	—	नि	ध	—	प	—	म	—
स्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	स्वे	ऽ	ऽ	त	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ
म	ग	—	ग	—	म	—	प	ग	—	रे	—	सा	—
ते	ऽ	ऽ —	रं	ऽ	ग	ऽ	रं	—	ऽ	जि	ऽ	त	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	—	—	प	—	—	—	म	प	—	ग	—	म	—
मा	ऽ	ऽ	नों	ऽ	ऽ	ऽ	चि	ऽ	ऽ	त्र	ऽ	चि	ऽ
प	—	—	नि	—	—	—	सां	—	—	—	—	—	—
ते	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ

आभोग

×					२		०			३			
गं	गं	—	गं	—	रें	—	सां	सां	—	सां	—	सां	—
कुं	भ	ऽ	न	ऽ	दा	ऽ	ऽ	स	ऽ	ग्र	ऽ	भु	ऽ
ध	प	—	ग	—	म	—	प	नि	—	सां	—	सां	—
गो	ऽ	ऽ	व	ऽ	र	ऽ	ध	न	ऽ	ध	ऽ	र	ऽ
गं	—	—	गं	—	रें	—	नि	सां	—	ध	प	ग	म
स्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	सु	ऽ	भ	ग	ऽ	त	ऽ	न	ऽ
प	—	—	नि	—	—	—	सां	—	—	—	—	सां	रें
हे	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ

राग आसावरी

यह राग प्राचीन है। नित्यक्रम की कीर्तनप्रणाली में अधिकतर शीत-काल में राजभोग-समय गाया जाता है। तदतिरिक्त बधाई पालना होली इत्यादि त्यौहारों में भी इस राग के पद प्राप्त होते हैं, जो षाडव–संपूर्ण जाति से तथा आरोह में गान्धार निषाद वर्ज्य करके गाया जाता है, किन्तु सम्प्रदाय की प्राचीन प्रणालीअनुसार आरोह में दुर्बल रूप से निषाद का प्रयोग किया जाता है।

थाट आसावरी है। स्वर गान्धार धैवत और निषाद कोमल एवं बाकी के स्वर शुद्ध हैं। जाति प्रचार में औडव–सम्पूर्ण है, किन्तु सम्प्रदाय की दृष्टि से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

षाडव–संपूर्ण कहा जाय तो अनुचित नहीं है । इस प्रकार का प्रचार में षाडव–संपूर्ण जाति का राग 'जोनपुरी' नाम से प्रसिद्ध है, किन्तु ७५ वर्ष पहिले कांकरोली वाले गो. श्री. बालकृष्णलालजी महाराजश्री का मन्तव्य यह था कि आजकल जो रिषभ कोमल की आसावरी गाई जाती हैं वह जोनपुरी राग होना चाहिये ऐसा हमारे पिताजी को आपने कहा था ।

वादी धैवत और संवादी गान्धार है । समय दिन का दूसरा प्रहर है। इस राग की विशेषता गान्धार पंचम और धैवत स्वरों पर निर्भर है । अवरोह में यह राग स्पष्ट होता है ।

पकड़–रे, मप, निध, प,

औड़व–सम्पूर्ण आसावरी के अनुसार स्वरविस्तार और आरोह-अवरोह निम्न प्रकार लिखे गये हैं ।

आरोहावरोह—सा, रेमप, ध, सां । सां नि ध, प, म, ग, रे, सा.

स्वरविस्तार—(१) सा–, रेमप–, धप–, मप–, निध–, प–,

धमपधग–रे–सा–, रेमप–निध–प.

(२) सा–रेसा–, रेमपधग–रेसा–, रेमप–निध–प–,

सां–निध–पधमपग–रेसा–, रेमप–, निध–प–.

(३) सा–, रेरेसा–, ग–रेसा–, रे सा – नि ध –,

नि ध –, प –, म प ध –सा–, रेमपधग–रेसा–

रेमप–निध–प– ।

(४) मपध–धसां–रेंसां–, गंगंरेंसां–, रेंसांनिध–,

सां–निध–, प–धमपधग–रेसा, रेमप–निध–प– ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग आसावरी (कोमल रे) प्रकार—ताल चर्चरी

सुभग ललना माई गोविंद गावे ।
राग आसावरी चरचरी ताल धर मधुर सुर मुरलिका मोहन बजावै ॥१॥
खसित उडुगन सफल स्वेत रजनी माई अजहु लगि नागर .तोहि बुलावे ।
नाहीं जानत कवन प्रीत हियमें बसी तुव नाम संवलित सुरगति लजावै ॥२॥
विपिन तमचर घोख अरुन प्राची दिसा चक्रवाकी पतहि मोह उपजावे ।
सुन 'कृष्णदास' पिय लाल गिरिवरधरन रसिकवर भूप काहे न जिय भावे ॥३॥

स्थायी

×			२		०		३		
सां	सां	ध	ध	नि	ध	प	धम	प	मप
सु	भ	ग	ल	ल	ना	—	मा—	—	ई—
ग	—	रे	—	सा	रे	म	प	धम	प
गो	—	विं	—	द	गा	—	वे	—	—

अंतरा

×			२		०		३		
म	प	ध	ध	—	सां	—	सां	सां	—
रा	—	ग	आ	—	सा	—	व	री	—
ध	ध	सां	सां	—	गं	रें	सां	ध	प
च	र	च	री	—	ता	—	ल	ध	र
प	गं	गं	रें	सां	रें	—	ध	पध	नि
म	धु	र	सु	र	मु	र	लि	का—	—

ध	प	ध	म	प	ग	रे	म	प	मप
मो	—	ह	न	व	जा	—	—	वे	——

संचारी

×			२		०		३		
सा	ध	ध	ध	ध	प	प	ध	प	प
स्व	सि	त	उ	डु	ग	न	स	क	ल
प	ध	ध	सां	सां	ध	—	ध	प	—
स्वे	—	त	र	ज	नी	—	भ	ई	—
प	ध	म	प	ध	मग	—	रे	—	सा
अ	ज	हु	ल	गि	ना	—	ग	—	र
सा	—	ध	—	ध	सा	—	रे	—	सा
तो	—	हि	—	वु	ला	—	वे	—	—

"आभोग" अन्तरानुसार ।

राग आसावरी—ताल चौताल

सब मिलि आवो गावो बजावो नंद महर—घर बाजत बधाई माई ।
सप्त सुरन तीन ग्राम इकईस मूरछना उनचास कोटि तान गाइये ॥१॥
आरोही अवरोही अस्ताई संचारी, औडव संपूरन आसावरी गाइये ।
'धोंधी'के प्रभु तुम बहुनायक गुनिजन सब मिल गाइये ॥२॥

स्थायी

३		४		×		०		२		०	
रे	म	प	नि	ध	—	प	—	म	—	ग	—
स	ब	मि	ल	आ	—	वो,	—	गा	—	वो	—
रे	रे	—	सा	सा	—	रे	रे	म	म	प	प
ब	जा	—	वो	नं	—	द्	म	ह	र	घ	र
ध	—	ध	ध	रें	सां	नि	ध	प	मप	ग	रेसा
बा	—	ज	त	ब	धा	—	ई	—	मा—	ई	——

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	प	प	ध	ध	सां	—	सां	सां	—	सां
स	—	त	सु	र	न	ती	—	न	ग्रा	—	म
ध	ध	—	सां	—	सां	रें	—	सां	ध	—	प
इ	क	—	ई	—	स	मू	—	र	छ	—	ना
प	गं	—	रें	—	सां	रें	—	सां	नि	ध	प
उ	न	—	चा	—	स	को	—	टि	ता	—	न
म	प	नि	ध	पध	मप	ग	रेसा	रे	म	प	नि
गा	—	—	इ	——	——	ये	——	स	ब	मिं	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		०		२		०		३		४	
सा	—	ध	ध	—	ध	ध	ध	नि	ध	प	प
आ	—	—	रो	—	ही	अ	व	—	रो	—	ही
ध	ध	ध	सां	—	सां	रें	सां	—	ध	—	प
अ	—	—	स्ता	—	ई	सं	—	—	चा	—	री
प	ध	म	म	प	ध	ग	—	रे	रे	—	सा
औ	—	—	ऽ	—	व	सं	—	पू	र	—	न
सा	सा	रे	म	प	प	ध	—	नि	ध	—	प
आ	सा	—	व	—	री	गा	—	—	इ	—	ये

आभोग

×		०		२		०		३		४	
म	प	प	ध	—	—	सां	—	—	सां	—	सां
धों	—	—	धी	—	—	के	—	—	प्र	—	भु
ध	ध	—	सां	—	सां	गं	रें	सां	ध	—	प
तु	म	—	व	—	हु	ना	—	—	य	—	क
प	गं	—	रें	रें	सां	रें	सां	—	ध	—	प
गु	नि	—	ज	—	न	स	व	—	मि	—	ल
म	प	नि	ध	पध	मप	ग	रेंसा	रे	म	प	नि
गा	—	—	—	—	इ	ये	——	स	ब	मि	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग आशावरी–ताल चौताल

कृष्णनाम जब तें स्रवन सुन्योरी आली, भूलिरी भवन हों तों बावरी भईरी ।
भरि भरि आवे नेन चित्त हु न परे चेन तनकी दसा कछु ओर भईरी ॥१॥
जेतेक नेम धर्म कीनेरी में बहुविध अंग अंग भई हों तो स्रवन भईरी ।
"नंददास" जाके नामस्रवन सुनें यह गति माधुरी मुरति केधों केसी दईरी॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
ध	–	ध	ध	प	प	ध	म	प	ग	रे	सा
कृ	–	ष्णा	ना	–	म	ज	ब	–	तें	–	–
सा	सा	रे	नि	ध	ध	सा	–	सा	रे	–	सा
स्र	व	–	न	–	सु	न्यो	–	री	आ	–	ली
सा	–	रे	म	म	म	प	प	–	ध	–	ध
भू	–	ली	री	–	भ	व	न	–	हों	–	तों
सां	–	गं	रें	सां	सां	रें	नि	ध	प	म	प
बा	–	व	री	–	भ	ई	–	–	–	री	–

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	–	ध	–	ध	सां	–	सां	सां	–	सां
भ	रि	–	भ	–	रि	आ	–	वे	ने	–	न
ध	ध	–	सां	–	रें	गं	रें	सां	रेंनि	ध	प
चि	त्त	–	हु	–	न	प	रे	–	चे–	–	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	गं	–	रें	–	सां	रें	सां	रें	नि	ध	प
त	न	–	की	–	द्	सा	–	–	क	–	छु
नि	ध	प	ध	म	प	ग	–	रे	म	प	प
ओ	–	–	र	–	भ	ई	–	–	–	री	–

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	–	–	प	–	प	ध	–	ध	प	–	प
जे	–	–	ते	–	क	ने	–	म	ध	–	सं
ध	प	ध	म	प	मप	ग	ग	–	रे	–	सा
की	–	नें	री	–	में–	व	हु	–	वि	–	ध
सा	–	रे	म	प	प	ध	ध	नि	ध	प	प
अं	–	ग	अं	–	ग	भ	ई	–	हों	–	तों
नि	ध	प	ध	म	प	ग	–	रे	रे	–	सा
त्र	व	–	न	–	भ	ई	–	–	–	री	–

आभोग

×		०		२		०		३		४	
म	–	प	ध	–	ध	सां	–	सां	सां	–	सां
नं	–	द	दा	–	स	जा	–	के	ना	–	म

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	ध	ध	सां	सां	–	रें	सां	रें	नि	ध	प
स्र	व	न	सु	ने	–	य	ह	–	ग	–	ति
प	–	गं	रें	–	सां	रें	सां	–	ध	–	प
मा	–	धु	री	–	सु	र	ति	–	कै	–	धों
प	नि	ध	पध	म	प	ग	–	रे	म	प	–
के	–	–	सी–	–	द	ई	–	–	–	री	–

राग आसावरी–ताल त्रिताल (मात्रा ८)

तुम नंद(व्रज) रानी के लाला, अहो दधि मथत सुहाइ कें लाला ।
तुम पर वारी हो लाला ॥ध्रु.॥

दिव्य कनिक को पालनो लाल, रतनजटित नगहीर ।
गजमोतिन के झूमिका होलाला, ऊपर दच्छिन चीर ॥१॥
कहति जसोदा सुनि मेरे 'गोविंद,' लेहु कनिया चढाई ।
जो सोवे तो पालनें जुलाऊं नातर, आंगन वेठि खिलाई ॥२॥

स्थायी

०		३		×		२		०		३		×		२	
रे	म	प	सां	ध	–	प	–	ध	म	पध	मप	ग	रे	ग	सा
तु	म	नं	द	रा	–	नो	–	के	–	ला–	–	ला	–	–	–
म	म	प	धसां		–	–	रें	रें	रें	सां	सां	रें	नि	सां	ध
अ	हो	द	धि–		–	–		मथ	त	–	सुहा		–	–	ई

१ पाठांतर :– तुम नंद(व्रज)रानी के लाला

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	मपध	मपग	—रे	सारे	मप	सांध	पध	म
कें	—ला—	—ला	——	—तु	मप	रवा	——	री
प	—पध	मपग	रेग	सा				
हो	—ला—	—ला	——	—				

अंतरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	—प	पध	धसां	——	निरें	सांनि	धप	प
दि	—व्य	कनि	कको	——	पा—	लनो	—ला	ला
प	गंरें	रेंसां	सांसारें	निसांध	पध	मपसां	——	—
र	तन	जटि	तन—	ग—ही	——	——र	——	—
प	गंगं	—रें	रेंसां	—नि	सांरें	सांनि	धप	प
ग	जमो	—ति	नके	—झू	——	मिका	होला	ला
—	गंरें	रेंसां	निरें	सांनि	धप	धम	म	
—	ऊप	रद	—च्छि	नाची	——	रतु	म	

राग आसावरी–ताल धमार

जाको मन लाग्यो गोपालसों ताहि ओर केसे भावे हो ।
ले कर मीन दूध में राखों, जल बिनु सचु नहिं पावे हो ॥१॥
ज्यों सूरा रन घूमि चलत हे, पीर न काहू जनावे हो ।
ज्यों गूंगो गुर खाय रहत हे, मुख न स्वाद बतावे हो ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जैसें सरिता मिली सिंधु में, उलटि प्रवाह न आवे हो ।
तैसेंइ 'सूर' कमलमुख निरखत, चित इत उत न डुलावे हो ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३
सां – – ध –	नि ध	सां सां –	सां – – –
जा – – को –	– –	म न –	ला – – –
रें नि – सां रें	रें –	नि ध –	प – – –
ग्यो – – गो –	पा –	– ल –	सों – – –
नि – – ध प	म प	ग – –	रे – सा –
ता – – हि –	ओ –	र – –	के – से –
रे म – प –	सां –	ध – –	प – ध –
भा – – वे –	– –	हो – –	– – – –

अंतरा

×	२	०	३
म प – ध –	ध –	सां – –	सां – – –
ले – – क –	र –	मी – –	न – – –
सां नि – सां रें	सां –	नि ध –	प – – –
दू – – ध –	में –	रा – –	खो – – –
प गं – गं –	गं –	रें रें –	सां – सां –
ज ल – बि –	नु –	स चु –	न – हिं –

रें	नि	—	सां	रें	नि	सां	ध	प	—	ध	म	प	ध
पा	—	—	वे	—	—	—	हो	—	—	—	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
सां	—	—	सां	—	नि	—	सां	—	—	सां	—	सां	—
ज्यों	—	—	छू	—	—	—	रा	—	—	र	—	न	—
नि	—	—	ध	—	ध	—	नि	ध	—	प	—	—	—
घू	—	—	मि	—	च	—	ल	त	—	है	—	—	—
नि	—	—	ध	—	ध	—	ग	—	—	रे	—	सा	—
पी	—	—	र	—	न	—	क.	—	—	हू	—	ज	—
रे	म	—	प	—	नि	—	ध	—	—	प	—	—	—
ता	—	—	वे	—	—	—	हो	—	—	—	—	—	—

"आभोग" अन्तरानुसार।

(आसावरी राग के अन्य पदोंकी स्वरलिपि के लिए "संगीतसुबोधिनी" अेवम् "संगीतकीर्तनपद्धति" ग्रन्थ को देखिये)

राग असावरी—ताल धमार

गिरिधरलाल पालनें झूलें, जसुमति आप झुलावे हो।
देखि देखि मुख कमलनयनको, बालचरित्र जस गावे हो ॥१॥
कबहुंक सुरंग खिलोना ले ले, नानाभांत खिलावे हों।
चुटकी दे दे लाड लडावें, अरु कर ताल बजावे हो ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुत्र सनेह चुचात पयोधर, आनंद उर न समावे हो।
चिर जीवो नंद महरि को ढोटा, 'सूरदास' दुलरावे हो ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
सां	सां	—	ध	—	नि	—	सां	—	—	सां	—	सां	—
गि	रि	—	ध	—	र	—	ला	—	—	ल	—	पा	—
नि	नि	—	सां	—	रें	सां	नि	ध	—	प	—	—	—
—	ल	—	नें	—	—	—	झू	—	—	लैं	—	—	—
नि	नि	ध	प	ध	म	प	ग	—	—	रे	—	सा	—
ज	सु	—	म	—	ति	—	आ	—	—	प	—	झु	—
रे	म	—	प	—	सां	—	ध	प	—	ध	म	प	ध
ला	—	—	वे	—	—	—	हो	—	—	—	—	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
गं	—	—	गं	—	गं	—	रें	रें	—	सां	—	सां	—
दे	—	—	खि	—	दे	—	—	खि	—	सु	—	ख	—
नि	नि	—	सां	—	रें	सां	नि	ध	नि	ध	—	प	—
क	म	—	ल	—	न	—	य	न	—	को	—	—	—
प	—	गं	—	—	गं	—	रें	रें	—	सां	—	सां	—
बा	—	—	ल	—	च	—	रि	त्र	—	ज	—	स	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×					२		०			३			
नि	—	—	सां	—	रें	नि	ध	प	—	ध	म	म	ध
गा	—	—	वे	—	—	—	हो	—	—	—	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
सां	सां	—	ध	—	नि	ध	सां	सां	—	सां	—	सां	—
क	व	—	हुं	—	क	—	सु	रं	—	ग	—	खि	—
नि	—	—	सां	नि	रें	सां	नि	ध	—	प	—	—	—
लो	—	—	ना	—	—	—	ले	—	—	ले	—	—	—
नि	—	—	ध	—	म	प	ग	—	—	रे	—	सा	—
ना	—	—	ना	—	—	—	भां	—	—	ति	—	खि	—
रे	म	—	प	—	नि	ध	ध	प	—	रे	म	प	—
ला	—	—	वे	—	—	—	हो	—	—	—	—	—	—

'आभोग' अन्तरानुसार।

राग सामेरी

यह राग प्राचीन है। सामेरी राग का ग्रन्थों में सांवेरी नाम से भी उल्लेख किया गया है। यह राग अष्टछाप के समय में अधिक प्रचार में था। सम्प्रदाय में नित्यसेवाक्रम के कीर्तनों में यह राग का प्रयोग आजकल दृष्टिगत नहीं होता। इन्द्रमानभंग इत्यादि नैमित्तिक प्रणाली में इस राग के पद गाये जाते हैं, किन्तु हमें शुद्ध और परंपरागत का प्रामाणिक स्वरूप प्राप्त न होने से इस राग के पदों की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वरलिपि और विवरण का अत्र केवल उल्लेख मात्र किया जा रहा है। दाक्षिणात्य संगीतपद्धति में यह राग उत्तरीय पद्धति के 'दुर्गा' राग के समान गाया जाता है, जो उत्तरीय पद्धति से भिन्न है। स्मृति में है वहाँ तक यह राग आसावरी थाट का है तथापि कोई शुद्ध धैवत का भी उसमें प्रयोग करते हुए सुना है। और प्रातःकालीन सेवा-क्रम का यह राग माना जाता है। कुछ कीर्तनकार सामेरी को 'सामेरी बिलावल' मानते हैं। इस प्रकार के पद का उदाहरण–बिलावल के कीर्तनों में जो चौखड़ा गाये जाते हैं उसीको 'सामेरी बिलावल कहते हैं।

मुझे स्मृति में है वहां तक निम्न प्रकार परंपरासे अधिक अनुकूल होगा। आरोहमें ग, नि वर्ज्य, अवरोहमें कवचित नि कोमल का दुर्बल रूपसे प्रयोग किया जाता है। आरोहवरोह :— सा, रेम, प, धसां। सां, धप, म, गरेसा।

राग तोडी

सम्प्रदाय के संग्रहों में तोडी राग का उल्लेख टोडी नाम से प्राप्त होता है। सीतकाल में राजभोगसमय गाये जानेवाले नित्य के पदों में तोडी राग महत्त्व का है। बधाई और त्यौहारों के कीर्तनों में भी इस राग के पद प्राप्त होते हैं।

मुख्य थाटो में भी तोडी राग का थाट के नामों में उल्लेख किया गया है। अतः तोडी राग तोडी थाट में से उत्पन्न होता हैं। रे, ग, ध स्वर कोमल और म तीव्र है। यह राग सम्पूर्ण है। वादी धैवत और संवादी गान्धार है। समय दिन का दूसरा प्रहर है। इस राग में धैवत की अपेक्षा पंचम का प्रमाण कुछ कम है। इस राग की विशेषता रे, ग, सा, और ध स्वरो में है।

आरोहवरोह :— सा, रेग, म प, ध, निसां सां, निध, प, म, ग, रे, सा

पकड :– धनिसा, रेग, रे, सा, म, ग, रेग, रेसा.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वर-विस्तार :-

१. सा, निसा, रे, नि ध, नि ध, म ध, नि सा, ध नि सा,

रे ग रे सा, म ग, रे, सा, म ध नि ध, प, म ध मग,

रे, सा, नि, सा रे ग ।

२. नि साग म प, ग म प, ध, प, सां, निध, प, म प ध

नि ध प, म प धम ग, नि, सारेग, ध म ग,

रे ग, रे, सा, नि, सा रे ग ।

३. म ग, म ध, सां, सां, रें, सां, रें गं रें सां, म गं, पं,

म गं, रें, सां, नि सां, रें, नि ध, रें नि ध, प, म ध निध, प,

मपध, म ग, गं, रें, सां, निसां रें. निध, प, मध नि ध, प,

म ध नि ध, म ग, रे म, ध म ग, ग, रे, सा, निरे, सा ।

राग तोडी–ताल चौताल

हेली रसमय श्रीवल्लभसुत, प्रगट भये आज ।
अंग अंग धृति तरंग मधुरावलि केलि प्रसंग, दृग विलास
भौंह भाल कमनीय साज ॥१॥
लीला अमृत रसाल प्रेम भक्ति के प्रतिपाल, स्मरन करे
होत निहाल भावकी बांधे पाज ।
'पद्मनाभ' वागधीसकुंबर केलिकला अखिल, अवगाहत प्रेम-
सिंधु व्रजजन–सिरताज ॥२॥

स्थायी

प	ग	मं
हे	—	ली

×		०		२		०		३		४	
ध	—	प	प	—	प	मं	ग	रे	ग	रे	सा
र	—	स	म	—	य	श्री	व	ल्ल	भ	सु	त
प	प	प	ग	मं	ध	मं	ग	रेसा	मंग	मं	प
प्र	ग	ट	भ	ये	—	आ	—	ज—	हे—	—	ला

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	—	ग	मं	—	ध	नि	सां	सां	सां	—	सां
अं	—	ग	अं	—	ग	धू	ति	त	रं	—	ग
ध	ध	नि	सां	सां	सां	गं	रें	रें	सां	—	सां
म	धु	रा	—	व	लि	के	लि	प्र	सं	—	ग
ध	ध	गं	गं	—	गं	रें	मं	रें	सां	—	सां
द	ग	वि	सा	—	ल	ओं	—	ह	भा	—	ल
नि	ध	—	प	—	प	मं	ग	रेग	प	ग	मं
क	म	—	नी	—	य	सा	—	ज—	हे	—	ली

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	—	—	ग	—	म॑	ध	ध	ध	प	—	प
ली	—	—	ला	—	अ	मृ	त	र	सा	—	ल
ध	—	ध	नि	सां	सां	गं	रें	—	सां	—	सां
प्रे	—	म	भ	क्ति	के	प्र	ति	—	पा	—	ल
नि	नि	ध	ध	प	—	म॑	ग	ग	रे	—	सा
स्म	र	न	क	रे	—	हो	त	नि	हा	—	ल
ध़	—	—	ग	—	ग	रे	ग	रे	सा	—	सा
भा	—	—	व	—	की	बां	—	धे	पा	—	ज

'आभोग' अन्तरानुसार ।

राग तोडी—ताल चौताल

सप्त सुरन तीन ग्राम इकईस मूरछना उनचास कोटि तान मंडलमधि गावे ।
चारुकरन हस्तक सिर नेन भेद भांति भांति उपजत गति नित नूतन कर नचावे ॥१॥
धुम धिकिट थुंग थुंग कु कुझां झिनकिट धुमकिट धुम मृदंग वजावे ।
'रसिक'प्रीतम-छबि निहार देवजुवति मोहत मन उमगि उमगि: विविध
कुसुम बरखत सुख पावे ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
ग	—	ग	रे	सा	सा	ध़	—	ऩि	सा	रे	ग
स	-	स	सु	र	न	ती	—	न	ग्रा	—	म

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म॑	ग	—	म॑प	ध	प	म॑	ग	रे	रे	सा	—
इ	क	—	ई—	—	स	मू	र	—	छ	ना	—
ग	रे	ग	म॑	प	प	ध	—	नि	सां	—	सां
उ	न	—	चा	—	स	को	—	टि	ता	—	न
नि	ध	ध	प	म॑	ग	रे	ग	रे	रे	सा	—
मं	ड	ल	म	—	धि	गा	—	—	वे	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म॑	ग	ग	म॑	ध	ध	नि	—	सां	सां	सां	सां
चा	—	रु	क	र	न	ह	—	स्त	क	सि	र
नि	—	सांरें	गं	रें	सां	नि	—	सां	नि	ध	ध
ने	—	न—	भे	—	द	भां	—	ति	भां	—	ति
म॑	ध	नि	सां	—	नि	ध	प	म॑	ग	म॑	प
उ	प	—	ज	—	त	ग	—	ति	नि	—	त
ध	नि	ध	ध	म॑	ग	रे	ग	रे	रे	सा	सा
नू	—	त	न	—	क	र	—	न	चा	—	वे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग तोडी–ताल चौताल

बहुत प्रसन्न भये पिय प्यारी टोडी राग बेनुधर गायो ।
सुर संगीत बंधान मधुर धुनि एसोइ अदभुत भेद बतायो ॥१॥
बीन तरंग उपजत नानारंग प्रतिछिन ओर ही ओर मिलायो ।
'चतुर्भुजदास' स्वामिनी गुननिधि रसिकराय गिरिधरन रिझायो ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
ध	प	—	ग	म॑	प	ध	—	प	प	—	प
ब	हु	—	त	—	प्र	स	—	—	न्न	—	भ
म॑	ग	—	ग	—	ग	रे	ग	रे	सा	—	सा
ये	—	—	पि	—	य	प्या	—	—	री	—	—
नि	सा	—	म॑	ग	म॑	ध	—	—	नि	सां	—
टो	-	—	डी	—	—	रा	—	—	ग	—	—
सांरें	गं	रें	सां	—	सां	नि	ध	—	प	ग	म॑
बे—	—	नु	ध	—	र	गा	—	—	यो	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
ध	प	म॑	ग	—	म॑	ध	नि	सां	सां	—	सां
सु	र	—	सं	—	—	गी	—	—	त	—	बं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	—	—	नि	सां	रें	गं	रें	—	सां	—	सां
धा	—	—	न	—	म	धु	र	—	धु	—	नि
नि	ध	—	गं	—	गं	रें	—	—	सां	—	सां
ए	—	—	सो	—	इ	अ	—	—	द्भु	—	त
नि	ध	—	प	—	मं	मं	ग	—	रे	ग	मं
भे	—	—	द	—	व	ता	—	—	यो	—	—

राग तोडी—ताल चौताल

ए कहुँ उमड धूमड गरजत्त हो पिय कहुँ बरखत कहुँ उधरजात ।
कहुँ दमकत कहुँ चमकत चपला जोंइ कहुँ और न ठहरात ॥१॥
स्यामघन के लच्छन तुमही पे स्यामधन वृथा मेह आडंबर प्रांत ।
'मुरारिदास'प्रभु तिहारे वाम चरन पूजियेजु को किनकी कही न
बात को पत्यात ॥२॥

स्थायी

३		४		×		०		२		०	
ग	रे	ग	मंप	ध	—	प	मं	प	प	ध	मं
ए	क	—	हुँ—	उ	—	—	म	—	ड	धू	—
ग	ग	—	ग	रे	ग	—	मं	प	ध	मं	ग
—	म	—	ड	ग	र	—	ज	—	त	हो	—
—	रे	—	सा	ऩि	सा	—	गरे	ग	ग	मं	ग
—	पि	—	य	क	हु	—	ब	—	र	ख	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

	ग										ध
—	रे	ग	म	ध	नि	सां	नि	ध	ग	—	म
—	क	—	हुँ	उ	ध	र	जा	—	—	—	त

अंतरा

३		४		×		०		२		०	
मं	ग	—	म	—	ध	नि	सां	नि	सां	—	सां
क	हुँ	—	द	—	म	क	त	—	क	—	हुँ
सां	ध	—	नि	सां	रें	गं	रें	—	सां	—	निध
च	म	—	क	—	त	च	प	—	ला	—	जों—
ध	नि	ध	प	मं	ग	ग	गं	—	रें	—	सां
इ	—	—	क	—	हुँ	ठो	—	—	र	—	न
नि	ध	सां	नि	ध	प	—	धमं	ग	रे	ग	म
ठ	ह	—	रा	—	त	—	इ—	—	क	—	हुँ

राग तोडी-ताल चर्चरी (झपताल अंग)

हों पनियां न जैहों मेरी मटुकियाँ झटकि कर पटकी ।
अचानक आन गही हो जु सांवरे मेरे संगकी सव सब सटकी ॥१॥
काल्हि दुपहर गई हों कुंजमें को जानें मेरे या घटकी ।
प्रभु कल्यान गिरिधरजुकी माधुरी मेरे दो नैननि बीच अटकी ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
ध	ध	मं	ग	ग	रे	ग	रे	—	सा
प	नि	यां	—	न	जै	—	हों	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	—	ग	—	ग	रे	रे	सा	—	—
मे	—	री	—	म	ड	कि	याँ	—	—
म	ग	म	ध	नि	ध	ध	पम	ग	म
झ	ट	कि	क	र	प	ट	की—	—	हों

अंतरा

×		२			०		३		
ध	ध	मंग	मं	ध	नि	सां	सां	—	सां
अ	चा	न—	—	क	आ	—	न	—	ग
ध	—	नि	सां	सां	रें	—	रें	सां	—
ही	—	हो	—	जु	सां	—	व	रे	—
ध	—	गं	रें	गं	रें	—	सां	सां	ध
मे	—	रे	—	—	सं	—	ग	की	—
म	ध	नि	सां	नि	ध	ध	पम	ग	म
स	ब	स	—	ब	स	ट	की—	—	हो

संचारी

×		२			०		३		
प	—	मं	ग	मं	ध	ध	प	—	प
का	—	ल्हि	—	ढु	प	ह	र	—	ग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मं	ग	मं	ध	—	प	ग	मं	ग	—
ई	—	हों	—	—	कुं	—	ज	में	—
रे	ग	ध	प	ध	म	ग	रे	—	सा
का	—	जा	—	—	नें	—	मे	—	रे
ध	—	ग	रे	ग	रे	—	सा	—	—
या	—	घ	—	ट	की	—	—	—	—

राग तोडी–ताल धमार

नीको बन्यो गोकुल गाम सुहावनो जहां खेलत है हरि हो होरी ।
इत हि सकल ब्रजके बालक उत झुंडन जुरि आई तरुनी तिनमें राधा गोरी ॥१॥
बिबिध भांति बाजे बाजत नवल कुंमकुम केसर अरगजा घोरी ।
रतनजटित पिचकाई कर गहि छिरकत तकि मुदित परस्पर नवल
किसोर किसोरी ॥२॥
यह बिध हरि खेलत झेलत रससिंधुतरंग भरी ब्रजखोरी ।
मोहि अमरवधु निरख बरख कुसुमन रघुवीर फिरत संग भरि भरि झोरी ॥३॥

स्थायी

म	ग	ध	ध
नी	—	को	—

x					२		०			३			
सां	सां	—	नि	ध	प	प	ध	प	—	मं	ग	ध	ध
व	न्यो	—	गो	—	कु	ल	गा	—	—	म	—	—	सु

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मं	ग	—	रे	—	सा	—	सा	नि	सा	रे	ग	मं	प
हा	—	—	व	—	नो	—	ज	हाँ	—	खे	—	ल	त
ध	—	—	म	ग	रे	ग	रे	—	सा	म	ग	म	ध
हे	—	—	ह	रि	हो	—	हो	—	री	नी	—	को	—

अन्तरा

×					२		०			३			
मं	ध	ध	नि	सां	सां	—	गं	रें	रें	सां	—	सां	सां
इ	त	हि	स	क	ल	—	व्र	ज	के	बा	—	ल	क
रें	गं	रें	सां	सां	नि	ध	ध	गं	रें	सां	नि	ध	प
उ	त	झुं	ड	न	जु	रि	आ	—	ई	त	रु	नी	—
म	प	ध	म	ग	रे	ग	रे	—	सा	म	ग	म	ध
ति	न	में	रा	—	धा	—	गो	—	री	नी	—	को	—

संचारी

×					२		०			३			
ध	ध	ध	प	—	प	—	मं	ग	मं	ध	—	प	प
बि	वि	ध	भां	—	ति	—	बा	—	जे	बा	—	ज	त
म	ध	—	म	ग	म	ध	सां	नि	ध	प	प	म	ग
कु	म	—	कु	—	के	—	स	र	अ	र	ग	जा	—
म	ग	—	म	ग	ग	—	रे	ग	रे	सा	—	—	—
—	—	—	न	व	ल	—	घो	—	—	री	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग गुर्जरी (तोडी)–ताल धमार

होरी खेलत मनमोहनसों, अबीर लिये भर झोरी ।
एक गावत एक मृदंग बजावत, एक अलापत हे किसोरी ॥१॥
एक गोरी एक भोरी सांवरी सुरत, एक अबला दीन की थोरी ।
चतुरबिहारीकी बानिक निरखत, डारत हे तृन तोरी ॥२॥

स्थायी

३				×					२		०		
ध	मग	ग	म	ध	—	—	म	ग	रे	ग	रे	सा	सा
हो	री–	खे	ल	त	—	—	म	न	मो	—	ह	न	सों
ध	ध	ग	—	म	ग	—	ध	मध	सां	नि	ध	म	ग
अ	बी	र	—	लि	ये	—	भ	—	र	—	झो	—	री

अन्तरा

×					२		०			३			
ध	म	ग	म	ध	सां	—	सां	—	—	सां	—	रें	सां
ए	क	—	गा	—	व	—	त	—	—	ए	—	क	—
ध	ध	—	नि	सां	सां	—	रें	गं	—	रें	—	सां	—
मृ	दं	—	ग	ब	जा	—	व	त	—	ए	—	क	—
रें	नि	ध	म	ध	सां	नि	ध	म	ग				
अ	ला	—	प	त	हे	कि	सो	—	री				

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग सारंग (वृन्दावनी)

'सारंग' राग को शास्त्रोक्त, प्राचीन एवं लोकप्रिय राग माना जाता है। इस राग के विविध प्रकारो में से हवेली–संगीतपरंपरा में ६ प्रकारके सारंग गाये जाते हैं, कोई ८ अष्ट–प्रकार भी मानते हैं। इन सभी प्रकारों का गान–समय दोपहर का सर्वसम्मत है। ग्रन्थों में कहीं दिन का तृतीय प्रहर का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

पुष्टिमार्ग की प्रातःसेवा में राजभोग–समय से लेकर राजभोग के दर्शन तक की सेवा में यह राग के छः प्रकार ऋतुक्रमानुसार गाये जाते हैं। जो इस प्रकार हैं। (१) सारंग, (२) मघमाघ सारंग, (३) सामंत–सारंग, (४) गौड-सारंग, (५) नूर–सारंग, (६) मेघ–सारंग.

किन्तु अधिकतर और सभी ऋतुओं के उत्सवादि क्रम में 'सारंग' ही गाया जाता है।

सम्प्रदाय के हस्तलिखित संग्रहों में सारंग राग के संख्याबन्ध कीर्तन प्राप्त होते हैं। सारंग राग के ६ या ८ प्रकारोंमें गाये जाने वाले पद–कीर्तनों का 'राग–सारंग' शीर्षक के अंतर्गत ही समावेश किया गया हैं। सारंग राग की शीतल प्रकृति होने से यह उष्णकालीन राग सम्प्रदाय में चैत्र मास से लेकर रथयात्रा के पूर्व दिन तक राजभोगसमय में गाने की प्रथा है। तदतिरिक्त जन्म–बधाई तथा त्यौहारोत्सव के समय पर भी यह 'सारंग' राग के पद गाये जाते हैं। संग्रहों में कहीं मघमाघ, सामंत, गौड या नूर सारंग का उल्लेख वहुत कम प्रमाण में प्राप्त होता है।

आजकल संगीत–समाज में 'शुद्ध–सारंग' नाम का जो राग प्रसिद्ध है, वह–हवेली–संगीतपरंपरा के सारंग से पृथक् है। अर्थात् यह 'शुद्ध–सारंग' हमारी परंपराका राग नहीं है, ऐसा लेखक का स्पष्ट मन्तव्य है। अष्टछाप–घरानों में जो सारंग राग गाया जाता है उसी को कोई–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कोई 'वृन्दावनी सारंग' नाम से पहिचानते हैं। 'सारंग' को वृन्दावनी सारंग या वृन्दावनी को सारंग नाम से पहिचानने की प्रथा इस सैंका के आरम्भ से ही प्रसिद्ध होने लगी, जो निम्न ग्रन्थों के उल्लेखों से स्पष्ट समझ सकते हैं :—

(१) ई. स. १८९२ में छपे हुए 'गायनदर्पण' नामक ग्रन्थ में पृष्ठ. ३६ पर "सारंग" शीर्षक का ही उल्लेख इस प्रकार किया गया है। "सारंग राग ओडव—पांच सुरका है। गान्धार—धैवत बाद है। मध्यम स्वर प्रधान है। निषाद दो हैं, आरोहमें तीव्र, अवरोहमें कोमल स्वर—सा रे म ध नि सां, सां नि प म रे सा।"

पं. आदित्यरामजी ने भी अपने ग्रंथ में 'रागिनी—सारंग' के ही शीर्षक में चार पांच चीजें लिखी हैं, जिनमें से पहली चीज के स्वरों क प्रयोगार्थ देखिए।

"रे मप निसां निप निपम मम पप निपनि निनि सां सां सां रें
सांनिपम पमरेसा सांनिपम, सारंग सरस कर लई, रे म प नि सा।"

उपर्युक्त चौताल के द्रुपद की स्थायी की रचना में जो स्वर—स्वरूप बताया है वह आजकल वृन्दावनी सारंग ही कहा जायगा। तदुपरान्त विवरण में लिखा है कि "सारंग को ग ध वर्जित कहि के मध्यम अंश स्वर बनाया है। और दो निषाद माने हैं।"

तदतिरिक्त "संपूरन रूप भी आजकल गाने में चालू है, कोई तीव्र मध्यम ही मिलाता हैं।" इस उल्लेख में आजकल के शुद्ध—सारंग का बोध होता है, किन्तु आपने ग ध वर्ज्य और दोनों निषादों के स्वरों को ही 'सारंग' कहा है।

['संगीतादित्य' पृष्ठ—८६,८७ प्रकाशन ई. स. १८८९].

(२) पं. गणपतराव बर्वेजी ने 'गायन वादन पाठमाला' पुस्तक के पृष्ठ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

—२६० पर क्रमांक १ में केवल 'राग सारंग' का ही नाम लिख कर जो विवरण दिया है वह ग ध वर्ज्य दोनों निषाद वाला 'सारंग' आज का वृन्दा-वनी सारंग है।

(४) पं. विष्णु दिगंबर' के घराने में भी आज के 'वृन्दावनी सारंग' को 'सारंग' कहने का अभी तक रिवाज दिखाई देता है। उनकी परम्परा के पं. विनायकराव पटवर्धन नें अपने ग्रन्थ में 'सारंग के शीर्षक में ही चीजें प्रसिद्ध की हैं। उन्होंने इस सारंग को वृन्दादनी सारंग कहा नहीं है।

[रागविज्ञान, भाग ३. पृ–१४७,१४८; प्रकाशन ई. १९३७]

(५) मास्टर दामोदर के 'गायनसंग्रह' में भी इस सारंग का वर्णन निम्न प्रकार किया है ! सा रे म प नि सां। सा नि प म रे सा।

[प्रकाशन ई. से. १९१४, पृष्ठ ४३]

(६) 'संगीतकौमुदी' में बताया गया हैं कि—

"ग्रन्थों में जो 'वृन्दावनी सारंग' नाम मिलता है, जिसको बिंद्राबनी सारंग भी कहते हैं। मथुरा जिले में 'वृन्दावन' नामक गाम के नाम से वृन्दावनी सारंग नाम पड़ा हुआ माना जाता हैं। सारंग राग के अन्य प्रकारों में यह राग अधिक लोकप्रिय होने से अधिक प्रचार में है। अतः केवल 'सारंग' राग कहने पर वृन्दावनी सारंग' का ही मतलब समझ में आता हैं। अर्थात् चाहें 'सारंग' राग कहो अथवा 'वृन्दावनी सारंग,' दोनों एक ही माने जाते हैं। जैसे 'दरबारी' को 'दरबारी कानडा' समझा जाता है, उसी प्रकार 'सारंग' अथवा 'बिंद्रावनी सारंग' एक ही चीज हैं। किसीको 'सारंग' गाने का कहोगे तो वह तुरन्त 'वृन्दावनी सारंग' ही शुरू करेगा।"

(६) स्वयं पं. भातखण्डेजी ने भी लिखा है कि :—

"प्रचारान्त नुसता सारंग म्हणजे कोणी कोणी 'शुद्ध सारंग' समजतात् व तोच 'ब्रिंद्राबनी सारंग' समजतात्" [मराठी हिं–सं. पं–भाग ४, पृ. ३९६]

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अब सारंग के विषय में कुछ शास्त्रीय उल्लेखों की ओर दृष्टि करेंगे। पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में 'पं. लोचन' ने अपने 'रागतरंगिणी' ग्रन्थ में निम्न प्रकार का उल्लेख किया है।

"एवं सति च गान्धारः शुद्धमध्यमतां व्रजेत् ।
धश्च शुद्धनिषादः स्यात् सारंगो जायते तदा ॥"

तदनुसार आज के उ.हिं. मेल के स्वर निम्न प्रकार होते हैं।

"सा रे म म॑ प नि नि॒ सां ।

पश्चात् इसी मेल के जन्य प्रकारों का भी इस प्रकार वर्णन किया है।

"सारंगस्वरसंस्थाने प्रथमा पटमंजरी ।
वृन्दावनी तथा ज्ञेया सामन्तो बडहंसकः ॥"

उपर्युक्त श्लोक में वृन्दावनी पटमंजरी सामन्त तथा बडहंस के उल्लेख प्राप्त होते हैं, परन्तु 'लोचन' ने इन रागों का स्वतन्त्र वर्णन किया नहीं है। केवल 'सारंगस्वरसंस्थान' कह कर सारंग मेल के स्वर बताये गये हैं।

पं. हृदयनारायणदेव ने भी लोचन का सारंग मेल लेकर अपने 'हृदयकौतुक' और 'हृदयप्रकाश' ग्रन्थों में कहा है कि :—

"सरी गमौ पधनिसां निधौ पमौ गरी च सः ।
सम्पूर्णः कथितः सर्वैः सारंगो रागसत्तमः ॥"

[हृदयकौतुक]

"अतितीव्रतमो गाख्यो मधौ तीव्रतरौ कृतौ ।
यत्र निः काकली तत्र सारंगः पटमंजरी ॥"

[हृदयप्रकाश]

पं. अहोबलने भी उसी प्रकार 'सारंग' का वर्णन किया है :—

पं. लोचन, हृदयनारायण एवं पं. अहोबल के उपर्युक्त उल्लेखानुसार निम्न प्रकार सम्पूर्ण मेल बताया गया है :—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा रे ग मं प ध नि सां । सां नि ध प म ग रे सा। ये स्वरमेल अपनी उ. हिं. सं. पद्धति-अनुसार इस प्रकार क्रमशः होते हैं।

सा रे म मं प नि नि सां । सां नि नि प मं म रे सा।

यह सुप्रसिद्ध है कि स्वर(मेल)संस्थान के स्वरों में एक या दो स्वर कम करने से जन्य राग उत्पन्न हो सकते हैं, किन्तु जो स्वर मेल में नहीं है उस स्वर को प्रयुक्त करने से उसका जन्य स्वरूप नहीं रह सकता।

'सारंग' के उपर्युक्त शास्त्रीय स्वरमेल में से तीव्र-मध्यम का लोप हो जाने पर स्पष्ट रूप से अपना (बिंद्रावनी) 'सारंग' का स्वरूप दृष्टिगत होता है।

प्रचलित 'शुद्ध सारंग' में धैवत स्वर का नियमित रूप से प्रयोग किया जाता है। जो स्वर उपर्युक्त मेल में नहीं है, अतः उपर्युक्त शास्त्राधार का स्वरमेल (बिंद्राबनी) सारंग से ही अधिक सुसंगत होगा। मुख्यतः इस 'सारंग' को वृन्दावनी-सारंग कहने का प्रारम्भ काल का समय कोई निश्चित कहा नहीं जा सकता। फिर भी स्वामी हरिदासजी के समय में वृन्दावन तथा गोकुल मथुरा के देवालयों मे एवं सन्त कीर्तनकारों ने अधिकतर औडव जाति एवं दोनों निषादों के प्रयोग वाले 'सारंग' का ही गान किया हुआ सुप्रसिद्ध होने से भारत के अन्य प्रान्तों के कुछ लोग वृन्दावन के नाम पर से 'बिंद्राबनी सारंग' से पहचानने लगे होंगे। कुछ राग ऐसे भी हैं कि जिनके नाम प्रदेशों के नाम से प्रचलित हैं। जैसे सोरठ गुर्जरी इत्यादि।

ई. स. १९१८ की दिल्ही संगीत परिषद के पश्चात् ही यह प्रसिद्ध होने लगा। इस समय तक गायक-वादकोंमें दो-तीन प्रकार के मत-मतान्तर होने का पं. भातखण्डेजी के निम्न उल्लेख से स्पष्ट होता है :-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"वृन्दावनी के स्वरूप के बारे में एक—दो मतभेद दिखाई देते हैं। कोई कहते हैं कि बिंद्राबनी के आरोहावरोह में गान्धार और धैवत स्वर वर्ज्य करके दोनों निषाद उपयोग में लिये जायँ। उनका ऐसा भी मत था कि वृन्दावनी के अवरोह में क्वचित् धैवत का प्रयोग कुशलता से किया जाय।"

"दूसरे कोई कहते हैं कि 'वृन्दावनी' में ग और ध वर्ज्य करके एक ही तीव्र निषाद लिया जाय। यह मत सयुक्तिक है, लेकिन प्रचारमें दोनों निषाद लिए हुए स्वरूप ही अधिक दिखाई देते हैं।"

उपर्युक्त मतान्तर की चर्चा के पश्चात् परिषद् में 'बिंद्राबनी सारंग' का स्वरूप अधिक कलावन्तो के मतानुसार जो निश्चित किया गया जिसका पं. भातखन्डेजी ने निम्नप्रकार उल्लेख किया है :—

"सन् १९१८ ईसवीं में दिल्ली की संगीत परिषद् में इस मुद्दे पर चर्चा हुई थी। और वहाँ इकठ्ठे हुए कलावंतोंने अपना मत ऐसा दिया कि 'वृन्दावनी' के आरोह—अवरोह में गान्धार और धैवत वर्ज्य करके दोनों निषाद यानी आरोहमें तीव्र और अवरोहमें कोमल लिये जायँ।"

[क्रमिक पु. ३. हिंदी आवृत्ति]

उपर्युक्त उल्लेखों के सारांश में यही कहा जा सकता है कि ई. स. १९१८ तक 'वृन्दावनी' का स्वरूप स्पष्ट हुआ नहीं था। पश्चात् अपनी क्रमिक पु. ३ में 'वृन्दावनी सारंग' नाम से 'सारंग' राग की संख्याबन्ध चीजें प्रगट की हुई दृष्टिगोचर होती हैं। और व्यवहार में भी 'वृन्दावनी सारंग' नाम से गायक—वादकों में अधिकतर प्रचार दिखाई देता हैं। अष्टछाप—घराने का सारंग वृन्दावन एवं गोकुल—मथुरा की परम्परा का राग होने से उसको 'वृन्दावनी सारंग' नाम से पहिचाना जाय तो उसमें कोई विसंगतता नहीं है। नामकरण के सम्बन्ध में प्रचार और व्यवहार का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध्यान रखना भी उचित ही है । अतः अष्टछाप-घराने की परम्परा मान्य 'सारंग' का 'सारंग' या 'बिंद्रावनी-सारंग' नाम से उल्लेख किया जाता हैं, जिसके स्वर-स्वरूपादि का वर्णन इस प्रकार है :—

राग सारंग : संक्षिप्त विवरण

'चढत तीव्र निखाद है, औड़ुव जाति सुहाई ।
रिप वादी संवादि तें, सारंग राग कहाई ॥'

(१) थाट काफी से सारंग राग उत्पन्न होता है ।

(२) स्वर-आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद किया जाता है । ग ध स्वर वर्ज्य हैं, शेष शुद्ध हैं ।

(३) जाति औडव-औडव है

(४) वादी ऋषभ और संवादी पंचम स्वर है ।

(५) गान-समय मध्याह्न माना जाता हैं ।

(६) पकड़ स्वर-सारे, मरे, पमरे, सा

(७) आरोहावरोह—

सां, रेम, प, निसां । सांनिप, म, रेसा.

—

उदाहरणरूप-निम्न द्रुपद चौताल में निम्न प्रकार गाया जाता है ।

स्थायी : जाको बेद रटत ब्रह्मा रटत संभू रटत सेस रटत,
नारद सुक ब्यास रटत पावत नाहिं पार ।

अंतरा : ध्रुवजन प्रहलाद रटत, कुन्ती के कुंवर रटत,
द्रुपदसुता रटत नाथ अनाथन-प्रतिपाल ॥१॥

संचारी : गनिका गज गीध रटत, गौतमकी नारि रटत,
राजनकी रमनी रटत सुतन दे दे प्यार ।

आभोग : 'नंददास' श्रीगोपाल गिरिवरधररूप रसाल,
जसोदाको कुंवर लाल राधा- उर हार ॥२॥

स्थायी

नि	म	प
जा	–	को

×		०		२		०		३		४	
नि				प		प					
सां	–	सां	सां	नि	प	मप	नि	प	म	प	प
बे	–	द	र	ट	त	ब्र–	–	ह्मा	र	ट	त
प		म				प					
म	–	रे	म	प	प	नि	–	प	म	रे	सा
सं	–	भू	र	ट	त	से	–	स	र	ट	त
सा		रे				प					
नि़	सा	म	रे	म	प	नि	प	म	प	नि	सां
ना	–	र	द	सु	क	प्या	–	स	र	ट	त
						प					
नि	सां	रेंमं	रेंमं	सां	निसां	नि	–	प	नि	म	प
पा	व	त–	ना–	–	हिं	पा	–	र	जा	–	को

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
ध									सां		
म	प	नि	नि	–	सांनि	सां	–	सां	नि	सां	सां
भु	व	ज	न	–	प्रह	ला	–	द	र	ट	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां		मं							प		
नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	सां	निसां	नि	प	ध
कुं	—	ती	—	के	—	कुँ	व	र—	र	ट	त
प						प			प		
म	प	प	नि	म	प	नि	नि	प	म	प	प
द्रु	प	द	सु	ता	—	र	ट	त	ना	—	थ
				सां		प					
नि	सां	रें	सां	नि	सां	नि	—	प	नि	म	प
अ	ना	थ	न	प्र	ति	पा	—	ल	जा	—	को

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	प	—	म	प	नि	—	प	म	प	प
ग	नि	का	—	ग	ज	गी	—	ध	र	ट	त
						प					
म	प	नि	नि	म	प	नि	नि	प	म	रे	सा
गौ	—	त	म	की	—	ना	—	रि	र	ट	त
सा		म				प					
ऩि	सा	रे	म	प	—	नि	नि	प	नि	म	प
रा	—	ज	न	की	—	र	म	नी	र	ट	त
			पा								
नि	सां	सां	नि	प	प	म	रे	म	प	—	—
सु	त	न	दे	—	दे	प्या	—	र	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आभोग

×		०		२		०		३		४	
नि	—	नि	सां	—	सां	रें	सां	नि	सां	—	सां
नं	—	द	दा	—	स	श्री	—	गो	पा	—	ल
						सां					
नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	सां	रें	सां	नि॒	प
गि	रि	व	र	ध	र	रू	प	र	सा	—	ल
म	प	रें	रें	मं	मं	रें	सां	रें	सां	नि	सां
ज	सो	—	दा	—	को	कुँ	व	र	ला	—	ल
नि	सां	रें	सा	नि	सां	नि॒	—	प	नि॒	म	प
रा	—	धा	—	उ	र	हा	—	र	जा	—	को

राग सारंग—ताल चौताल

एसी बंसी बाजीरी वन घनमें व्यापि रही ध्वनि महामुनिनकी समाधि लागी ।
भयो ब्रह्मनाद उठत आह्लाद जहां तहां ब्रज घोख रत्न वृन्द भये सब त्यागी ॥१॥
रासादि अनेक लीला रसभाव पुरित मूरति मुखारविंदछबि धरे
विरह अनंग जागी ।
तब बेनुनाद द्वार अब लछमनभूपकुमार, 'कृष्णदास' दैवोद्धार अर्थ त्यागी ॥२॥

'पद्मनाभ' पाठांतर प्राप्त होता है ।

स्थायी

							म	प	नि	सां	नि
							ए	सी	बं	—	सी
×		०		२		०		३		४	
सां	—	—	नि॒	—	प	नि॒	प	म	रे	सा	—
बां		—	जी	—	री	ब	न	घ	न	में	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि़	सा	—	म	रे	मप	नि	प	म	रे	—	सा
व्या	—	—	पि	—	र—	ही	—	—	ध्व	—	नि
म	—	रे	म	—	म	प	—	प	नि	म	प
म	—	—	हा	—	मु	नि	—	न	की	—	स
निसां	रें	रें	सांनि	सां	नि	प	म	प	निसां	रे	नि
मा—	—	धि	ला—	—	गा	—	ए	सी	बं—	—	सी

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	—	नि	—	नि	सां	—	सां	सां	सां	सां
भ	यो	—	ब्र	—	ह्म	ना	—	द	उ	ठ	त
नि	नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	सां	नि	—	—
आ	ह्ला	द	ज	हां	—	त	हां	—	ब्र	—	ज
रें	—	रें	रें	सां	सां	रें	नि	सां	—	नि	प
घो	—	ख	र	—	त्न	वृ	—	न्द	—	भ	ये
रें	—	—	सांनि	सां	नि	प	म	प	नि	सां	नि
स	ब	—	त्या	—	गी	—	ए	सी	बं	—	सी

राग सारंग—ताल चौताल

वृन्दावन कुंजनिमें मध्य खसखानो रच्यो
सीतल बयार झुकि गोखन बहत हें ।
सुगंधी गुलाबजल नाना बहु भांतिनिके
ले लाइ धाइ सखी सब छिरकत हें ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धार धुरवा छूटत तहाँ नीके
दादुर मोर पिक शुक जु फिरत हे ।
'कृष्णदास' फुहारे छूटे मानों मन्मथ लूटे
झुकि झुकि झुकि धारे हौदनि भरत हे ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां			प			प					
नि	सां	सां	नि	प	प	नि	प	प	म	रे	सा
वृं	ऽ	दा	व	ऽ	न	कुं	ऽ	ज	नि	में	—
सा											
नि़	सा	रे	रे	—	रे	प	म	रे	रे	सा	सा
म	ऽ	ध्य	ख	ऽ	स	खा	ऽ	नो	र	ऽ	च्यो
नि़	सा	रे	म	प	प	नि	प	म	प	नि	सां
सी	ऽ	त	ल	ऽ	ब	या	ऽ	र	झु	—	कि
रें	—	सां	नि	—	प	नि	प	म	रे	म	प
गो	ऽ	ख	न	ऽ	ब्र	ह	ऽ	त	हे	ऽ	ऽ

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	म	—	प	—	नि	सां	—	नि	सां	—	सां
सु	गं	ऽ	धी	ऽ	गु	ला	ऽ	ब	ज	ऽ	ल
नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	सां	रें	सां	नि	प
ना	—	ना	—	ब	हु	भां	—	ति	नि	के	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	प	रें	रें	—	सां	नि	सां	सां	(प) नि	—	प
ले	ऽ	ऽ	ला	ऽ	इ	धा	ऽ	इ	स	ऽ	खी
नि	सां	रें	सां	नि	प	नि	प	म	रे	म	प
स	ब	ऽ	छि	—	र	क	त	ऽ	हे	ऽ	ऽ

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	—	—	प	—	—	नि	प	—	प	—	—
धा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	धु	र	ऽ	वा	ऽ	ऽ
म	—	म	प	—	नि	सां	—	—	(प) नि	—	प
छु	ऽ	ट	त	ऽ	त	हाँ	ऽ	ऽ	नी	ऽ	के
म	प	नि	प	—	प	म	—	रे	रे	—	सा
दा	ऽ	ऽ	दु	ऽ	र	मो	ऽ	र	पि	ऽ	क
नि़	नि़	सा	रे	—	प	म	रे	—	सा	—	—
सु	क	ऽ	जु	ऽ	फि	र	त	ऽ	हे	ऽ	ऽ

"आभोग" अन्तरानुसार।

राग सारंग–ताल सुलताल

स्थायी : बलि वामन हो जग पावन करन ।

अन्तरा : कहि न परत सोभा नील मनिनसी गोभा,
गगन गयो जब सुन्दर चरन ॥१॥

संचारी : बन्यो हे मेद अति उतते गंगाकी धार उज्ज्वल वरन ॥२॥

[उपर्युक्त पद श्रीनंददासजी–रचित है। वामनद्वादशी के दिन यह पद गाया जाता है। सम्पूर्ण पद के लिए देखिए काँकरौली–प्रकाशन–'तृतीयगृह कीर्तनप्रणाली के पद' पृष्ठ–५७]

स्थायी

								निं	सां
								ब	लि
×		०		२		३		०	
रें	—	सां	सां	नि	सां	सां	नि	—	प
वा	—	म	न	हो	—	—	ज	—	ग
नि	—	प	म	रे	मप	निप	मप	नि	सां
पा	—	व	न	क	र—	न—	—,	ब	लि

अन्तरा

×		०		२		३		०	
म	प	नि	नि	सां	नि	सां	सां	—	सां
क	हि	न	प	र	त	—	सो	—	भा
नि	सां	रें	मं	रें	सां	रें	सां	नि	प
नी	—	ल	म	नि	न	सी	गो	—	भा
म	प	निं	सां	रें	सां	रें	नि	सां	निंप
ग	ग	न	—	ग	यो	—	ज	—	ब—
नि	—	प	म	रे	मप	नि	प	नि	सां
सुं	—	द	र	च	र—	न	—,	ब	लि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		०		२		३		४	
नि	नि	प	—	नि	प	प	म	प	फ
ब	न्यो	हे	—	भे	—	द	अ	—	लि
म	प	नि	नि	सां	—	सां	नि	प	फ
उ	त	तें	गं	गा	—	की	धा	—	र
म	प	नि	प	नि	प	म	रे	—	सा
ध	सी	—	—	ध	र	नी	प	—	र
नि़	सा	रे	म	प	म	रे	रे	सा	—
उ	—	ज्ज्व	—	ल	—	ब	र	न	—

"आभोग" अन्तरानुसार।

राग सारंग–ताल धमार

श्रीलक्ष्मनगृह महामंगल भयो, प्रगटे श्रीवल्लभ पूरनकाम ।
माधव मास कृष्ण पक्ष सुभ लग्न, उदित एकादसी दूसरो जाम ॥१॥
मंगल कलस चोक मोतिनके, विविध विचित्र चित्र बने धाम ।
गावति मंगल गीत मानीनि, नखसिख सुभग कामसी वाम ॥२॥
मिट्यौ तिमिर दुखद्वंद जगतको भोर भयो मानो मिट गइ यामा ।
मानिकचंदप्रभु सदा बिराजो ओइ बसो श्रीगोकुलगाम ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
नि	—	—	सां	—	सां	सां	नि	सां	—	नि	—	प	—
श्री	—	—	ल	—	क्ष्म	—	न	—	—	गृ	—	ह	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	नि	प	म	प	नि	—	सां	नि	—	सां	—	सां	—
म	हा	—	मं	—	—	—	ग	ल	—	भ	—	यो	—
रें	रें	—	रें	—	सां	—	सां	—	—	नि	—	प	—
प्र	ग	—	टे	—	श्री	—	व	—	—	ल्ल	—	भ	—
नि	—	—	प	म	प	म	रे	म	—	प	नि	म	प
पू	—	—	र	—	न	—	का	—	—	म	—	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
रें	—	—	रें	—	रें	—	रें	नि	—	सां	—	सां	—
मा	—	—	ध	—	व	—	मा	—	—	स	—	कृ	—
रें	मं	—	रें	—	सां	—	रें	नि	—	सां	—	सां	—
ष्ण	—	—	प	—	क्ष	—	सु	भ	—	ल	—	ग्न	—
नि	नि	—	सां	—	सां	रें	नि	सां	—	नि	—	प	—
उ	दि	—	त	—	—	—	ए	का	—	द	—	सी	—
नि	—	—	प	—	म	प	नि	—	—	नि	प	म	प
दू	—	—	स	—	रो	—	जा	—	—	म	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
नि	—	—	नि	—	नि	—	सां	सां	—	सां	—	सां	रें
मं	—	—	ग	—	ल	—	क	ल	—	स	—	चो	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	सां	—	नि	—	म	प	नि	नि	—	सां	—	—	—
क	—	—	मो	—	—	—	ति	न	—	के	—	—	—
रें	रें	—	सां	—	नि	सां	नि	—	—	प	—	—	—
वि	वि	—	ध	—	वि	चि	—	—	—	त्र	—	—	—
प	नि	—	प	—	प	म	रे	म	—	प	—	—	—
चि	त्र	—	त्र	—	ने	—	धा	—	—	म	—	—	—

"आभोग" अन्तराऽनुसार ।

(सारंग राग के अन्य पदोंकी स्वरलिपि के लिए "संगीतसुबोधिनी" एवं "संगीतकीर्तनपद्धति" ग्रन्थ को देखिये)

चलती

निनि	—नि	सांसां	सांसां	नि—	मप	निनि	सा—
मिटयो	—ति	मिर	दुख	द्वं—	दज	गत	को—
रें—	रेंरें	सां—	निप	निनि	पम	रे—	सां—
भो—	रभ	यो—	मानो	मिट	गइ	या—	म—
मं—	मंमं	रेंरें	सांसां	रेंरें	—सां	रेंनि	सां—
मा—	निक	चंद	प्रभु	सदा	—बि	रा—	जो—
नि—	निनि	सां—	निप	नि—	मप	नि—	सां—
आ—	इब	सो—	श्री—	गो—	कुल	गा—	म—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग मधमाध सारंग

'मधमाध–सारंग' के अन्य नाम मधमाद, मध्यमादि, मधु–माधवी, मध्यमावती भी प्राप्त होते हैं। यह प्राचीन राग है। 'संगीतरत्नाकर' जैसे प्राचीन ग्रन्थ में पं. शार्ंगदेव ने इस राम की व्याख्या में 'मध्यमादिर्म-ग्रहांशा × ×' इत्यादि उल्लेख किया है।

'मध्यमादि' का स्वरूप–ध्यान 'दर्पणकार' ने इस प्रकार कहा है।

"पत्या सहासं परिरभ्य कामं सचुम्बितास्या कमलायताक्षी।
स्वर्णच्छविः कुंकमलिकुंप्तदेहा सा मध्यमादिः कथिता मुनीन्द्रैः ॥

'रागतरंगिणी' ग्रन्थ में कहा हैं कि :—

"बागीश्वरीकानरयोर्योगात् स्याद् मधुमाधवी ॥"

किन्तु मधुमाधवी का थाट या लक्षण का कोई उल्लेख किया नहीं है। 'हृदयकौतुक' ग्रन्थ में 'मेघ' राग का थाट कहा है, तदनुसार इस राग के 'सा रे ग म प नि॒ नि सां' स्वर अर्थात् खमाज थाट होता है।

'पं. व्यंकटमखी' ने मध्यमावती का श्री—मेल में समावेश किया है, किन्तु इस राग का वर्णन किया नहीं है। 'संगीतसारामृत' ग्रन्थ में भी श्री मेल (अपना काफी मेल) कहा गया है।

यह मध्यमादि राग श्री(काफी)मेल से उत्पन्न होता है। गान्धार तथा धैवत स्वर वर्ज्य हैं, जाति औडुव है, जो सायंकाल के समय गाया जाता है।

'सारामृत' के आधार पर ही 'रागलक्षण'कारने स्पष्ट कहा है :—

"अधिकारी खरहरप्रियमेलात् सुनामकः।
आरोहेऽप्यवरोहे च गधवर्जं तथौडुवम् ॥
सा रे म प नि॒ सां। सां नि॒ प म रे सा" [पृष्ठ २८]

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

'पं. अहोवल' ने 'मध्यमादि' का वर्णन निम्न मतलब किया है।

'मध्यमादि' राग में गांधार और धैवत दोनों स्वर वर्ज्य होते हैं, । जाति औडुव है । मध्यम स्वर ग्रह है तथा मध्यग आदि में भी है, अतएव इसका नाम 'मध्यमादि' है । इसमें (भरतादि) मुनीश्वरों ने ऋषभ मध्यम निषाद को अंश स्वर बताया है । उदाहरण :—

म प नि सां, रें मं रें सां, नि सां निप, मप, निप, मपमरे, सा । नि नि प नि सा, मरे, सा, निसा।

[सं. पारिजात, श्लोक–३८०]

पं. 'श्रीनिवास' नें भी 'रागतत्त्वाविबोध' में इसका ही समर्थन किया है :

राजासाहब टागोर कहते हैं कि : "मतांतर की दृष्टि से इस राग को षाड़व जाति का भी माना जाता है । पं. भावभट्ट के मत से तो यह राग औड़व ही है, परंतु प्रचार में षाड़व–रूप का गायन भी दिखाई देता है।" इस मत के सम्बन्ध में पं. भातखण्डे लिखते हैं कि "बंगाल में राग का षाडव प्रकार कदाचित् प्रचार में होना संभवित हैं, किन्तु विवादी स्वर के नाते से रागरक्तिवर्धन के लिये अवरोह में धैवत का प्रयोग व्यवहार में होता होगा । राजासाहेब टागोर ने इस राग का विस्तार निम्न प्रकार किया है ।

निसा, रेम, पनिनि, प, निनिसां, सांनिमप, निसां निप, मपधपमरे, सारे निसां रेप, मरेसा ।"[1]

१ विशेष माहिति के लिए देखिये :– हि. सं. पद्धति–भाग ४]

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पं. आदितरामजी ने भी 'मधुमाध' रागिनी के वर्णन में कहा है कि :

"निषाद कोमल और बाकीके सब सारंगके सुर हैं. निषाद पर न्यास है. औड़ुव जाति है. निषाद व मध्यम प्रधान सुर हैं। गांधार धैवत वर्ज है, 'मधुमाध' का रूप और वृन्दावनी सारंग का रूप है। ग्रीष्म में वीर व सिंगार से दुपहर को गाई जाय।"

[संगीतादित्य, पृष्ठ ८८ + ९४]

हवेली–संगीत के कुछ कीर्तनसंग्रहों में मधमाध सारंग का उल्लेख दृष्टिपथ होता है, इतना ही नहीं, सारंग राग के अन्तर्गत लिखे हुए कतिपय कीर्तनों की बंदिशों के आधार से भी कहा जा सकता है कि यह राग अष्टछाप–घराने का परम्परागत राग है।

हमारे मतानुसार प्राचीन परम्परा में अवरोह धैवत स्वर के प्रयोग वाले जो पद सारंग राग के शीर्षक में समाविष्ट किये गये हैं वहाँ अधिकतर होली धमार के पदो में दिखाई देते हैं। उनको मधमाद सारंग कहने का रिवाज सम्भवित था अतः बृन्दावनी सारंग के अवरोह में धैवत का प्रयोग कहने से मधमाद सारंग भिन्न हो जाता है वही अष्टछापीय परम्परा का मधमाध सारंग होना सुमुचित है। किन्तु यहाँ व्यवहार में गाये जाने वाला मधमाद सारंग का उदाहरण दिया गया हैं।

सारंग राग का गानसमय सामान्यतः मध्याहन का सर्वसंमत है, जो दिन के तृतीय प्रहर के आरम्भ का समय माना जाता है। परन्तु ग्रीष्म ऋतु मे हवेली–संगीत के नियमानुसार तृतीय प्रहर तक सारंग राग के कुछ प्रकारों का गान किया जाता है। जिस प्रकार "भैरव" राग का ठीक गान-समय अरुणोदय है, किन्तु भैरव एवं इनके अन्य प्रकारों का गानसमय दिन का प्रथम प्रहर माना जाता है उसी प्रकार सारंग राग का समय सभी ऋतुओंमें 'मध्याह्न' ठीक ही है, किन्तु ग्रीष्म ऋतु में उनकी समय मर्यादा तृतीय प्रहर के अन्त तक मानी जायगी। अनएव मधमाध–सारंग को सम्प्रदाय में सायं–सेवा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रणाली के आरम्भ के उत्थापन तथा भोग के दर्शन में अधिकतर गाने की प्रथा सशास्त्रीय कही जायगी।

'संगीतसारामृत' ग्रन्थ में तो 'मधमाध' का समय सायंकाल का कहा है[1] परन्तु उसका अर्थ हमारी दृष्टि से सायंकाल दिन के चतुर्थ प्रहर के अन्त का भाग होने से चतुर्थ प्रहर का समय समझा जाय तो इस राग का समय तृतीय प्रहर के अन्त एवं चतुर्थ प्रहर के आरम्भ-समय तक की मर्यादा ग्रीष्मऋतु के लिए सुसंगत कहना अनुचित नहीं है।

'मध्यमादि-सारंग' की संक्षिप्त माहिती :

१. थाट—काफी से उत्पन्न होने वाला सारंगप्रकार है।

२. गान्धार—धैवत स्वर वर्ज्य है।

३. जाति—औडव—औडव है।

४. वादी—ऋषभ और संवादी पंचम है।

५. गान-समय दुपहर का माना जाता है।

६. पूर्वांग में 'प री' और उत्तरांग में 'नि प' संगति रागबोधक है।

७. आरोहावरोहस्वरूप :— निसा, रे, मप, निसां। सां, नि पमरे, सा

८. पकड़ स्वर :— निप, मपरे, सा, निसा, रे, मप।

९, स्वरविस्तार :—

(अ) निसा, रे, मरे, पमरे, निसारेम, पनिपमरे, सा।

(ब) निसारे, पमरे, नि नि प, मप, रे परे, निसा।

(क) सा, निसा, पनि, प नि सा, निसारे, स, प, रे, निसा।

---

१. गधलोपादौडुबोऽयं सायंकाले। [पृष्ठ १२]

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(ड) मप, नि निप, निमप, सां, निप, मप, निपमरे, निसारे,

मपनिनिपमरे, पमरे, परे, मरे, सा ।

(ढ) मपनि, सां, निसां, निसांरें, मंरें, पंरें, सां, निप, मरे परे, सा ॥

[उदाहरण–१ जमुनातट खसखाने की रावटी का निम्न पद जो राजभोग अथवा भोगसमय के दर्शन में गाया जाता है]

स्थायी– जमुनातट नवनिकुंज द्रुमदल नव पोहोपपुंज,
तहाँ रची नागरवर रावटी उसीरकी ।
अन्तरा– कुंकुम घनसार घोर पंकजदल बोर बोर,
चरचित चहुँ ओर अवनी पंकज पाटीरकी ॥१॥
संचारी– सोभित तन गौर स्याम, सुखद सहज कुंज धाम,
परसत सीतल सुगंध, मंद गति समीरकी ।
आभोग– 'नंददास' पिय प्यारी निरखि सखी ललिता ओर,
स्रवनन धुनि सुनि किंकिनी मंजीरकी ॥२॥

उपर्युक्त पद की स्वरलिपि

राग–मधमाध सारंग

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प नि	नि	प	–	म	प	नि	प	प	म	रे	सा
ज	मु	ना	–	त	ट	न	व	नि	कुं	–	ज
नि	सा	रे	रे	म	प	नि	प	म	रे	–	सा
द्रु	म	द	ल	न	व	पो	हो	प	पुं	–	ज

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

					म				प		
नि	प	निसा	रे	रे	म	प	प	प	नि	—	प
त	हाँ	——	र	ची	—	ना	ग	र	व	—	र
सां	—	सां	नि	—	प	प	म	रे	म	प	मप
श	—	ब	टी	—	उ	सी	—	र	की	—	——

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	प	प	नि	प	सां	—	सां	सां	—	सां
कुं	—	कु	म	घ	न	सा	—	र	घो	—	र
सां/नि	सां	रें	रें	सां	सां	रें	सां	सां	नि	—	प
पं	—	क	ज	द	ल	बो	—	र	बो	—	र
म	प	नि	सां	रें	रें	रें/मं	रें	रें	सां	नि	प
च	र	चि	त	च	हुँ	ओ	—	र	अ	व	नी
सां	—	नि	प	—	प	नि	प	म	रे	म	प
पं	—	क	ज	—	पा	टी	—	र	की	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	—	म :	प	प	प	नि	—	प	प	—	प
सो	—	भि	त	त	न	गौ	—	र	स्या	—	म
प रे	रे	म	प	नि	प	रे	—	रे	सा	—	सा
सु	ख	द	स	ह	ज	कुं	—	ज	धा	—	म
नि	प	सांनि	रे	—	प	रे	म	प	निध	नि	प
प	र	स	त	—	सी	त	ल	सु	गं—	—	ध
म	रे	रे	प	म	नि	प	—	रे	सा	—	—
मं	—	द	ग	ति	स	मी	—	र	की	—	—

'आभोग' अन्तरानुसार ।

राग मधमाध सारंग—ताल चर्चरी (झपतालअंग)

[निम्न पद का प्रायः भोग के दर्शन में गान किया जाता है]

एसी घूपन में कहाँ चली कामिनी,
कमलसी कुमलानी चरन लुभानी ।
हौं तो आई फूल बिनन, सखियनकी सुध लेन,
हौं जु भई प्यासी, नेक प्याओ पानी ॥१॥
पानी तोकों प्याय देहों, सखिकों मिलाय देहों,
आछे नेक बेठो कदंब छैया सुखदानी ।
'सूरदास मदनमोहन' आये अचानक,
रीझ-रीझ रहे दोऊ कंठ लपटानी ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		२			०		३		
(प)नि	(प)नि	प	म	प	(म)रे	रे	सा	—	रे
झू	—	सी	—	धू	प	न	में	—	क
(सा)नि	सा	(म)रे	रे	प	रे	—	रे	सा	—
हाँ	—	च	ली	—	का	—	मि	नी	—
नि	सा	रे	म	—	प	प	नि	—	प
क	म	ल	सी	—	कु	म	ला	—	नी
सां	सां	रें	—	सां	(प)नि	(प)नि	पम	रे	मप
च	र	न	—	लु	भा	—	नी—	—	—

अन्तरा

×		२			०		३		
म	म	प	निप	नि	सां	सां	सां	सां	सां
हों	तो	आ	—	ई	फू	ल	बि	न	न
नि	सां	रें	मं	रें	सां	सां	(प)नि	—	प
स	खि	य	न	की	सु	ध	ले	—	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	प	रें	रें	रें	सां	—	सां	नि	प
हों	—	जु	—	भ	ई	—	प्या	—	सी
म	प	सां	—	सां	^प^नि	^प^नि	पम	रे	मप
ने	क	प्या	—	ओ	पा	—	नी	—	—

संचारी

×		२			०		३		
म	रे	म	प	प	^प^नि	प	प	—	प
पा	नी	तो	—	कों	प्या	य	दे	—	हों
म	प	रे	—	म	रे	रे	सा	—	सा
स	खि	कों	—	मि	ला	य	दे	—	हां
नि	सा	रे	रे	सा	नि	प	सा	रे	सा
आ	छे	ने	क	बे	ठो	—	क	दं	ब
म	प	नि	प	प	रे	—	सा	—	—
छै	—	यां	सु	ख	दा	—	नी	—	—

'आभोग' अन्तरानुसार।

राग मधमाध सारंग—ताल चौताल

सूर आयो सिर पर छाया आई पायन तर
पंछी सब झूक रहे देख छांह गहिरी ।
धंधीजन धंध छांड रहरी धूपके लिये,
पशुपंछी जीवजंतु चीरियां चूप रहिरी ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

व्रज के सुकुमार लोग देदे किंवार सोये,
उपवन की व्यार तामें पोढे पिय हे प्यारी।
सूर अलबेली चलि काहे कों डरात हे
माहकी मधरात जेसे जेठकी दुपहरी ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	नि	प	म	प	प	रे	रे	—	सा	—	सा
सू	—	र	आ	—	यो	सि	र	—	प	—	र
नि	सा	सा	रे	—	प	प	म	रे	रे	सा	सा
छा	—	या	आ	—	ई	पा	य	न	त	—	र
सा	—	रे	म	प	प	नि	प	म	रे	म	प
पं	—	छी	—	स	ब	झू	क	—	र	—	हे
सां	रें	सां	नि	—	प	नि	प	म	रे	म	प
दे	—	ख	छाँ	—	ह	ग	हि	—	री	—	—

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	म	प	नि	प	नि	सां	सां	सां	—	सां
धं	—	धी	ज	—	न	धं	—	ध	छां	—	ड
नि	सां	—	रें	मं	रें	सां	सां	सां	नि	—	प
र	हि	—	री	—	धू	प	न	के	लि	—	ये

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	प	—	नि	—	प	रे	—	रे	म	प	प
प	शु	—	पं	—	छी	जी	—	व	जं	—	तु
रें	रें	सां	नि	प	प	नि	प	म	रे	म	प
ची	रि	यां	—	चू	प	र	हि	—	री	—	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	प	—	म	प	रे	—	रे	म	रे	सा
व्र	ज	के	—	सु	कु	मा	—	र	लो	—	ग
										सा	सा
रे	—	सा	नि	सा	रे	म	रे	सा	नि	—	प
दे	—	—	दे	—	किं	बा	—	र	सो	—	ये
सा	सा	रे	रे	प	प	रे	—	रे	म	प	प
उ	प	ब	न	की	—	ब्या	—	र	ता	—	में
नि	—	प	म	प	प	रे	—	—	सा	—	सा
पो	—	ढे	पि	—	य	हे	—	—	प्या	—	री

"आभोग" अन्तरानुसार।

राग मधमाध सारंग—ताल चौताल

अपने अपने घरके किंवार देके,

सोय रहे एसे समें आली क्यों न रहिरी ॥

सूर आयो सिर पर छाया आई पायन तर

बाटके बटाउ घूप देखिके झूकेरी ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प	म	रे	सा	रे	सा	नि	सा	—	सा	—	सा
अ	प	ने	अ	प	ने	ध	र	—	के	—	कि
सा	—	सा	रे	—	रे	व	—	म	प	म	सा
वा	—	र	दे	—	के	सो	—	य	र	—	हे
रे	—	सा	नि	सा	रे	म	रे	म	प	—	नि
ए	—	—	से	—	स	में	—	—	आ	—	ली
सां	—	—	नि	—	प	प	म	रे	म	प	नि
क्यों	—	—	न	—	र	हि	—	—	री	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	म	म	—	म	प	—	नि	सां	—	सां
छू	—	र	आ	—	यो	सि	—	र	प	—	र
सां	सां	—	रें	—	रेंमं	रें	सां	सां	सां	नि	प
छा	या	—	आ	—	ई—	पा	य	न	त	—	र
म	—	म	रे	म	म	म	प	प	नि	म	प
वा	—	ट	के	—	ब	टा	—	उ	धू	—	प
सां	—	सां	नि	—	प	प	म	रे	म	प	नि
दे	—	खि	कें	—	झू	के	—	—	री	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग सामंत सारंग

इस राग को कोई सामन्त, सामत, सावन्त तथा सावंत सारंग भी कहते हैं। ग्रन्थों में अधिकतर 'सांमंत' नाम से उल्लेख प्राप्त होते हैं। 'संगीतरत्नाकर' में इस राग का उल्लेख नहीं हे, किन्तु तत्पश्चात् के उत्तरीय एवं दाक्षिणात्य ग्रन्थों में इस राग के विधान दृष्टिगत होते हैं। उत्तरीय पद्धति में प्रथम पं. लोचन के 'रागतरंगिणी' ग्रन्थ में इस राग का उल्लेख प्राप्त होता है। उन्होंने वृन्दावनी, बडहंस और सामंत को सारंग के ही प्रकार माने हैं।

पं. लोंचन के सारंग संस्थान(मेंल) के स्वर अपनी आधुनिक पद्धति में "सा रे म मं प नि नि सां" इस प्रकार होते हैं।

पं. हृदयनारायण देव नें सामंत को औडुव जाति का सारंग मेल का राग कहा है। ३

'रागतरंगिणी' में वताये हुए सारंग संस्थान के गान्धार व धैवत यानि अपने शुद्ध मध्यम और कोमल निषाद स्वर 'हृदयकौतुक' और 'हृदयप्रकाश' ग्रन्थ में वर्जित किये हुए हैं। अतः उनके मतानुसार "सा रे मं प नि" स्वर होते हैं। ४ किन्तु इन स्वरों में 'नूर-सारंग' जैसा कुछ रूप प्रगट होता है।

---

१. सारंगस्वरसंस्थाने प्रथमा परमंजरी।
वृन्दावनी तथा ज्ञेया सामन्तो बडहंसकः॥

२. एवं सति च गान्धारः शुद्धमध्यमतां व्रजेत्।
धश्चशुद्धनिषादः स्यात् सारंगो जायते तदा॥

३. सामन्तो हि तदौडुवः।

४. हिं०सं० प० भा० ४ [मराठी-पृ. ४३३]

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उपर्युक्त स्वरो मे से 'इमन' के म नि स्वर हटा कर उन्होंने सामन्त का निम्न प्रकार कहा हैं ।

"मनित्यागादौडुवेषु सामन्तः सादिरिष्यते ।

सारेगपधसां धपगरिसा"

अर्थात् आधुनिक सा री म प नि सां । सारंग राग के ही स्वर बताये गये हैं । ५

पं. अहोबला नें सामन्त का रुप इस प्रकार कहा है : १

रिस्तु तीव्रतरः प्रोक्तस्तीव्रगान्धारशोभिते ।

सामन्तसंज्ञके रागे न्यासोद्ग्रहांशषड्जके ॥४५१॥

अर्थात् सामन्त नामक राग में तीव्रतर ऋषभ कहा है और तीव्र-गान्धार द्वारा यह शोभित होता है (एक ही स्वर के दोनों नाम) तथा ग्रह न्यास अंश तीनों षड्ज पर ही (संवादी पंचम) हैं । इति सामन्तः । तृतीयप्रहरोत्तरम् ।

अहोबल के स्वर "सा ग ग म प ध नि सां । होते हैं अहोबल में सामन्त स्वतन्त्र रूप में माना है । हृदय पंडित ने भी मात्र "सामन्त" संज्ञा दी है, परन्तु उन्होंने सारंग मेल कहकर सारंग प्रकारजन्य माना है । आज समाज में भी सामन्त-सारंग' नाम सर्वत्र प्रसिद्ध है । पं. श्रीनिवास नें भी अहोबल के अनुसार ही सामन्त का विधान क्या हैं ।

सामन्त के स्वरूप के उपर्युक्त ग्रन्थोक्त विधानों में एकवाक्यता दिखाई नहीं देती ।

पं. भातखंन्डेजी नें इस राग के विषय में संख्यावधि ग्रन्थमतो का विवेचन किया हैं, तथापि प्रचार के स्वरूप को पूर्वोक्त किसी भी

---

५. " " [मराठी—पृ. ४३४]

१, संगीत पारिजात (हिंदी हाथरस—प्रकाशन—पृ. १७९)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग्रन्थ का समर्थन प्राप्त न होने पर 'लक्ष्यसंगीत' के आधार पर निम्न प्रकार अपना मत प्रदर्शित किया है ।२

सामंत सारंग में मल्लाइ व सारंग ये दोनों रागों का मिश्रण है । इस राग में निदान गांधार स्वर का अभाव है किन्तु धैवत संबंधी मतभेद हैं । किन्तु मैंने जो प्रकार सीखा है उसमें धैवत अवश्य है । जो अवरोह में 'निधप' इस प्रकार लेने का गुरुनें कहा हैं । कोई–कोई गायकों के गायन में धैवत का 'धनिप' इस प्रकार प्रयोग भी करते हैं ।

अवरोह में एवं उत्तरांग में धैवत दुर्बल होते हुए भी इनके संयोग से राग–भिन्नता के साथ सारंग की छाया नष्ट होनी न चाहिए, इस प्रकार धैवत का प्रयोग होना चाहिए ।"

उपर्युक्त चर्चा के सारांश में यह कहा जा सकता है कि वैष्णव मन्दिरों की अपेक्षा राज्याश्रित गायक–वादकों में इस राग का प्रचार बहुत कम होगा । अप्रचलित रागों में इस राग की गणना होती रही है । पं. भातखण्डेजी नें भी अपने गुरु से सीखी हुई चीज के आधार पर इस राग का रूप प्रगट किया है । उनकी क्रमिक ७ वीं पुस्तक में सामन्त सारंग की केवल एक ही चीज दी गई है अतः इस राग का समाज में प्रचार और प्रसार मर्यादित रूप में दिखाई देता है ।

परन्तु पुष्टि. वैष्णव–मन्दिरों में इस राग की परम्परा अष्टछाप के समय से चालू रही हैं । इस राग के पद प्रायः अष्टछाप के गायकों में से सूर गोविन्दस्वामी कृष्णदास और छीतस्वामी के प्राप्त होते हैं । जो अष्टछापकी स्थापना के बाद उन्हों ने अपने उत्तर जीवन में श्रीजी को यह राग निवेदित किया हुआ माना जायगा । पश्चात् तानसेन चतुरबिहारी और व्रजपतिजी आदि महानुभावों ने इस राग में अनेक पद गाये

२. हिं. सं. प. भा–४ मराठी पृष्ठ–४४३,४४४

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हुए दिखाई देते हैं, जो आज पर्यंत वसंत और ग्रीष्म ऋतु में मंदिरों (हवेलीओं) में गाने की प्रथा चालु है। होरी-खेल के दिनों में इस राग की बहुत कुछ धमारें गाई जाती हैं। जिनसें संगीताचार्य गोविन्दस्वामी के "प्यारी तें मोहन को मन हर्यो। तथा छीतस्वामी की 'सुरंगी होरी खेलें सांवरो' यह धमार सुप्रसिद्ध हैं।

वसंत ऋतु के अतिरिक्त ग्रीष्म ऋतु में गाये जाने वाले खसखाने के तथा दुपहरी के पदों में यह राग के पद प्राप्त होते है इन पदों में से उदाहरण के लिये[1] 'अनत न जैये अहोपिय' यह कीर्तन की स्वर-लिपि विवरण सहित यहां दे जा रही है।

यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता हैं। वादी स्वर ऋषभ और संबादी पंचम है। गांधार स्वर वर्ज्य है। केवल अवरोह में मध्यम से ऋषभ की मींड में इनका आभास होता हैं। सोरठ और सारंग का मिलाप से यह राग में दिखाई देता है। धैवत-स्वर का अवरोह में नि ध प, ध नि प, इस प्रकार प्रयोग किया जाता हैं।

आरोहावरोह :—सा, रे, मप, निसां। रेंसां निप, मप नि धप, मरे, सा।

स्वविस्तार :—(१) सा, ऩिसा, रेमप, निधप मप, निप, मनिधप, मरे, पमरे, रेसा।

(२) सा, रेमप, धप, निधप, मनिधप, मरे, सा, निपधप, मरे, पमरे, सा.

---

१. इस पद को आजकल कोई गौड-सारंग में गाते हैं, किन्तु गौड-सारंग के पद-रचना में 'धन', 'दामिनि' या 'मेह' शब्द प्रयोग अनिवार्य और आवश्यक रूप में माना जाता है। अतः यह सामंत सारंग का ही पद हैं देखिए संगीत कीर्तन मंजरी पृ. ८२

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(३) सारे, मपनिसां, रेंसां, निधप, मपधपमरे, निधपमरे, धपमरे, पमरे, मरे, रेसा.

(४) मप, नि, सां निसां, रें रें, सां, निप, मपनिधम, मप, मरे, मपमरे, सा ।

खसखाने का पद.

अनत न जैये अहो पिय, रहिए मेरेही महल ।
जोई जोई कहोगे, सोई सोई करुंगी टहल ॥१॥
सख्या सामग्री बसन आभूषण, सबबिधि कर रारवोंगी पहल ।
चतुर विहारी गिरिधारी पियाकी, रावरी यही सहल ॥२॥

राग—सामंत—सारंग ताल—आडाचौताला मात्रा—१४

										प	म	रे	नि	सा
										अ	न	त	—	न
×		२		०		३		०		४		०		
म	—	रे	—	सा	—	म	—	रे	—	प	—	प	—	
जै	—	ये	—	—	—	अ	—	हो	—	पि	—	य	—	
म	नि	ध	—	प	—	म	—	प	—	नि	—	सां	—	
र	हि	ये	—	—	—	मे	—	रे	—	ही	—	म	—	
नि	सां	रें	नि	ध	प	म	रे	—	धनि	प	म	रे	सा	
ह	—	—	—	ल	—	—	—	—	अ—	न	त	—	न	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×		२		०		३		०		४		०			
म	—	प	—	म	प	नि	—	—	—	सां	—	सां	निसां		
जो	—	ई	—	—	—	जो	—	—	—	ई	—	क	—		
रें	—	नि	—	सां	—	नि	सां	रें	—	मं	—	रें	—		
हो	—	गे	—	—	—	सो	—	ई	—	सो	—	ई	—		
रें	—	सां	—	—	—	नि	—	ध	—	म	प	नि	सां		
क	—	रू	—	—	—	गी	—	—	—	—	—	ट	—		
रें	सां	रें	नि	ध	प	म	रें	—	धनि	प	म	रे	सा		
ह	—	—	—	ल	—	—	—	—	अ—	न	त	—	न		

संचारी

×		२		०		३		०		४		०			
म	—	म	—	म	—	प	—	—	—	नि	—	म	प		
स	—	ख्या	—	सा	—	म	—	—	—	ग्री	—	—	—		
म	प	नि	—	नि	—	सां	—	सां	—	सां	नि	म	प		
व	स	न	—	आ	—	भू	—	ख	—	न	—	स	ब		
ध	—	ध	—	नि	—	प	—	प	—	म	—	रे	—		
वि	—	धि	—	क	—	र	—	रा	—	खों	—	गी	—		
रे म	—	म	—	—	—	रे	—	—	—	सा	—	—	—		
प	—	ह	—	—	—	—	—	—	—	ल	—	—	—		

आभोग

×		२		०		३		०		४		०	
म	प	नि	–	–	नि	सां	–	सां	–	रें	–	रें	–
च	तु	र	–	वि	–	हा	–	री	–	गि	–	रि	–
नि	सां	रें	–	मं	–	रें	–	सां	–	रें	नि	सां	–
धा	–	री	–	पि	–	या	–	–	–	जु	–	का	–
नि	–	ध	नि	ध	प	म	–	प	–	नि	–	सां	–
रा	–	व	–	री	–	य	–	ही	–	–	–	स	–
रें	सां	रें	नि	ध	प	म	रे	–	धनि	प	म	रे	सा
ह	–	–	–	ल	–	–	–	–	अ–	न	त	–	न

राग गौड–सारंग

ग्रन्थों में इस राग का शंकराभरण थाट में समावेश किया हुआ दिखाई देता हैं। इस राग के उत्तरांग में कुछ बिलावल की छाया होने की शक्यता से यह मान्यता को विसंगत कहना ठीक नहीं है। शंकराभरण यानि बिलावल थाट से उत्पन्न होने वाले रागों का गान–समय दिन का प्रथम प्रहर ही उचित और शास्त्रोक्त है, तथापि गौड–सारंग गाने का समय मध्याह्न ही माना गया है। यह कृत्य केवल अपवाद ही कहा जायेगा।

इस रागमें निषाद स्वर का गौणत्व है, तथापि कुछ पंडित लोग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(निषाद वर्जित) षाडव जाति भी मानते हैं । पुष्टिसम्प्रदाय के पं. आदित्यरामजी ने गौडसारंग के विवेचन में षाडव-भेद बताया है तदुपरान्त निषाद मिलाकर संपूर्ण जाति के प्रचार की मान्यता का स्वीकार भी किया है । * शास्त्र में इस राग को सम्पूर्ण कहा है× तथा मेघ- मल्हार और गौड-सारंग की उत्पत्ति का थाट एक ही माना गया है। + पुष्टिसम्प्रदाय की सेवाप्रणाली में 'गौड-सारंग' राग के पदों को ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा से (राजभोग के समय) रथयात्रा (आषाढ शुक्ल २) तक ही गाने की प्रथा आज भी प्रचलित हैं । रथयात्रा से वर्षाऋतु का प्रारम्भ माना गया है और उसी रोज से मल्हार और मल्हार के प्रकारों में पदगान किये जाते हैं । अतः अष्टछाप-घराने के मतानुसार 'गौड-सारंग' राग को वर्षाऋतु के आगमन का संधि-वाचक राग कहा जायगा ।

---

* संगीतसाहित्य. पृष्ठ ८८ इस प्रकार उल्लेख प्राप्त होता है । षाडव भेद है । निषाद नाद है । शुद्ध म व तीव्र म ऐसे दो म कहे हैं । शुद्ध मध्यम पें ठहरना और मूर्छना लगाना वो दुरस्त है. और दूसरे सव शुद्ध स्वर है । गांधारसे मध्यम पहुंच कर पंचम तक मींड की राह से जाना वो खूबी देता है । निषाद मिला के संपूरन भी मानते हैं ।

× 'मादिर्गवांशः संपूर्णः गौडसारंग उच्यते । भावार्थ-गौड-सारंग सम्पूर्ण है और गान्धार अथवा प अंश है' । [हृदय-प्रकाश]

\+ मेघरागस्य संस्थाने मेघो मल्लार एव च ।
गौडसारंगनाटौच रागो बेलावली तथा ॥

[रागतरंगिणी]

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस राग में किंचित् कल्याण का स्वरूप दिखाई देता है तथापि तीव्र मध्यम पर राग का कोई अपलम्वन नहीं है, किन्तु पं. भारतखण्डेजी नें मध्यम वाले हमीर और केदार राग के माफिक इस राग का भी कल्याण थाट में समावेश किया है।

इस राग में दो मध्यम का प्रयोग होता है, तीव मध्यम केवल पंचम की संगति से ही लिया जाता हैं। यदि तीव्र मध्यम वर्ज्य किया जाय तो भी इस राग का स्वरूप पहिचानने में कोई बाधा नहीं होती, परन्तु मपधमप, मग, रेगरेमग, प, रेसा। इस प्रकार तीव मध्यम का प्रयोग करने से राग का वैचित्र्य बढता है।

गौड-सारंग का संक्षिप्त विवरण

१. यह राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है।

२. स्वर-दोनों मध्यम वादी के सब शुद्ध स्वर।

३. जाति-सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

३. वादी-गान्धार, संवादी धैवत स्वर।

५. हमीर और केदार के माफिक गान्धार व निषाद स्वर का वक्रत्व है। चलान भी वक्र है।

६. गा-समय दुपहर का सर्वसम्भत है।

७. तीव मध्यम का प्रयोग आरोह में क्षम्य है।

८. पकड स्वर-सा, गरेमग, परेसा.

९. आरोहावरोह स्वरूप-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा, गरेमग पमंधप निधसां ।

सांधनिप, धमंपग, मरे, प, रेसा.

राग गौड–सारग, ताल–चौताल

भलेई मेरे आये हो पिय, टीक दुपहर की बिरियाँ ।
सुभ दिन सुभ नच्छत्र, सुभ मुहूरत, सुभ पल छिन सुभ घरियाँ ॥१॥

भयो है आनंद फंद मिटयो बिरहदुःखद्वंद, चंदन घसि अंग लेपान, ओर पाँयन परियाँ । 'तानसेन' के प्रभु मया कीनी मो पर, सूकी वेल कीनी हरियाँ ॥२॥

स्थायी

						प	रे	सा	रे	सा	गरे
						भ	ले	ई	मे	–	रे–
×		०		२		०		३		४	
गम	ग	–	गरे	म	ग	प	–	रे	सा	रे	सा
आ	–	–	ये–	–	–	हो	–	–	पि	–	य
सा	–	मग	प	–	प	ध	प	मं	प	धनि	सां
टी	–	––	क	–	दु	प	ह	–	र	की–	–
ध	प	म	गरे	म	ग,	प	रे	सा	रे	सा	गरे
बि	रि	–	यां–	–	–,	भ	ले	ई	मे	–	रे–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	व	—	सां	—	सां	सां	सां	रें	सां	—	सां
सु	भ	—	दि	—	न	सु	भ	न	च्छ	—	त्र
नि											
सां	—	प	सां	—	रें	सां	नि	ध	प	म	ग
सु	—	—	भ	—	सु	हू	—	—	र	—	त
प	—	प	ध	मं	प	सां	रें	सां	ध	धनि	ब
सु	—	भ	प	—	ल	छि	न	—	सु	—	म
ध	प	म	गरे	म	ग	—	प	रे	सारे	सा	गरे
घ	रि	—	यां	—	—	—	भ	ले	ई—	मे	रे—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	ग	रे	म	ग	प	प	—	ध	प	—	प
भ	यो	—	हे	—	आ	नं	—	द	कं	—	द
ग						प					
म	ग	प	पमं	ध	प	सां	प	म	गरे	म	ग
मि	टचो	—	वि—	र	ह	दुः	ख	—	द्वं—	—	द
प	मंप	ध	प	म	ग	म	—	रे	सा	रे	सा
चं	द	न	व	—	सि	अं	—	ग	ले	प	न

सा	–	ग	रे	म	ग	प	रे	–	सा	सा	–
ओ	–	र	पाँ	य	न	–	प	–	रि	याँ	–

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	–	प	सां	–	सां	सां	–	–	रें	सां	–
ता	–	न	से	–	न	के	–	–	प्र	भु	–
सां	प	–	सां	गं	रें	मं	गं	पं	रें	–	सां
तु	म	–	ब	–	हु	ना	–	–	य–	–	क
प	–	–	सां	–	रें	सां	–	–	ध	धनि	प
सू	–	–	की	–	बे	ल	–	–	की	–	नी
ध	प	म	गरे	म	ग,	प	रे	सा	रे	सा	सा
ह	रि	–	याँ	–	–,	भ	ले	ई	मे	–	रे

राग गौड–सारंग–ताल धमार

हों नहिं जान्यो री माई बहु नायक को नेह ।
मास असाढकी घटा घुमड आई, रिमझिम बरखत मेह ॥१॥
काहु त्रियन संग नेह जोरि के, काहुके आवत उठि गेह ।
'धोंधी'के प्रभु रसबस फर लीने, बडभागिन जुवती ऐह ॥२॥

स्थायी

ग			
म	रे	सारे	सा
में	–	न–	हिं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×					२		०			३			
म ग	रे	म	ग	—	प	ध प	रे	—	सा	सा	गरे	म	ग
जा	—	—	न्यो	—	री	—	मा	—	ई	ब	हु—	ना	—
प	प	—	निध	सां	धप	मंप	गम	—	ग,	ग म	रे	सारे	सा
य	क	—	को—	—	ने—	——	——	—	ह,	हों	—	नी—	के

अन्तरा

×					२		०			३			
प	प	सां	सां	—	रें	सां	सां	ध	प	म	गरे	म	ग
मा	स	अ	सा	—	ढ	की	घ	टा	घु	म	ड—	आ	ई
सासा	म	ग	प	पमं	ध	प	गरे	म	ग,	ग म	रे	सारे	सा
रिम	झि	म	ब	र	ख	त	मे—	—	ह,	हों	—	नी—	के

संचारी

×					२		०			३			
म	म	मग	प	प	प	प	ध	प	मंप	मप	मंप	म	ग
का	हु	त्रि—	य	न	सं	ग	ने	ह	जो—	——	रि—	कें	—
ग म	रे	सा	रे	सा	म	ग	प	रे	—	सा	रे	सा	—
का	हु	के	आ	—	व	त	उ	ठि	—	गे	—	ह	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आभोग

×					२		०	गं		३			
प	प	सां	सां	सां	रें	सां	गंरें	मं	रें	सां	धप	म	प
धौं	धी	के	प्र	भु	र	स	बस	क	र,	ली	ने–	ब	ड
धप	म	ग	प	पम	ध	प	रे	–	सा,	ग म	रे	सारे	सा
भा–	गि	न	जु	व–	ती	–	ते	–	ह	हौं	–	न–	हिं

राग नूर-सारंग

भारतीय संगीत के घरानों में इस राग की परम्परा केवल अष्टछाप-(हवेली) संगीत के घराने में ही अविच्छिन्न रूप में दिखाई देती है। जोकि नूर-सारंग में गाये जाने वाले पद सम्प्रदाय के पदों की पुरानी पोथियों में 'सारंग' शीर्षक के अन्तर्गत्त ही पाये जाते हैं। परन्तु नूर-सारंग ही नहीं, सारंग के अन्य परम्परागत सभी प्रकार केवल 'सारंग' शीर्षक में ही प्राप्त होते हैं, तथापि पश्चात् लिखे हुए लगभग से सवासो वर्षों के कुछ संग्रहों में 'मधमाध', 'सावन्त,' गौडसारंग, और 'नूरसारंग' के उल्लेख दृष्टिगत होते हैं। नूर को कोई लहर सारंग भी कहते हैं। नूर-सारंग का स्वरूप समझने के लिये प्रथम प्रचलित 'शुद्ध सारंग' के रूप को देखना आवश्यक है। पं. भातिखण्डेजी ने 'नूर-सारंग' के विषय में किया हुआ उल्लेख और स्वर-स्वरूप के लिये देखिये (हिं. सं. प. पृ. ४०६-८)।

पं. भातखण्डेजी ने अपने समय के मुस्लिम घरानों के गायक लोगों की प्रचारदृष्टि के आधार पर निर्णय किया हुआ मालूम होता है। पं. भातखण्डेजी ने शुद्ध सारंग के सम्बन्ध में जो शास्त्रीय उल्लेख किया है,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उसमें 'सारंग, सारंगताट, सारंगी' नामादि प्राप्त होते हैं । किन्तु ग्रन्थों में, शुद्ध-सारंग' राग नाम दिखाई देता नहीं है । अतः शुद्ध-सारंग नाम एवं उसका स्वरूप तथा 'नूर-सारंग' के स्वरादि का जो विवरण किया है, वह उनके समय के गायकों से सुने हुए और कहे हुए वर्णन पर निर्धारित दिखाई देता है, किन्तु हवेली-संगीत की परम्परानुसार के नूर-सारंग का विचरण निम्न-प्रकार है :—

नूर-सारंग में मन्द्र और मध्य सप्तक का ही विस्तार होता है । कोमल निषाद और कोमल गान्धार का प्रयोग अवरोह में ही होता हैं। तथा शुद्ध गान्धार का प्रयोग अवरोह में मींड के स्वरूप में किया जाता है। आरोह में क्वचित् तीव्र मध्यम का विवादी के नाम से प्रयोग किया जा सकता हैं । इस प्रकार हमारे नूर-सारंग का स्वरूप आधुनिक अन्य गायकों की मान्यता से स्वतन्त्र है, यही नहीं, एक महत्त्व की विशिष्टता यह है कि यह राग 'मध्यम-ग्राम' से भी गाया जाता है ।

थाट काफी वारी–रे संवादी–पंचम रूप

आरोह—ऩिसा, रे, मप, निप, निसां ।

अवरोह—सां, निप, मगरे, गरे, ऩिसारे ।

---

१. मध्यम स्वर को षड्ज मानने पर सात स्वर क्रमानुसार ४–७–११ १३–१७–२० और २२ श्रुति पर स्थित होंगे । इस प्रकार रे और ग में चार श्रुति का अन्तर है, जो तीव्र गान्धार का तथा ध और नि में दो श्रुति का है जो कोमल निषाद का सूचक है । अतः प्राचीन मध्यम ग्राम लगभग खमाज थाट के समान माना जायगा । इस राग में भी कोमल निषाद और तीव गान्धार का उपयोग किया जाता है । अतः उठाव की दृष्टि से 'मध्यम ग्राम' समुचित कहा जायगा । अधिक विवरण 'ग्राम' की चर्चा में देखिए ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पकड-स्वरुव—

सा, रेसा, ऩिप़, म़प़, ऩिसा, रे, ग॒रे, मगरे, सारे, ऩिसारे,

उदाहरणार्थ—परमानन्ददासजी का निम्न पद स्वरलिपिसहित निम्न प्रकार दिया गया है ।

राग नूर–सारंग–ताल तीनताल, मात्रा–८

चलों सखी कुंज गोपाल ।
जहां तेरी सौंह मदनमोहन पे चलि ले जाऊं तहां ॥१॥
नीले कमल मंद मलयानिल तरु कदंबकी छांह ।
तहां निवास कियो नंदनंदन चित तेरे तन मांह ॥२॥

स्थायी

सा | ऩि सा | रे सा | नि॒ — | म़ प़ | ऩि सा | रे सा
च | लो — | स खी | कुं — | ज गो | पा — | ल ज

× | २ ० | ३ × | २ ० | ३
म रे
रे — | — ऩिसा — | — — | — मरे — | मप — | — —
हाँ — | — — | — — | — — | ते — | —री सों — | — ह

अन्तरा

× २ ० ३ × २ ० ३

म म | प नि॒ | प म | म गा | रे रेग॒ | रे सा | ऩि सा | रे सा
म द | न मो | ह न | पे — | — चलि | ले — | जा — | ऊं त

म रे सा
रे — | — मरे सा | ऩि सा | — नि॒ | म़ प़ | ऩि सा | रे सा
हां — | — चलो — | स खी | — कुं | ज गो | पा — | ल ज

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३
नि —	सा —	रे सा	नि पं	मं पं	नि नि	सा निसा	रे रे
नी —	— ले	— क	म ल	मं —	द म	ल या	— — नि ल
— रेग	रे सा	नि सा	रे सा	रे —	— नि	सा —	— —
— त	— रु	क द	व क्री	— छां	— —	— —	— — ह

आभोग

×	२	०	३	×	२	०	३
म रे	म प	— प	नि नि	सां —	नि प	मप निप	मग रे
त हां	— नि	वा —	स क्रि	यो —	नं द	नं —	द न
— रेग	रे सा	नि सा	रे सा	रे(म) —	सा रेम	रे सा	नि सा
— चित	ति —	रे —	त न	मां —	ह च	— लो	— स खी

राग-नूर—सारंग ताल त्रिताल

आजु दधि कंचन मोल लई ।
जा दधिकों सनकादिक इच्छत सो ग्वालन बांटि दई ॥१॥
दधिके पलटें दुलरी दीनी जसुमति खबर भई ।
'सूरदास'प्रभु कुंवर लाडिलो, बरवट प्रीति नई ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी—अन्तरा

२				०				३				×			
रे	रेम	रे	सा	नि	प	म	प	नि	—	सा	निसां	रे	रेग	रे	नि
आ	ज—	द	धि	कं	—	च	न	मो	—	ल	ल—	ई	—	—	—
सा	—	—	—	रे	—	म	म	प	—	प	प	नि	म	म	प
—	—	—	—	जा	—	द	धि	कों	—	स	न	का	—	दि	क
म	रे	सानि	सा	रे	रेग	रे	सा	नि	सा	गे	प	म	रे	—	सा
इ	—	च्छ—	त	सो	ग्वा—	ल	न	बां	—	टि	द	ई	—	—	—

स्थायी

२				०				३				×			
नि	नि	नि	—	सा	सा	सा	—	रे	रेम	रे	सा	निसा	रेसा	नि	प
द	धि	के	—	प	ल	टें	—	दु	ल—	री	—	दी—	— —	नी	—
नि	सा	रे	स	प	प	म	प	नि	प	म	रे	रे	नि	सा	—
ज	सु	म	ति	ख	व	र	भ	ई	—	—	—	—	—	—	—

'आभोग' अन्तरानुसार।

राग—वडहंस सारंग

यह राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है। सम्प्रदाय में आजकल प्रचार में अप्रसिद्ध है, किन्तु प्राचीन हस्तलिखित कीर्तनसंग्रहो में यह नाम प्राप्त होता है अतः यह राग पुर्व समयमें प्रचार में होगा। वृन्दावनी से मिलता झूलता इस राग का वादी स्वर रिषभ और संवादी पंचम हैं। ग-ध वर्जित होने से इस राग की जाति औडव है। मुक्त मध्यम के कारण यह राग वृन्दावनी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सारंगसे भिन्न दिखाई देता है । गानसमय मध्याह्न :होनें से सम्प्रदाय में उष्णकाल में राजभोग समय गाया जाता है ।

आरोहावरोह :– सा, रेम, पम, निप, निसां । सां निप, म, रे, सा ।

राग वडहंस सारंग, ताल त्रिताल (८ मात्रा)

चलो किनि देखन कुंजकुटी ।
मदनगोपाल जहां मध्यनायक, मन्मथ फोज लुटी ॥१॥
सुरतसमरमें लरत सखीकी मुक्तामाल तुटी ।
उरजवेंजु कंचुकी चुरकुट भई, कटिपट ग्रंथि छुटी ॥२॥
रसिकसिरोमनि हेंजु नंदसुत दीनी अधर घुटी ।
'परमानंद' गोविंद ग्वालिनिकी नीकी जोट जुटी ॥३॥

स्थायी

×		२		०		३		×		२		०		४	
सांनि	सां	नि	प	म	रे	सा	रे	म	—	—	—	म	म	म	प
दे—	—	ख	न	कुं	—	ज	कु	टी	—	—	—	च	लौ	कि	न

अंतरा

×		२		०		३		×		२		०		३	
म	प	प	प	नि	प	म	प	नि	सां	सां	सां	सांनि	रें	सां	सां
म	द	न	गो	पा	—	ल	ज	हाँ	—	म	ध्य	ना—	—	य	क
नि	सां	रें	मं	रें	—	सां	सां	सांनि	सां	नि	प	म	म	प	प
म	न	म	थ	फो	—	ज	कु	टी—	—	—	—	च	लौ	कि	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	म|म	म|म	प|प	—|म	म|प	निं|प	म|प	—
सु	र|त	स|म	र|में	—|ल	र|त	स|खी	—|की	—
म	नि|नि	प|म	प|मरे	सारे|म	—|—	—|रे	नि|सा	—
सु	—|क्ता	—|मा	—|ल—	तु—|टी	—|—	—|—	—|—	—

राग मधमाध सारंग (प्राचीन अंग)—ताल धमार

स्यामा नकवेसर अति वनी छवि कविपे बरनी न जाइ हो ।
सोने सरस सुनार गढी हे, हीरा लाल जराइ हो ॥१॥

आधे अधर बिराजत मोती, लाल रहे ललचाइ ।
ताकी सोभा अति बाढी हे, भयो गुंजको सुभाइ हो ॥२॥

तनसुख सारी रातो लहँगा क्यों न स्याम मन भाइ हो ।
सोभा हितहरिवंस सांवरे, चितें चली मुसिकाइ हो ॥३॥

स्थायी

३				×					२		०		
म	प	नि	सां	रें	—	—	सां	—	सां	—	नि	ध	प
हो	—	स्या	—	मा	—	—	न	—	क	—	बे	—	—
म	रे	म	प	नि	ध	प	प	—	म	—	रे	—	—
स	—	र	—	अ	—	—	ति	—	ब	—	नी	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा	—	सा	—	म	म	—	म	—	रे	—	रे	रे	—
छ	—	वि	—	क	वि	—	पे	—	—	—	ब	र	—
म	—	प	—	ध	—	—	नि	ध	नि	ध	प	—	—
नी	—	न	—	जा	—	—	—	—	—	—	इ	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
म	प	—	नि	—	नि	—	सां	सां	—	सां	—	नि	सां
सो	—	—	ने	—	—	—	स	र	—	स	—	सु	—
रें	मं	रें	सां	—	सां	—	रें	नि	—	सां	—	—	—
ना	—	—	र	—	ग	—	ढी	—	—	हे	—	—	—
नि	सां	—	रें	—	मं	—	रें	—	—	सां	—	सां	रें
ही	—	—	रा	—	—	—	ला	—	—	ल	—	ज	—
सां	नि	—	सां	—	रें	—	नि	ध	प	म	प	नि	सां
रा	—	—	—	—	—	—	इ	—	—	हो	—	स्या	—

संचारी

×					२		०			३			
म	—	—	म	—	रे	—	रे	रे	—	म	—	प	—
आ	—	—	धे	—	—	—	अ	ध	—	र	—	थि	—
ध	—	—	नि	—	प	—	म	प	म	रे	—	सा	—
रा	—	—	ज	—	त	—	मो	—	—	ती	—	—	—
म	—	—	म	—	म	—	रे	—	—	म	—	प	—
ला	—	—	ल	—	र	—	हे	—	—	ल	—	ल	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	—	— नि	ध	नि	ध	प	—	—	म	— प	—
चा	—	— —	—	—	—	इ	—	—	—	— —	—

रागमाला, ताल चौताल

राग सारंगसे आरम्भ होनेवाली यह रागमाला हमारे पूर्व प्रकाशन 'अष्टछाप—भक्तिसंगीत !' ग्रन्थ—१, खण्ड—१, पृष्ठ १८३ पर देखिये ।

स्थायी (सारंग)

							म	प	निसां	रें	नि
							सा	—	रं—	—	ग
×		०		२		०		३		४	
सां	—	—	नि	—	प	नि	—	प	म	रे	सा
ने	—	—	नी	—	—	री	—	—	तूं	—	—
नि	सा	रे	—	म	—	प	प	म	प	नि	सां
कां	—	हे	—	को	—	कि	यो	—	ए	—	तो
रें	—	नि	सां	प	नि	प	म	प	निसां	रें	नि
मा	—	—	—	न	—	—	सा	—	रं—	—	ग

अन्तरा (गौरी, कल्याण)

×		०		२		०		३		४	
म	ध	—	नि	—	नि	रे	रें	—	सां	—	सां
गौ	—	—	री	—	ग	हे	रु	—	छां	—	डि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निसां	रें	सां	नि	ध	प	ध	मं	ग	रे	रे	सा
मि–	ल	–	ला	–	लें	–	म	–	न	ऋ	म
नि	सां	सां	प	मं	ध	सां	–	ध	प	–	प
ब	च	न	या	–	तें	हो	–	–	त	–	ऋ
ध	मप	प	रे	–	सा	–	म	प	निसां	रें	नि
ल्या	–	–	–	–	न	–	सा	–	रं–	–	ग

संचारी (नट भैरव)

×		०		२		०		३		४	
सां	सां	ध	ध	प	प	ध	प	म	म	–	–
जि	न	–	ह	–	ठ	क	र	–	री	–	–
प	प	रे	रे	ग	म	प	ग	–	म	रे	सा
न	ट	–	ना	–	–	ग	र	–	सो	–	–
ध	–	–	सां	ध	प	म	ग	रे	ग	म	प
मे	–	–	रो	–	–	ही	–	–	दे	–	व
म	–	–	रे	–	–	ग	रे	–	सा	–	–
गा	–	–	–	–	–	–	–	–	न	–	–

आभोग (कान्हरो)

×		०		२		०		३		४	
म	प	–	नि	प	मप	नि	सां	–	सां	–	–
मु	र	–	ली	–	——	ता	–	–	न	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	सां	–	रें	–	सां	नि	सां	–	ध	नि	प
का	–	–	न्ह	–	र	गा	–	–	व	–	त
म	–	–	प	नि	प	ग	–	म	रे	–	सा
सो	–	–	सु	–	न	ले	–	–	री	–	–
नि	सा	–	रे	–	सारे	ग	–	म	रे	सा	–
का	–	–	–	–	–	–	–	–	–	न	–

संचारी–२ (नायकी, अडानो)

×		०		२		०		३		४	
प	ग	म	रे	सा	रे	प	–	–	नि	म	प
रं	–	–	ग	–	रं	गी	–	–	ली	–	–
म	प	–	नि	म	प	सां	–	निध	नि	प	–
सु	ध	–	र	–	–	ना	–	य–	की	–	–
म	प	नि	सां	रें	रें	गं	–	मं	रें	–	सां
तू	–	–	जि	–	य	में	–	–	न	–	अ
रें	सां	रें	नि	सां	निध	नि	प	–	नि	म	प
डा	–	–	–	–	–	–	न	–	–	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आभोग–२ (केदारो, बिहाग)

×		०		२		०		३		४	
म	–	–	प	–	–	ध	प	म	मग	प	धप
नं	–	–	द	–	–	दा	–	–	स–	–	के–
सां	–	रें	सां	–	–	नि	ध	प	पमं	धप	म
दा	–	–	रो	–	–	क	रि	–	के–	––	–
सा	–	–	म	ग	मग	प	–	–	नि	–	निं
यों	–	–	हा	–	बि–	हा	–	–	ग	–	यो
सां	–	नि	प	ग	म	ग	सा	म	प	नि	निं
मा	–	–	–	–	–	न	–	सा	–	रं	ग

मल्हार के प्रकार

ग्रन्थों में 'मल्हार' राग को वर्षाऋतु का प्रधान राग कहा है। कुछ ग्रन्थों में 'मेघ' नाम से और कुछ ग्रन्थकारों ने 'मल्हार' नाम से उल्लेख किया है। पुष्टिमार्गीय हवेलीसंगीत–प्रणालि में भी यही शास्त्रदृष्टि अनुसार प्रातःकाल से सायंकाल की प्रत्येक सेवा में हर–समय मल्हार राग के कीर्तन गाये जाते हैं। आषाढ शुक्ल द्वितीया से 'मल्हार' का आरम्भ होता है और श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के बाद हिंडोला (झूला) विसर्जन होते ही राग समाप्त होता है। श्री...कों जगाये वे से लेकर पोढायने तक की वर्षाऋतु की लीला के सेंकडों पद इस राग में गाये जाते हैं। सम्प्रदाय में 'मल्हार' के लगभग ६ प्रकार गाये जाते हैं, परन्तु संग्रह–ग्रन्थों में यह सभी पदों का समावेश 'राग–मल्हार' शीर्षक के अन्तर्गत ही किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कतिपय संग्रहों में 'मेघ मल्हार' 'सोरठ मल्हार' और 'गौड मल्हार' नाम पाये जाते हैं, किन्तु कुछ दो चार नियत पदों के शीर्षक रूप में ही दिखाई देते हैं। सम्प्रदाय के लिखित संग्रहग्रन्थों तथा क्रियात्मक गान-शैली की ओर दृष्टि करने से स्पष्ट होता है कि ऋतुप्रधान रागों के छः प्रकार व्यवहार में होते हुए केवल मल्हार राग के नाम से संबोधन करने की प्रथा परम्परागत रूप में चालू रही है, किन्तु आजकल हवेलीसंगीत के रागप्रकारों का विभाजन करना संशोधनीय दृष्टि से अत्यावश्यक है। अतः हमारे मतानुसार सम्प्रदाय में मल्हार राग की गानशैली में षड्-विध प्रकार के मल्हार दृष्टिगत होते हैं। (१) मेघ मल्हार—शुद्ध मल्हार, (२) गौड मल्हार, (३) सोरठ मल्हार, (४) सूर मल्हार, (५) धूरिया मल्हार और (६) मल्हार।

राग मेघ, प्राचीन मल्हार

संस्कृत ग्रन्थों में मेघ एवं मल्हार कों वर्षाऋतु का मुख्य राग माना गया है और यह दोनों नामो के वर्णन प्राप्त होते हैं। 'संगीतरत्नाकर' 'रागलक्षण' 'संगीतदर्पण' 'हृदयकौतुक' 'हृदयप्रकाश' 'संगीतपारिजात' इन ग्रन्थों में 'मेघ' राग का उल्लेख किया गया है, परन्तु अन्य ग्रन्थकारों ने 'मल्हार' का ही वर्णन किया है, मेघ का उल्लेख किया नहीं है। दर्पणकारने मेघ राग का स्वरूप-ध्यान तथा राग-लक्षण इस प्रकार कहा है।

---

१. मेघरागो मन्द्रहीनो ग्रहांशन्यासधैवतः। [सं. रत्नाकर]
२. मेघः पूर्णो धत्रयः स्यादुत्तरायतमूर्छनः। (सं. दर्पण)
३. गायकप्रियमेलाच्च मेघरागः सुनामकः। (रागलक्षण)
४. पसौ मेघो हि षाडवः। (हृदयकौतुक)
५. तत्र मेले भवेन्मेघः। (हृदयप्रकाश)
६. यतो वर्षासु गेयोऽयं मेघ इत्यपि कीर्तितः। (सं. पारिजात)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध्यान—नीलोत्पलाभवपुरिन्दुसमानवक्त्रः पीताम्बरस्तृषितचातकयाच्यमानः ।
पीयूषमन्दहसितो घनमध्यवर्ती वीरेषु राजति युवा किल मेघरागः ॥
लक्षण—मेघः पूर्णो धत्रयः स्यादुत्तरायतमूर्छनः ।
विकृतो धैवतो ज्ञेयः शृंगाररसपूर्वकः ॥ [सं. दर्पण]

इसमें 'वीरेषु राजति'' 'शृंगार–रस, तथा मेघ को विकृत धैवतयुक्त सम्पूर्ण माना गया है। जैसे–ध नि सा रि ग म प ध।

लोचन पण्डित ने ''धनिषादौ च शार्गंस्य कर्णाटस्य गमौ यदि'' कहा है। इसमें शार्गदेव (सारंगदेव) का धैवत अर्थात् ''धश्च शुद्धनिषादः स्यात्'' समझा जाय गा, अतः शुद्ध धैवत अपना कोमल निषाद होता है। इस श्लोक के सम्बन्धानुसार 'मेघ' का थाट 'सा रि ग म प नि सां' होता है। इनमें 'कर्णाटस्य गमौ' के उल्लेख से अपनी पद्धति का गान्धार कोमल कहा जायगा, किन्तु सम्प्रदाय के धूरिया मल्हार के अतिरिक्त प्रकारों में कोमल गान्धार वाला मल्हार का कोई भी प्रकार गाया नहीं जाता।

हृदय पण्डित ने अपने ग्रन्थों में मेघ का निम्न प्रकार दिया हे—
'गधैवतनिषादास्तु यत्र तीव्रतराः स्मृताः ।
तत्र मेले भवेन्मेघः मेघः सम्पूर्ण उच्यते ॥ [हृदयप्रकाश]
सा रि ग म प ध निसां। रि सा नि ध प म म, रि सा। नि ध प म प सां। *

उपर्युक्त ग्रन्थोक्त उल्लेखो में ग ध नि तीव्रतर बताये हैं, जो अपनी प्रचलित पद्धति का शुद्ध ग, कोमल नि, और शुद्ध नि होता है। हवेलीसंगीत की प्राचीन परम्परा का मेघ–मल्हार इसी स्वर-स्वरुप में गाया जाता था, परन्तु यह प्राचीन प्रकार आजकल सुनने में आता नहीं है।

'मेघ' राग के सम्बन्ध में कुछ ग्रन्थोक्त उल्लेख हम देख चुके हैं, परन्तु बहुत से ग्रन्थकारों ने मेघ का वर्णन नहीं, किन्तु मल्हार का

* हिं. सं. पद्धति, भाग ४ (पं. भातखण्डे), पृ. ५५९

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वर्णन किया है। जैसा कि पुण्डरीक ने 'सद्रागचन्द्रोदय' 'रागमंजरी' 'रागमाला' ग्रन्थों में मेघ का वर्णन किया नहीं है। तदुपरान्त 'स्वरमेलकलानिधि' 'चतुर्दण्डिप्रकाशिका' 'रागविबोध' तथा 'संगीतसारामृत' आदि ग्रन्थों में मेघ का नहीं, मल्हार का वर्णन प्राप्त होता है।

किंवदन्ती के आधार पर कहा जाता है कि अकबर बादशाह के समय में 'दीपक' और 'मेघ' राग के गानों से बनी हुई करुण घटना के कारण वैष्णव सम्प्रदायों के संगीताचार्यों ने[१] 'दीपक' और 'मेघ' का गान किया नहीं होगा। सम्भव है कि इसी कारणवशात् उपर्युक्त ग्रन्थकारों ने भी मेघ के स्थान पर 'मल्हार' का ही वर्णन किया है।

पं. अहोबल ने 'संगीतपारिजात' ग्रन्थ के आरम्भ में ही कहा है कि "अथ मेघो मल्लारोऽपि अर्थात् यही 'मेघ' राग है और मल्हार भी।" यहीं मान्यता दूसरे श्लोक में स्पष्ट करते हुए कहा है कि "यतो वर्षासु गेयोऽयं मेघ इत्यपि कीर्तितः।"

अर्थात् 'यह वर्षाऋतु में गाया जाता या गाने योग्य है, अतः इसे 'मेघ' राग भी कहते हैं'।

लोचन पण्डित ने भी कहा है कि—

"मेघरागस्य संस्थाने मेघो मल्हार एव च।" (तरंगिणी)

उपर्युक्त ग्रन्थों के उल्लेखानुसार का 'मेघ-मल्हार' जो आजकल अप्रचलित है वही अष्टछाप—संगीत-परम्परा का शुद्ध-मल्हार भी कहा जायगा। इस प्रकार 'मेघ मल्हार' का उल्लेख केवल 'श्रीकुम्भनदासजी' और 'श्रीकृष्णदासजी' के प्राचीन पदसंग्रहों में एक-एक पद ही प्राप्त होता है। तानसेन सम्बन्धित 'दीपक' और 'मेघ' की घटना के पश्चात्

---

१. मेघ-मल्हार का उल्लेख केवल अष्टछाप के श्रीकुम्भनदासजीकृत एक पद में (देखिये 'कुंभनदास' कांकरौली प्रकाशन, पृ. १२१) तथा 'कृष्णदास' (पृष्ठ ३६२, कांकरोली प्रकाशन) के पद में प्राप्त होता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उन्होंने तथा अष्टछाप के अन्य संगीताचार्यों ने मेघ—मल्हार के स्थान पर 'मल्हार' का ही उल्लेख किया हुआ प्राचीन हस्तलिखित पद-संग्रहों से स्पष्ट होता है ।

मेघ—मल्हार के इस प्राचीन प्रकार को हम 'शुद्ध मल्हार' कहना ही उचित समझेंगे । सम्प्रदाय के पदसंग्रहों में 'मल्हार' के शीर्षक में ही इस प्रकार के कतिपय पदों का समावेश किया हुआ है । संवत् २००० के पुर्व यानि ई. स. की चालू शताब्दी के पुर्व भाग के प्राचीन कीर्तनकारों से इस प्रकार का मल्हार सुनने का कुछ सुयोग प्राप्त हुआ था । इस लेखकने अपने पिताजी से भी इस प्रकार के दो—चार कीर्तन जो सुने हुए थे, इसी आधार पर यहाँ 'शुद्ध मल्हार' की चर्चा के पश्चात् उसी पदों को स्वरलिपि—बद्ध करके प्रकाशित किया गया है ।

राग शुद्ध-मल्हार (प्राचीन मेघमल्हार)

शुद्ध मल्हार का यह प्राचीन प्रकार आजकल प्रचार में नहीं है । इस राग का थाट काफी मानना उचित है । इस में दोनों निषाद साथ साथ में लिये जाते हैं । गान्धार और धैवत स्वर वर्ज्य होने से जाति औडुव है । दोनों निषाद साथ में लेते समय कोमल निषाद पर धैवत स्वर कणरूप में व्यक्त होता है, किन्तु जब दोनों निषादों को मींड से लिया जाता है तव धैवत का कण बहुत कम दिखाई देता है । ऋषभ स्वर पर मध्यम का कण इस राग में आवश्यक है । वादी स्वर सा संवादी पंचम माना जाता है । मध्यम स्वर मुक्त रहता है । प्रकृति गंभीर है ।

उचित स्थान पर मींड और गमक का प्रयोग किया जता है इस राग का गानसमय प्रहर की दृष्टि से रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हैं, किन्तु वर्षाऋतु का यह मोसमी राग होने से इस ऋतु में हर समय चाहे जब गा सकते हैं । ग नि वर्ज्य का 'शुद्ध मल्हार'भी आजकल प्रचार में दिखाई देता है, किन्तु हवेली-संगीतपरम्परा के 'प्रचलित मल्हार से वह भिन्न है । दोनों निषादों का साथ ही प्रयोग तथा धैवत का कण लेने से 'मियां मल्हार' का कुछ भास होता है, किन्तु शुद्ध ध तथा कोमल गान्धार इस राग में वर्ज्य होने से रागभेद स्पष्ट होता है । कुछ मान्यतानुसार इस राग के आधार को दृष्टि समक्ष रख कर 'मियां मल्हार' का सर्जन होना असम्भवित नहीं है । निसा, मरे, रेप, निमप, तथा मरे, मरे, मरे, रेसा और पनिनिसां' इस स्वरसमुदाय से इस राग स्पष्ट होता है और सारंग का अंग दूर हो जाता है ।

म म ध
आरोह—सा, रेम, रेप, मप, नि, निसां ।

म
अवरोह—सां, निप, म, मरे, प, मरे, रेसा ।

ध
पकड—मरे, प, मप, नि, निसां, निमप, मरे सा ।

अष्टछाप के संगीताचार्य श्री परमानंददासजी ने गाये हुए निम्न पद को 'राग शुद्ध-मल्हार (मेघ मल्हार)' में स्वरांकन-सहित उदाहरणरूप में प्रगट कर रहे हैं ।

राग मेघ (प्राचीन मल्हार)—ताल प्राचीज रूपक

इन मोरन की भांत देखि नाचत गोपाला ।
मिल्वत * गति-भेद नीके, मोहन नटसाला ॥१॥
गरजत घन मंद-मंद, दामिनी दरसावे ।
रिमकि झिमकि बूंद परें, राग मल्हार गावे ॥२॥

---

* पाठान्तर 'सूर'

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चातक पिक सघन कुंज, बार बार कूजे ।
वृंदावन कुसुमलता चरन कमल पूजे ॥३॥
सुर नर मुनि कामधेनु कौतिक देखनि आवे ।
वारि फेरि भक्ति उचित, 'परमानंद' पावे ॥४॥

स्थायी

×		२				×		२			
म	रे	म	रे	प	—	नि	—	नि	सां	—	सां
मो	—	र	न	का	—	भाँ	—	त	दे	—	खि
नि	मप	म	रे	प	प	म	रे	सा	रे	नि	सा
ना	——	च	त	—	गो	पा	—	ला	—	इ	न

अन्तरा

×		२				×		२			
म	म	प	प	नि	प	सां	—	सां	नि	सां	सां
मि	ल	व	त	ग	ति	भे	—	द	नी	—	के
रें	—	मं	रें	सां	सां	नि	प	मप	म	रे	सा
मो	—	ह	न	न	ट	सा	—	ला—	—	इ	न

संचारी

×		२				×		२			
म	म	रे	रे	म	म	प	—	प	प	—	प
ग	र	ज	त	घ	न	मं	—	द	मं	—	द

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	—	नि	सां	नि	प	मप	म	रे	रे	नि	सा
दा	—	मि	नी	द	र	सा—	—	—	वे	—	—

आभोग

×		२				×		२			
रें	रें	रें	सां	रें	पं	मं	—	मं	रें	सां	—
रि	म	कि	झि	म	कि	बूं	—	द	प	रें	—
म	म	मरे	प	—	प	मप	निप	मप	म	रे	सा
श	ग	म—	ल्हा	—	र	गा—	——	——	वे	इ	न

अष्टछाप के संगीताचार्य श्रीछीत स्वामी ने गाया हुआ निम्न पद भी उदाहरणार्थ इसी राग में स्वरांकन—सहित दिया गया है।

राग (शुद्ध) मल्हार—ताल चौताल

यह नागर नंदलाल कुंवर मोरन संग नाचें। कटि—तट पट किंकिनी कल, नूपुर रुनझुन करें, नृत्य करत चपल—चरन, पात घात साँचें ॥१॥ उदित मुदित सघन गगन घोरत घन दे दे भेद कोकिला कल—गान करत, पंचम सुर साचे। 'छीतस्वामी' गोवर्धननाथ साथ बिहरत वर, रासबिलास वृंदावन प्रेमवास यांचे ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
		म	म								
म	रे	रे	रे	म	रे	प	—	प	नि	म	प
ना	—	ग	र	नं	द	ला	—	ल	कुं	व	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	–	म	रे	प	प	म	–	रे	सा	नि़	सा
मो	–	र	न	सं	ग	ना	–	चैं	–	य	ह

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
							ध				
म	म	म	प	प	प	नि	नि	नि	–	सां	सां
क	टि	त	ट	प	ट	किं	कि	नी	–	क	ल
									ध		
म	–	प	प	नि	प	निसां	रें	नि	नि	प	–
नू	–	पु	र	रु	न	झु–	न	क	रें	–	–
	प	मं					गं				
प	रें	रें	सां	रें	पं	मं	मं	रें	सां	नि	सां
नृ	–	त्य	क	र	त	च	प	ल	च	र	न
	म	रे	प	म	प	मप	सां	निप	मप	म	रे
निप	मप	म	रे	प	प	म	–	रे	सा	नि़	सा
पा–	––	त	पा	–	त	सां	–	चैं	–	य	ह

संचारी

×		०		२		०		३		४	
			म	म	म		ग				
म	म	म	रे	रे	रे	म	म	मरे	प	प	प
उ	दि	त	शु	दि	त	स	घ	न–	ग	ग	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	रे	प	प	म	प	नि	नि	नि	सां	नि	प
घो	—	र	त	घ	न	दे	—	दे	भे	—	द
म	रे	(म)रे	(म)रे	(म)रे	प	म	—	रे	सा	रे	सा
को	—	कि	ला	क	ल	गा	—	न	क	र	त
म	रे	प	प	म	प	म	—	रे	प	—	—
पं	—	च	म	सु	र	सां	—	—	चें	—	—

राग गौड मल्हार

गौड मल्हार राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है । कोई इसका बिलावल (शंकराभरण) थाट भी मानते हैं । गौड और मल्हार के संयोग से यह राग बना हुआ है । क्वचित् बिलावल की छाया भी दिखाई देती है । 'रेगरेमगरेसा' यह गौड राग का अंग है, इसके साथ मल्हार का 'मरे, प, मपधसां, धपम' इन स्वरों को जोड़ने से गौड़-का स्वरूप स्पष्ट होता है । कभी कभी 'पपनिध, निसांरेंसां' इन स्वरों का प्रयोग कोई गुणीलोग करते हैं तब बिलावल राग की छाया भी मालूम होती हैं । रेप की संगति सुन्दर दिखाई देती है । रेम, रेप, धसां, धनिपं और धसांधपम, तथा रेग, सारेम, मप, मग, मग, रेगरेमगरेसा, इन स्वरसंगतियों को जोड़ने से गौड मल्हार के अतिरिक्त मल्हार का कोई प्रकार संभवित नहीं है । वादी मध्यम तथा संवादी षड्ज स्वर है, कोई पंचम को भी वादी मानते हैं । गानसमय रात्रि का दूसरा प्रहर है, किन्तु वर्षाऋतु में सर्वकालीन यानि चाहे जब गाया जाता है ।

× खमाजीमेलके ख्यातो गौडमल्लारनामकः ।
शंकराभरणेऽप्येनं केचिदाहुर्विपश्चितः ॥

(लक्ष्यसंगीत)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जाति सम्पूर्ण है यानि आरोह अवरोह दोनों में सातों स्वरों का उपयोग होता है। शुद्ध निषाद आरोह में लिया जाता है, परन्तु दुर्वल होने से 'धसां' और 'सांध' की संगति अधिकतर दिखाई देती है। कोमल निषाद् हमेशां अवरोह में 'निप' अथवा 'धनिप' संगति से ही लिया जाता है। गौड मल्हार का एक अन्य प्रकार भी प्रचार में है, जिस में कोमल गान्धार का प्रयोग होता हैं, किन्तु अष्टछाप–परम्परा के द्रुपदों में शुद्ध गान्धार का गौड मल्हार ही गाया जाता है। हवेली-परम्परा में गाये जाने वाले मल्हार के पदों में यह राग अधिकतर दिखाई देता है। प्रचार में कुछ द्रुपद गायक कोमल गान्धार का प्रयोग करते हैं तथा दोनों गान्धार लेने वाले द्रुपद भी देखने में आते हैं। कोमल गान्धार का प्रयोग करने वाले इसे काफी थाट का राग मानते हैं। ख्याल–गायक हमेशां तीव्र गान्धार का प्रयोग करते हैं। तीव्र गान्धार का गौड मल्हार अधिक प्रचलित है। यही नहीं, हवेली–संगीत' परम्परा में तीव्र गान्धार का ही गाने की प्रथा परम्परागत होने से लेखक के मतानुसार इस राग को खमाज थाट का राग मानना :अधिक ठीक है। सम्प्रदाय में :इस प्रकार के बन्दिश के सभी पदोंको केवल 'राग मल्हार' ही कहने का रिवाज है।

आरोह—रे ग रे म ग रे सा, रेप, मप, धसां।

अवरोह—सांधनिप, मपमग, रेसा

पकड–स्वर—रेगरेमगरेसा, रेपमप, धसां, धपम

राग (गौड) मल्हार–ताल चौताल

माई तेसोई वृंदाबन तेसीय हरित भूमि, तेसीय बीरबधू चलत सुहाई माई।
तेसेई कोकिला कल कुहू कुहू कूजत,
तेसेई नाचत मोर निरखत सोभा नेननि सुखदाई ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तेसी ही नवरंग नवरंग बनी जोरी, तेसेई गावत राग मल्हार तान मनभाई ।
'गोविंद' प्रभु सुरंग हिंडोरे झूलें फूलें आछे,
रंगभरे चहुँदिस तें घटा जुरि आई ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	ध	—	नि	प	ध	नि	सां	—	नि	सा	सां
ते	सो	—	ई	—	झूं	दा	—	—	ब	—	न
नि	प	म	प	—	प	धनि	सां	धप	मग	प	म
ते	सा	—	य	—	ह	रि—	—	त—	भू—	—	मिं
म	रे	रे	ग	म	प	मग	म	रे	रे	सा	सा
ते	—	सी	—	य	—	बी—	—	र	ब	—	धू
म	रे	प	प	म	प	धनि	सां	धप	म	ग	म
ल	ग	—	त	—	सु	हा—	—	ई—	मा	—	ई

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
नि	—	नि	सां	—	नि	सां	सां	—	नि	सां	सां
ते	—	से	ई	—	को	कि	ला	—	क	—	ल
सां	म	प	प	नि	प	निसां	रें	—	ध	नि	प
कु	हू	—	कु	हू	—	कू—	—	—	ज	—	त
मग	रे	रे	ग	म	प	मग	म	रे	रे	सा	सा
ते—	—	से	ई	—	ना	च—	—	त	मो	—	इ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	रें	—	सां	रें	गं	पं	गं	मं	रें	—	सां
नि	र	—	ख	—	त	सो	—	—	भा	—	—
सां	ध	नि	प	म	प	धनि	सां	धप	म	ग	म
ने	—	न	नि	सु	ख	दा—	—	ई	मा	—	ई

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	—	म	म	रे	रे	रे	प	—	ध	नि	प
बे	—	सी	ही	—	न	व	—	—	रं	—	ग
म	म	रे	प	म	प	धनि	सां	ध	प	म	ग
न	व	—	रं	—	ग	ब—	नी	—	जो	—	री
म	गम	रे	ग	म	प	ध	प	म	रे	—	सा
बे	से—	ई	गा	व	त	रा	ग	म	ल्हा	—	र
म	रे	प	प	म	प	ध	नि	प	म	रे	सा
ता	—	न	मं	—	न	भा	—	—	ई	—	—

राग (गौड) मल्हार—ताल सूलताल

माईरी घन मृदंग रस भेद सों बाजत, नाचत चपला चंचल गति ।
कोकिला अलापत, पपैया उरप लेत, मोर मधुर सुर साजत ॥१॥
दादुर ताल धारि धुनि सुनियत हे, रुनझुन रुनझुन नूपुर बाजत ।
'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक, कुंजमहल दोऊ राजत ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		०		२		३		०	
नि	ध	नि	सां	—	सां	—	ध	नि	प
ध	न	मृ	दं	—	ग	—	र	—	स
म	रे	प	प	मप	धसां	ध	प	म	ग
मे	—	द	सों	बा—	——	ज	—	त	—
रें	ग	प	ग	म	रे	—	सा	रे	सा
ना	—	च	त	च	प	—	ला	—	—
ध	—	नि	सां	नि	प	म	प	ग	म
चं	—	च	ल	ग	ति	मा	—	ई	री

अन्तरा

×		०		२		३		०	
नि	नि	नि	नि	सां	नि	सां	सां	—	—
को	कि	ला	अ	ला	—	प	त	—	—
प	प	नि	ध	नि	सां	रे	नि	ध	प
प	पै	या	—	उ	र	प	ले	—	त
रें	—	गं	मं	रें	सां	रें	सां	ध	प
मो	—	र	म	धु	र	—	सु	—	र
नि	ध	नि	सां	नि	प	म	प	ग	म
सा	—	—	—	ज	त	मा	—	ई	री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		०		२		३		०	
म	—	म	म	प	—	प	प	म	प
दा	—	दु	र	ता	—	ल	धा	—	रि
म	रे	प	प	ध	सां	ध	प	म	ग
धु	नि	सु	नि	य	त	—	हे	—	—
रे	ग	म	प	म	ग	म	रे	सा	सा
रु	न	झु	न	रु	न	—	झु	—	न
म	रे	म	प	ध	सां	ध	प	म	—
नू	—	पु	र	बा	—	—	ज	त	—

राग (गौड) मल्हार—ताल धमार

तुम घन से हो घनस्याम गरज गरज आये अनत जाइ बरसे ।
कहूं बरसत कहूं नेह जनावत, कहूं लावत झरसे ॥१॥
मुखकी अलबलाई (जूठीं मीठी नात ने) हम ही करने आये,
ओरनके पग परसे हो ।
'घोंधी'के प्रभु तुम बहुनायक, इन बातन सरसे ॥२॥

स्थायी

गरे	सा	ग	रेग
तु–	म	घ	न–

×					२		०			३			
म	—	—	ग	प	प	पध	ग	प	मग	म	रे	प	प
से	—	—	हो	—	घ	न–	स्या	—	म–	ग	र	ज	ग

नि	ध	नि	सां	–	सां	–	रें	सां	ध	नि	प	म	प
र	ज	–	आ	–	ये	–	अ	न	त	जा	–	इ	–
मप	धनि	सां	ध	प	ग	प	म	ग	रेंसा				
ब–	र–	–	से	–	–	–	हो	–	––				

अंतरा

×					२		०			३			
म	प	–	नि	ध	नि	नि	सां	सां	–	रें	–	सां	–
क	हूं	–	–	–	ब	र	स	त	–	क	–	हूं	–
सां	गं	–	गं	मं	पं	गं	मं	रें	सां	ध	नि	प	–
नें	–	–	ह	–	ज	–	ना	–	–	ब	–	त	–
म	रे	प	पध	निसां	ध	प	ग	प	मग	रेग	सा,	ग	रेग
क	हूं	–	ला–	––	ब	त	झ	र	से–	––	–,	घ	न–

संचारी

×					२		०			३			
म	म	रे	म	–	–	–	प	प	प	ध	–	प	–
सु	ख	–	की	–	–	–	अ	ल	ब	ला	–	ई	–
म	म	रे	प	–	–	प	ध	नि	सां	ध	प	म	–
ह	म	–	ही	–	–	क	र	नं	–	आ	–	ये	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	नि	सां	ध	प	म	—	ग	रे	ग	सा	रे	ग	—
ओ	—	—	र	—	न	—	के	—	—	प	—	ग	—
प	प	ध	म	—	—	—	ग	रे	ग	सा	—	—	—
प	र	—	से	—	—	—	—	—	—	हो	—	—	—

राग सोरठ मल्हार

यह राग सोरठ और मल्हार के संयोग से बना हुआ है । पुष्टि-सम्प्रदाय की कीर्तनप्रणाली में न गाये जाने वाले मल्हार के प्रकारों में अधिकतर सोरठ मल्हार और गौड मल्हार के ही पद गाये जाते हैं ।

थाट खमाज है । आरोह में शुद्ध तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है । वादी रे तथा संवादी धैवत है, कोई पंचम भी मानते हैं । अवरोह में गान्धार वर्ज्य अथवा मींड में छुपा हुआ रहता है । अतः जाति षाडव अथवा कोई सम्पूर्ण भी मानते हैं । सोरठ राग से मिलता हुआ हैं । राग 'देस' में गान्धार स्पष्ट रूप से लिया जाता है, शुद्ध गान्धार अधिकतर मींड में ही लिया जाता है ।

आरोहावरोह :—सा, रे, म, प, निमप, ध, सां । सां, निध, प, धम, रे, प, मगरे, नि, सा.

पकड :—मपनि, सां, रें निध, प, ध, मरे, प, धसां, निधप, मप, मरे, नि, सा ॥

स्वरविस्तार :—

(१) सा, म, पमरे, मरे, मप, धपमगरे, पमप, मपध, सां, धप, मगरे निसा ॥

(२) मप, मरेमप, ध, सां, धपम, पम, रे, मपधसां, निसां, निसांरें, सां, पंसं, रें, सां, पनिसां, निधप, धमगरे, निसा ॥ (३)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(३) मप, प, मपधसां, धपम, निसां, ऩिधपम, मगरे ऩि, सा ॥

(४) मप, नि, सां, मं, रें, रेंगंरें रेंनिसां, निध पमगरे, प, मगरे, निसा ।

राग सोरठ मल्हार—ताल आडचौताल (द्विगुण मात्रा ७)

सखीरी (मोहि) बूंद अचानक लागी ।
सोवत हुती मदन मदमाती, घन गरज्यो तब जागी ॥१॥

दादुर मोर पपैंया कोयल, बोलत हें अनुरागी ।
'कुंभनदास' लाल गिरिधरसों, जाय मिली बडभागी ॥२॥

स्थायी

×	२		३		४		×	२		३		४	
नि	सां	रें	नि	धप	म	गरे	मरे	प	—	धनि	सां	धप	म
बूं	द	अ	चा	ऽऽ	न	कऽ	लाऽ	गी	—	स—	खी	रीऽ	ऽ
म	रे	ऩिसा	रे	प	मग	रेप	म	—	रे	ऩि	—	सा	—
बूं	द	अऽ	चा	ऽ	नऽ	कऽ	ला	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा

३		४		×	२		३		४		×	२	
म	प	नि	नि	सां	सां	—	—	—	—	सां	रें	रें	रेंगं
सो	ऽ	व	त	हु	ती	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	द	न	ऽ
रें	सां	रें	नि	सां	—	—	प	नि	सां	रें	नि	ध	प
म	द	मा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	घ	न	ग	र	ज्या	ऽ	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध प	मग रेसा	म रे म	प — —	— —	मप धनि सां
त_ ऽ	बऽ ऽऽ	जा ऽ ऽ	गी ऽ ऽ	ऽ ऽ	सऽ खीऽ ऽ
ध प	म प	म रे ऩिसा	रे प	मग रेप	म — रे
री ऽ	ऽ ऽ	बूं द अऽ	चा ऽ	नऽ कऽ	ला ऽ ऽ

संचारी

× २	३	४	× २	३	४
म रे म	प —	प प	म प —	ध सां	धप म
दा दु र	मो ऽ	र प	पै या ऽ	कोऽ ऽऽ	यऽ ल
रे ऩि सा	रे —	रे गरे	म — —	रे —	ऩि —
बो ल त	हैं ऽ	अ नु	रा ऽ ऽ	गी ऽ	ऽ ऽ
सा — —					
ऽ ऽ ऽ					

राग सोरठ मल्हार—ताल आदिताल (त्रिताल मात्रा)

क्यों न भये हम मोर, वृंदाबन ।
करत निवास गोवरधन ऊपर, निरखत नंदकिसोर ॥१॥
क्यों न भये बंसीकुल सजनी, अधर पीवत घनघोर ।
क्यों न भये गुंजा बनबेली, रहत स्यामजुकी ओर ॥२॥
क्यों न भये मकराकृत कुंडल, स्याम स्रवन झकझोर ॥
'परमानंददास'को ठाकुर, गोपिनके चितचोर ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३	
सां	निसां	रेंनि	धपमग	रेम	रेप	पधनि	सांधप	म
क्यों	ऽन	भये	ऽऽहऽ	ममो	ऽर	वृंदाऽ	ऽबऽ	न
—	गरेनि़	सारे	पमग	रेपम	—रे	—नि़	—सा	—
ऽ	क्योंऽन	भये	ऽहऽ	मऽमो	ऽऽ	ऽऽ	ऽर	ऽ

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
—	मपनि	निसां	—सां	सांम	मम	रेंरे	निसां	सां
ऽ	करत	निबा	ऽस	गोव	रध	नऊ	ऽप	र
प	निसां	रेंनि	धपम	रेम	रेप	पधनि	सांधप	म
नि	रख	तनं	ऽऽद्	किसो	ऽर	वृंदाऽ	ऽबऽ	न

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	रेंम	मप	—प	—धनि	सांध	पम	पम	—
क्यों	—न	भये	ऽबं	ऽसीऽ	ऽकु	लस	जनी	ऽ
नि	निसां	सांनिध	पमग	रेपम	——	रेनि़	—सा	—
अ	धर	पीवऽ	तघऽ	नऽघो	ऽऽ	ऽऽ	ऽर	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग सूर मल्हार

यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है। आरोह में धैवत और गान्धार वर्ज्य है तथापि अवरोह में धैवत लिया जाता है। दोनों निषादों का प्रयोग होता है। वादी स्वर षड्ज और संवादी पंचम है। मध्यम स्वर न्यास है। ग वर्ज्य स्वर है और धैवत स्वर अवरोह में ही किया जाता हैं। यह राग सारंग जैसा दिखाई देता है। मल्हार में मरे मरे की मींड के प्राधान्य से सोरठ राग का भास होता है। निमप और निधप इत्यादि स्वरसे सूर-मल्हार स्पष्ट होता है। मधमध-सारंग और मल्हार के मिश्रण से यह राग उत्पन्न होता है। यह राग अष्टछाप के सूरदासजी ने निर्माण किया है, जो वर्षाऋतु के अन्य मल्हारों के समय तक गाया जाता है।

(चोखडा) राग सुर मल्हार—ताल चंपक (अर्ध आडाचौताल)

सरस हिंडोरना माई झूले श्रीगोकुलचन्द ॥ध्रुव॥
द्वे खंभ कंचन के मनोहर रतनजटित सुरंग।
चार डांडी सरल सुंदर निरखि लज्जित अनंग।
पटली पिरोजा लाल लटकत झूमका बहुरंग।
मरुवे मानिक चूनी लागी बिच बिच हीरा तरंग ॥१॥
नव कुंज कुंज झुलाइ झुलवति सहचरी चहुँ ओर।
मनहु कुमुदिनी कमल फूले निरखि जुगल-किसोर।
ब्रजवधू तृन तोरि ड़ारती देति प्रान अंकोर।
'कृष्णदास' ब्रजवास दीजे नागर नंदकिसोर ॥४॥

स्थायी

नि	नि	म	प
स	र	स	हिं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१	२		३		४		१	२		३		४	
रें	नि	सां	नि	प	म	प	नि	नि	प	म	रे	म	प
डो	—	र	ना	—	मा	ई	झू	ले	श्री	गो	—	कु	ल
नि	ध	प	म	प	नि	सां	रें	नि	सां	नि	प	सां	—
चं	—	द	स	र	स	हिं	डो	—	र	ना	—	ढे	—

चलति

१	२		३		४		१	२		३		४	
सां	—	सां	नि	ध	म	प	सां	—	सां	नि	ध	प	प
खं	—	भ	कं	—	च	न	के	—	म	नो	—	ह	र
म	प	प	ध	नि	ध	प	म	—	रे	म	—	प	—
र	त	न	ज	टि	त	सु	रं	—	—	—	—	ग	—
सां	—	सां	नि	—	प	निध	नि	सां	सां	नि	ध	प	पं
चा	—	र	डां	—	डी	—	स	र	स	सुं	—	द	र
म	प	प	ध	नि	ध	प	म	—	प	म	—	नि	नि
नि	र	खि	ल	ज्जि	त	अ	नं	—	—	ग	—	प	डु

चलति

१	२		३		४		१	२		३		४
नि	—	नि	नि	—	सां	—	रें	मं	रें	सां	नि	सां सां
ली	—	पि	रो	—	जा	—	ला	—	ल	ल	ट	क ब

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें — रें	सां —	सां सां	नि — प	नि सां	सां सां
झू — म	का —	ब हु	रं — —	ग —	म रु
सां — —	सां —	सां सां	नि प प	नि —	सां —
बें — —	मा —	नि क	चू — नी	ला —	गी —
रेंरें मं मं	रें सां	निसां रेंसां	नि ध प	म प	नि सां
बिच बि च	ही —	रा— त—	रं — ग	स र	स हिं

राग धूलिया मल्हार

इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के प्रथम खण्ड में पृष्ठ १८९ पर नायक घोंघी का वर्णन किया गया है। यह राग उसीकी देन होना सम्भवित है। जैसे घोंघी का घोंदी; धूंडी नाम अपभ्रंश हुआ है उसी प्रकार धूंडिया–मल्हार का अपभ्रंश धूलिया मल्हार नाम प्रचलित होना असम्भवित नहीं है।

थाट काफी है। आरोह में ग वर्ज्य और अवरोह सम्पूर्ण है। दोनों निषाद लिये जाते हैं। वादी स्वर रे, संवादी प हैं। सोरठ–मल्हार से मिलते झूलते इस राग की भिन्नता यह है कि सोरठ में गान्धार मींड में लिया जाता है। और ये दोनों गान्धार स्पष्ट रूप से लिये जाते हैं। दोनों गान्धार का प्रयोग गरेगसा तथा रेगरेसा इस स्वरस्वरूप से सोरठ-मल्हार से भिन्न होता है। सम्प्रदाय की प्रणाली-अनुसार इसी प्रकार को धूलिया–मल्हार कहने का सद्‌गत प्रसिद्ध कीर्तन-कार चन्दनजी तथा लालमजी चौबे का समर्थन लेखक को प्राप्त हुआ था। अतः यह राग देस और मल्हार से तथा सोरठ और मल्हार के मिलने से बना हुआ समझा जायेगा।

आरोह :—सा, रे, प, मपधनि, निसां।

अवरोह :—रेंनिधप, मगरेगसा, रेगरेसा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग धूलिया मल्हार—ताल आडा चौताल (मात्रा १४)

जहाँ तहाँ बोलत मोर सुहाये ।
सावन रमन भवन वृंदावन घोर–घोर घन आये ॥१॥
नेन्ही नेन्ही बूंदन बरखन लाग्यो ब्रजमंडलपें छाये ।
'नंददास'प्रभु संग सखा लिये कुंजन मुरली बजाये ॥२॥

स्थायी

×		२		०		३		०		४		०	
नि	—	नि	—	सां	—	सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा
बो	—	ल	—	त	—	मो	—	—	—	र	—	—	सु
रे	—	प	—	—	प	धनि	सां	ध	प	म	प	म	—
हा	—	ये	—	—	ज	हां–	—	—	त	हां	—	—	—
रे	—	रे	ग	रे	सा	रे	—	प	—	ध	म	ग	रे
बो	—	ल	त	—	—	मो	—	—	—	र	—	—	सु
प	—	म	—	—	—	ग	रे	ग	—	ऩि	—	सा	—
हा	—	ये	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अन्तरा

×		२		०		३		०		४		०	
म	प	नि	—	नि	—	सां	—	सां	—	सां	—	नि	सां
सा	—	व	—	न	—	र	—	म	—	न	—	भ	—
रें	—	रें	गं	रें	सां	रें	—	नि	—	सां	—	सां	—
वं	—	न	—	वृं	—	दा	—	—	—	व	—	न	—

नि	—	सां	—	रें	—	नि	ध	प	ध	म	ग	रे	सा
घो	—	र	—	घो	—	—	—	र	—	घ	—	न	—
म	रे	प	—	—	प	धनि	सां	ध	प	म	प	म	—
आ	—	ये	—	—	ज	हां	—	—	—	त	—	हां	—

संचारी

×		२		०		३		०		४		०	
म	—	म	रे	म	—	प	—	प	—	ध	नि	प	—
ने	—	न्ही	—	ने	—	न्ही	—	बूं	—	द	—	न	—
म	प	धनि	सां	ध	प	म	—	प	—	ध	म	ग	रे
ब	—	र	—	ख	न	ला	—	—	—	ग्यो	—	—	—
नि	सा	रे	—	प	प	म	ग	रे	ग	रे	ग	रे	सा
ब्र	ज	मं	—	ड	ल	पें	—	—	—	छा	—	ये	—

राग नट मल्हार

थाट काफी और वादी मध्यम, संवादी षड्ज है तथा जाति सम्पूर्ण है । राग नट और मलहार के संयोग से यह राग उत्पन्न हुआ हैं । सम्प्रदाय में वर्षाऋतु की प्रणाली—अनुसार के समय तक यह राग गाया जाता है ।

राग नट मल्हार—ताल तिताल (मात्रा ८)

वा पट पीत की फहरान ।
कर गहि चक्र चरनकी धावनि, नहिं बिसरत वह बान ॥१॥
रथतें उतरि अवनि आतुर व्हे कचरज की लपटान ।
मानों सिंह सैलतें उतर्यो महामत्त गज जान ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धन्य गोपाल मेरो पन राख्यो, मेटी बेदकी कान ।
सोई अब ‘सूर’ सहाय हमारे, प्रगट भये हरि आन ॥३॥

स्थायी

३	×	२	०	३	×	२	०
म	रेप	मपधनि	सांधनि	पप	रेगम	पम	—रे सा
बा	—प	टपी—	——	तकी	—फ—	हरा	—— न

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३
म	मप	निसां	—सां	सांम	पनि	सांरें	निध प
क	रग	हिंच	—क्र	चर	नकी	—धा	—व न
रें	गंगंमं	पंगंमं	रेंसांनि	सांध	निप	मम	रेम प
न	हिंवि—	सर—	तव—	हवा	——	नवा	—प ट

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३
म	मम	मगप	पम	पनिध	सांधनि	पम	पम ग
र	थ तें	——उ	तरि	अव—	निआ	—तु	रहे —
रे	रेगरेसा	निसागरे	गम	पम	गम	सारे	—सा —
—कच	र—	ज—की—	—ल	पटा	——	——	—न —

राग—जोगिया आसावरी

पुवाँगमें जोगिया और उत्तरांगमें आसावरी से बना हुआ औडव—संपुर्ण जातिका रे ध नि कोमल स्वरका यह राग पद संग्रहोंमें आसावरीके अंतर्गत प्राप्त होते है प्रायः छट्ठीके रोज पलना समय तथा जोगी लीलामें गाये जानेवाला “बाला मे जोगी जश गाया” यह पद सुना है तदनुसार दिया जा रहा है। पुरा पद वर्षोत्सव संग्रहमें देखिये ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी (ताल—धमार, दीपचन्दी अंग)

×			२		३		०			४		५	
सां	—	—	सां	—	—	—	रें	नि	—	ध	—	प	—
में	—	—	जो	—	—	—	गी	—	—	ज	—	स	—
नि	—	—	ध	—	प	—	म	ग	म	प	—	—	—
गा	—	—	या	—	—	—	बा	—	—	ला	—	—	—
नि	—	—	ध	—	प	—	म	ग	—	म	—	प	—
में	—	—	जो	—	—	—	गी	—	—	ज	—	स	—
म	—	—	रे	—	—	—	सा	—	—	म	—	प	म
गा	—	—	—	—	—	—	या	—	—	बा	—	ला	—

अन्तरा

×			२		३		०			४		५	
म	—	—	प	—	ध	—	सां	—	—	सां	—	—	—
ध	—	—	न्य	—	ज	—	सो	—	—	द्रा	—	—	—
रें	—	—	रें	—	सां	—	मं	रें	—	सां	—	—	—
ते	—	—	रे	—	या	—	त	न	—	को	—	—	—
रें	सां	—	ध	—	प	—	म	—	—	प	—	ध	—
ज़ि	न	—	ऐ	—	—	—	सा	—	—	सु	—	त	—
नि	—	—	ध	—	प	—	ध	म	—	प	—	—	—
बा	—	—	या	—	—	—	बा	—	—	ला	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टछापीय भक्तिसंगीत

उद्भव और विकास

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

चतुर्थ खण्ड

चम्पकलाल छ. नायक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग नट–संक्षिप्त विवरण

यह प्राचीन राग पुष्टिसम्प्रदाय के मुख्य रागों में माना जाता है। सायंकालीन सेवा के प्रथम तथा दूसरे दर्शन (भोग–समय) में अधिकतर इसी राग के पद गाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त "नटनारायण" राग का भी क्वचित् उल्लेख दृष्टिगत होता है, किन्तु यह अल्पसंख्यक होने से प्रचार में नहींवत् है। नट राग के निकट का 'छाया–नट' राग भी प्रचार मे हैं, किन्तु कीर्तनसंग्रहों में एवं परम्परा में 'नट' का ही व्यवहार है। नट एवं छायानट की भिन्नता इसके वादी, संवादी, थाट, जाति, चलन के अतिरिक्त दोनों मध्यमों के प्रयोग से स्पष्ट होती है।

शास्त्रग्रन्थों में नट को कहीं 'नाट' भी कहा गया है तथा थाट शंकराभरण माना गया है। नट का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी षड्ज हैं। कोमल निषाद का भी कहीं कहीं प्रयोग किया जाता हैं। सांनिधनिप, रेगमप, सारेसा स्वर रागवाचक हैं।

उठाव : सा, ग, म, पगम, रेगमप, मग, मरे, सा.

चलन : सा, ग, गम, म, पम, ग, ग, म, प, सांधनिप, मग, रे, ग, मप, सारेसा.

राग नट–ताल अर्ध–आडाचौताल

प्रीतम प्रीति ही तें पैयें।
यद्यपि रूप गुण सील सुघरता, इन बातन न रिझैयें ॥१॥

सतकुल जनम करम सुभ लच्छन, वेद पुरान पढैयें।
'गोबिंद'प्रभु बिन स्नेहसुवा को, रसना कहा जु नचैयें ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×	२		३		४		×	२		३		४	
म	—	गम	प	—	ध	निध	सां	धनि	प	प	रे	ग	म
प्री	ऽ	तिऽ	हा	ऽ	तें	ऽऽ	पै	ऽऽ	ये	प्री	ऽ	त	म
ध	नि	प	रे	ग	गम	प	म	रे	सा	ध	प	रेग	मप
प्री	ऽ	ति	ही	ऽ	तेंऽ	ऽ	पै	ऽ	यें	प्री	ऽ	तऽ	मऽ

अन्तरा

×	२		३		४		×	२		३		४	
म	प	प	सां	सां	रें	सां	ध	धनि	सांरें	सां	निसां	ध	निप
य	द्य	पि	रू	प	गु	न	सी	लऽ	सुऽ	ध	रऽ	ता	ऽऽ
म	म	गग	प	प	निध	सां	रेंसां	धनि	प	ध	प	रेंग	मप
इ	न	बाऽ	त	न	नऽ	रि	झैंऽ	ऽऽ	यें	प्री	ऽ	तऽ	मऽ

संचारी

×	२		३		४		×	२		३		४	
सांनि	सां	सां	सां	सां	ध	प	धनि	ध	प	प	रे	ग	म
सत	कु	ल	ज	न	म	क	रम	सु	भ	ल	ऽ	च्छ	न
नि	ध	प	रे	ग	गम	प	म	—	—	रे	—	सा	—
वे	द	पु	रा	ऽ	नऽ	प	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यें	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग नट–ताल चर्चरी (झपताल अंग)

रूप देख नेना पलक लागें नहीं ।
गोवरधनधरके अंग–अंग पर दृष्टि परत चित रहत तहीं तहीं ॥१॥
कहा कहों अंग अंगकी बानिक चित चोर्यो मागदही ॥
'कुंभनदास'प्रभुके मिलनकी सुंदर बात सखियनसों कही ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
सां	सांध	ध	नि	प	ध	–	प	–	प
रू	प–	दे	–	ख	ने	–	ना	–	प
रे	रे	ग	म	प	मग	म	सा	रे	सा
ल	क	ला	–	–	गें–	–	न	हीं	–

अन्तरा

×		२			०		३		
प	–	प	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां
गो	–	व	–	र	ध	न	ध	र	के
निसां	गं	गं	गंमं	पं	मंगं	मं	रें	–	सां
अं–	–	ग	अं–	–	ग–	–	प	–	र
ध	प	म	–	मग	प	प	सां	धनि	प
दृ	–	ष्टि	–	प–	र	त	चि	––	त
रें	सां	ध	नि	प	प	रे	रे	ग	म
र	ह	त	–	त	हीं	–	त	हीं	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		२			०		३		
म	—	म	—	मग	प	—	प	—	प
क	—	हा	—	क—	हूं	—	अं	—	ग
ध	नि	ध	प	—	प	रे	रे	ग	म
अं	—	ग	की	—	बा	—	नि	क	—
सां	ध	ध	नि	प	प	—	रे	—	ग
चि	—	त	—	—	चो	—	यों	—	—
रे	ग	ग	म	प	मग	म	रे	सा	—
मा	—	ग	—	द	ही—	—	—	—	—

राग पूर्वी, सं. विवरण

सम्प्रदाय की नित्यकीर्तनप्रणाली के मुख्य रागो में पूर्वी राग का स्थान आवश्यक है। नित्यक्रम के उपरान्त बधाई और त्यौहारों में भी इस राग के पद गाये जाते हैं। यह राग भोग तथा संध्या के दर्शन-समय गाया जाता है। हस्तलिखित संग्रहों में पूर्वी के अतिरिक्त कहीं कहीं पूर्या का भी उल्लेख प्राप्त होता है। गत शताव्दी के वृद्ध कीर्तन-कारों से पूर्वी के दो प्रकार सुने जाते थे। एक मारवा थाट की और दूसरी पूर्वी थाट की, किन्तु आजकल दोनों मध्यमोंवाली पूर्वी अनुसार का स्वरूप भी सम्प्रदाय में मालूम होता है।

अष्टछापीय गानपरम्परा की दृष्टि से देखा जाय तो पूर्वी का थाट मारवा और पूर्वी दोनों थाट माना जायगा। पं. भातखण्डेजी ने भी अपने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शास्त्रग्रन्थ के तीसरे पुस्तक में इस प्रकार की पूर्वी की चर्चा करते हुए कहा है कि

"कुछ गायक वादक पूर्वी में धैवत तीव्र मानते हैं।"

(पृ. १५१, भा. ३)

"पूर्वी में कोई तीव्र धैवत भी मानते हैं"

"उत्तर की ओर प्रबास करते हुए मैने वह प्रकार सुना था।"

(पृ. २७)

तथापि हमने कोमल धैवत का भी प्रयोग करते हुए वृद्ध कीर्तनकारों को सुना है, जिनमें केवल तीव्र मध्यम के 'पूर्या धनाश्री' राग के समान स्वरूप था।

कीर्तनसंग्रहों में पूर्वी राग के पदों को 'पूर्या' के अन्तर्गत उल्लेख करने का यह भी कारण है कि उस समय कुछ गायक–वादक आज की पूर्या धनाश्री को दिन की पूर्या से पहिचानते थे। सम्भव है कि समयान्तर दिन की 'पूर्या' का नाम 'पूर्या धनाश्री' में परिवर्तन हुआ हो, किन्तु पूर्या के साथ धनाश्री का सम्बन वहुत से लोगो की समझ मे नहि आता। इस प्रकार मारवा थाट की पूर्वी का उत्तरांग में कल्याण की छाया प्रगट होने के कारण "पूर्वी–कल्याण" नाम प्रचलित होना सम्भवित है।

नाथद्वारा–कांकरोली की गानपद्धति में शुद्ध धैवत की पूर्वी का गान आज भी प्रचार में हैं। आजकल कहीं–कहीं दोनों मध्यमों के प्रयोग वाली पूर्वी का भी कीर्तनगान किया जाता है, जिसको हम आधुनिक प्रकार कहना उचित समझते हैं। कुछ भी हो, हम इस निर्णय पर आना चाहते हैं कि अष्टछाप–गानकी प्राचीन परम्परा मारवा और पूर्वी दोनों थाटों की गायी जाती है, जिसमें रे कोमल, म तीव्र और अन्य सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। गानसमय दिन का अन्तिम प्रहर है। वादी स्वर पंचम और संवादी ऋषभ है। जाति सम्पुर्ण है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आरोहावरोह :—निरे गमंप, मंधनि, सां । रेंनि, धप, मंग, मरे ग, रे सां ।

स्वरविस्तार :—निरे, ग,ग, मं प, मं ध नि, धप, नि ध प,निनिध प, मं ग रे सा ।

दूसरा प्रकार :

आरोहावरोह :— निरेगमंप, धप, निसां । रेंनिधप, मंग, मरेग, रेसा.

राग पूर्वी (पूर्वी थाट)-ताल त्रिताल

कदंब चढि कान्ह बुलावत गैया ।
मोहनमुरलीको सब्द सुनत ही, जहां तहांतें उठि धैया ।।१।।
आवो आवो सखा सिमिट सब, पाई हे इक ठैया ।
'गोविंद'प्रभु बलदाऊसों कहन लागें, अब घरको बगदैया ।।२।।

स्थायी

×				२				०				३			
प	—	प	मं	ग	रे	ग	पमं	ग	रे	सा	गमं	ग	रे	नि़	रेग
का	—	न्ह	बु	ला	—	व	त—	गै	——	या,	क	दं	ब	च—	ढि

अन्तरा

×				२				०				३			
मं	ग	मं	ध	सां	सां	सां	सां	नि	रें	गं	मंगं	रें	सां	सां	—
मो	—	ह	न	मु	र	ली	को	स	—	ब्द	सु—	न	त	ही	—
रें	नि	ध	प	प	ध	मं	पमं	ग	मंरे	ग	मं	ग	रे	निरे	ग
ज	हां	त	हां	तें	—	उ	ठि—	धै	——	या	क	दं	ब	च—	ढि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×				२				०				३			
प	ध	प	—	मं	ध	मंध	नि	सां	नि	ध	प	मं	ग	रे	ग
आ	—	वो	—	आ	—	वो	—	स	खा	—	सि	मि	ट	स	ब
ध	—	प	—	मं	ग	मं	रे	ग	—	मं	ग	रे	—	सा	—
पा	—	ई	—	है	—	इ	क	ठै	—	—	—	—	—	या	—

राग पूर्वी, ताल धमार (विलम्बित)

अहो कैसे जान पावोगे हरि होरी में जब जो गये तुम भाज ।
गारी देहूं भरूं भराऊं मुख मांडोंगी आज ।।१।।
हों अपनो मनभायो करिहों सुनि कुंवर व्रजराज ।
जगन्नाथ कविरायके प्रभु माई सकल घोख—सिरताज ।।२।।

स्थायी

										प	प	मं	ग
										अ	हो	—	—
३				×					२		०		
मंरे	ग	मं	प	ध	—	प	मं	—	प	मं	ग	मं	—
—	—	कै	से	जा	—	—	—	—	—	—	न	पा	—
ग	—	नि	रे	मं	—	—	ग	—	रे	—	ग	—	—
वो	—	गे	—	ह	—	—	रि	—	—	—	हो	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	रे	सा	—	सा	नि	रे	ग	—	—	मं	ग	रे	सा		
री	—	मैं	—	ज	ब	—	जो	—	—	ग	ये	—	—		
नि	रे	ग	मं	प	—	—	मं	ध	रें	नि	मं	—	ग		
—	—	तु	म	भा	—	—	ज	—	—	अ	हो	—	—		

अन्तरा

×					२		०			३			
मं	—	ध	सां	—	—	नि	रें	—	—	सां	—	—	—
गा	—	—	री	—	—	—	दे	—	—	हूं	—	—	—
नि	—	रें	गं	—	रें	सां	सां	नि	—	नि	ध	प	—
भ	—	—	रूं	—	—	भ	रा	—	—	ऊं	—	—	—
पध	मं	—	मं	—	ग	—	मं	—	ध	नि	—	सां	रें
मुऽ	ख	—	मों	—	—	—	डों	—	—	गी	—	—	—
नि	ध	प	मं	ध	रें	नि	मं	—	ग	मरे	ग	मं	प
आ	—	—	ज	—	—	अ	हो	—	—	——	—	कै	से

राग पूर्वी—ताल अर्ध आडाचौताल

हमें ब्रजराज लाडिलेसों काज ।
यस अपयसको हमे कहा डर कहिनो होइ सो कहि लेहो आज ॥१॥
केंघो काहु कृपा करीधों न करीजो सन्मुख ब्रजनृप—जुवराज ।
'गोविंद'प्रभुको कृपा चाहिये जो हैं सकल घोख—सिरताज ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

३		४		×		२		३		४			×	२	
मं	ग	रे	ग	प	—	प	मं	ग	मंरे	ग	मंग	रे	सा
ह	में	ब्र	ज	रा	—	ज	ला	डि	ले—	सों	का—	—	ज

अन्तरा

×	२		३		४		×	२		३		४	
मं	ग	—	मं	ध	नि	—	सां	सां	—	सां	—	—	सां
ज	स	—	अ	—	प	—	ज	स	—	को	—	—	ह
नि	रें	—	गं	—	—	गं	मं	गं	रें	सां	—	सां	—
मे	—	—	—	—	—	क	हा	—	—	ड	—	र	—
नि	नि	रें	नि	ध	प	—	ध	प	—	मं	—	ग	ग
क	हि	-	नो	—	—	—	हो	इ	—	सो	—	—	क
मं	ध	—	नि	सां	नि	ध	धप	मं	ग	मं	ग	रे	ग
हि	—	—	ले	—	हो	—	आ—	—	ज	ह	मे	ब्र	ज

संचारी

×	२		३		४		×	२		३		४	
प	प	ध	प	—	प	प	ध	प	प	मं	ग	मंरे	ग
कें	धो	—	का	—	हु	क	पा	क	री	धों	न	क—	री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म मध प प —	ग रे	नि रे ग ग	म ग	रे सा
बो — — स न्मु ख	ब्र ज	नृप यु व	रा —	— ज

राग—पूर्वी, ताल—चौताल

आइ हों अकेली आज सांझीके कुसुम लेन भलो मिल गयो तू मोय जात हि घर गाय ले ।। बरखत बनघोर मेह तामें कुछ सुझत नाहिं चुनरी चटक रंग नीरते बचाय ले ।।१।। चपला चमक चकचोंधी तें डरत हो फरे, निरमोहि अंग संग क्यों न लगाय ले ।। 'सूरदास' मदनमोहन तुम कहावत सुजान छाडि मान तजि सयान कामरी उढाव ले ।।२।।

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	प	म	ग	म	ग	रे	सा	—	सा
आ	—	इ	हों	—	अ	के	—	ली	आ	—	ज
नि़	रे	ग	रे	ग	—	म	ग	रे	ग	—	ग
सां	—	झी	—	के	—	कु	सु	म	ले	—	न
प	प	—	म	ग	ग	म	ध	नि	सां	—	सां
भ	लो	—	मि	ल	ग	यो	—	तू	मो	—	य
रें	नि	ध	प	प	प	म	—	ग	म	रे	ग
जा	—	त	हि	घ	र	गा	—	य	ले	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	ग	म	ध	म	ध	मध	निसां	सां	सां	—	सां
ब	र	ख	त	घ	न	घो—	— —	र	मे	—	ह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	–	रें	गं	रें	गं	मं	गं	रें	सां	–	सां
ता	–	में	–	क	कु	सु	झ	त	नां	–	हिं
सां	–	नि	ध	प	प	म	–	ग	म	–	ग
चू	–	न	री	–	च	ट	–	क	रं	–	ग
मध	निरें	नि	ध	प	प	म	ग	ग	म	रे	ग
नी–	––	र	तें	–	ब	चा	–	य	ले	–	–

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	–	प	प	–	प	ध	–	म	ग	–	ग
च	–	प	ला	–	च	म	–	क	च	–	क
नि	–	रे	ग	–	ग	म	ग	रे	रे	–	ग
चौं	–	धी	तें	–	ड	र	–	त	हो	–	–
नि	–	रे	ग	रे	ग	प	–	प	ध	प	प
ए	–	रे	–	नी	र	मो	–	हि	अं	–	ग
मध	निसां	नि	ध	प	प	म	ग	–	ग	मरे	ग
सं–	––	ग	क्यों	–	न	ल	गा	–	य	ले–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग पूर्वी—कल्याण, ताल चौताल

आगें गाय पाछें गाय इत गाय उत गाय,
गोविंदको गायनमें बसवोइ भावे ।
गायनके संग धावे गायनमें सचुपावे,
गायनकी खुररेनु अंगसों लगावे ॥१॥

गायनसों ब्रज छायो वैकुंठको बिसरायो,
गायनके हित गिरि कर ले उठावे ।
'छीतस्वामी' गिरिधारी विठ्ठलेस—वपुधारी,
ग्वारियांको भेख धरी गायनमें आवे ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	म॑	—	ग	म॑	ग	रे॒	ग	—	ग
आ	—	गें	गा	—	य	पा	—	छें	गा	—	य
नि़	—	रे॒	ग	—	ग	म॑	ग	रे॒	सा	—	सा
इ	—	त	गा	—	य	उ	—	त	गा	—	य
म॑	ग	ग	रे॒ग	प	प	म॑	ध	नि	सां	—	सां
गो	—	विं	द्—	—	को	गा	—	य	न	—	में
रे॒	नि	ध	प	—	प	ध	प	म॑	ग	मरे॒	ग
ब	स	—	वो	—	इ	भा	—	—	वे	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	—	मं	ग	मं	ध	नि	सां	सां	रें	—	सां
गा	—	य	न	—	के	सं	—	ग	धा	—	वे
नि	—	रें	गं	—	गं	मं	गं	रें	रें	सां	सां
गा	—	य	न	—	मैं	स	चु	—	पा	—	वे
नि	—	ध	प	—	प	मं	ग	—	मं	ध	नि
गा	—	य	न	—	की	खु	र	—	रे	—	नु
रें	नि	ध	प	—	प	प	—	मं	ग	मरे	ग
अं	—	ग	सों	—	ल	गा	—	—	वे	—	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	प	मं	ध	नि	ध	प	प	—	प
गा	—	य	न	—	सों	ब्र	—	ज	छा	—	यो
मं	—	ग	ग	—	ग	मं	ग	रे	रे	सा	सा
वै	—	कुं	ठ	—	को	बि	स	—	रा	—	यो
नि़	—	रे	ग	—	ग	मं	ध	नि	ध	प	—
गा	—	य	न	—	के	हे	—	त	गि	रि	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मं	ग	—	ग	—	ग	मं	ग	रे	रे	सा	—
क	र	—	ले	—	उ	ठा	—	—	वे	—	—

राग जेतश्री

यह प्राचीन राग है । सम्प्रदाय की प्रणाली में होली हिंडोला इत्यादि त्यौहारों के दिनों में यह राग गाया जाता है । थाट पूर्वी है । कोई मारवा थाट भी मानते हैं, * किन्तु हमारी परम्परानुसार ही नहीं, किन्तु ओर भी वृद्ध कीर्तनकारों से पूर्वी थाट में सुना हे ।

शास्त्रीय ग्रन्थों में भी संगीतपारिजात * (श्लोक नं. ४६५) एवं राग विवोध ग्रन्थ में रे, ध दुर्बल और थाट पूर्वी कहा गया हैं । वादी पंचम और संवादी षड्ज है । कोई गान्धार वादी, संवादी निषाद मानते हैं । स्वर री ध कोमल और मध्यम तीव्र हैं । आरोह में री ध वर्ज्य होने से जाति औडव सम्पूर्ण मानी जाती है । समय दिन का चतुर्थ प्रहर हैं ।

पकड़ः–निसा, गप, मंधप, मंग, मंगरेसा ।

विस्तार : (१) सा,नि रेसा, ग, प, मं ध मंग प, मं ग रेसा, सा रे सा ।

(२) पमंप, नि, सा रे रेसा, नि, सां, रेंसां, निरेंनि ध प, मं धप, मंग, मंगरेसा ।

(३) मं ग मं ध प, सां, रें सां, गं रें, निसां रें नि ध ध, मं प, नि धप, मं प, मं ग, मं ध मं ग, प ग रे सा ।

राग जेतश्री—ताल धमार

सोभा सकलसिरोमनि हो दंपति झूलें डोल । मोहनराय झूलही ॥
कनकखंभ मरकत मनि हीराRतन अमोल ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चोकी पन्ना पात मनोहर रची रत्ननकी पांत ।
मुक्तामाल सुहावनी कहा वरनों बहुभांत ॥२॥
× × × ×
सुर कुसुमन वरखा करें लीला देखें आय ।
'आसकरन'प्रभु मोहनको जस रह्यो सकल जगछाय ॥११॥

स्थायी

×					२		०				३			
प	—	प	ग	रे	सा	नि	सा	ग		रे	ग	मं	प	—
सो	—	भा	स	क	ल	सि	रो	—		म	नि	—	हो	—
मं	ग	ग	मं	प	नि	सां	सां	नि		ध	प	मं	ग	रे
दं	प	ति	झू	—	लें	—	डो	ल		मो	ह	न	रा	य
निसा	ग	सा	ग	मं	प	—	मं	ग		रे	सा	—	—	—
झू—	—	ल	ही	—	हो	—	झू	—		ल	ही	—	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
रें	सां	—	नि	ध	प	प	मं	ग	मं	ग	रे	सा	सा
हा	रा	—	र	त	न	अ	मो	ल	मो	ह	न	रा	य
निसा	ग	सा	ग	मं	प	—	मं	ग	रे	सा	—	—	—
झू—	—	ल	ही	—	हो	—	झू	—	ल	ही	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×					२		०			३			
प	—	प	मं	—	ग	—	सा	ग	सा	ग	मं	प	प
चो	—	का	प	—	न्ना	—	पा	त	म	नो	—	ह	र
मं	ग	मं	ग	रे	सा	नि	सा	—	ग	रे	—	सा	—
र	ची	र	त्न	न	की	—	पां	—	—	—	—	त	—

राग गौरी, सं. विवरण

यह राग प्राचीन एवं ग्रन्थोक्त है । सम्प्रदाय की सायंसेवाप्रणाली में सन्ध्यारती समय गाये जानेवाले रागों में यह राग प्रमुख कहा जायगा । अष्टछापीय परम्परा में गौरी विविध प्रकार की बंदिसों में गायी जाती है । यह पूर्वी और भैरव दोनो थाटों में प्राप्त होती है । स्वरों की दृष्टि से यह चार प्रकारों से गाने की प्रथा है ।

नित्यसेवाप्रकार के क्रममें पूर्वी थाट की गौरी के पद और भैरव थाट की गौरी के पद अधिकतर सांझी, होरी–धमार आदि त्यौहारों के पाये जाते हैं । पूर्वी थाट की गौरी में कुछ पदो में (१) केवल तीव्र मध्यम की, (२) दोनों मध्यमों के वाली और भैरव थाट की गौरी में (१) केवल शुद्ध मध्यम की (२) कोमल निषाद के प्रयोगों वाली गायी जाती है । आजकल प्रचार में पूर्वी थाट की गौरी में धैवत वर्ज्य कर के गाने की प्रथा है, किन्तु यहाँ आरोह में धैवत वर्ज्य नहीं है ।

जाति सम्पूर्ण है । वादी रे, संवादी पंचम हैं । समय सायंकाल सर्वसंमत है ।

उठाव (पुर्वी थाट) :– प, मंग, रें ग, रें सा, मंध, निसांरे सां, रें निध प, पमंग रे, ग रे, सा, साप, पमंगरे, गरेसा, नि, सां, रें निधप,

---

* इस प्रकार की गौरी में गाये जानेवाले पदोंका राग माली–गौरीया मालव–गौरी कहा जाता था । लिखित पदसंग्रहोमें यह उल्लेख दृष्टिगोचर होता है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उठाव (भैरव थाट) :– सानि धनि, रेग रेम,

,, ग रे सा रे नि, सा ।

सा नि ध नि, रे ग रे म, ग रे सारे, निनिसा, म ध निसा, धनिसा,

मम रे ग, रे, सा; मप ध पम, रे ग, रे रे सा, नि,सा,

मप ध पम, ध पम, रे ग, रे सा ।

राग गौरी (पूर्वी थाट)–ताल धमार

चल सखी चल अहो ब्रज पेंढ लगी हैं जहां बिकात हरिप्रेम ।
सठ सौंघों प्राननके पलटे उलट धर्यो यह नेम ॥१॥
आनि भांति पाइवो दुरलभ, कोटिक खरचो हेम ।
"रामदास"प्रभु रत्न अमोलिक सखी पाइयत एम ॥२॥

स्थायी

३				×					२		०		
म	ध	नि	सां	रें	–	सां	नि	ध	प	प	मप	ध	ध
च	ल	स	खी	च	–	ल	अ	हो	ब्र	ज	पें–	ढ	ल
म	ग	रे	सा	म	ग	ग	म	ध	नि़	सां	नि	ध	प
गी	–	है	–	ज	हां	बि	का	त	ह	रि	प्रे	–	म

अन्तरा

×					२		०			३			
ध	म	ध	नि	–	सां	–	रें	रें	रें	गं	रें	सां	–
स	ठ	–	सौं	–	घो	प्रा	न	न	के	प	ल	टे	–
निसां	नि	ध	प	–	म	ध	नि	ध	प	म	ध	नि	सां
उल	टि	ध	र्यों	–	य	ह	ने	–	म	च	ल	स	खी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×					२		०			३			
सां	नि	रें	नि	ध	प	प	मं	ध	नि	ध	प	म	प
आ	–	नि	भां	–	ति	पा	इ	बो	–	दु	र	ल	भ
ध	ध	ध	मं	ग	रे	–	ग	रे	–	सा	–	–	–
को	टि	क	ख	र	चो	–	हे	–	–	म	–	–	–

राग गौरी—(पूर्वी थाट) ताल धीमा त्रिताल

बनतें आवत गावत गोरी ।
मुरली अधर धरें नंदनंदन मानों लगी ठगोरी ॥१॥
याहीतें कुलकान हरी है ओढे पीत पिछोरी ।
ब्रजवधू अटनि चढि देखत रूप निरखि भई बोरी ।
"नंददास" जिन हरिमुख देख्यो तिनको भाग वडोरी ॥२॥

स्थायी

३				×				२				०			
प	ध	नि	रें	सां	–	नि	ध	प	–	ध	मं	ग	रेग	रे	सा
ब	न	तें	–	आ	–	व	त	गा	–	व	त	गो	––	री	–

अन्तरा

×				२				०				३			
ध	पध	नि	–	सां	सां	सां	सां	रें	–	रें	रें	गं	रें	सां	सां
मु	र–	ली	–	अ	ध	र	ध	र	–	नं	द	नं	–	द	न
नि	–	सां	नि	ध	प	ध	मं	ग	रे	सा	–	प	ध	नि	रे
मा	–	नों	–	ल	गी	–	ठ	गो	–	री	–	ब	न	तें	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×				२				०				३			
प	–	प	–	प	–	प	प	मं	–	ध	ध	प	मं	ग	–
या	–	ही	–	ते	–	कु	ल	का	–	न	ह	री	–	हे	–
रे	–	रे	–	सा	–	सा	सा	ध	–	म	ग	रे	–	सा	–
ओ	–	ढे	–	पी	–	त	पि	छो	–	–	–	–	–	रा	–

राग गौरी–ताल आदिताल (मात्रा–८) (पूर्वी थाट)

लटकत चलत जुवति सुखदानी ।
संध्यासमें सखा मंडलमें, सोभित तन गोरज लपटानी ॥१॥
मोरमुकुट गुंजा पीयरो पट, मुखमुरली कूजत मृदुबानी ।
'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधारी आए बनतें, ले आरती वारत मंदरानी ॥२॥

स्थायी

०	३	×	२	०	३	×	२
म	धनि	निसां	सांसां	निसांनि	धमप	धमं	गरे सा
ल	टक	तच	लत	जु–व	तिसु–	खदा	–नी –

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३
रें	–रें	–रें	रें–	रेंगं	रेंसां	–सां	सांसां –
सं	–ध्या	–स	में–	सखा	–मं	–ड	लमें –
नि	–नि	निसां	निध	पम	धनि	सांरें	निध –
सो	–भि	तत	नगो	–र	जल	पटा	–– ––

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	—मं	गमं	ध	नि	सां		
—	—नी	—ल	ट	क	त		

संचारी

×		२		०		३		×		२		३		४	
ध	—प	पप	प	प	—	मं	—ध	निनि	धप	प					
मो	—र	मुकु	ट	गुं	—	जा	—पि	यरो	—प	ट					
प	पप	पमं	—ध	—	मं	धनि	सांरें	—सां	—						
मु	खमु	रली	—	गुं	—	ज	तमृ	दुबा	—नी	—					

राग गौरी (पूर्वी थाट)—ताल धमार

वे देखो आवत हे गिरिधारी ।
कछुक गाय आगें अरु पाछें सोभित संग सखारी ॥१॥
खसि रही पाग लटपटी सुंदर अपने हाथ संवारी ।
मोतिनकीं लर उर ऊपर झरकत वनमालारी ॥२॥
अंग अंग छबि उठत तरंगन कापें जात निहारी ।
श्रीविठ्ठल गिरिधरन सबनमें चाह तिहारी न्यारी ॥३॥

स्थायी

३				×					२					
मं	ध	नि	सां	रें	—	सां	निध	प	ध	मग	रे	—	सा	
वे	—	दे	खो	आ	—	व	त—	हे	—	गिरि	धा	—	री	

अंतरा

×					२		०			३			
पध	नि	नि	सां	सां	सां	—	रें	रें	रें	गं	रें	सां	—
कछु	क	गा	—	य	आ	—	गें	अ	रु	पा	—	छें	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें सां सां नि ध	प प	मप ध मप	मं ध नि सां
सा भि त सं –	ग स	खा– –री–	वे – दे खो

संचारी

×	२	०	३
सांसां नि ध प –	प प	मं ध ध	नि ध प प
खस र ही पा –	ग ल	ट प टी	सुं – द र
मं ध प मं ध	मग रे	ग रे –	सा – – –
अ प ने हा –	थ– सं	वा – –	री – – –

राग गौरी (भैरव थाट)—ताल धमार

स्याम सनेही गाइये तातें वृंदावन रज पाइये हो ।।ध्रु०।।
राधा जिनकी भांवती हो, कुंजन कुंजन केलि हो ।
तरु तमाल रही अरुझी मानों, लसत कनककी चेलि हो ।।१।।
× × × × × × ×
अंग अंग रस रगमगे हो, मगन भये हरि नाह ।
'व्यासस्वामिनी' सुखनिधि पिय संगम सिंधु प्रवाह हो ।।५।।

स्थायी

×	२	०	३
सां – – सां –	सां –	रें सां –	ध – प –
स्या – – म –	स –	ने – –	हा – – –
ध म – म प	नि ध	प म –	रे – रे –
– – – गा –	– इ	ये – –	ता – तें –

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा	—	—	म	—	—	—	म	म	—	म	—	म	—
वृं	—	—	दा	—	—	—	ब	न	—	र	—	ज	—
—	—	—	प	—	मं	रे	रे	—	—	सा	—	—	—
—	—	—	पा	—	—	इ	ये	—	—	हो	—	—	—

अंतरा

×					२		०			३			
रें	—	—	रें	—	—	—	रें	रें	—	रें	—	सां	—
रा	—	—	धा	—	—	—	जि	न	—	की	—	—	—
—	—	—	सां	—	सां	—	सां	—	—	सां	—	—	—
—	—	—	भां	—	व	—	ती	—	—	हो	—	—	—
नि	सां	—	सां	—	रें	—	सां	—	—	नि	—	ध	—
कुं	—	—	ज	—	न	—	कुं	—	—	ज	—	न	—
प	ध	म	प	नि	—	—	सां	—	—	सां	—	—	—
—	—	—	के	—	—	—	लि	—	—	हो	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
सां	सां	—	सां	—	सां	—	नि	ध	—	प	—	म	—
त	रु	—	त	—	मा	—	—	ल	—	र	—	ही	—
प	नि	—	ध	—	प	—	प	म	—	प	—	—	—
अ	रु	—	झी	—	—	—	मा	—	—	नों	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध ध — ध —	ध —	प ध —	प — म —
ल स — त —	क —	न क —	की — — —
— — — प —	म —	रे — —	सा — — —
— — — वे —	लि —	हो — —	— — — —

राग गौरी (भैरव थाट)—ताल त्रिताल मात्रा–८

मेरे मन आनंद भयो हौं तो फूली अंग न समाऊं ।।ध्रु०।।
सात साखको मेरो राजा, जा घर बजत बधायो ।
देव कुसुम बरखत हैं नीके रानी, जसुमति ढोटा जायो ।।१।।

× × × × × × ×

बाजे महा घोर सों बाजत, जसुमति पकरि नचाई ।
'गरीबदास'कों बहो धन दीनो, बहोत पंजिरी पाई ।।४।।

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३	
रें	—रें	—सां	सांसां	—नि	सांनि	धप	मप	नि
मे	—रे	—म	नआ	—नं	—द	भयो	—हौं	तो
रें	—रें	—सां	सांसां	सांनि	सांनि	धप	मप	नि
फू	—ली	—अं	गन	समा	——	—उं	——	—

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
रें	—रें	मं—	मंमं	—गं	मंगं	रेंसां	—सां	—
सा	—त	सा—	खको	—मे	—रो	—रा	—जा	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	सांनि	धप	मम	मप	धरें	—सां	——	—
जा	—व	रब	जात	बधा	——	—ई	——	—
नि	धप	मम	मरे	मप	निध	—प	मप	नि
दे	—व	कुसु	मव	रख	तहँ	—नी	केरा	नी
सां	रेंरें	रेंसां	—सां	—नि	सांनि	धप	मप	नि
ज	सुम	तिढो	—टा	—जा	——	—यो	——	—

राग गौरी (भैरव थाट)—ताल त्रिताल (मात्रा-८)

सब दिन तुम व्रजमें रहो हरि होरी हे।

कवहुं न मथुरा जाओ अहो हरि होरी हे ।। परव करो घर आपनें हरि होरी हे ॥ कुशल केलि निवहो अहो हरि होरी हे ॥१॥

× × × × × × × × × × ×

कान्ह कृपा कर घर रहे बरजे मथुरा जात ।
सरस रसिक मणि राधिका हरि. ।
कही कृष्णसों बात अहो हरि होरी हे ॥२९॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३	—
रें	रेंरें	रेंसां	सांसां	सां—	निसां—	निध	—प	प
स	वदि	नतु	मव्र	ज—	में——	रहो	—ह	रि
ध	रें—	रेंसां	—ध	प—	ममम	मरे	मम	प
—	हो—	रीहे	——	——	कवहुं	नम	थुरा	—
पध	निध	पम	गग	ग—	मग	रेसा	——	—
जा—	—आ	अहो	—ह	रि—	हो—	रीहे	——	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३
मं —|मंमं	मंगं |रेंरें	रें— सांरेंगं	रेंसां |निध	प
प —|रव	करो |कध	र— |आ—	— पनें	—ह |रि
म |पध	रेंसां |—ध	प—	मम |मरे	मम |प
— |हो—	रीहे |——	——	कुश |लके	—लि |नि
पध |निध	पम |गग	ग—	मग |रेसा	—— |—
वा— |—हो	अहो |—ह	रि—	हो— |रीहे	—— |—

राग श्री का परिचय

श्री राग पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है। यह राग प्राचीन एवं ग्रन्थोक्त है। अष्टछापीय संगीतपरंपरा की प्रणाली में यह राग के पद सन्ध्यारती समय गाये जाते हैं। इस रागके पद अधिकतर रास आदि उत्सब त्यौहार के पाये जाते हैं। नित्यकीर्तनप्रणाली में श्री राग का समप्रकृतिक गौरी राग गाया जाता है, किन्तु श्री रागके आरोह में धैवत वर्ज्य होनेसे पुर्वी थाट के गौरी का स्वरूप भिन्न रहता है। आरोह में गांधार और धैवत स्वर वर्ज्य हैं और अवरोह सम्पुर्ण हैं। जाति औडव—सम्पुर्ण है। स्वर रे ध कोमल, मध्यम तीव्र और अन्य शुद्ध स्वर हैं। वादी स्वर ऋषभ और संवादी पंचम हैं। गानसमय सूर्यास्त माना गया हैं। इस राग की प्रकृति गंभीर है। ऋषभ पंचम की संगति मनोरंजक होती है।

आरोहवराह :—सा, रे रे सा, रे मंप, निसां।

सांनि ध, प, मं ग रे,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग रे, रे, सा.

पकड :— सा, रे रे, सा, प म ग, ग रे, रे, सा.

राग श्री—ताल त्रिताल

श्री राग गावत व्रजभामिनी ।
निर्तत कोक कला गुन सुंदरि, सकल भामिनीमें बर कामिनी ॥१॥
मिलवत ततथेई तान बंधान, सरद बिमल ससि राका जामिनी ।
'कृष्णदास' गोवर्धनधारी लाल, रिझयो चाहत स्वामिनी ॥२॥

स्थायी

३	×	२	०
म प नि सां	रें — सां सां	नि नि सां —	नि ध प म
श्री - रा ग	गा — व त	व्र ज भा —	मि नी — श्री
प नि — सां	रें — सां सां	नि धप म गरे	ग रे सा —
— रा — ग	गा — व त	व्र ज— भा ——	मि नि — —

अन्तरा

३	×	२	०
म प नि नि	सां — सां सां	रें — सां सां	नि सां ध प
नि र त त	को — क क	ला — गु न	सुं — द रि
म प नि सां	— रें सां —	प सां नि धप	म ग रे सा
स क ल भा	— मि नी —	में — व र—	का — मि नी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

३				×				२				०			
प	प	प	प	मंप	ध	प	प	मं	—	प	नि	ध	—	—	प
मि	ल	व	त	त—	त	थे	ई	ता	—	न	बं	धा	—	—	न
मं	प	नि	सां	ध	प	प	प	मं	—	प	ध	मं	ग	रे	सा
स	र	द्	वि	म	ल	स	सि	रा	—	का	—	जा	—	मि	नी

राग—श्री, ताल—चर्चरी

जयति जयति हरिदासवर्य धरणे ।
वारि वृष्टि निवार घोख आरति टारी देवपति अभिमान
भंग करणे ॥१॥
जियति पटपीत दामिनि रुचिर वर मृदुल असामलंग
सजल जलद वरणे ।
कर अधर वेणुधर गान कलरव सव्द सहज
ब्रजजुवतीजन चित्त हरणे ॥२॥
जयति वृंदाविपिन भूमिडोलन अखिल लोक बंदन अंबु
ज असित चरणे ।
तरणितनया तट बिहार नंदगोपकुमार कहत 'कुंभनदास' त्वमसि शरणे ॥३॥

स्थायी

							मंप	नि	सां
							ज—	य	ति
×			२		०		३		
रें	रें	रें	सां	सां	नि	ध	प	—	प
ज	य	ति	—	ह	रि	—	दा	—	स
मंप	ध	ध	मं	ग	रेग	रे	मंप	नि	सां
व—	—	र्य	ध	र	णे—	—	ज—	य	ति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×			२		०		३		
मप	ध	प	मं	प	नि	नि	सां	—	सां
वा—	—	रि	वृ	—	ष्टि	निं	वा	—	रि
नि	—	रें	गं	रें	रें	सां	नि	ध	प
घो	—	ख	आ	—	र	ति	टा	—	री
म	प	नि	नि	सां	रें	रें	सां	—	सां
दे	—	व	प	ति	अ	भि	मा	—	न
प	सां	नि	ध	प	म	ग	मप	नि	सां
भं	—	ग	क	र	णे	—	ज—	य	ति

संचारी

×			२		०		३		
रे	रे	सा	प	प	प	—	ध	प	—
ज	य	ति	प	ट	पी	—	त	दा	—
म	ध	प	नि	ध	नि	—	प	—	प
मि	—	नी	—	रु	चि	र	व	—	र
म	मध	म	ग	ग	म	ग	रे	रे	सा
मृ	दु—	ल	अं	ग	सा	—	म	ल	स

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	रे	सा	प	प	मंप	ध	मंग	रे	सा
ज	ल	ज	ल	द	व–	र	ण–	–	–

राग मारू

यह राग प्राचीन एवं सुप्रचलित है । १४ वीं शताब्दीमें 'असाईत' ठाकर–रचित लोकनाटय 'भवाई'वेशों के गीतो में भी यह राग गाया जाता था । गुजरात के भक्तकवि नरसिंह के पदों में भी यह राग का उल्लेख प्राप्त होता है । पश्चात् इस राग की मूल परम्परा अष्टछाप के समय में ही दृष्टिगोचर होती हैं । इस परम्परानुसार हवेलीसंगीत में आज भी यह राग गाया जाता है । आश्विन शुल्क ७ से दशेरा तक भोग– सन्धया के दर्शन में गाये जाने वाले कडखा के पद के एवम हिंडरो के होरी के तथा जन्माष्टमी ढाढ़ी के इत्यादि पदोंमें आज भी कीर्तन गाये जाते हैं । पुष्टिमार्ग को ही इस राग की परम्परा सुरक्षित रखनेका श्रेय कहा जाय तो उचित हैं ।

प्रातःकालीन 'परज' राग इसे मिलता झूलता है तथापि भेद स्पष्ट है । दोनों के बादी संवादी भिन्न हैं । परज में शुद्ध मध्यम का प्रयोग धपगमग होता है । इस राग में सा, ग,मप, मं, पध, होगा । प्रकार शुद्ध मध्यम का अलेप प्रयोग किया जाता है । निषाद से तीव्र मध्यम की मींड रंजक होती हैं । आरोह में रीषभ पंचम अल्प है। थाट पूर्वी है । वादी स्वर प और सांवादी सा है । जाति सम्पूर्ण है । दिन के चतुर्थ प्रहर में गाया जाता है । कोई मारवा थाट भी मामते हैं किन्तु आरोह में कहीं कहीं धैवत् स्वर शुद्ध धैवत की ओर झूकतासा रहता है अतः मारवा थाट मानना उचित नहीं है ।

आरोहावरोह :–सा, ग, मंध, नि, सां । सां नि धप, मं, धनि, मंग, रेसा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वरविस्तारः–(१) सा, ग, मप, धमप, धनि धप, सां, निध, प, मध नि, मं ग रे सा.

(२) मगमप, ध निसा निधप, सां रें निसां, निधप, धनि, म ग रेसा,

(३) म धनि, सां, सांरें निसां, गं, मं गं रें सां, निध नि, मग रे सा.

(४) साग, मध, नि, धप, निसां, गं, मंगं रेंसां धनि, रें निध, प; मधनि ध, प, म ग, रे सा.

राग मारू–ताल त्रिताल (मात्रा आठ)

हिंडोरे झूलत बंसीवाला । मधुवन सघन कदंबकी डारें झूलत गोपाला ॥१॥ कंचन खंभ सुभग चहुंडांडी पटुली परम रसाला । स्वेत-बिछोना बिछायो तापर बैठे मदनगोपाला ॥२॥ झूलनकों आईं ब्रजवनिता बोलत वचन रसाला । 'नंददास' नंदनंदन मुरली सुन मग्न होत ब्रजबाला ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	–ग	गम	धनि	सांरें	सांनि	धप	मप	ध
झू	ऽल	तबं	ऽसी	ऽवा	ऽला	हिंडो	ऽरे	ऽ
सां	–नि	धप	धप	–म	–प	धम	गरे	सा
झू	ऽल	तबं	ऽसी	ऽवा	ऽऽ	ऽला	ऽऽ	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
मं	गमं	धनि	निसां	सांसां	रेंसां	रेंनि	धनि	—
म	ध्रुव	नस	घन	कदं	चकी	ऽडा	ऽरें	ऽ
म	—ग	गमं	धनि	सांसां	—नि	धप	मंप	ध
झू	—ल	तझु	कत	गोपा	ऽला	हिंडो	ऽरे	ऽ

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३	
मं	—ग	मंप	—मं	धनि	निसां	निध	पप	ध
कं	ऽच	नखं	ऽभ	सुभ	गच	हुंडां	ऽडी	ऽ
नि	निसां	रेंसां	निध	पमं	—प	निमं	गरे	सा
प	डुली	ऽप	रम	रसा	ऽऽ	ऽला	ऽऽ	ऽ

आभोग

×	२	०	३	×	२	०	३	
नि	रेंगं	गंमं	गंरें	सांसां	रेंसां	रेंनि	धनि	नि
स्वे	ऽत	बिछौ	ऽना	बिछा	ऽयो	ऽता	ऽप	र
मं	—ग	—मं	धनि	सांरें	सांनि	धप	मंप	ध
बे	ऽठे	ऽम	दन	गोपा	ऽला	हिंडो	ऽरे	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग मारु—ताल चर्चरी

आज रघुवीरको वीर आयो ।
जारि लंका सकल मारि राक्षस बहुत,
सीय—सुधि ले कुसल फिर सिधायो ॥१॥
कहत मंदोदरी सुनहो दसकंध पिय,
बडो अपमान करि गयो तेरो ।
अजहु मन समझिके मूढ मिल रामसों,
'सूर' मतिमंद कह्यो मान मेरो ॥२॥

स्थायी

×			२		०		३		
सां	—	गम	ग	म	प	—	ध	म	ध
आ	ऽ	जऽ	र	घु	वी	—	र	को	—
नि	सां	नि	ध	ऽ	प	—	म	ग	—
वी	ऽ	र	आ	ऽ	यो	—	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

×			२		०		३		
नि	सां	गं	गं	मं	गं	रें	सां	सां	सां
जा	ऽ	रि	लं	ऽ	का	ऽ	स	क	ल
सां	—	सां	सां	—	नि	ध	ध	नि	नि
मा	ऽ	रि	रा	ऽ	क्ष	स	ब	हु	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	ग	ग	म	ध	नि	सां	सां	सां	सां
सी	ऽ	य	सु	धि	ले	ऽ	कु	स	ल
सां	रें	सा	नि	सां	नि	ध	प	म	ध
फि	र	सि	धा	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

संचारी

×			२		०		३		
नि	सां	नि	ध	—	प	—	ध	म	ध
क	ह	त	मं	ऽ	दो	ऽ	द	री	ऽ
नि	नि	नि	सां	सां	नि	सां	नि	ध	प
सु	न	हु	द	स	कं	ऽ	ध	पि	य
सां	सां	नि	सां	—	नि	ध	प	—	—
व	डो	अ	प	ऽ	मा	ऽ	न	ऽ	ऽ
म	म	प	ध	प	म	ते	मग	रे	सां
क	रि	ग	यो	ऽ	ते	ऽ	रोऽ	ऽ	ऽ

राग मारु—ताल धमार

कुष्णजनम सुनि अपने पतिसों, हँसि ढाढिन यों बोली जू ।
जाउ जाउ तुम नंद नृपतिकें दानकोटरी खोली जू ॥१॥
तुमकों मिलेगो बागो चीरा, अरु दच्छना भरि झोरी जू ॥
हमकों लैयो नखसिख गेहनो, जेहर तेहर जोरी जू ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लैयो कंत जुगतिसों लैयो, हम चढिवेको डोली जू ।
छोटीसी मेंसि सुवन सींगनकी, टहल करनकों गोली जू ॥३॥
साज सहित एक घुडिला लैयो, गैयां दूध अतोली जू ।
सुंदरसो एक हस्ती लैयो, हस्तिनि संग अमोली जू ॥४॥
सिज्या सहित एक दुलिया लैयो, ओर पाननकी ढोली जू ।
बीरी करि करि मोहि खवावै, लैयो संग तमोली जू ॥५॥
जनम जनम काहूके आगें, फिरि नहि मांडों झोली जू ।
'नंददास' नंदरायको ढाढी, भयो अजाचक टोली जू ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
सा	–	–	ग	–	ग	म	प	प	–	मं	–	प	ध
कृ	–	–	ष्ण	–	ज	–	न	म	–	सु	–	नि	–
नि	नि	–	सां	नि	सां	नि	ध	–	–	प	–	–	–
अ	प	–	ने	–	–	प	ति	–	–	सों	–	–	–
नि	नि	–	सां	–	रें	–	नि	सां	नि	ध	प	प	ध
ह	सि	–	ढी	–	–	–	ढि	न	–	सु	–	ख	–
मं	–	–	ध	–	नि	–	मं	ग	–	मं	ग	रे	सा
बो	–	–	ली	–	–	–	जू	–	–	–	–	–	–

अन्तरा

×					२		०			३			
नि	सां	–	गं	–	गं	–	मं	गं	–	रे	–	सां	–
बा	–	–	उ	–	रे	–	जा	उ	–	तु	–	म	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां — — सां —	सां —	नि ध —	नि — — —
नं — — द —	नृ —	पं ति —	के — — —
मं ग — ग —	ग —	मं ध —	नि — सां —
दा — — न —	को —	— ट	री — — —
सां — — नि ध	प —	मं ग —	मं ध नि सां
खो — — ली —	— —	जू — —	— — — —
रें सां — नि —	ध —	प ध —	मं — प ध
कृ — — ष्ण —	ज —	न म —	सु — नि —

संचारी

×	२	०	३
प म — ग —	ग म	प — —	मं — प ध
तु म — कों —	— मि	ले — —	गे — — —
नि — — सां नि	सां नि	ध — —	प — — —
बा — — गो	— —	बी — —	रा — — —
सां रें — सां —	रें —	नि सां नि	ध — प —
ओ र — द —	च्छ —	ना — —	— — — —
मं — — प ध	नि —	मं ग —	मं ग रे सा
झो — — री —	— —	जू — —	— — — —

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग सोरठ, संक्षिप्त विवरण

सोरठ राग ग्रन्थोक्त एवं प्राचीन हैं। सौराष्ट्र का एक विभागीय प्रदेश आज भी सोरठ नामसे सुप्रसिद्ध हैं। इस राग का नाम प्रादेशिक नाम से सम्बन्धित माना जाता है। पुष्टिसम्प्रदाय की नित्यसेवा प्रणाली में यह राग उष्णकाल के अन्तिम दिनों में भोग तथा संध्यारतीसमय तक गाया जाता है, जो "सोरठ के पद" इस शीर्षक अन्तर्गत प्रसिद्ध है। तदुपरांत होरी हिंडोलादि के पद भी प्राप्त होते हैं।

इस राग का थाट खमाज है। अतः इस राग के अवरोह में नि है। इस राग से मिलता हुआ देस राग प्रचार में है, किन्तु हवेलीसंगीत में सोरठ राग ही गाया जाता है। सोरठ में ऋषभ स्वर तथा देस में गान्धार स्वर प्रबल है। सोरठ में धमरे स्वर अंगभूत हैं। आरोह में ग ध स्वर वर्ज्य हैं। जांति औडव सम्पूर्ण है।

गानसमय रात्रि का दूसरा प्रहर प्रचार में हैं। वादी ऋषभ और संवादी धैवत हैं। देस राग में वादी स्वर पंचम और संवादी ऋषभ माना जाता हैं। देस और सोरठ समप्रकृतिक होने से प्रचार में एक दूसरे से मिले हुए दृष्टिगत होते हैं। देस में गन्धार स्पष्ट रहता हैं और सोरठ में यह स्वर ढँका हुआ रहता हैं। देस के आरोहमें गंधार और धैवत स्वर क्वचित् लिया जाता है जों सोरठके आरोहमें सर्वथा वर्ज्य हैं।

स्वरविस्तार :—निसारे, मरे, पमरे, मपधमरे, रेपमरेसा, निरेसा। नि निधप, निधप, मपनिसां, निधप, मपधपधमरे, सा।

ममप, निनि, सां, सां, निसांसां, निसांरें, मंमंरें, सां, निसांरें मंरेंरेंनि सां, निसांरें सांनिधप, धधप, मपध, धप, धमरे, रेंमंरेंसां; निसां, मपनिसां, रेंनिधप, धमरे, रेसा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग सोरठ-ताल तीव्रा

देखरी देख आननचंद ।
मुदित चित्त चकोर प्लावित नेन कुमुदिनि वृंद ॥१॥
विपिन नभतें प्रगट संध्यासमय दरसन देत ।
मध्य उडुगन सखा संगही, गोधन जलद समेत ॥२॥
क्रीडत घोख तडाग मनजु मराल 'सूरजदास' ।
एक रसना कहि सके को, रंक विविध विलास ॥३॥

स्थायी

२		३		×			२		३		×		
म	रे	म	प	सां	—	सां	रें	नि	ध	प	ध	म	रे
दे	—	ख	री	दे	—	ख	आ	—	न	न	चं	—	द
							परे	म					
सा	रे	म	प	नि	ध	प	प	—	ध	म	रे	—	सा
											म	रे	सा
दे	—	ख	री	दे	—	ख	आ	—	न	न	चं	—	द

अन्तरा

२		३		×			२		३		×		
म	रे	म	प	म	म	प	नि	—	नि	नि	सां	—	सां
दे	—	ख	री	मु	दि	त	चि	—	त्त	च	को	—	र
नि	सां	रें	रें	नि	ध	पध	नि	नि	सां	रें	नि	ध	प
प्ला	—	वि	त	ने	—	न—	कु	मु	दि	नि	वृं	—	द

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

२		३		×			२		३		×		
म	रे	म	प	म	म	म	रे	रे	म	प	नि	ध	प
दे	—	ख	री	वि	पि	न	न	भ	तें	—	प्र	ग	ट
प	—	प	—	नि	सां	रें	नि	ध	म	प	धप	प	म
सं	—	ध्या	—	स	म	य	द	र	स	न	दे—	—	—
रे	—	नि	सा										
—	—	त	—										

राग सोरठ—ताल त्रिताल

मैया मेरी कांवर कोन लई ।
गाय चरावन जात वृंदावन, खिरकमें भाज गई ॥१॥
एक कहे हम कावरि देखि सुरभि खाइ गई ।
एक कहे तेरी कारी कामरियां, जमुनामें जात बही ॥२॥
एक कहे नाचो मेरे आगें, कांवरि देहों नई ।
'सूरदास'प्रभु जसुमति आगे असुवन धार बही ॥३॥

स्थायी

०	३	×		२		०		३		×		२	
म	रेंम	प	निसां	रेंनि	धप	ध	म	मप	ध	म	—	रे	—
मै	यामे	री	कां—	—व	र—	को	—	न—	ल	ई	—	—	—

अन्तरा

०	३	×		२		०		३		×		२	
म	—म	पनि	—नि	नि	सां	—	सां	सां	निसां	रें	रें	रेंग	
मा	—य	चरा	—व	न	जा	—	त		वृंदा—	व	—	न—	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

— धानि प ध नि — सां सां निसां रेंसां निध पमम रेंम प
— खिरक मेंभा — ज गई— —— —— मै यामो: री

संचारी

० ३ × २ ० ३ × २

— पप पमप धम म म रे म पमप निध प
— एक कहे— ——ह म कां — व रिदे— —खी —
नि निसां —नि धम पमप धपम —रे —नि सा
सु रभि —खा —इ गई— —— —— —— —

आभोग

० ३ × २ ० ३ × २

म —म पनि —— निसांरें रेंगंरें सांरें निसां —
ए —क कहे —— तेरीका ——री कांव रियां —
— धनिप धनि —सां सांनसां रेंसां निध पमम रेंम प
— जमुना मेंजा —त बही— —— —— ——मै यामो री

संचारी

० ३ × २ ० ३ × २

— पप पपध पमम म म रे म पमप निधप —
— एक कहे— ——ना — चो — मे रेआ— ——गें —

नि —सां सांनि धम पमप धपम —रे —नि सा
कां —व रिदे —हों नई— —— — — — —

आभोग

० ३ × २ ० ३ × २
म —म पनि सांसां सां रें गं रें सांरें निसां —
झू —र दा— संप्र भु ज सु म तिआ —वे —

ध निप धनि —सां सांनिसां रेंसां निध पमम रेम प
अ सुत्र नधा —इ वही— —— —— ——मैं यामो री

राग सोरठ—ताल चम्पक (ध्रुव आडाचौताल)

झूलत सांवरे संग गोरी ।
अमितरूप गुन सहज माधुरी सोभासिंधु झकोरी ॥१॥
इत सिरमोर मुकुटकी लटकन उतबेंदी सिर रोरी ।
कुंडललोल कपोलन झलकत उतहिं बनी कचडोरी ॥२॥
इत उत बेसरके मुक्तासों चोंप बढी अति जोरी ।
"रसिकप्रीतम" वल्लभ कटाच्छ छबि हाव भाव चित्त चोरी ॥३॥

स्थायी

३ ४ × २ ३ ४ × २
म रे म प सां नि धप रेंम प ध प ध मरे
झू — ल त सां — वरे —सं ग गो— — री—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×	२	३	४	०	×	२		३	४	×
मं	मं	मंमं	रेंरें	रें	सां	नि	सां	निसां	रेंरें	रें
अ	मि	तरु	पशु	न	स	ह	ज	मा—	—धु	री
नि	ध	पधनि	—सां	सां	निसां	रेंसां	धप	म	रेम	प
सो	भा	——सिं	—धु	झ	को—	——	री—	झू	—ल	त

संचारी

×	२	३	४		×	२		३	४	
मरे	म	मप	—म	प	म	प	निसां	नि	धप	प
उत	ही	बनी	—क्र	च	डो	—	——	री	——	—
सांनि	सां	रेनि	धम	प	ध	प	ध	म	—रे	सा
उत	ही	बनी	—क	च	डो	—	—	री	——	—

राग—सोरठ, ताल—धमार

पौढे हरि राधिका के गेह।
नवलधाम नवलसय्या नवल बाढयो नेह।
नवलसुंदर नवन जोंबन नवल बरखत मेह।
'कृष्णदास' त्रैलोकनागर नवल स्याम सनेह।

स्थायी

३				×					२		०		
मरे	म	प	नि	सां	—	नि	ध	म	प	ध	म	—	रें
पौ—	ढे	ह	रि	रा	—	धि	का	—	के	—	गे	—	ह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×					२		०			३			
म	म	प	नि	–	–	नि	सां	सां	सां	निसां	रें	रें	–
न	व	ल	धा	–	–	म	न	व	ल	सैं–	–	या	–
नि	ध	ध	निध	मप	निसां	रें	निध	पध	मरे	मरे	म	प	नि
न	व	ल	वा	––	ढ्यो	–	नें–	––	ह–ु	पौ–	ढे	ह	रि

संचारी

×					२		०			३			
म	म	म	प	–	प	प	म	म	प	धप	ध	म	प
न	व	ल	सुं	–	द	र	न	व	क	जो–	–	व	न
सां	नि	ध	म	म	प	प	धप	ध	म	–	रे	ऩि	सा
न	व	ल	ब	र	ख	त	में–	–	–	–	–	ह	–

राग मालव—संक्षिप्त विवरण

मालव एल प्राचीन राग है । यह आजकल व्यवहार में अप्रचलित हो गया है । पुष्टिसंप्रदाय के मन्दिरों में इस राग को मानें की परम्परा आज भी विद्यमान है । ईसा की ग्यारहवीं शताव्दी में यह राग प्रचार में था । महाकवि जयदेवने अपने प्रबन्धों में मालव राग का स्पष्ट उल्लेख किया हैं । जयदेव का समय बारहवीं शताव्दी है । उनकी रची मालव राग में अष्टपदी 'प्रलयपयोधिजलेधृतवातसवेदम्' आज भी पुष्टि-सम्प्रदाय में निश्चित उत्सवों पर गाई जाती है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चौदहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध गुजराती भक्त-कवि नरसिंह मेहता को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है। तत्पश्चात् अष्टछाप के समय इस राग का काफी प्रचार रहा। अष्टछाप के कीर्तनाचार्यों के अतिरिक्त स्वामी हरिदासजी एवं हितहरिवंशजी के राधावल्लभ—संप्रदाय की शिष्य-परम्पराओं में भी राग मालव के पद-कीर्तन प्राप्त होते हैं। मालव राग भारतीय संगीत के अन्य घरानों में नहीं पाया जाना। इससे लगता है कि यह राग वैष्णव मन्दिरों तक ही सीमित रह गया था। आधुनिक खयाल-गायकों ने मालव राग का जो स्वरूप बताने का प्रयत्न किया, वह अष्टछाप-परम्परा के मालव राग से भिन्न है। ग्रन्थों में 'मालव कौशिक' राग का उल्लेख हैं, जिसको आज हम 'मालकौंस' कह सकते हैं। मालकौंस के स्वरों को दृष्टिगत रखते हुए 'मालव' और 'कौशिक' को पृथकू समझना और तब मालव का स्वरूप मालकौंस के स्वरों पर आधारित करना उचित होगा। 'संगीत' विशेषांक सन् १९६२ के पृष्ठ ११३ पर मालव राग (ताल : दादरा) की जो स्वरलिपि दी गई है, उसमें स्वर मालकौंस के समान ही बताए गए हैं। मालकौंस के स्वरों पर आधारित मालव को बताना पारम्परिक न होकर आधुनिक खयाल-रचयिताओं की कल्पना-मात्र है। अष्टछाप-परम्परा के मालव राग में 'म—ध' की स्वर-संगति का प्रयोग होता हैं। इस परम्परा का प्रातर्गेय राग बिभास (अर्वाचीन देसकार) इस राग से मिलता-जूलता है। किन्तु थाट, वादी-संवादी, समय एवं चलन आदि की भिन्नता के कारण दोनों पृथक्रू हो जाते हैं। सायंकाल के बाद गाये जाने वाले राग भूपाली तथा मालव के स्वरूप में पर्याप्त साम्य है। दोनों के थाट और जाति समान है, फिर भी आरोह में ऋषभ वर्ज्य करके मध्यम तीव्र का प्रयोग मालव को भूपाली से पृथकू कर देता हैं। मालव उत्तरांगप्रधान है। गायक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

को भूपाली तथा विभास से मालव को बचाने के लिए प्रयत्नशील रहना पड़ता है।

मालव राग का थाट कल्याण है। आरोह में ऋषभ तथा निषाद एवं अवरोह में निषाद तथा मध्यम वर्ज्य होने से इसकी जाति औडव-औडव है। तीव्र मध्यम का प्रयोग है, फिर भी शुद्ध मध्यम का विवादी के रूप में दोनों गान्धारों के बीच किया हुआ किंचित् प्रयोग रंजकता में अभिवृद्धि करता है। गाने का समय दिन का चतुर्थ प्रहर है, परंतु इसकी कालावधि चतुर्थ प्रहर से ले कर मध्य रात्रि तक मानी जाती है। वादी स्वर गान्धार और संवादी स्वर धैवत माना जाता है। पंचम से गांधार और षड्ज (तार) से धैवत पर आते समय कभी कभी मींड़ ली जाती है। उत्तरांग में अधिक चलन होने से पंचम और तार-षड्ज का स्थान भी महत्त्वपूर्ण है। गान्धार पर ऋषभ का कण सौंदर्यवर्धक है।

आरोहावरोह-स्वरूप—सा, ग, प, ध, मंध सां। सां ध, प ग, रे सा।

पकड़—सां, ध रें सां, ध प ग, प, ग रेसा।

चलन—पग, गरे, सा, गरे, गप, मंध, प, गरे, सा। गपधप, मंध सांसाधप, गमगरे, गपधमंधसां। गंरेंसांधरेंसां, सांधप, गरेग, पग, मंधसां।

अष्टछाप–परम्परा में हिंडोला–रास, माहात्म्य तथा बधाई के पदों में प्रायः मालव का प्रयोग है। यह राग अधिकतर सम्प्रदाय की सायंकालीन सेवा-प्रणालियों में गाया जाता है। शरत्पूर्णिमा की शाम का रास के दर्शन के समय मालव राग में निबद्ध जिन पदों को कीर्तनरूप में गाया जाता हैं, उनमें से एक पद यहाँ उदाहरणार्थ स्वरलिपि-सहित प्रस्तुत हैं। इस पद की रचना त्रिपुट ताल में है। त्रिपुट ताल का स्वरूप —'१००' अर्थात् ४+२+२ है। इस प्रकार यह आठ मात्रा की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्राचीन ताल है, जिसका स्वरूप आज त्रिताल(तीनताल) ने ग्रहण कर लिया है। गत शताब्दी तक अष्टछाप-परंपरा में त्रिपुट ताल का व्यवहार होता रहा, किन्तु आज हमारे कीर्तन—गायक त्रिताल में गाने कीं चेष्टा कर रहे हैं। अतः लेखक के विनम्र मत से प्राचीन पारम्परिक तालों का संरक्षण भी आवश्यक हैं।

राग मालव—ताल त्रिपुटे

रास बिलास गहें करपल्लव, एक एक भुजा ग्रींवा मेली।
द्वे द्वे गोपीं बिच बिच माधव, निर्तत संग सहेली ॥१॥
टूटि परी मोतिन की माला, ढूंढत फिरति सकल ग्वाली।
मुकुलित कुसुममाल कच विगलित, निरखि हसे वनमाली ॥२॥
सरद विमल नभ चंद बिराजत, नितंत नंदकिसोरा।
'परमानंद'प्रभु बदन सुघानिधि भामिनी नेन चकोरा ॥३॥

स्थायी

×				२		३		×				२		३	
सां	ध	सां	सां	सां	—	ध	प	ग	—	ध	प	ग	रे	सा	सा
रा	—	स	वि	ला	—	स	ग	हे	—	क	र	प	—	ल्ल	व
गप	ग	ग	ग	ग	गम	ग	रे	ग	प	ध	सांरें	सां	—	ध	मंध
ए	क	ए	क	भु	जा—	—	ग्री	वा	—	मे	——	ली	—	—	——

अन्तरा

×				२		३		×				२		३	
गं	—	गं	—	गं	—	रें	—	सां	सां	रें	रें	सांरें	गंरें	सांध	सां
द्वे	—	द्वे	—	गो	—	पी	—	बि	च	बि	च	मा—	——	ध—	व

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां ध प प | ग गम | ग रे | ग प ध सांरें | सां — | ध मध
नि र त त | सं — | ग स | हे — — — | ली — | — —

संचारी

× २ ३ × २ ३
सां ध रें सां | सां — | धप मप | ग ग प — | ग रे | सा —
टू — ट प | री — | मो — — — | ति न की — | मा — | ला —
ग — ग ग | ग गम | ग रे | ग प ध मध | सां — | — —
ढूं — ढ त | फि र— | त स | क ल ग्वा — | ला — | — —

आभोग

× २ ३ × २ ३
गं गं गं गं | रें रें | रें सां | — ध सां रें | गं रें | सां सां
मु कु लि त | कु सु | म मा | — ल क च | वि ग | लि त
सां ध प प | ग गम | ग रे | ग प ध धरें | सां —ध | मध
नि र ख हूँ | से — | हे — | ब न मा — | ली — | — —

राग मालव—ताल धमार

पद्म धर्यो जनताप निवारन ।
चक्र सुदर्सन धर्यो कमल कर, भक्तनकी रक्षाके कारन ॥१॥
संख धर्यो रिपु उपर बिदारन, गदा धरी दुस्टन सिंघारन ।
चारों भुजा चारो आयुध धरि, नारायन भुवि भार उतारन ॥२॥
दीनानाथ दयाल जगतगुरु, आरति हरन भक्तन चिंतामनि ।
'परमानंददास' को ठाकुर, यह अवसर छांडो जिनि ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×					२		०			३			
सां	—	—	ध	—	रें	—	सां	—	—	ध	—	प	—
प	—	—	द्म	—	ध	—	यों	—	—	ज	—	न	—
ग	—	—	ध	—	प	—	ग	रे	—	सा	—	सा	—
ता	—	—	प	—	नि	—	वा	—	—	र	—	न	—
ग	—	—	ग	—	ग	—	ग	—	म	ग	—	रे	—
प	—	—	द्म	—	ध	—	यों	—	—	ब्र	—	न	—
ग	प	—	ध	—	रे	—	सां	—	—	सां	—	म॑	ध
ता	—	—	प	—	नि	—	व	—	—	र	—	न	—

अंतरा

×					२		०			३			
गं	—	—	गं	—	—	गं	गं	—	—	गं	—	पं	—
च	—	—	क्र	—	—	सु	द	—	—	शं	—	न	—
गं	रें	—	—	—	सां	—	रें	गं	रें	सां	ध	सां	—
ध	यों	—	—	—	क	—	म	ल	—	क	—	र	—
ध	प	—	ग	—	ग	—	ग	—	म	ग	—	रे	—
भ	—	—	क्त	—	न	—	की	—	—	र	—	—	—
ग	प	—	ध	—	रे	—	सां	—	—	ध	प	म॑	ध
क्षा	—	—	के	—	—	—	का	—	—	र	—	न	—

संचारी

×					२		०			३			
सां	—	—	सां	—	सां	—	ध	—	—	प	—	प	—
शं	—	—	ख	—	ध	—	यों	—	—	री	—	पु	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग ग — ध —	प —	ग रे —	सा — सा —
उ द — र —	वि —	दा — —	र — न —
ग ग — — —	ग —	ग — म	ग — रे —
ग दा — — —	ध —	री — —	दु — — —
गं प — ध —	प —	ग रे —	सा ध़ सा —
ष्ट न — सि —	— —	हा — —	र — न —

राग जंगला—संक्षिप्त विवरण

इस राग को जंगुला भी कहते हैं। पुष्टिसम्प्रदाय के मन्दिरो में इस राग के पद प्रायः सांझी के तथा क्वचित् हिंडोला के भाव के भीं प्राप्त होते है। इस राग के पद बहुत कम संख्या में हैं। रासधारीयों के द्वारा सम्प्रदाय में श्रीहरिरायजी के उत्तर समय में प्रचार होना संभवित है। जो झींझोटी-मिश्र धून जैसा प्रकार दिखाई देता है।

'जंगला'—'झींझोटी' राग अधिकतर दादरा ठुमरी आदि गानशैली में दृष्टिगत होता है। पं. भातखण्डेजीने जंगला राग का जो उल्लेख किया हैं वह इस प्रकार से भिन्न हैं, जो भैरव और आसावरी थाट का बताया गया है। प्राप्त शैली के आधार पर इस राग का विवरण निम्न प्रकार हो सकता है।

थाट खमाज, जाति — सम्पूर्ण, आरोह में निषाद शुद्ध, समय दिन का अन्तिम प्रहर (सम्प्रदाय में यह राग भोग तथा संध्या समय में गाया जाता है) कहा जायगा।

स्वरविस्तार :— सा रे ऩि सा, रे, रेग, म प, म ग रे सा नि ध प, नि नि ध म, ग, मगरेसा, रे, रेगमप, मग, सारेऩि, प़ प़ ऩिसा, रेग, ग—सा. ग, गम, गगसा, रेगप, सग, रेग, निनि, सांसां.

सांझी का पद

राग जंगला—ताल त्रिताल (मात्रा ८)

अरी तुम कोन हो री बनमें फुलवा बीनत हारी।
नेह—नगरको बन्यो बगीचा, फूल रही फुलवारी ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कृष्णचंद्र बनवारी आये, मुख क्यों न बोले सुकुमारी ।
तुम तो नंद महर के ढोटा, हौं ब्रखभानदुलारी ॥२॥
या बनमें हम सदा बसत है, हम ही करत रखवारी ॥२॥
बिन बूके बीनत हो फुलवा, जोवन मदमत्त वारी ॥३॥
तब ललिता एक मतौ उपायो, सेंन बताइ प्यारी ।
'सूरदास'प्रभु रसबस कीने, बिरहवेदना टारी ॥४॥

स्थायी

						ग	गरेनि़	सा
						अ	रीऽतु	म
×	२	०	३	×	२	०	३	
रे	——	गरे	गम	पम	—ग	रेसा	रेनि़	—
को	ऽऽ	नहो	ऽऽ	ऽरी	ऽऽ	ऽब	नमें	ऽ
प़	प़नि़	—सा	—रे	गग	—सा	——	——	—
फु	लवा	ऽबी	ऽन	तहा	ऽरी	ऽऽ	ऽऽ	ऽ

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	रेम	मप	पप	—म	मप	पमप	धपम	ग
ने	—ह	नग	रको	ऽब	न्यो—	बगीऽ	ऽऽचा	ऽ
—	निनि	निसां	—नि	धपग	पम	गम	गरेनि़	सा
—	फूल	रही	ऽफु	लऽवा	ऽरी	ऽअ	रीऽतु	म

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३	
ऩि	—ऩि	ऩिसा	साऩि	सारे	—रे	—रे	गम	—
कृ	ऽष्णा	चंऽ	द्रव	नवा	ऽरी	ऽआ	ऽये	ऽ
प	धम	मग	गरेसा	रेऩि	——	—सा	——	—
सु	खक्यों	नचो	लेऽसु	कुभा	ऽऽ	ऽरी	ऽऽ	ऽ

आभोग

×	२	०	३	×	२	०	३	
स	पनि	—नि	—नि	निसां	सांसां	—रें	गंसां	—
तु	मतो	ऽनं	ऽद	मह	रके	ऽढो	ऽटा	ऽ
नि	निसां	सांनि	धप	धग	पम	गम	गरेऩि	सा
हीं	ऽभ्र	खभा	ऽन	दुला	ऽरी	ऽअ	रीऽतु	म

क्रमशः संचारी आभोगनुसार ।

राग हमीर—संक्षिप्त विवरण

हमीर राग कल्याण का क्षेत्र होने से 'हमीर—कल्याण' भी कहा जाता हैं । कुछ ग्रन्थों मे उसका 'शंकराभरण' मेल कहा है । इसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है तथापि केवल शुद्ध मध्यम के प्रयोग से भी हमीर का स्वरूप भंग नहीं होता ऐसी एक मान्यता होने के कारण शुद्ध मध्यम का हमीर और दोनों मध्यमों का हमीर—कल्याण कहने का रिवाज है ।

शुद्ध मध्यम की अपेक्षा तीव्र मध्यम का प्रमाण भलें ही कुछ कम हो, किन्तु हमारी अनेक चीजों में कल्याण का ही अंग विशेष हैं, जो अधिकतर अवरोह में और उत्तरांग में दिखाई देता हैं ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हमारे मन्दिरों में यह राग उष्ण ऋतु में अक्षय-तृतीया से संध्यारती में तथा कभी कभी शयन के दर्शन समय भी लगभग ४० दिन तक गाया जाता है। तद्अतिरिक्त वधाई-व्यौहारों में इन्ही दर्शनों के समय विशेष रूप से गाने की प्रथा है।

राग-विवरण :-

"दो मध्यम, सब ही तीवर, प्रथम प्रहर निसि जान
वादि ध, संवादि ग राग हमीर बखान (रा. य.)

थाट कल्याण, स्वर दोनों मध्यम और शेष शुद्ध हैं जाति सम्पूर्ण है। वादी स्वर धैवत है। संवादी स्वर गान्धार है। गानसमय रात्रि का प्रथम प्रहर माना जाता है। शुद्ध मध्यम का प्रयोग आरोह-अवरोह दोनों में किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग केवल आरोह में ही होता है। अवरोह में गान्धार स्वर वक्र है। ख्याल गायक लोग इस नियम को जलद तानें लेते समय क्षम्य मानते हैं तथा क्वचित् कोमल निषाद का प्रयोग 'धनिप' इस प्रकार करते हैं।

कोई इस राग का वादी पंचम भी मानते हैं। हमीर में कोई आरोह में ऋषभ और पंचम वर्ज्य करते हैं और कोई केवल पंचम वर्ज्य कर के गाते हैं, किन्तु यह मान्यता हमारी अष्टछापपरम्परा में नहीं मानी जाती है। क्यों कि हमारे यहां अधिकतउ हमीर कल्याण गाया जाता है।

पकड :— सा, रेसा, गमध,

आरोहावरोह :— सा, गमध, निध, सां सांनिधप, मप, गमध, प, ग म रे सा.

स्वर-विस्तार :-

(१) सा, रेसा, गमध, प, ग, मरे; गम धप, गमरेसा.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(२) गमध, निध, सांनिधप, म प निध, प, मप ध नि सां नि ध प, गम, ध, प, गमरेसा.

(३) पपसां, सांध, सांरेंसां, गंमंरेंसां, निध, निधप, मप निध, प, गम रे, सारेसा.

राग हमीर—ताल चौताल

गये पाप ताप दूर देखन दरस परस चरत।
हो तो एक पतित तिहारो पतितपावन बिरद हौं तुम जगत के उद्धरन ॥
स्तुति सेस कर न सके सकल कला—गुननिधान
जानत हों तिहारी सब बिधि अनुसरन।
'छीतस्वामी' गिरिवरधर तैसे ही श्री विट्ठलेश
हों तो तिहारी जनम जनम सरन ॥२॥

स्थायी

									प	ग	म
									ग	ये	—
×		०		२		०		३		४	
ध	—	प	प	—	प	ग	—	म	रे	सा	सा
पा	—	प	ता	—	प	दू	—	र	दे	ख	त
सां	सां	सां	ध	नि	नि	सां	ध	प	प	ग	म
द	र	स	प	र	स	च	र	न	ग	—	ये

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	—	सां
हों	—	तो	ए	क	प	ति	त	ति	हा	—	रो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	ध	ध	सां	नि	रें	गं	रें	सां	ध	प	प
प	ति	त	पा	व	न	बि	र	द	हो	तु	म
सां	गंमं	रे	सां	ध	रें	सां	नि	धप,	प	ग	म
ज	ग—	त	के	—	उ	द्ध	र	—न,	ग	—	ये

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	प	—	प	—	प	ध	नि	ध	प	ध	प
स्तु	ति	—	से	—	स	क	र	न	स	के	—
सां	सां	सां	नि	ध	प	ध	नि	ध	प	—	प
स	क	ल	क	ला	—	गु	न	नि	धा	—	न
ध	—	प	प	ग	म	प	ग	म	रे	सा	सा
जा	—	न	त	हों	—	—	—	ति	हा	—	री
सा	म	ग	प	म	धि	नि	ध	प	गम	रे	सा
स	ब	बि	धि	—	अ	नु	—	—	स	र	न

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	प	—	सां	—	सां	रें	रें	सां	सां	सां	सां
छी	त	—	स्वा	—	मी	गि	रि	व	र	ध	र
ध	—	ध	नि	—	रें	गं	रें	सां	ध	प	प
ते	—	से	ई	—	श्री	वि	—	ठ	ले	—	स

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	—	—	गं	—	गं	मं	रें	—	सां	—	—
हों	—	—	तों	—	ति	हा	—	—	री	—	—
रें	सां	नि	ध	नि	रें	सां	नि	ध,	प	ग	म
ज	न	म	ज	न	म	स	र	न,	ग	—	ये

राग हमीर—ताल धमार

गिरिधर सब ही अंग को बाँकौ ।
बांकी चाल चलत गोकुल में, छेल छबीलो काको ॥१॥
बांकी भौंह चरनगति बांकी, बांको हिरदो जाको ।
'परमानंददास'को ठाकुर, कियो खोर ब्रज सांको ॥२॥

स्थायी

×					२		०				३			
सां	सां	नि	ध	नि	सां	रें	सांनि		ध	प	मं	प	ग	म
स	ब	ही	अं	—	ग	को	बाँ—		—	को	गि	रि	ध	र
ध	ध	प	ग	म	ध	प	गम		रे	सा	पमं	प	ग	म
स	ब	ही	अं	—	ग	को	बां—		—	को	गि—	रि	ध	र

अन्तरा

×					२		०			३			
प	प	—	सा	—	सां	सां	ध	नि	सांरें	सांनि	सां	ध	प
बाँ	की	—	चा	—	ल	च	ल	त	गो—	कु—	ल	में	—
गंमं	रें	सांनि	ध	नि	सां	रें	सांनि	धनि	धप	पमं	प	ग	म
छे—	ल	छ—	बी	—	लो	—	का—	——	को—	गि—	रि	ध	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×					२		०			३			
प	–	प	ध	–	प	प	गम	ध	म	गम	रें	सा	–
बाँ	–	की	ओं	–	ह	च	रन	ग	ति	बाँ–	–	की	–
सा	म	ग	प	प	ग	म	ध	–	प	गम	रें	सा	–
बां	को	–	हि	र	दो	–	ता	–	–	––	–	को	–

आभोग

×					२		०			३			
प	प	प	सां	–	सां	सांनि	धनि	सां	रें	सांनि	सां	ध	प
प	र	मा	नं	–	द्	दा–	––	स	को	ठा–	–	कु	र
गंमं	रें	सां	ध	नि	सां	रें	सांनि	धनि	धप	मं	प	ग	म
कि-	यो	–	खो	र	ब्र	ज	सां–	––	को–	गि	रि	ध	र

राग हमीर–ताल तीव्रा

कहो जू कान्ह गैयां कित बिसरानी ।
कहां चराई ठहराई कोन बन, कहां पिवायो पानी ॥१॥

भई अवार बनमांज फिरत हो, बोलत कोऊ न पंछी बानी ।
"रसिक–प्रीतम" तुम झूले से फिरत हो, तिहारी बात में जानी ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

२ ३ × २ ३ ×

प प | ग म | ध — — | ध नि | सां रें | सां नि ध
क हौ | जू — | का — — | न्ह — | गै — | या — —

प गम | ध प | गम रे सा
कि त— | बि स | रा— — नी

अन्तरा

× २ ३ × २ ३

प ग मध | सां सां | सां सां | ध नि सा | रें सांनि | ध प
क हां च— | रा ई | ठ ह | रा — ई | को न— | ब न

गंमं रें सां | ध नि | सां रें | सांनि सां धप | प प | ग म
क— हां पि | वा — | यो — | पा— — नी— | क हो | जू —

राग यमन (ईमन कल्याण) संक्षिप्त विवरण

यमन राग कल्याण थाट का मुख्य एवं प्राचीन राग है। इसे 'ईमन' कहने का भी रिवाज हैं। पुष्टिसम्प्रदाय की कीर्तनप्रणाली के हस्त-लिखित तथा प्रकाशित सभी ग्रन्थों मे 'ईमन' नाम का ही उल्लेख लिया गया है, यही नहीं, व्यवहार में भी 'ईमन' कहने का ही कीर्तनकारों मे परंपरागत रिवाज आज भी चालू है। कोई 'ईमन' शव्द को फारसी शव्द बताते हैं, किन्तु 'यमन' के स्थान पर सम्प्रदाय में फारसी शव्द का प्रयोग करना सम्प्रदाय की दृष्टि से असंभव है। क्यों कि सेवा में किसी भी विदेशी शव्द का प्रयोग नहीं किया जाता। इस प्रकार कीर्तन सेवा में

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

में जो ईमन शब्द का प्रयोग किया गया है उसका कारण यह है कि व्रज भाषा में 'य' के स्थान पर 'ई' उच्चारण होता है अतः लिपि में भी संग्रहकारों ने यहीं परम्परा अपनाई होगी तद्नुसार हमने यहाँ ईमन नाम से ही इस राग की चर्चा करना उचित समझा है।

यमन नाम संस्कृत माना जाता है। किन्तु अष्टछाप की कीर्तन-सेवा के आरम्भ से ही 'यमन' के 'ईमन' नामकरण का प्रचार होना सम्भवित है। 'अमीर खुशरो से प्रचार मे आया, यह कहना हमारी समज में नहीं आता। दक्षिण संगीतपद्धति मे 'यमुना कल्याण' नामक राग है, जो इसे कुछ मिलता झूलता है ऐसा दाक्षिमणाय पंडितो का कहना है। बहुत से लोग यमन और यमन-कल्याण को ए कही समजते हैं। तथा कुछ लोग यमन और यमन कल्याण भिन्न मानते हैं। दोनों गान्धारो के बीच क्वचित् शुद्ध मध्यम का प्रयोग करने से यमन-कल्याण यानि दोनों मध्यमों वाला यमन-कल्याण और बिना तीव्र मध्यम वाला यमन है ऐसा भेद स्पष्ट रूप से समझा नहीं जाता। विवादी के नाते से भी क्वचित् शुद्ध मध्यम लगा सकता है।

हमारी नायक गोपाल की परम्परा के पाटन (उ. गु.) की श्रीमन्द्व सरकार कीं गादी के गायक उस्ताद मणिलाल माधवजी नायक तथा नायक छबीलदासजी का यह कहना था कि दोनों मध्यमों वाला ईमन ही प्राचीन समय में 'श्याम-कल्याण' समझा जाता था। आज का श्याम-कल्याण असलीं नहीं हैं। प्रचार के श्याम-कल्याण में यमन या कल्याण का स्वरूप कहां है, जो इमन-कल्याण में प्रगट होता है।

शुद्ध कल्याण से भिन्न यमन राग को कोई लोग कल्याण भी कहते हैं और यह साम के समय गाया जाता है, अतः ईमन यानि कल्याण में कहीं-कहीं शुद्ध मध्यम का वक्र रूप से प्रयोग करने से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्याम—कल्याण कहा जाता था। इस प्रकार की मान्यता हवेलीसंगीत के वृद्ध गायक लोग भी मानते थे।

बम्बइ में गो श्री १०८ श्रीजीवनजी महाराज के समकालीन वृद्ध कलाकार वैष्णव श्रीविठ्ठलदासजी शाह से मैंने जो श्याम—कल्याण राग का हिंडोरा सुना था उस प्रकार का ईमन कल्याण से मिलना झूलता था जिसके शब्द इस प्रकार हिंडोरें झूलत स्यामा स्याम गरजत घन चलत पवन सननननन' थे। सम्प्रदाय के लिखित कीर्तन संग्रहों में 'श्याम—कल्याण' राग के पद क्वचित् ही प्राप्त होते हैं। यदिक हीं नामोल्लेख प्राप्त हो तो वह आजकल के प्रचार का श्याम—कल्याण नहीं, किन्तु ईमन कल्याण का स्वरूप ही समजना चाहिए। अतः सम्प्रदाय का श्याम-कल्याण यही होने से हमनें यहां श्याम कल्याण की अलग चर्चा करना उचित नहीं समझकर इतना ही उल्लेख यहां किया है।

यह राग साधारण तथा लोकप्रिय है। सम्प्रदाय की कीर्तन प्रणाली में यह राग अधिकतर गाया जाता है। संध्यारती के बाद शयन—समय तथा दर्शन में गाये जाने वाले इस राग के अनेक पद प्राप्त होते हैं।

नित्यक्रम के अतिरिक्त हिंडोला, रास तथा होरी आदि त्यौहारों के भाव के पद भी उन दिनों मे इस राग के काफी पद गाये जाते है।

ईमन राग की शास्त्रीय माहिती इस प्रकार है।

(१) थाट—कल्याण (२) जाति—सम्पूर्ण (३) वादी गान्धार और संवादी निषाद (४) स्वर—मध्यम तीव्र और बाकी के शुद्ध है। (५) गानसमय—रात्रिका प्रथम प्रहर।

पकड—स्वर :— निरेग, रे, सा.

आरोहावरोह :— सारेग, मप, धनिसां। सांनिध, प, मग, रेसां.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वरविस्तार–(आलाप)

(१) सा–, निरेसा–, निरेग–, रेग–, पमग–, रेग–, परे–सा.

(२) सारेग–, रे–सा–निधप–निरे–, ग–रे–, पमग–रे–, निध— पमग–रे–, प–रे, नि–सां ।

(३) सारेग मप–, गमप–, निधप मग मप–, सांनिधप–, निधप मग मप–, ग–रे, प–रे–, निरेसा ।

(४) पग–, प–, धप–, सां–, सां–, निरें सां–, निरें गं रें सां– निरें गंमगंरें सां–, रें सां–निधप मप निधप मग–, रे–, प–रे–, निरेसा ।

(सम्प्रदाय में 'ईमन' को 'ईमन कल्याण' भी कहते हैं ।)

राग ईमन, ताल चर्चरी (प्राचीन अंग)

रुचिर पदकमल श्रींवल्लभाधीशके,
रेन ओर दिवस निज सिरसि धरिये ।
गहेत दृढ बांह जिहि कान्ह श्रीं नंदसुत,
पत्र फल पुस्प सेवानुसरिये ॥१॥
प्रेमभावतें निकट संतत रहत
राखि विस्वास व्रततें न टरिये ॥
श्रीविठ्ठल गिरिधरन, प्रकट लक्ष्मन सुवन,
भक्त के भवन में वास करिये ॥२॥

स्थायी

×			२		०		३		
नि	नि	ध	नि	ध	प	प	म	ग	—
रु	चि	र	प	द	क	म	ल	श्री	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म॑	ग	म॑	प	रे	ग	रे	रे	सा	—
व	—	ल्ल	भा	—	धी	—	श	के	—
ध़	—	ऩि	रे	रे	ग	ग	म॑	ध	नि
रे	—	न	ओ	र	दि	व	स	नि	ज
रें	नि	ध	नि	ध	प	—	ग	—	म॑
सि	र	सि	ध	रिं	ये	—	—	—	—

अन्तरा

×			२		०		३		
प	ग	ग	मं	ध	सां	—	सां	सां	साँ
ग	ह	त	दृ	ढ	वां	—	—	जि	हिं
ध	—	ध	नि	रें	सां	रें	सां	ध	प
का	—	न्ह	श्री	—	नं	—	द	सु	त
नि	रें	गं	गं	रें	सां	—	ध	प	—
प	—	त्र	फ	ल	पु	—	स्प	से	—
ध	नि	ध	प	म॑	प	—	ग	—	म॑
वा	—	नु	स	रि	ये	—	—	—	—

संचारी

×			२		०		३		
प	—	प	मं	ध	नि	ध	प	प	—
प्रे	—	म	भा	—	—	—	व	तें	—
नि	ध	प	प	—	प	म	ग	ग	ग
नि	क	ट	सं	—	त	त	र	ह	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	—	मं	ग	मं	ग	रे	सा	ऩि	ध़
रा	—	खि	वि	—	स्वा	—	स	व्र	त
ऩि	रे	ग	प	प	रे	—	सा	—	—
तें	—	न	ट	रि	ये	—	—	—	—

राग ईमन (रास का पद) ताल चौताल

स्याम सजनी सरदरजनी पुलिन मध्य नृत्य नाट्य
तांत्रिगता त्रगता तिरप बंद करत कामिनी ।
गिडगिडान् गिडगिडान गिडि गिडि गिड गिड गिडान्
धिधिकिटता लाग दई झां झां झां झं नननन सुर उपंगिनी ।।१।।
स्याम को यह नाद भावे तां त्रिगता गति हि लावे,
तत थेई थेई शब्द उघटि, कोटिक कामिनी ।
कृष्णदास जस हि गावे, कर ताथेइ थेइ नचावे,
कां कृति कां कृति कां कृति कां कृति कर मृदंगिनी ।।२।।

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	नि	ध	प	ग	मं	ध	प	ग	रे	ऩिरे	सा
स्या	—	म	स	ज	नी	स	र	द	र	ज—	नी
ध़	ऩि	रे	ग	—	ग	प	रे	ग	रे	ऩिरे	सा
पु	लि	न	म	—	ध्य	नृ	—	त्य	ना	——	ट्य
सा	—	रे	रे	ग	—	मं	ग	रे	ग	मं	ध
तां	—	त्र	ग	ता	—	त्र	ग	ता	ती	र	प

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	—	नि	ध	प	प	ध	मं	प	ग	मं	ध
बं	—	द	क	र	त	का	—	—	मि	नी	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	गग	मं	ध	सां	सांसां	सां	—	सां	ध	नि	ध
गि	डगी	डा	—न्	गि	डगी	डां	—न	गि	ड	गि	ड
नि	रें	गं	रें	गं	रें	सां	सां	नि	नि	ध	प
गि	ड	गि	ड	गि	डा	—	न्	धि	धि	कि	ट
प	—	ध	मं	ग	रे	सा	—	ऩि	रे	ग	रे
ता	—	ला	—	ग	द	ई	—	झाँ	झाँ	झाँ	झँ
ग	मं	ध	नि	रें	सां	नि	ध	प	प	मं	ध
न	न	न	न	सु	र	उ	पं	—	गि	नी	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	प	ग	मं	ध	मं	प	प	—	प
स्या	—	म	को	य	ह	ना	—	द	भा	—	वे
मं	—	ध	ध	मं	ध	नि	नि	ध	ध	प	प
तां	—	त्रि	ग	ता	—	ग	ति	हि	ला	—	वे
नि	ध	नि	ध	प	प	ध	मं	प	ग	रे	सा
त	त	थे	ई	थे	ई	स	—	ब्द	उ	घ	टि
ऩि	रे	—	ग	—	ग	प	रे	ग	रे	सा	सा
को	—	—	टि	—	क	—	क	—	मि	नी	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	ग	ग	म॑	ध	म॑ध	सां	सां	सां	रें	सां	सां
कृ	—	ष्ण	दा	—	स--	ज	स	हि	गा	—	वे
सां	ध	नि	रें	गं	रें	गं	रें	सां	नि	ध	प
क	र	ता	—	धे	ई	धे	ई	न	चा	—	वे
सां	—	नि	ध	नि	—	ध	प	ध	—	प	म
कां	—	कृ	ति	कां	—	कृ	ति	कां	—	कृ	ति
ग	—	म॑	ध	सां	सां	नि	ध	प	प	म॑	ध
कां	—	कृ	ति	क	र	मृ	दं	—	गि	ना	—

राग ईमन ताल चौताल

बलवल हों तनक तनक करडारों इन पर जे रहे निसदिन चरनन नेरे ।
जीवनमुक्त सदा तेही जन जो श्रीवल्लभनंदनके ही चेरे ।
तिनकी महिमा मोपें बरनी न जाई, जिन तनही हस हस हेरे ।
'चतुर' कहे श्री विठ्ठलनाथ प्रभुसों हमहु गिनयेजु तिनमें भले बुरे तोहि तेरे ।

स्थायी

०		३		४		×		०		२	
सां	सां	नि	नि	ध	प	ध	नि	ध	प	—	प
ब	ल	व	ल	—	हों	त	न	—	क	—	त
ध	प	—	म॑	ग	म॑	प	—	—	ग	—	रे
न	क	—	क	—	र	डा	—	—	रों	—	री
ऩि	रे	ग	रे	सा	सा	ऩि	ध़	प़	सा	—	रे
ई	न	—	प	—	र	जे	—	र	हे	—	नि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	मं	ग	मं	प	प	रे	ग	रे	ऩि	रे	सा
स	दि	न	—	च	र	न	न	—	ने	—	रे

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	—	ग	प	ध	प	सां	—	—	सां	—	—
जी	—	—	व	—	न	मु	—	—	क्त	—	—
नि	—	ध	सां	—	रें	गं	रे	नि	नि	ध	प
स	—	—	दा	—	ते	ही	—	—	ज	—	न
प	ग	—	प	ध	प	नि	ध	प	प	ध	प
जो	—	—	श्री	—	—	व	—	—	ल्ल	—	भ
नि	—	ध	सां	—	सां	रें	गं	रें	सां	नि	ध
नं	—	—	द	—	न	के	—	—	ही	—	—
नि	ध	प	रे	—	सा						
चे	—	—	रे	—	—						

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	प	—	प	—	प	ध	नि	ध	प	—	प
ति	न	—	की	—	म	हि	मा	—	मो	—	पें
मं	—	ध	नि	सां	सां	नि	—	—	ध	प	—
व	—	र	नी	—	न	जा	—	—	ई	—	—
प	मं	—	ग	—	रे	ग	रे	सा	ऩि	रे	सा
जि	न	—	त	—	न	ही	—	—	हँ	—	स
ऩि	ध़	—	सा	—	रे	ग	—	मं	प	—	—
हँ	—	—	स	—	—	हे	—	—	रे	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	ग	ग	प	ध	प	सां	–	–	रें	सां	सां
च	–	तु	र	–	क	हे	–	–	श्री	–	विं
नि	–	ध	सां	–	रें	सां	सां	नि	नि	ध	प
ठ	–	ल	ना	–	थ	प्र	भु	–	सों	–	–
प	ग	–	प	–	प	ध	नि	ध	प	ध	प
ह	मे	–	हु	–	गि	नि	ये	–	जू	–	–
सां	ध	–	सां	–	रें	रें	गं	रें	सां	नि	ध
ति	न	–	में	–	भ	ले	–	–	बु	रे	–
नि	ध	प	रे	–	सा	सां	सां	नि	नि	ध	प
तो	–	हि	ते	–	रे	ब	ल	ब	ल	–	हौं

राग—यमन, ताल—चौताल

लालसंग रासरंग लेत मान रसिक रवन
अग्रता अग्रता ततततततत थेई थेई गति लीने ।

सा रि ग म प ध नि ध्वनि सुनि ब्रजराजकुंवर गावत री
अति जति संगीतनिपुन तननननन आनि आनि गति चीने ॥१॥

अदित मुदित सरदचंद बंद टूटे कंचुकीके
वैभव निरखि निरखि कोटि मदन हीने ।

बिहरत बन रासविलास दंपतिमन ईसद् हास
'छीतस्वामी' गिरिवरधर रस बस तब कीनें ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	नि	ध	प	प	—	प	म	ग	ग
ला	—	ल	सं	—	ग	रा	—	स	रं	—	ग
ग	—	ग	रे	ग	म॑	प	रे	ग	रे	सा	सा
ले	—	त	मा	—	न	र	सि	क	र	व	न
नि़	ध़	नि़	रे	ग	ग	म॑	ग	म॑	प	ध	प
ग्र	ग्र	ता	ग्र	ग्र	ता	त	त	त	त	त	त
सां	—	रें	गं	रें	सां	नि	ध	प	म॑	ग	म॑
थे	—	ई	थे	—	ई	ग	ति	—	ली	—	ने

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
सा	—	रे	ग	म॑	प	ध	नि	—	सांनि	रें	सां
सा	—	रि	ग	म	प	ध	नि	—	ध्व-	—	नि
सां	रें	गं	रें	सां	सां	सां	—	नि	नि	ध	प
सु	नि	—	ब्र	—	ज	रा	—	ज	कुं	व	र
नि	ध	प	प	—	प	ध	प	म॑	ग	म॑	प
गा	—	व	त	—	री	अ	ति	—	ज	—	ति
सा	सा	रे	रे	ग	ग	म॑	म॑	प	प	ध	ध
सं	गी	त	नि	पु	न	त	न	न	न	न	न
सां	—	रें	गं	रें	सां	नि	ध	प	म॑	ग	म॑
श्रा	—	नि	आ	—	नि	ग	ति	—	ची	—	ने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग यमन—ताल धमार

माई होरी खेलै कान्ह कुंजनिमें झुंडनिमें या गोकुलके खेंडे।
ढीढ लबार कह्यो नहिं मानत वह पहेर्यो हे सबनिके पेंडे।
कंचनकी पिचकाई कर लिए खेलत अपने एंडे।
'कृष्णजीवन लछिराम' के प्रभु पिय तोरत लाजकी मेंडे।

स्थायी

०			३				×					२	
नि	प	प	रे	—	म॑	म॑	प	—	—	म॑	ग	ग	रे
मा	ई	—	हो	—	री	—	खे	—	—	ले	—	का	—
रे	ग	रे	ऩि	रे	सा	—	ग	सा	—	ऩि	ध़	प़	—
न्ह	—	कुं	ज	नि	में	—	झुं	ड	—	नि	—	में	—
प़	सा	ध़	सा	—	रे	रे	प	रे	—	ऩि	रे	सा	—
या	—	—	गो	—	कु	ल	के	—	—	खें	—	डे	—

अन्तरा

×					२		०			३			
प	—	प	सां	सां	नि	ध	सां	—	सां	सां	रें	सां	सां
ढी	—	ठ	—	ल	बा	—	र	—	क	ह्यो	—	न	हिं
नि	रें	—	गं	रें	सां	—	नि	ध	नि	ध	प	म॑	ग
मा	—	—	न	—	त	—	व	ह	—	प	यों	—	हे
(म॑)प	प	—	म॑	ग	ग	प	रे	—	सा	नि	धप	म॑	गम॑
स	ब	—	नि	—	के	—	पें	—	डे	मा	ई—	हो	री—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग खमाज—संक्षिप्त विवरण

(१) थाट : खमाज से खमाज राग उत्पन्न होता है। (२) जाति षाडव सम्पूर्ण है, क्योंकि इसके आरोहमें ऋषभ स्वर वर्ज्य किया जाता है। (३) स्वर—अवरोहमें नि कोमल और बाकी के शुद्ध लगते है। (४) वादी गान्धार है, और संवादी स्वर निषाद है। (५) समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। (६) विशेष यह राग का वैचित्र्य ग, मप, नि स्वरों पर है। इन स्वरों पर अनेक तानें लाकर समाप्त की जाती है।

सम्प्रदाय में खमाज राग के पद बहुत कम प्राप्त होते हैं। केवल ब्याह, सांझी, हिंडोला इत्यादि कुछ त्यौहारो के अतिरिक्त नित्य ऋतुक्रम की प्रणाली में यह राग गाया नहीं जाता। संभव है कि ठुमरी अंगका यह राग होने से अष्टछाप आदि महानुभावोंने इस राग का उपयोग न किया हो। श्रीहरिरायजी के समय के पूर्व यह राग गाने की परम्परा दिखाई नहीं देती।

(७) पकड स्वर :— निध, मप, ध, मग.

(८) आरोहावरोह :— सग, गम, प, धनिसां। सांनिधप, मग, रेसा।

राग खमाज—ताल त्रिताल

माई मेरो लाल बनावनि आयो।
रतनजटित को सीस सहेरो, हीरामोती लाल जरायो ॥१॥
नंदरायको कुंवर लाडिलो जसुमति गोद खिलायो।
"पुरुषोत्तम" प्रभुकी छबि निरखत, रोम—रोम सचुपायो ॥२॥

स्थायी

२				०				३				×			
धनि	पध	नि	सां	नि	धप	म	ग	ग	म	प	ध	नि	–	सां	–
मा–	ई–	मे	रो	ला	––	ल	व	ना	–	व	नि	आ	–	यो	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

२	०	३	×
ग म नि ध	नि नि सां –	– नि – सां	सांरें निसां नि ध
र त न ज	टी त को –	– शी – श	स– हे– रो –
सां गं गं मं	रें गं नि सां	निध पध नि सां	धनि पध नि सां
ही रा मो ती	ला – ल ज	रा– –– यो –	मा– –ई मे रो

संचारी

२	०	३	×
ग म नि ध	सां नि सां –	नि नि सां सां	– नि धप ध
नं – द रा	– य को –	कुं व र ला	– डि लो– –
प ध म ग	ग म प ध	नि – – –	सां – – –
ज सु म ति	गो – द खि	ला – – –	यो – – –

राग खमाज–ताल चौताल

गायो न गोपाल मन लायो न रसाल लीला
सुनी न सुबोधिनी न साधुसंग पायो हे ।
सेव्यो नहिं स्वाद करी घरी आधि घरी हरि
कबहुँ न कृष्ण-नाम रसना रटायो हे ॥१॥
श्रीवल्लभ विठ्ठलेश प्रभुकी सरन जाइ
दिन होइ मतिहीन सीस न नमायो हे ।
'रसिक' कहे बार–बार लाजहू न आवै तोहि
मनुस-जन्म पाइ मूढ कहा तू कमायो हे ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	सां	नि	सां	—	सां	नि	सां	नि	धप	ध	म
गा	—	यो	न	—	गो	पा	—	ल	म—	—	न
ग	—	म	प	सां	नि	ध	—	म	ग	—	ग
ला	—	यो	न	—	र	सा	—	ल	ली	—	ला
ग	नि	सा	ग	—	म	प	—	ध	ग	—	म
सु	नी	—	न	—	सु	बा	—	धि	नी	—	न
सां	—	नि	ध	—	म	प	—	ध	म	—	ग
सा	—	धु	सं	—	ग	पा	—	यो	हे	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	ग	म	नि	ध	नि	सां	—	नि	सां	—	सां
से	—	व्यो	न	—	हिं	स्वा	—	द	क	—	रि
नि	नि	—	सां	—	सां	सां	नि	सां	नि	—	ध
ध	री	—	आ	—	धि	ध	री	—	ह	—	रि
ध	प	म	प	—	ध	नि	सां	नि	सां	—	सां
क	ब	—	हु	—	न	कु	—	ष्ण	ना	—	म
सां	रें	नि	ध	—	म	प	—	ध	म	—	ग
र	स	—	ना	—	र	टा	—	यो	हे	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		०		२		०		३		४	
ध	—	ध	ध	प	ध	नि	—	सां	नि	—	ध
श्री	—	व	ल्ल	—	भ	वि	—	ठ्ठ	ले	—	श
ध	ग	म	प	सां	नि	ध	—	ग	म	—	ग
प्र	भु	—	की	—	स	र	—	न	जा	—	ई
ग	नि़	सा	ग	—	म	प	प	—	ध		ग म
दी	—	न	हो	—	य	म	ति	—	ही	—	न
नि	—	नि	ध	—	म	प	ध	म	ग	रे	सा
सी	—	स	न	—	न	मा	—	यो	हे	—	—

आभोग

×		०		२		०		३		४	
म	ग	म	नि	ध	नि	सां	—	नि	सां	—	सां
र	सि	क	क	हे	—	बा	र	र	बा	—	र
प	नि	नि	सां	—	सां	नि	सां	सां	नि	—	ध
ला	—	ज	हू	—	न	आ	—	वे	तो	—	हिं
ध	ग	म	प	—	ध	नि	सां	नि	सां	—	सां
म	नु	स	ज	—	न्म	पा	—	यो	मू	—	ढ
रें	नि	—	ध	—	म	प	—	ध	म	—	ग
क	—	हा	तू	—	क	मा	—	यो	हे	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग कल्याण—संक्षिप्त विवरण

यह राग प्राचीन है। इस राग के भी विविध प्रकार पाये जाते हैं। 'संगीतानूपाकुश' ग्रन्थ में तेरह प्रकार का उल्लेख है, किन्तु यह सभी प्रकारों का प्रचार व्यवहार में दिखाई नहीं देता। यहां हम अष्टछाप-(हवेली) संगीत परम्परा में पाये जाने वाले प्रकारों की चर्चा करेंगे। इस परम्परा में कल्याण राग एवं इनके प्रकारों का सायंसेवाप्रणाली में गाये जाने वाले रागो में महत्त्वपूर्ण स्थान है। राग कल्याण को सन्ध्यारति के पश्चात् अधिकतर शयन के दर्शनसमय गाने की प्रथा है। शयन के दर्शन सूर्यास्त के पश्चात् ही होते हैं अतः रात्रि का प्रथम प्रहर का शास्त्रीय समय-गान सर्वमान्य हैं।

कल्याण का 'शुद्ध-कल्याण' नाम से प्रचार हा रहा है, परन्तु सम्प्रदाय के लिखित एवं प्रकाशित सभी ग्रन्थों में केवल 'कल्याण' ऐसा ही उल्लेख किया गया हैं। ग्रन्थों में तथा प्रचार में थाट 'कल्याण' नाम का ही उल्लेख किया जाता है, न कि थाट शुद्ध-कल्याण। कल्याण के पूर्व शुद्ध शब्द का प्रयोग किस कारण लगाया जाता होगा यह विचारणीय है। मुख्य दस थाटों में 'कल्याण' को थाट का नाम भी दिया गया है। थाट सम्पूर्ण होना ही चाहिए यह नियमानुसार थाट में से उत्पन्न होने वाले रागों में लगने वाले स्वर उस राग में न हो तो उस राग के जनक थाट का दिया हुआ नामकरण निश्चित रूप से सुसंगत नहीं हो सकता। इस लिये 'कल्याण' का अवरोह सम्पूर्ण माना जाता हैं।

सम्प्रदाय की प्रणाली अनुसार इस राग की प्रकृति गम्भीर और शीतल होने से नित्य-क्रम में यह राग का गान शीतकाल के दिनोंमें वर्ज्य माना जाता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रचार में भूपाली के अनुसार आरोह–अवरोह में मध्यम और निषाद वर्ज्य करते हुए तथा भूपाली की अपेक्षा मन्द्र स्थान में अधिक झुकाव रखते हुए दिखाई देते हैं, परन्तु हमारी परम्परामें ऐसा कोई नियम दिखाई नहीं देता, इससे उलटा मध्य और तार सप्तक की ओर का हुआ रहता है । अवरोह में निषाद स्पष्ट रूप से भी लगाया जाता हैं, किन्तु मध्यम तीव्र को गौण (कण) रूप से या मींड में प्रयोग होता है ।

यह राग कल्याण थाट से उत्पन होता है अतः इस राग के आरोह में (मं तीव्र) मध्यम और निषाद स्वर वर्ज्य होने से जाति औडव सम्पूर्ण है । वादी स्वर गान्धार और संवादी स्वर धैवत है ।

आरोहावरोह :–सा, रेग, पधसां । सां नि ध प, मंग, रे, सा.

पकड : ग, रेसा, नि़ ध़ प़, सा. गरे, वरे, सा.

स्वरविस्तार :–सा, रे, ग, पग, रेग, रे, सारे सा ।

राग कल्याण–ताल धमार

डोल झूलत हें गिरिधरन झुलावन वाला ।
निरखि निरखि फूलत ललितादिक साधावर नंदलाला ॥१॥
छिरकत चोवा चंदन बंदन, उडत अवीर गुलाला ।
कमलनयन को पान खवावत पहिरावत उरमाला ॥२॥
वाजत ताल मृदंग अघौरी बिच–बिच वेनु रसाला ।
'नंददास' जुबतिजन गावत रिझवत श्रीगोपाला ।

स्थायी

			प मं ग प
			डो — — ल
×	२	०	३
नि ध — प —	ग प	रे — सा —	प मं ग प
झु — — ल —	व —	हे — —	डो — — ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि ध — प —	ग प	ग रे ग	प — ध —
झु — — ल —	त —	है — —	गि — रि —
सां सां — सां —	— नि	ध प —	ध — रें —
ध र — न —	— झु	ला — —	व — त —
सां — — नि ध	नि ध	प — —	ग — प —
वा — — ला —	— —	डो — —	— — ल —

अन्तरा

×	२	०	३
प ग — प —	ध प	सां सां —	सां — सां —
निं र — ख —	— नि	र ख —	फू — ल —
नि ध — सां —	रें —	सां — —	ध — प —
त — — ल —	लि —	ता — —	दि — क —
सा रे — ग —	रे —	सां नि ध	प — ध रें
रा — — धा —	— —	व र —	नं — द —
सां — — नि ध	नि ध	प — —	ग — प —
ला — — ला —	— —	डो — —	— — ल —

राग कल्याण–ताल धमार

कही न परे हो कान्ह कुंवर की सुंदराई ।
कोटिमदन नखजोति विलोकत परसत नवइंदुकिरन की जुन्हाई ॥१॥
कंकणवलय हार–गजमोती देखियत अंग अंग में वह झांई ।
सुघर सुजान स्वरूप सुलक्षण "गोविंद" प्रभु सब बिध सुंदरताई ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

ग रे सा रे
क ही न प

×	२	०	३
प – ग प –	ध प	ग रे सा	मं ग प प
रे – – – –	– –	हो – –	का – न्ह कुं
ध ध – नि ध	प प	रे – सा	ग रे सा रे
व र – की –	सुं द	रा – ई	क ही न प

अंतरा

×	२	०	३
प ग – प –	ध प	सां सां –	सां – सां –
को – – टि –	म –	द न –	न – ख –
नि ध – सां –	रें –	गं रें –	सां – सां –
जो – – ति –	व –	लो – –	क – त –
नि ध – प प	म॑ ग	प – –	ग – प ध
प र – स त	न व	ई – –	न्दु – कि –
नि ध – प ग	ग –	रे – सा	ग रे सा रे
र न – की –	जु –	न्हा – ई	क ही न प

राग कल्याण—ताल चौताल

मेरे तो कान्ह हे री प्रान सखी आन ध्यान
नाहिं मेरे मनके हरन सुखके करन ॥१॥
लटपटी पचरंग पाग ढरकि रही वाम भाग
कुंभकुम को तिलक माल नेनकमल स्याम बरन ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भृकुटि कुटिल लोल कपोल रत्नजटित कुंडल डोल
मानों ससि प्रगट भयो उदय किये जुगल तरनि ॥३॥
प्रभु 'कल्यान' गिरिधरकी सोभा निरखि विथकित भई
मोहि लई माई मुरली अधर मधुर धरनि ॥४॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	ध	प	प	ग	प	ध	प	प	रे	सा	—
का	—	न्ह	हे	—	री	प्रा	—	न	स	खी	—
ऩि	ध़	प़	ग	ग	प	ध	प	ग	रे	ग	पुध
आ	—	न	ध्या	न	ना	हि	—	मे	रे	सु	ख—
सां	सां	ध	प	ग	प	रे	सा	—	प	ग	म॑
क	र	न	दु	ख	ह	र	न	—	मे	रे	तो

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	ग	प	प	ध	प	सां	—	सां	सां	रें	सां
ल	ट	प	टी	प	च	रं	—	ग	पा	—	ग
ध	निध	सां	रें	गं	—	पं	रें	गं	रें	सां	सां
ढ	र—	कि	र	ही	—	वा	—	म	भा	—	ग
गं	रें	सां	सां	ध	प	नि	ध	नि	ध	प	प
कुं	—	कु	म	को	—	ति	ल	क	भा	—	ल
सां	—	ध	प	म॑	ग	प	रे	ग	रे	ग	रे
ने	—	न	क	म	ल	स्या	—	म	ब	र	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	प	प	प	ध	प	नि	ध	प	प	—	प
भ्रु	कु	टी	कु	टि	ल	लो	ल	क	पो	—	ल
म	ग	प	प	ध	ध	सां	सां	ध	प	—	प
र	—	त्न	ज	टि	त	कुं	ड	ल	डो	—	ल
ध	—	प	—	ग	रे	प	प	ग	रे	सा	—
मा	—	नों	—	स	सि	प्र	ग	ट	भ	यो	—
नि़	ध़	सा	रे	ग	—	प	रे	ग	रे	सा	सा
उ	द	य	कि	ये	—	जु	ग	ल	त	र	नि

राग श्याम कल्याण-संक्षिप्त विबरण

श्याम कल्याण कल्याणी थाट का राग हैं। इस राग के सम्बन्ध में कुछ मतभेद भी दिखाई देता है। आजकल जो श्याम कल्याण का स्वरूप प्रचार में दृष्टिगत होता हैं इस में कल्याण का अंग कहीं और कितना प्रमाण में है? वह मार्मिकों अच्छी तरह से समझ सकते हैं क्योंकि अधिकतर केदार और कामोद का संग हीं प्रदर्शित होता हैं। कहीं-कहीं मर की मींड में सोरठ की झांखी होती है। केदार के वादी संवादी इस में संबादीवादी बन जाते हैं। कामोद का पंच भी महत्त्व-पूर्ण रहता है तथा ऋषभ गाधार का स्पष्ट प्रयोग इत्यादि से कल्याण थाट या शंकराभरण थाट कहना मुश्किल होता है। केवल आरोह में पंचम लेते समय तीव्र का प्रयोग करने से कल्याण थाठ कहना समझ में नहीं आता। ग्रन्थों में शाम, साम, सोम तथा श्याम कल्याणी राग नामों से उल्लेख प्राप्त होते हैं। साम (श्याम) राग को 'चतुर्दण्डि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रकाशिका' ग्रन्थ में शंकरामरण थाट का कहा हैं। (अतः * प्रचार के श्याम—कल्याण को शाम या साम कहना सुरांगत होगा ।

परन्तु जो श्याम कल्याण को कल्याणी थाट का मानते हैं वह इस श्याम से भिन्न होने का कुछ लोग मानते थे। अतः प्रचार के केदार कामोद अंग के इस राग को शाभ कहना उचित समझते थे और 'शाम कल्याण' को आज का 'यमन कल्याण' हीं मानते थे । यमन राग मे शुद्ध मध्यम का क्वचित् प्रयोग करने से 'यमन कल्याण' होने की प्रथा कहां तक प्राचीन है यह हम निश्चित रूप से कह नहीं सकसे। यमन स्वयं 'कल्याण' ही हैं, ऐसी मान्यता वाले कुछ लोग यमन को कल्याण भी कहते है। जैसे वृंदावनी सारंग को केवल 'सारंग' नाम से कहने की प्रथा हाल भी प्रचार में है। इस प्रकार यमन या 'यमन कल्याण' एक ही राग मान कर यमन में क्वचित् शुद्ध मध्यम का प्रयोग वाला राग शाम कल्याण बनाते थे। इस मान्यता को 'हवेली—संगीत'-परम्परा का समर्थन प्राप्त होता है।

पं. भातखण्डेजी जिनकी पास सितार सीखे थे उन वल्लभदासजी भाटिया के गुरु गो. श्री १०८ जीवनलालजी महाराज के सम्पर्क में आये हुए और उनके मन्दिर मे जिन्होंने वर्षो तक वैष्णव नाते से कीर्तन की सेवा की थी वह श्रीविठ्ठलदासजी शाह (पाटन वाले) उन से हिंडोरा का एक पद मैंने सुना था वह शाम कल्याण का दुपद था।

किन्तु इस पद की बन्दिश ख्याल में न होने से यहाँ आधुनिक प्रचार के अनुसार दिया गया है।

---

* "शंकराभरणान्मेलात्संभूतस्सामरागकः ।
संपूर्णः सततं गेयो मन्द्रमध्यमभूषितः ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग श्याम कल्याण, ताल चर्चरी

हिंडोरे झूलत स्यामा स्याम ।
गरजत घन चलत पवन सननन सननन सनननन ।
सब गोपियन के मध्य बिराजत, लेत तान तननन तननन तनननन ॥१॥
बाजत ताल मृदंग बांसुरी उठत घोर घननन घननन घनननन ।
"आनंदघन" प्यारे मुख ऊपर उडत भँवर भननन भननन भनननन ॥

स्थायी

×		२			०		३		
म	रे	नि़	नि़	सा	रे	मं	प	—	प
झू	ल	त	—	स्या	मा	—	स्या	—	म
प	नि	ध	मं	प	म	रे	सा	रे	सा
ग	र	ज	—	त	घ	न	च	ल	त
ध	निप	नि़	सा	रे	मं	रे	मं	प	रें
प	व—	न	—	स	न	न	न	स	न
नि	ध	प	मं	प	म	रे	सारे	नि़	सा
न	न	स	न	न	न	न	हिं—	डो	रे

अन्तरा

×		२			०		३		
प	प	सां	—	सां	सां	सां	सां	रें	सां
स	ब	गो	—	पि	य	न	के	—	—
ध	निध	सां	—	रें	सां	—	ध	नि	प
म	——	ध्य	—	बि	रा	—	ज	—	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मं	मं	प	प	नि	ध	प	मं	प	रें
ले	त	ता	न	त	न	न	न	त	न
नि	ध	प	मं	प	म	रे	सारे	नि	सा
न	न	त	न	न	न	न	हिं–	डो	रे

राग केदार–संक्षिप्त विवरण

राग केदार प्राचीन एवं सुप्रसिद्ध है। शास्त्रग्रन्थों में यह राग कल्याण थाट का माना गया है। आजकल प्रचार में तीव्र मध्यम का प्रयोग दृष्टिगत होता है। इस राग में गान्धार और निषाद का कोमलत्व न होने से तीव्र मध्यम का प्रयोग सुसंगत दिखाई देता है। प्रचार में कुछ गायक लोग दोनों मध्यमों को एक के बाद दूसरा लेकर जोड देते हैं। यह कृत्य भले ही प्रिय लगता हो, परन्तु हमारे मतानुसार प्राचीन नहीं है। हमारी अष्टछाप की गायन शैली में ऐसा प्रयोग वृद्ध कीर्तनकारों से मैंने सुना नहीं है। तीव्र मध्यम केवल आरोह में ही लिया जाता है। यह स्वर इस राग में नियमित नहीं है। किन्तु आगन्तुक जैसा माना जाता है। इस राग में गान्धार स्वर वर्ज्य नहीं है तथापि अधिकतर गौण होने से विद्वान लोग उसको असत्प्राय ही मानते हैं। मध्यम से ऋषभ पर आते समय गान्धार स्वर इस प्रकार लपेटा हुआ रहता है कि मध्यम स्वर प्रधान स्वर होने से स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता। इस राग में षड्ज से मध्यम पर जाते समय 'रे ग' स्वर का प्रयोग किया नहीं जाता, क्योंकि 'रेमप' लेने से सारंग और मल्हार तथा 'रेप' लेने से कामोद का अंग उत्पन्न होता है।

"हृदयप्रकाश" ग्रन्थ में केदार राग का थाट शंकराभरण माना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गया है। तथा 'संगीतपारिजात के कर्ता अहोबल पण्डित ने भी शंकराभरण ही माना है।

रागकल्पद्रुम में इस राग का थाट बिलावल दिखाई देता है'। इस राग की प्रकृति गंभीर है। मध्यम स्वर पर कहीं कहीं गान्धार स्वर का कण उचित माना गया है।

पुण्डरीक विट्ठल ने केदार मेल का वर्णन इस प्रकार कहा है।

"लघ्वादिकी षड्जकमध्यमौजलः, । शुद्धौ समौ पंचमको विशुद्धः। निगौ विशुद्धौ च यदाभवन्ति तदा तु केदारकमेल उक्त ।"

अर्थात्: जिस मेल में षड्ज, मध्यम लघु, यानि शुद्ध और पंचम विशुद्ध है। इस को केदार मेल कहा जाता है। अतः प्राचीन मान्यतानुसार बिलावल थाट मानना उचित कहा जायेगा।

हवेलीसंगीत प्रणाली में यह राग प्रायः उष्ण काल में शयन के समय गाया जाता है। इस समय के अधिकतर कुंज के भाव के तथा रास के भाव के सुन्दर पद प्राप्त होते हैं।

आरोह—अवरोह : साम, मप, ध प, नि ध, सां, । सां, निध, प म प धप, म, गम, रेसा।

पकड : सा, म, मप, ध प म, प म, रे सा।

थाट कल्याण : जाति सम्पूर्ण

समय : रात्रि का प्रथम प्रहर,

स्वरविस्तार : वादी मध्यम संवादी षडज

---

* "गनी तीव्रौ तु केदार्यां रिस्तैन स्तोऽध गादिमा"

卐 "मध्य मांश ग्रहन्यासो धैवतो वर्जितः क्वचित्।
अधश-युत्तर त्रानं केदारत्य मतं बुधैः॥"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

साम, पम, पधपम, धपम, सामपधपम, पम, रे सा, सारेसा।

सा, रेसा, म, रेसा, प, म, रेसा, ध, प, म, रेसा, सांनिध, प, मपध; प, म, रेसा, ममरेसा। निधप मपधप, ममरेसा।

पपसां, सां, सांरेंसां, मं रेंसां, सां ध, सां, रेंसां निधप, प, ग म, रेंसां, रेंसां, निध, प, मपनिध, प, मपधपम, म, रेसां रेसां, निधप, पधपम साम, पधम, पम, ग, रे, सा सारेसा।

राग केदार—ताल त्रिताल

कदंब बन वीथन करत बिहार।
अति रसभरे मदन मोहन पिय तोयौं प्रिया उर हार ॥१॥
कनकभूमि बिखरें गजमोती, कुंजकुटी के द्वार।
'गोविंद'प्रभु श्रीहस्त कर, पोवत, सुंदर ब्रजराजकुमार ॥२॥

स्थायी

३				×				२				०			
म	प	ध	प	म	—	म	मग	प	मप	ध	प	म	रे	सा	प
दं	ब	ब	न	बी	—	थ	न—	क	र	त	वि	हा	—	र,	क
म	प	ध	प	धनि	सां	ध	प	म	प	ध	प	म	रे	सा	प
दं	ब	ब	न	बी—	—	ध	न	क	र	त	वि	हा	—	र,	—

अन्तरा

×				२				०				३			
म	मग	प	धप	सां	सां	—	सां	प	ध	सां	रें	सां	नि	ध	प
अ	ति—	र	स—	भ	रे	—	म	द	न	मो	—	ह	न	पि	य

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां गंमं रें सां	ध नि सां रें	सांनि धनि धप प	मं प ध प
तो —— यों पि	या — उ र	हा— —— र— क	दं ब ब न

संचारी

×	२	०	३
म मग प प	ध ध प प	धनि सां ध प	मंप धप म —
क न— क भू	— मि वि ख	रे— ग ज	मो— — ती —
ध मं ध प	म रे सा —	सा मम प मध	ध प म —
कुं — ज कु	टी — के —	द्वा — — —	— — र —

आभोग

×	२	०	३
प पम ध प	सां — सां सां	ध नि सां रें	सां नि ध प
गो विं- द प्र	भु — श्री ह	— स्त क र	पो — व त
मं रें सां सांनि	ध नि सां रें	सांनि ध प प	मं प ध प
सुं द र ब्रज	रा — ज कुं	व— — र क	दं ब ब न

राग केदार—ताल चर्चरी

राधिका आज आनंदमें डोलें ।
सांवरे चंद गोविंदके रसभरी, दूसरी कोकिला मधुर सुर बोलें ॥१॥
पहरें तन नील पट कनकहारावली, हाथ ले आरसी रूपकों तोलें ।
कहत 'श्रीभट्ट' ब्रजनार नागर बनी, कृष्णके सीलकी ग्रंथिका खोलें ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×			२		०		३		
म	–	ध	प	–	म	–	रे	सा	–
रा	–	धि	का	–	आ	–	ज	आ	–
म	–	म	म	ग	प	–	ध	प	म
नं	–	द	में	–	डो	–	लें	–	–
प	–	म	ध	प	म	–	रे	ऩि	सा
रा	–	धि	का	–	आ	–	ज	–	आ

नंद्में डोले—उपर्युक्तानुसार।

अन्तरा

×			२		०		३		
म	ग	ग	प	ध	सां	–	सां	सां	–
सां	–	व	रे	–	चं	–	द	गो	–
ध	–	सां	रें	–	सां	ध	सां	सां	–
विं	–	द	के	–	र	स	भ	री	–
सा	–	रें	गं	मं	रें	–	रें	सां	नि
दू	–	स	री	–	को	–	कि	ला	–
ध	नि	ध	प	म	नि	ध	सां	ध	प
म	धु	र	सु	र	बो	–	लें	–	–

संचारी

×			२		०		३		
नि	नि	ध	नि	ध	नि	–	ध	प	प
प	ह	रें	त	न	नी	–	ल	प	ट

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	म	ग	प	ध	सां	—	ध	प	—
क	न	क	हा	—	रा	—	व	ली	—
म	ग	म	ध	प	म	—	रे	नि	सा
हा	—	थ	ले	—	आ	—	र	सी	—
म	—	म	म	ग	प	—	प	—	—
रू	—	प	को	—	तो	—	ले	—	—

राग केदारो — ताल चौताल

बनठनि कहाँ जु चले हो, एसी कोन मन भाई,
सांवरे सलो ने कन्हाई ।
मुख सोहैं जैसें दूज को चंदा,
छिप—छिप देत दिखाई ॥१॥
भलें ही जाउ नेक ठाडे रहोगे,
किन सोतन एसी सीख सिखाई ।
'नंददास'प्रभु अब न बनेगी,
निकसि जायगी ठकुराई ॥२॥

स्थायी

०		३		४		×		०		२	
—	ध	प	मग	प	प	नि	ध	प	प	ध	प
—	ब	न	ठ—	—	नि	क	हां	—	जु	—	च
म	—	—	सा	—	सा	सा	—	म	ग	प	मप
ले	—	—	हो	—	—	ए	—	सी	—	को	न

ध	—	प	ध	रें	—	सा	सा	—	म	मग	प	प
म	न	—	आ	—	ई	सां	—	व	रे—	—	स
ध	प	नि	ध	सां	रें	सां	नि	ध	प	म̍	प
लो	—	—	ने	—	क	न्हा	—	—	ई	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	—	—	सां	—	सां	सां	—	—	सां	रें	सां
मु	—	—	ख	—	सो	हे	—	—	जे	—	से
सां	ध	—	सां	—	रें	सां	—	नि	ध	नि	प
दू	—	—	ज	—	को	चं	—	—	दा	—	—
म	—	प	सां	—	गं	गं	मं	रें	सां	—	रें
छि	—	प	छि	—	प	दे	—	—	त	—	दि
सां	नि	ध	प	म̍	प	म	ध	प	मग	प	प
खा	—	—	ई	—	—	—	व,	न	ठ—	—	न

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	—	प	—	प	ध	—	—	प	—	प
च	ले	—	ही	—	जा	उ	—	—	ने	—	क
म	—	—	प	—	नि	ध	प	ध	प	म	—
ठा	—	—	डे	—	र	हो	—	गे	—	—	—
म	म	—	म̍ प	ध	प	म	—	—	रे	—	सा
कि	न	—	सो	—	त	न	—	—	ए	—	सी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	—	—	म	—	प	ध	प	म	रे	—	सा
सी	—	—	ख	—	सि	खा	—	—	ई	—	—

राग केदार—ताल चौताल

अद्भुत नटभेख धरें जमुनातट स्यामसुंदर,
गुननिधान गिरिवरधर रास रंग नाचें ।
जुवतिजूथ संग मिलि गावत केदारो राग,
अधर वेनु मधुर मधुर सप्त सुरन सांचें ॥१॥
उरप तिरप लाग डाट ततथेई ततथेई थेई थेई,
उघटत सब्दावलि गति भेद कोउ न बांचें ।
'चत्रभुज'प्रभु वनविलास मोहे सब सुर अकास,
सघन चंद विथक्यो रथ पच्छिम नहिं खांचें ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	—	ध	पम	ध	प	म	—	म	मग	प	प
अ	—	द्भु	त—	न	ट	भे	—	ख	ध—	—	रे
म	म	म	प	ध	प	म	—	रे	सा	रे	सा
ज	मु	ना	—	त	ट	स्या	—	म	सुं	द	र
सा	सा	सा	म	—	मग	प	प	ध	प	सां	रें
गु	न	नि	धा	—	न—	गि	रि	व	र	ध	र
सां	नि	ध	प	ध	प	म	—	—	प	ध	प
रा	—	स	रं	—	ग	ना	—	—	चें	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	प	प	सां	—	सां	सां	—	सां	रें	सां	—
जु	व	ति	जू	—	थ	सं	—	ग	मि	लि	—
सां	ध	ध	सां	—	रें	सां	—	सां	ध	नि	प
गा	—	व	त	—	के	दा	—	रो	रा	—	ग
सां	सां	गं	गं	मं	रें	सां	सां	सां	रें	सां	सां
अ	ध	र	वे	—	नु	म	घु	र	म	धु	र
सां	नि	ध	प	ध	प	म	—	—	प	ध	प
स	—	म	सु	र	न	सौं	—	—	चें	—	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	म	प	प	प	ध	धनि	ध	प	—	म
उ	र	प	ति	र	प	ला	——	ग	डा	—	ट
प	प	ध	ध	सां	सां	नि	नि	ध	ध	प	प
त	त	थे	ई	त	त	थे	ई	थे	ई	थे	ई
म	म	प	प	ध	प	म	—	म	सा	रे	सा
उ	घ	ट	त	—	स	ब्दा	—	व	लि	ग	ति
सा	—	म	मग	र	प	ध	प	म	प	म	—
भे	—	द	को—	उ	न	बां	—	—	चैं	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	—	सां
च	त्रु	भु	ज	प्र	भु	ब	न	वि	ला	—	स
सां	—	ध	—	सां	रें	सां	नि	ध	प	म	म
मो	—	हे	—	स	ब	सु	र	अ	का	—	स
प	सां	सां	मं	—	रें	सां	सां	रें	सां	—	सां
स	घ	न	चं	—	द	वि	थ	क्यों	र	—	भु
सां	नि	ध	प	ध	प	म	—	—	प	ध	प
प	—	च्छि	म	न	हिं	खां	—	—	चें	—	—

राग केदारो — ताल चौताल (ध्रुपद)

चलो क्यों न देखेंरी खरे दोऊ कुंजनकी परछांईं ।
एक भुजा गहि डार कदमकी, दुजी भुजा गल बांईं ॥१॥
छबिसों छबिली लपटि लटकि रही, कनकबेलि तरुतमाल अरुझांईं ।
'हरिदास'के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी, रंगे हें प्रेम रंगमांईं ॥२॥

स्थायी

धप	
च—	

३		४		×		०		२		०	
म	मग	प	धप	सां	—	ध	प	म	म	ध	प
लो	क्यों	—	न—	दे	—	—	खो	—	री	—	ख
म	रे	—	सा	सा	—	—	म	—	मग	प	—
रे	दा	—	उ	कुं	—	—	ज	—	न—	की	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

—	ध	सां	रें	सां	नि	ध	प	प	म	—	धप
—	प	—	र	छां	—	—	ई	—	—	—	च—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	—	—	सां	—	सां	सां	—	—	सां	रें	सां
ए	—	—	क	—	भु	जा	—	—	ग	—	हि
सां	ध	—	सां	—	सां	रें	—	सां	नि	ध	प
डा	—	—	र	—	क	द	—	म	की	—	—
प	—	—	गं	मं	रे	सां	नि	ध	ध	सां	रें
दु	—	—	जी	—	भु	जा	—	—	ग	—	ल
सां	नि	ध	प	प	म	—,	ध				
वां	—	—	ई	—	—	—,	च				

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	—	प	—	—	ध	प	म	मग	प	—
छ	वि	—	सों	—	—	छ	वि	—	ली—	—	—
प	प	—	ध	सां	सां	नि	ध	प	ध	प	म
ल	प	—	टि	—	ल	ट	—	कि	र	—	ही
प	प	—	ध	—	प	म	—	म	रे	—	सा
कु	न	—	कु	—	वे	ली	—	त	रु	—	त
सा	—	—	म	—	प	ध	प	म	रे	—	सा
मा	—	—	ल	—	अ	रु	—	—	झां	—	ई

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग केदार — ताल धमार

भली भई ब्रज होरी आई घर आये घनस्याम चोवाचंदन और
अरगजा वे राधाके काम ॥१॥
धन तेरो भाग, सुहाग लाडिली और न दूजी वाम ।
'कृष्ण जीवन' लछिराम के प्रभुसों ज्यों सीता मिलि राम ॥२॥

स्थायी

ध	मग	प	प
भ	ली-	—	भ

×					२		०			३			
सां	—	रें	सां	नि	ध	प	म	प	म	सा	रे	सा	—
इ	—	—	ब्र	ज	हो	—	री	—	—	आ	—	ई	—
सा	म	मग	प	निध	सां	रें	सांनि	ध	प	ध	मग	प	प
घ	र	आ-	ये	—-	घ	न	स्या-	-	म	भ	ली-	—	भ

अन्तरा

×					२		०			३			
प	—	—	सां	—	—	—	सां	रें	—	सां	—	सां	—
चो	—	—	वा	—	—	—	चं	—	—	द	—	न	—
सां	नि	ध	सां	—	सां	रें	सां	सां	नि	ध	प	म	—
औ	—	—	—	—	अ	र	ग	जा	—	—	—	वे	—
मं	मं	गं	मं	रें	सां	रें	सांनि	ध	पं	ध	मग	प	प
रा	—	—	धा	—	के	—	का-	-	म	भ	ली-	-	भ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग काफी–संक्षिप्त विवरण

काफी थाट से उत्पन्न होने वाला यह राग सम्प्रदाय में अधिकतर होरी–खेल के दिनों में तथा हिंडोरा–झूला के दिनों में गाया जाता है। बधाई और कुछ त्यौहार के पद भी प्राप्त होते हैं। इस राग की जाति सम्पूर्ण है। स्वर गान्धार, निषाद कोमल, बाकी के सब शुद्ध लगते हैं। वादी पंचम और संवादी षड्ज है। अन्यमतानुसार गान्धार–निषाद का संवाद माना जाता हैं। समय मध्यरात्रि होते हुए भी प्रचार में सर्वकालीन माना जाता है। अतः सम्प्रदाय की प्रातः एवंम् सायं–सेवाप्रणाली में भी इस राग के पद गाये जाते हैं। इस राग के आरोह में तीव्र गान्धार और तीव्र निषाद अनेक बार लिये जाते हैं। ये स्वर नियमित नहीं हैं, किन्तु योग्य प्रमाण में उपयोग करने से अति वैचित्र्य दिखाई देता है। क्वचित् उचित स्थान पर कोमल धैवत का प्रयोग करने से भी रागहानि नहीं, किन्तु सौन्दर्यंना मानी जाता हैं। राग की खूबी सा, ग, प, और नि स्वरो पर है।

पकडस्वर :— सासा, रेरे, ग ग, मम, प।

आरोहावरोह :— सारेग, म, प, धनिसां। सांनिध, प, मग, रेसा.

स्वरविस्तार :— संगीत सुबोधिनी ग्रन्थ में देखिये।

राग काफी — ताल धमार

ओरन सों खेलै धमार मोसों, मुख हू न बोले।
नंदमहरको लाडिलो मोसों, एँडो ही डोले ॥१॥
श्रीराधाजू, पनियाँ निकसी, वाको घूंघट खोले।
'सूरदास'प्रभु सांवरो, हियरा बिच डोले। ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×					२		०			३			
सा	—	—	रे	—	रे	—	ग	—	—	म	—	प	म
औ	—	—	र	—	न	—	सौं	—	—	खे	—	—	—
नि	—	—	ध	—	नि	—	प	प	—	ग	—	म	—
लै	—	—	ध	—	मा	—	—	र	—	मों	—	सों	—
प	प	—	ध	—	प	—	ग	—	—	रे	—	ग	सा
सु	ख	—	हु	—	न	—	बो	—	—	लै	—	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
म	—	—	प	—	ध	—	नि	नि	—	सां	—	—	—
नं	—	—	द	—	म	—	ह	र	—	को	—	—	—
रें	—	—	गं	—	रें	—	सां	—	—	ध	—	प	ध
ला	—	—	—	—	डि	—	लो	—	—	मों	—	सों	—
सां	नि	—	ध	—	प	—	म	प	—	ग	रे	ग	—
अें	—	—	डो	—	ही	—	डो	—	—	लै	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
नि	—	—	सां	—	सां	—	सां	सां	—	ध	—	नि	प
रा	—	—	धा	—	जु	—	प	निं	—	यां	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

—	—	—	प़	—	ध	प	म	प	—	ग	—	रे	—		
—	—	—	नि	—	क	—	सी	—	—	हो	—	—	—		
सा	—	—	रे	—	—	—	ग	—	—	म	—	प	म		
वा	—	—	को	—	—	—	घूं	—	—	घ	—	ट	—		
नि	—	—	ध	—	नि	—	प	—	—	—	—	—	—		
खो	—	—	—	—	—	—	लै	—	—	—	—	—	—		

राग काफी — ताल धमार

भरोरे न भरोरे लंगरवा, हाँ हाँ मोहि जिनि भरोरे लंगरवा ॥ध्रु०॥
सब सखियन मिलि केशर घोर्यो, भरि भरि लाई करवा।
भरि पिचकारी मेरे मुख पर डारि मेरी अंगियां भींजत बस करोरे लंगरवा ॥१॥
बरजि रही बरज्या मानत्त, तोर्यो उरको हरवा।
उलटो मोहन फगुवा मांगे, व्है रह्यो होरी को भरुवा ॥२॥
सुनैगा नाहक नहिं लरैगो, और कुटुंब को डरवा।
'कृष्णजीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे, लेहुँगी बलैया पांय परवा ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
निं	नि	—	सां	—	सां	रें	सां	नि	—	ध	—	प	प
भ	रो	—	रे	—	—	न	भ	रो	—	रे	—	न	—
प	प	—	प	—	ध	प	म	प	—	ग	—	रे	—
भ	रो	—	रे	—	—	लं	ग	र	—	वा	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग सा – सा –	रे –	ग रे ग	म – म –
– – – हीं –	हीं –	मो हे –	जि – न –
प प नि ध प	म प	ग रे ग	सा – – –
भ रो – रे –	लं –	ग र –	वा – – –

अन्तरा

×	२	०	३
प प – रें –	रें –	रें रें –	गं रें गं –
स ब – स –	खी –	य न –	मि – लि –
रें – – सां –	सां –	रें नि –	सां – – –
के – – स –	र –	घो – –	यों – – –
नि नि – नि –	नि –	ध म –	प – ध –
भ र – भ –	र –	ला – –	इ – – –
नि नि – सां –	– –	– – –	नि – सां –
क र – वा –	– –	– – –	– – – –
ध ध – ध –	ध –	ध नि –	प – ध –
भ र – पि –	च –	का री –	मे – रे –
नि नि – सां –	सां रें	नि धं नि	प – प ध
मु ख – प –	र –	डा – –	री – मे री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	नि	—	सां	—	सां	रें	सां	नि	—	ध	—	म	—
अं	गी	—	यां	—	—	भीं	ज	त	—	व	—	स	—
प	प	—	नि	—	ध	प	म	प	म	ग	—	रे	—
क	रो	—	रे	—	—	लं	ग	र	—	वा	—	—	—

"प्रत्येक तूक अन्तरानुसार"

राग काफी – ताल माला

होरि खेलें लाल डफ बाजै ताल, मानों झनन झनन ।
झूमर खेलनि निकसी नवल त्रिय, हाथी छूटैं मानों धनन धनन ॥१॥
चोवा चंदन अगर कुमकुमा पिचकाई छूटैं मानों सनन सनन ।
'नंददास' प्रभु मंडल मध्य निर्तत, लेत भाव मोहे मनन भनन ॥२॥

स्थायी–ताल–त्रिताल मात्रा–८

३	×	२	०	३	×	२	०
म गम	प —ध	प —	पग	म पध	निसां नि	धप	प
हो री—	खे —लें	ला—	लड	फ बा—	—— जे	ता—	ल
ग	मप	निध	परेग	रेम	म		
मा	नोंझ	नन	झन—	नहो	री		

अंतरा–ताल–चर्चरी (झपताल अंग)

×		२			०		३		
प	म	प	—	ध	नि	—	सां	—	सां
झू	—	म	—	र	खे	—	ल	—	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें	गं	रें	सां	सां	रें	नि	ध	प	—
नि	क	सी	—	न	व	ल	त्रि	च	—
नि	—	सां	—	रें	नि	ध	प	—	ध
हा	—	थी	—	छु	टे	—	मा	—	नां
ग	म	प	ध	प	ग	रे	म	प	म
ध	न	न	—	ध	न	न	हो	—	री

संचारी, ताल सूलताल

×		०		२		३		०	
नि	—	सां	—	नि	—	ध	नि	प	—
चो	—	वा	—	चं	—	द	—	न	—
प	—	ध	प	म	प	ग	—	रे	—
ओ	—	र	अ	र	ग	जा	—	—	—
सा	सा	रे	रे	ग	ग	—	म	प	म
पि	च	का	ई	छु	टे	—	मा	—	नों
नि	ध	प	म	प	प	ग	रे	सा	—
स	न	—	न	—	स	न	न	हो	री

आभोग—ताल—चौताल

×		०		२		०		३		४	
म	—	—	प	—	ध	नि	—	सां	सां	—	सां
नं	—	—	द	—	दा	—	—	स	प्र	—	भु

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें	गं	गं	रें	—	सां	रें	नि	सां	सां	—	सां
मं	ड	ल	म	—	ध्य	नि	र	—	त	—	त
नि	—	—	सां	—	—	नि	—	ध	प	—	ध
ले	—	—	त	—	—	भा	—	व	मो	—	हे
सां	नि	ध	प	स	प	ग	रे	ग	म	—	म
म	न	—	न	—	म	न	—	न	हो	—	री

राग काफी—ताल त्रिताल

मन मोहना रंग हिंडोरना ।
चलरी सखी मिल देखन जैये, वृंदावन सुभ डौरना ॥१॥
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, पीतांवर झकझोरना ।
पुरूषोतम प्रभुकी छवी निरखत श्याम घटा घनघोरना ॥२॥

स्थायी

							सां	नि
							म	न
×	२	०	३	×	२	०	३	
धप	सप ग	रे रे	ग म	म नि	ध नि	ध प	— प	प
मो-	-- ह	ना रं	— ग	हिं डो	— —	र ना	— म	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	मप	धनि	–सां	सांरें	रेंगंरें	सांरें	निसां	–
च	लरी	सखी	–मि	लदे	–ख	नजै	–ये	–
नि	–सां	रेंनि	धग	मप	––	धपध	सांनिध	प
वृं	–दा	–व	नसु	भठो	––	रना–	––म	न

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३	
नि	–सां	सांनि	धप	पप	–ध	पम	पग	रे
मो	–र	मुकु	टम	करा	–कृ	तकुं	–ड	ल
सा	–रे	–ग	गम	मनि	धनि	धप	––	–
पी	–तां	–ब	रझ	कझो	––	रना	––	–

आभोग

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	मप	धनि	निसां	सांरें	गंरें	सांरें	निसां	सां
पु	रुषो	–त्त	मग्र	भुकी	–छ	बीनि	रख	त
नि	–सां	रेंनि	धग	मप	––	धसां	निध	प
स्या	–म	घटा	–घ	नघो	––	रना	–म	न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग काफी—ताल त्रिताल (मात्रा ८)

ऐरी सखी झूलत नवलकिसोर, संग लिये नवनागरी रंग ।
श्रावन मास हिंडोरना ॥१॥

ऐरी सखी देखन सब मिल जाय, चले हे जुथ मिली आगरी रंग ।
श्राबन मास हिंडोरना ॥२॥

स्थायी

									प		मप	ध
									ए		रीस	खी
×	२	०	३	×	२	०	३					
नि	निसां	सांनि	धप	मग	मनि	धनिप	— —	—				
झू	—ल	तन	वल	किसो	— —	— —र	— —	—				
म	मग	रेरे	गम	पनि	धप	मगरे	गरे	सा				
सं	—ग	लिये	—न	वना	— —	गरी—	—रं	ग				
सा	—रे	रेग	—म	पनि	धनि	धप	— —	—				
स्त्रा	—व	नमा	—स	हिंडो	— —	रना	— —	—				

अन्तरा

						रें	रेंसांरें	ग
						ए	—री—	—
×	२	०	३	×	२	०	३	
रें	—सां	सांरें	निंध	मनिं	धनि	धप	— —	—
दे	—ख	नस	बमि	लजा	— —	—य	— —	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	निसां	सांनि	निध	पम	गप		मग	—रें	सा
च	लिहे	जू—	थमि	लिआ	——		गरी	—रं	ग
सा	—रे	रेग	रेम	मप	मनि		धप	——	—
खा	—व	नमा	—स	हिंडो	——		रना	——	—

राग काफी—ताल चौताल

हो हो हो होरी खेले लाल संग ग्वाल इक दिस लीने राधा नवसत साजें बाल ।

सुर बीना सुरमंडल डफ अमृतकुंडली आवज अघवट उपंग चंग बाजे, मृदंग ताल ॥१॥

सुमन कलस नव तमाल उडवत अबीर गुलाल दोरत गहि छतियां लागि चुंवन दे करत ख्याल ।

× × × × आगे 'वसंत धमार' कीर्तन में देखियें ।

स्थायी

०		३		४		×		०		२	
म	नि	प	ग	रे	सारे	प	—	ध	ग	रे	रे
हो	हो	हो	हो	—	री—	खे	—	ले	ला	—	ल
रे	ग	सा	रे	नि़	सा	रे	म	प	ध	नि	सां
सं	—	ग	ग्वा	—	ल	इ	क	दि	स	ली	ने
नि	ध	म	प	ग	रे	प	ग	ग	रे	नि़	सा
रा	धा	न	व	स	त	सा	—	जें	बा	—	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	म	म	प	प	ध	नि	सां	नि	सां	—	सां
सु	र	बी	ना	सु	र	मं	ड	ल	ड	—	फ़
नि	सां	रें	गं	रें	सां	नि	सां	सां	सांनि	धप	ध
अ	मृ	त	कुं	ड	ली	आ	व	ज	अ—	——	ध
सां	नि	—	ध	म	पध	ग	—	रे	नि़	सा	सा
व	ट	—	उ	पं	ग—	चं	—	ग	वा	—	जे
रे	म	प	ध	नि	सां	म	नि	प	ग	रे	रे
मृ	दं	ग	ता	—	ल	हो	हो	हो	हो	—	री

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	म	प	प	ध	नि	ध	नि	ध	प	प
सु	म	न	क	ल	स	न	व	त	मा	—	ल
ध	म	प	प	—	ध	नि	सां	नि	ध	—	प
उ	ड	व	त	—	अ	बी	र	गु	ला	—	ल
नि	नि	नि	सां	—	रें	नि	ध	प	ग	—	रे
दो	र	त	ग	—	हि	छ	ति	यां	ला	—	गि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा	रे	रे	ग	म	प	ग	रे	ग	म	प	प
चुं	ब	न	दे	–	क	र	त	–	ख्या	–	ल

राग, जयजयवन्ती–संक्षिप्त परिचय

जयजयवन्ती राग भी प्राचीन है। कोई इसे 'जयावंती' अथवा 'वैजयन्ती' भी कहते हैं। यह राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है। आरोह में ग और नि शुद्ध है और अवरोह में नि ग कोमल लिये जाते है तथापि अवरोह में शुद्ध गान्धार भी लिया जाता है। कोमल गान्धार अवरोह में लिया जाता है, फिर भी वे दोनों ऋषभ के बीच में जकड़ा हुआ रहता है। प्रचार में इसको सोरठ अंग का राग माना जाता है। मन्द्र पंचम से ऋषभ की संगति आकर्षक होती है। सोरठ राग से दूर रखने के लिये खास ध्यान रखना चाहिए। ऋषभ स्वर पर विशिष्ट प्रकार का आघात किया जाता हैं। इस राग को परमेल—प्रवेशक नाम से भी पहचानते हैं। इस राग के पश्चात् काफी थाट के राग गाने का व्यवहार होने से पण्डितों नें दूसरे थाट में प्रवेश करानेवाला होने से परमेल—प्रवेशक राग कहा है, क्योंकि इस राग में कोंमल निषाद और कोमल गान्धार का प्रयोग काफीं थाट की ओर ले जाता हैं।

अष्टछापपरम्परा में यह राग विशेषतः चतुर्मास में गाया जाता है। सावन में हिंडोला के, भादों में जन्माष्टमी के तथा आश्विन में रास के पद सुप्रसिद्ध हैं। हवेलीपरम्परा में मध्यएवं तार सप्तक ओर विशेष झुकाव रहता है।

प्रचार में गानसमय रात्रिका दूसरा प्रहर हैं। वादी ऋषभ और दोनों निषादों का प्रयोग होता है। यह लोकप्रिय राग है।

आरोहावरोह : सा, रे, रे ग रे सा, नि ध प, रे, गमप, निसां।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सांनिधप, धम, रे ग रे सा ।

पकड़ : रे ग रे सा, नि ध प, रे,

स्वरविस्तार :

(१) सा, रेसा, रे ग रे सा, रेगम, रे ग रे सा, निसारेगमप,मग, रेगरेसा.

(२) म, गम, रेगम, पम, धपम, रेमप, नि, धपध, ग, म, सांनिधपम, रे निधप धग, म, रे ग रेसा.

(३) ध, नि ध, सांनिध, रेंसारेंनिध, रेंगंरेंसां, निसांरेंगंमं, रेंगंरें, निसां, धनिसां, निधप, मप, सां.

(४) मपसां, निसां, निधनिसां, रेंगंरेंसां, निसां, रेंगं, गंमं, रेंगंरें, निसां, निसारें सां,

राग जयजयवन्ती—ताल चौताल

माई फूलको हिंडोरो बन्यो, फूल रही जमुना ।
फूलनके खंभ दोऊ फूलनकी दांडी चार, फूलनकी चोकी बनी हीरा झगमगना ॥१॥
फूले अति बंसीबट फूलहें जमुनातट, सब सखी मिलि गावें मधुर मृदु बोलना ।
फूली सखी चहुं ओरें झुलवत थोरें थोरें, नंददास फूले गावें रीझि प्रेममगना॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	—	सां	सां	निध	पध	नि	सां	सां	रें	सां	—
फू	ऽ	ल	को	ऽऽ	हिंऽ	डो	ऽ	रो	ब	न्यो	ऽ
नि	ध	म	प	ध	रें	सां	निध	मग	रेग	रेसा	निसा
फू	ऽ	ल	र	ऽ	ही	ज	मुऽ	नाऽ	ऽऽ	माऽ	ईऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रे	—	रे	रे	म	प	नि	—	सां	रें	सां	—
फू	ऽ	ल	को	ऽ	हिं	डो	ऽ	रो	ब	न्यों	ऽ

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	म	प	—	नि	सां	—	नि	सां	—	सां
फू	ऽ	ल	न	ऽ	के	खं	ऽ	भ	दो	ऽ	ऊ
नि	—	सां	रें	—	सां	नि	सां	सां	नि	ध	प
फू	ऽ	ल	न	ऽ	की	दां	ऽ	डा	चा	ऽ	र
गं	—	गं	गं	मं	मं	रें	—	गं	रे	सां	—
फू	ऽ	ल	न	ऽ	की	चो	ऽ	की	ब	नी	—
रें	नि	ध	म	प	सां	नि	धप	म	गम	प	म
ही	—	रा	ऽ	झ	ग	म	गऽ	ना	ऽऽ	मा	ई

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	म	प	—	ध	नि	—	सां	नि	सां	सां
फू	ले	ऽ	अ	ऽ	ति	बं	ऽ	सी	ब	ऽ	ट
नि	ध	नि	रें	—	सां	नि	सां	—	नि	ध	प
फू	ल	ऽ	हैं	ऽ	ज	मु	ना	ऽ	त	ऽ	ट
म	ग	म	प	प	ध	नि	नि	सां	सां	—	सां
स	ब	ऽ	स	खी	ऽ	मि	लि	ऽ	गा	ऽ	वें

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	नि	ध	प	ग	म	रे	ग	रे	सा	नि	सा
म	धु	र	मृ	ऽ	दु	बो	ऽ	ल	ना	मा	ई

राग जयजयवन्ती—ताल चौताल

झूलत नवललाल झुलावत ब्रजलाल कालिंदीके तीर माई रच्यो है हिंडोरना (माई)।
तेसोई बोलत मोर क्रिडा करे चहुँऔर तेसोई मयूरध्वनि लाग्यो घनघोरना ॥ १ ॥
तेसोई फूलत फूल हरत मनके सूल अलिगन गुजे माई मनके सलोलना ।
'नंददास' प्रभु प्यारी जोरी अदभुत भारी देखवोई कीजै जेसे चंद्रको चकोरना ॥ २ ॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
रे	—	रे	गरे	ग	प	म	—	ग	रे	ग	रेसा
झू	—	ल	त—	—	न	व	—	ल	ला	—	ल—
नि	सा	—	रे	ग	रे	सा	सा	रे	नि	ध	प
झु	ला	—	व	—	त	ब्र	ज	—	वा	—	ल
म	—	रे	म	प	प	नि	—	नि	सां	—	सां
का	—	लिं	दी	—	के	ती	—	र	मा	—	ई
सां	नि	नि	धप	ध	म	प	ध	म	गरे	ग	सा
र	—	च्यो	हे—	—	हिं	डो	—	र	ना—	मा	ई

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	म	प	नि	—	नि	सां	सां	नि	सां	—	सां
ते	सो	—	ई	—	बो	ल	त	—	मो	—	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	नि	सां	रें	गं	रेंसां	नि	सां	रेंनि	ध	प	प
क्री	डा	—	क	—	रे—	च	—	हुँ—	ओ	—	र
म	रे	—	म	—	प	नि	सां	नि	सां	—	सां
ते	सा	—	ई	—	म	यू	—	र	ध्व	—	नि
सां	नि	नि	धप	ध	म	प	ध	म	गरे	ग	सा
ला	—	ग्यो	ध—	—	न	धो	—	र	ना—	मा	ई

संचारी

×		०		२		०		३		४	
रे	रे	—	रे	—	प	म	ग	म	रे	ग	रे
ते	सो	—	ई	—	फू	ल	त	—	फू	—	ल
नि़	नि़	सा	रे	ग	रेसा	सा	सा	रे	नि़	ध़	प़
ह	र	—	त	—	म—	न	के	—	सू	—	ल
प	रे	—	रे	म	म	प	—	ध	म	—	प
अ	लि	—	ग	—	न	गु	—	जे	मा	—	ई
नि	नि	धप	ध	म	म	प	ध	म	गरे	ग	सा
म	न	——	के	—	स	लो	—	ल	ना—	—	—

आभोग

×		२		०		०		३		४	
म	—	प	नि	—	नि	सां	सां	—	सां	—	सां
नं	—	द	दा	—	स	प्र	भु	—	प्या	—	री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	सां	रें	गं	रें	सां	सां	सां	रें	नि	ध	प
जो	—	री	—	अ	द्	भु	त	—	भा	—	री
म	—	रे	म	—	प	नि	सां	नि	सां	—	सां
दे	—	ख	वो	—	ई	की	—	जे	जे	—	से
निसां	रें	सां	नि	ध	म	प	ध	म	गरे	ग	सा
चं—	—	द्र	को	—	च	को	—	र	ना—	मा	ई

राग जयजयन्ती—ताल त्रिताल

माई आज तो गोकुल गाम केसो रह्यो फूलिकै ।
गृह फूले दीसे अति संपति समूलके ॥१॥ × × × × × × ×
फुले हें भंडार सब, द्वार दिये खोलिके ।
नंद दान देत फूले, 'नंददास' बोलिके ॥२॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३	
सां	—नि	धंम	प—	निसां	निसां	——	निध	नि
आ	—ज	——	तों—	गोकु	—ल	——	गा—	म
रें	—रें	गंरें	सांसां	रेंसां	निध	पमग	मप	ध
के	—सों	——	रह्यो	—फू	——	लिके—	—मा	ई

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३
ग म	ध —	— नि	— नि	सां —	सां —	— रें	गं रें
गृ —	ह —	— फू	— ले	दी —	से —	— अ	ति —
सां —	नि ध	— नि	— रें	सां नि	ध प	मग म	प ध
सं —	प —	— ति	— स	मू —	— ह	के— —	मा ई

आगेके सभी आवर्तन स्थायी—अन्तरानुसार ।

राग कान्हरा—संक्षिप्त विवरण

कान्हारा को 'कानडा' भी कहते हैं । यह प्राचीन एवं ग्रन्थोक्त राग है । कान्हरा के विविध प्रकार हैं, किन्तु केवल कान्हरा राग का पुष्टि सम्प्रदाय के मन्दिरों में शयन—समय गाये जाने वाले रागों में अधिक प्रचार है । इस कान्हरा का अंग बागेश्री मिलानेसे बागेश्रीं कानडा होता है । पंचम वर्ज्य करने से केवल 'बागेश्री' होता है । इस प्रकार उनके विविध अंगों से कान्हरे के ३० प्रकार प्रचार में हैं । अन्य किसी भी राग के इतने प्रकार प्राप्त नहीं होते हैं, अतः कहा जाता है कि

"रागों को पति कानरो, धरती को पति इन्द्र,
तारेन को पति चन्द्रमा, गोपीपति गोविंद"

श्रीकृष्णका नाम कान्ह और कान्हर भी है, अतः यह राग प्रियाजी को अति प्रिय है । और श्रीकृष्ण को यह राग प्रियाजीके कंठसे ही सुनना प्रिय होता है । श्रीकृष्णदासजी के निम्न पद में यही दर्शन होते हैं ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

* "राग कान्हरो तुमही पें सुनियत, श्रीवृषभाननंदिनी राधे
तान तरंग अनंग गति उपजति, कहा कहौं रस सिंधु अगाध।"

कान्हरा के प्रकारोंमे नायकी, अडाना, सिंधूरा, सुघराई, सूहा, रायसा औंर बागेश्री कान्हरा सम्पदाय में गाये जाते हैं। कान्हरे का थाट काफी होने से आसावरी थाट में उत्पन्न होने वाले कान्हरे के प्रकार अष्टछापपरम्परा की प्राचीन पद्धतिमे नहीं है।

थाट काफी है। वादी ऋषभ और संवादी पंचम है। जाति सम्पूर्ण है। आरोह में शुद्ध निषाद का भी प्रयोग होता है। आरोह में गान्धार और अवरोह में धैवत स्वर वक्र रहता है। निप की स्वर संगति और गान्धार आन्दोलित है।

आरोहवरोह :— सारे, गमरेसा, मप, निप, निध, निसां।
सां, निध निप, म, प, गमरेसा.

स्वर विस्तार :—सा, रेसा, गरेसा, रेगमरेसा, पग मरेसा.
निसारे, पगगरे, सा, धनिध, निसां, निधप, नि,
धप, ग, रेसा, गमरेसा.
सां, निसां, रेंखा, गंगं रेंसा, मनिध, निसां,
निसांरेसा, नि, धप, मप, ग, मरे, सा.

राग कान्हरा—ताल चौताल

बन्या मोरमुकुट नटवर वपु स्यामसुंदर
कमलनयन बांकी भौंह ललितभाल घूंघरवारी अलकैं।
पीत वसन मोतीमाल हिये पदक कंठ लाल,
हसनि बोलनि गावनि गंडनि स्रवनकुंडल झलकें॥१॥

---

* स्वरलिपि के सहित यह पद "संगीतसुबोधिनी" ग्रन्थमें देखिये।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कर पद भूखन अनूप कोटि मदनमोहन रूप,
अदभुत बदनचंद देखि गोपी भूली पलकें ।
कहि 'भगवान हित रामराय'प्रभु ठाडे रासमंडल
मधि राधासों बांह जोरी किये हिये प्रेम ललकें ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	ध	प	प	प	प	म	म	प	प	नि	प
मो	ऽ	र	मु	कु	ट	न	ट	व	र	व	पु
ग	—	म	रे	रे	सां	म	म	म	प	प	ध
स्या	ऽ	म	सुं	द	र	क	म	ल	न	य	न
नि	ध	नि	सां	—	सां	रें	रेंगं	रें	सां	—	सां
वां	ऽ	की	भौं	ऽ	ह	ल	लिऽ	त	भा	ऽ	ल
रें	सां	सां	निध	प	ध	नि	धप	ग	म	रेंग	सारें
घूं	घ	र	वाऽ	ऽ	री	अ	लऽ	कें	ऽ	बऽ	न्योऽ

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	प	प	ध	निध	नि	—	सां	सां	—	सां
पी	ऽ	त	ब	स	नऽ	मो	ऽ	ती	मा	ऽ	ल
नि	सां	—	रें	रें	सां	नि	—	सां	ध	निध	प
हि	ये	ऽ	प	द	क	कं	ऽ	ठ	ला	ऽऽ	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	प	नि	सां	रें	रे	गं	मं	रें	रें	रें	सां
ह	स	नि	बो	ल	नि	गा	व	नि	गं	ड	नि
रें	सां	नि	ध	प	ध	नि	धप	ग	म	रे	सारे
स्र	व	न	कुं	ड	ल	झ	लऽ	कँ	ऽ	ब	न्योऽ

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	प	म	ध	ध	—	नि	ध	नि	प	—	प
क	र	प	द्	भू	ऽ	ख	न	अ	नू	ऽ	प
नि	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां	ध	नि	प
को	ऽ	टि	म	द	न	मो	ह	न	रू	ऽ	प
म	म	म	प	नि	प	ग	—	म	रे	—	सा
अ	द्भु	त	व	द	न	चं	ऽ	द	दे	ऽ	खि
नि़	सा	रे	रे	प	प	ग	ग	म	रे	—	सा
गो	ऽ	पी	भू	ऽ	ली	प	ल	ऽ	कँ	ऽ	ऽ

राग कान्हरा—ताल चौताल

आज धनि भाग हमारे, प्रगटे श्रीविट्ठलनाथ ।
दरसत मात्र ताप तनके गये, भवसागरतें तारे ॥१॥
सामल अंग बदन पूरन चंद, देखियत जग उजियारे ।
'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीबिठ्ठल, वल्लभराज—ललारे ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
								ग	गम	रे	सा
								आ	जऽ	ध	न
रे	—	—	सा	रे	सारे	ग	—	म	रे	—	सा
आ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	हऽ	मा	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
म	म	—	प	—	ध	सां	—	—	गं	रें	सां
अ	ग	ऽ	टे	ऽ	श्री	वि	ऽ	ऽ	ठ	ऽ	ल
सां	नि	ध	ग	रे	सा	—	ग	ग	म	रे	सा
ना	ऽ	ऽ	थ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ज	ऽ	ध	न

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	म	—	ध	नि	ध	सां	—	—	सां	—	—
द	र	ऽ	स	ऽ	त	मा	ऽ	ऽ	त्र	ऽ	ऽ
नि	—	सां	रें	—	सां	नि	सां	—	सां	नि	ध
ता	—	प	त	ऽ	न	के	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ये
प	प	—	म	ध	निध	सां	सां	—	ध	प	ध
भ	व	ऽ	सा	ऽ	ऽऽ	ग	र	ऽ	तें	ऽ	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	नि	ध	ग	रे	सा	—	ग	ग	म	रे	सा
ता	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ज	ऽ	ध	न

संचारी

×		०		२		०		३		४	
ध	—	—	ध	—	ध	नि	ध	नि	प	—	—
सां	ऽ	ऽ	व	ऽ	ल	अं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ऽ
प	ध	—	नि	सां	सां	नि	सां	—	ध	नि	ध
ब	द	ऽ	न	ऽ	पू	र	न	ऽ	चं	ऽ	द
म	—	म	ध	नि	प	ग	ग	म	रे	—	रे
दे	ऽ	खि	य	ऽ	त	ज	ग	ऽ	उ	ऽ	जि
ग	—	—	रे	—	—	नि	ध़	नि़	सां	—	—
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

राग कान्हरा—ताल सूलताल

कापर ढोटा नेन नचावत, हैं कोउ तेरे बाबाकी चेरी ।
हौं दधि वेचन जाति मधुपुरी, आय अचानक बनमें घेरी ॥१॥
सोननि में सब सखा बुलाये, बात ही बात समस्या फेरी ।
जाइ पुकारुंगी नंदजुके आगे, जो कोउ छुवहिं मटुकिया मेरी ॥२॥
गोकुल बसि तुम डीठ भये हो, बहुते कानि करत हौं तेरी ।
'परमानंद'प्रभु रसिक मुकुटमनि, बलि बलि जाऊँ स्यामघन केरी ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		०		२		३		०	
नि	—	सां	सां	नि	—	ध	—	प	ध
का	ऽ	प	र	ढो	ऽ	टा	ऽ	ऽ	ऽ
नि	नि	ध	प	ग	—	रे	—	सा	—
नें	ऽ	न	न	चा	ऽ	व	ऽ	त	ऽ
म	—	म	म	प	ध	नि	—	ध	प
को	ऽ	उ	ति	हा	ऽ	रे	ऽ	बा	ऽ
ग	म	रे	सा	रे	सा	नि	ध	नि	सा
बा	ऽ	की	ऽ	चे	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ

अन्तरा

×		०		२		३		०	
नि	ध	नि	नि	सां	—	—	सां	—	सां
गो	ऽ	र	स	वे	ऽ	ऽ	च	ऽ	न
नि	सां	रें	सां	नि	सां	नि	ध	नि	प
जा	ऽ	त	म	धु	ऽ	ऽ	पु	री	ऽ
ध	—	म	म	प	ध	नि	सां	—	—
आ	ऽ	य	अ	चा	ऽ	न	क्र	ऽ	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	नि	ध	प	ग	म	रे	—	सा	—
ब	न	में	ऽ	घे	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ

संचारी

×		०		२		३		०	
सां	—	सां	सां	नि	—	ध	ध	—	—
से	ऽ	न	नि	दे	ऽ	स	ब	ऽ	ऽ
प	ध	नि	नि	ध	—	प	—	—	—
ख	खा	ऽ	बु	ला	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ
म	—	म	म	प	ध	नि	—	ध	प
बा	ऽ	त	हि	बा	ऽ	ऽ	ऽ	त	स
ग	—	सा	रे	ग	म	रे	ऽ	सा	ऽ
म	ऽ	स्या	ऽ	फे	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ

राग कान्हरा—ताल धमार

यह धन धर्महीतें पायो ।
नीके राखि जसोदा मैया, नारायन ब्रज आयो ॥१॥
जा धनको मुनि जप तप खोजत, बेदहु पार न पायो ।
सो धन धर्यो क्षीरसागरमें, ब्रह्मा जाय जगायो ॥२॥
जा धनतें गोकुल सुख लहियत, सगरे काज संवारे ।
सो धन वारि वारि डर अंतर 'परमानंद' बिचारे ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×					२		०			३			
नि	—	—	—	—	सां	—	सां	नि	—	ध	—	प	—
ध	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	ऽ	ही	ऽ	ऽ	तें	ऽ	ऽ	—
प	ध	—	नि	—	सां	—	सां	नि	—	ध	—	प	—
पा	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	य	ह	ऽ	ध	ऽ	न	ऽ
—	—	—	म	—	म	—	पध	नि	—	ध	—	प	—
ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	मैं	ऽ	हीऽ	ऽ	ऽ	तें	ऽ	ऽ	ऽ
ग	—	—	ग	—	म	—	रें	—	—	सा	—	—	—
पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

×					२		०			३			
म	—	—	ध	—	नि	ध	नि	सां	—	सां	—	सां	—
नी	ऽ	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ख	ऽ	ज	ऽ
नि	सां	—	रें	—	सां	रें	गं	—	—	रें	—	सां	—
सो	ऽ	ऽ	द्वा	—	ऽ	ऽ	मै	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
सां	—	—	सां	—	—	—	नि	नि	—	ध	नि	प	—
द्वा	ऽ	ऽ	रा	—	ऽ	ऽ	य	न	ऽ	ब्र	ऽ	ज	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	ध	–	नि	–	रें	–	सां	नि	–	ध	–	प	–
आ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	य	ह	ऽ	ध	ऽ	न	ऽ

संचारी

×					२		०			३			
सां	–	–	सां	–	सां	–	सां	–	–	नि	–	ध	–
जा	ऽ	ऽ	ध	ऽ	न	ऽ	को	ऽ	ऽ	मु	ऽ	नि	ऽ
प	ध	–	नि	–	सां	–	नि	–	–	ध	–	प	–
ज	प	ऽ	त	ऽ	प	ऽ	खो	ऽ	ऽ	ज	ऽ	त	ऽ
म	–	–	म	–	म	–	पध	नि	–	ध	–	प	–
वे	ऽ	ऽ	द	ऽ	हु	ऽ	पाऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	न	ऽ
ग	–	–	–	–	म	–	रे	–	ऽ	सा	–	–	–
पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

राग कान्हरा—ताल धमार

श्रीगोकुल जुग जुग राज करो ।
यह सुख भजनप्रताप तेजतें, छिन इत उत न टरो ॥१॥
पावन रूप दिखाय महाप्रभु पतितन पाप हरो ।
विश्वविदित दीनी मति प्रेतन, क्यों न जगत उद्धरो ॥२॥
श्रीवल्लभकुलकमल बिराजत, जस मकरंद भरो ।
'नंददास'प्रभु खटगुनसंपन्न, श्रीविट्ठलेस वरो ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×					२		०			३			
सां	सां	—	सां	—	सां	—	प	ध	—	नि	—	रें	—
जु	ग	ऽ	जु	ऽ	ग	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ज	ऽ	क	ऽ
सां	—	—	नि	—	प	—	म	प	—	नि	पं	ग	—
रो	ऽ	ऽ	श्री	—	ऽ	ऽ	गो	ऽ	ऽ	कु	ऽ	ल	ऽ
रे	सा	—	म	म	म	प	नि	प	—	म	प	ध	प
ऽ	ऽ	ऽ	जु	ग	जु	ग	रा	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ऽ	क
ग	—	—	रे	—	सा	—	नि़	ध़	—	नि़	—	सा	—
रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	श्री	ऽ	गो	ऽ	ऽ	कु	ऽ	ल	ऽ

अन्तरा

×					२		०			३			
नि	ध	—	नि	—	नि	—	सां	सां	—	सां	—	सां	—
य	ह	ऽ	सु	ऽ	ख	ऽ	भ	ज	ऽ	न	ऽ	प्र	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	सां	–	रें	–	रें	–	गं	मं	–	रें	–	सां	–
ता	ऽ	ऽ	प	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ज	ऽ	तें	ऽ	ऽ	ऽ
नि	नि	–	ध	–	नि	–	प	ध	–	नि	–	रें	–
छि	न	ऽ	इ	ऽ	त	ऽ	उ	त	ऽ	न	ऽ	ट	ऽ
सां	–	–	नि	–	प	–	म	प	–	नि	प	ग	–
रो	ऽ	ऽ	श्री	ऽ	ऽ	ऽ	गो	ऽ	ऽ	कु	ऽ	ल	ऽ

अन्तरा के बाद जुग जुग करो—स्थायीकी ३,४, पंक्ति अनुसार।

संचारी

×					२		०			३			
सां	–	–	सां	–	सां	–	नि	सां	–	नि	ध	प	ध
पा	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	ऽ	रू	ऽ	ऽ	प	ऽ	दि	ऽ
नि	–	–	ध	–	नि	–	प	–	–	प	–	प	–
खा	ऽ	ऽ	य	ऽ	म	ऽ	हा	ऽ	ऽ	प्र	ऽ	भु	ऽ
म	म	–	म	–	प	–	नि	प	–	प	म	प	–
प	ति	ऽ	त	ऽ	न	ऽ	पा	ऽ	ऽ	प	ऽ	ह	ऽ
ग	–	–	रे	–	सा	–	नि	ध	–	नि	–	सा	–
रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग कान्हरा—ताल त्रिताल

दूध पियो मनमोहन प्यारे ।
बलि बलि जाउ गहरु जिनि कीजें, कमलनयन अखियनके तारे ॥१॥
कनककटोरा भरि पीजें सुख दीजें, संग लेहु बलभद्र भैयारे ।
'परमानंद' मोहि गोधनकी सौं प्रातही उठत करो धैयारे ॥२॥

स्थायी

			ग म रे सा
			दू — ध पि
×	२	०	३
रे — — —	सा — म म	प ध पध नि	— ध — प
यो — — —	— — म न	मो — — —	— ह — न
ग — — —	म — रे —	नि सा — —	ग म रे सा
प्या — — —	— — — —	रे — — —	दू — ध पि

अन्तरा

		म	प नि ध नि
		ब	लि ब — लि
×	२	०	३
सां — — —	नि ध नि —	सां — — नि	सां रें रें रें
जा — — —	— — — —	उ — — ग	ह रु जि न
ग म रे सा	नि सा — —	नि ध म प	प ध नि सां
की — जें —	— — — —	क म ल न	य न अ खि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	सां	नि	ध	पध	नि	ध	प	गम	रे	सा	–	ग	म	रे	सा
थ	न	के	–	––	–	ता	–	रे–	–	–	–	दू	–	ध	पिं

संचारी

ध	ध	ध	–	ध
क	न	क	–	क

×				२				०				३			
नि	–	प	–	–	–	प	ध	नि	–	सा	–	–	निध	नि	प
टो	–	रा	–	–	–	भ	र	पी	–	जे	–	–	सु–	–	ख
ध	–	प	–	–	म	ध	प	ग	–	–	–	म	–	रे	सा
दी	–	जे	–	–	सं	ग	ले	हो	–	–	–	–	–	व	ल
नि	सा	रे	प	ग	–	म	–	रे	–	सा	–				
भ	–	द्र	भै	या	–	–	–	रे	–	–	–				

आभोग

नि	ध	निं	–
प	र	मा	–

×				२				०				३			
सां	सां	सां	सां	नि	सां	रें	रें	गं	मं	रें	सां	नि	नि	ध	म
नं	द	मो	हि	गो	–	ध	न	की	–	सों	–	उ	ठ	त	ही
प	–	प	ध	पध	नि	ध	प	ग	म	रे	सा	ग	म	रे	सा
आ	–	त	क	रों–	–	धै	–	या	–	रे	–	दू	–	ध	पि–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग कान्हरो—ताल त्रिताल

सोहत नासिका गिरिधर गजमोती ।
बोलत बीरा खात हंसत डोलत अरुन अधरकी दीनी पोती ॥१॥
कुंडल लोल कपोल बिराजत, जगमगात मुखमंडल जोती ।
'गोविंद' प्रभु को जु श्रीमुख निरखत, रसना कहा बरनौं मति बोती ॥२॥

स्थायी

																नि
																सो
३				×				२				०				
सा	रे	सा	रे	ग	—	म	रे	रे	—	सा	—	ऩि	ध़	सा	म	
—	ह	—	त	ना	—	—	सि	का	—	—	—	—	—	—	गि	
म	ध	—	ध	नि	नि	ध	प	मप	धप	ग	म	रे	—	सा	नि	
रि	ध	—	र	ग	ज	मो	—	——	——	ती	—	—	—	—	सो	

अन्तरा

३				×				२				०			
नि	ध	नि	नि	सां	—	—	—	नि	ध	नि	—	सां	—	—	नि
बो	—	ल	त	बी	—	—	—	रा	—	खा	—	त	—	—	ह
सां	रें	सां	रें	गं	—	—	मं	रें	—	सां	—	नि	ध	म	म
स	त	—	डो	ल	—	—	—	त	—	अ	—	रु	न	—	अ
नि	ध	नि	—	सां	नि	ध	पध	नि	ध	मप	धप	ग	रे	सा,	नि
ध	र	की	—	दी	—	नी	——	पो	—	——	——	ती	—	—	सो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

३				×				२				०			
—	ध	ध	ध	नि	प	—	म	प	—	—	ध	नि	—	सां	सां
—	कुं	ड	ल	लो	—	—	—	ल	—	—	क	पो	—	ल	वि
निध	नि	प	प	—	—	म	म	प	ग	—	म	रे	रे	सा	—
रा—	—	ज	त	—	—	ज	ग	म	गा	—	त	—	मु	ख	—
नि	सा	रे	रे	ग	—	म	—	रे	—	सा	—	नि	ध	सा	—
मं	—	ड	ल	जो	—	—	—	—	—	ता	—	—	—	—	—

राग—बागेश्री कान्हरा, ताल आडा चौताल (द्रुवताल)

नेन छबीले तरुन मदमाते ।

चंचल चपल भृकुटि छबि उपजत, आनि आनि मुसिकाते ॥१॥

भक्त कृपारस सदाइ प्रफुल्लित, मानहु कमलदल राते ।

'गोविंद' प्रभुको श्रीमुख निरखत, पान करत न अघाते ॥२॥

स्थायी

									सां	नि	ध	म	निध
									ने	—	न	—	छ—
×		२				३				४			
सां	—	नि	—	ध	—	म	—	म	म	प	—	ध	प
बी	—	—	—	ले	—	—	—	त	रु	न	—	म	द
ग	—	रे	—	सा	—	—	—	—	सां	नि	ध	म	निध
मा	—	—	—	ते	—	—	—	—	ने	—	न	—	छ—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×		२				३				४			
ग	म	नि	ध	नि	–	सां	–	सां	–	सां	–	–	सां
चं	–	च	–	ल	–	च	–	प	–	ल	–	–	भृ
नि	सां	सां	–	रें	–	रें	–	गं	मं	रें	–	सां	–
कु	–	टि	–	छ	–	बि	–	उ	प	ज	–	त	–
नि	–	ध	–	म	ध	सां	–	नि	ध	म	प	ध	प
आ	–	न	–	आ	–	–	–	न	–	मु	–	सि	–
ग	म	रे	–	सा	–	–	–	–	सां	नि	ध	म	निध
का	–	–	–	ते	–	–	–	–	ने	–	न	–	छ

संचारी

×		२				३				४			
सां	–	सां	–	–	सां	नि	–	–	–	ध	नि	ध	–
भ	–	क्त	–	–	कृ	पा	–	–	–	र	–	स	–
म	ध	नि	ध	सां	–	नि	ध	नि	प	प	–	प	–
स	दा	इ	–	प्र	–	फु	–	–	–	ल्लि	–	त	–
म	म	–	प	–	ध	प	म	ग	म	रे	–	सां	रे
मा	न	–	हु	–	–	क	म	ल	–	द	–	ल	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	—	म	—	रे	—	सा	—	नि	—	ध	—	सा	—
रा	—	—	—	—	—	—	—	—	—	ते	—	—	—

आभोग

×		२				३				४			
ग	म	नि	ध	नि	—	सां	—	सां	—	सां	—	—	—
गो	—	विं	—	द	—	प्र	—	भु	—	को	—	—	—
नि	सां	सां	—	रें	—	रें	—	गं	मं	रें	—	सां	—
श्री	—	मु	—	ख	—	निं	—	र	—	ख	—	त	—
नि	—	ध	—	म	ध	सां	—	नि	ध	म	प	ध	प
पा	—	न	—	—	क	र	—	त	—	न	—	अ	—
ग	म	रे	—	सा	—	—	—	—	सां	नि	ध	म	निध
धा	—	—	—	ते	—	—	—	—	ने	—	न	—	छ—

राग नायकी—संक्षिप्त विवरण

राग नायकी कान्हरा का भी थाट काफी है। प्रचार में धैवत बर्ज्य माना जाता है, किन्तु अष्टछापपरम्परा में सम्पूर्ण जाति सुप्रसिद्ध है। हमारे मतानुसार षाडव प्रकारका 'नायकी' ध वर्ज्य और संपूर्ण जातिका "नायकी कान्हरा" कहा जायेगा। गान्धार और धैवत अधिकतर सारेग मरेसा सांध नि प, निध निप, ध निप, इस प्रकार है। तथा ध, सां अथवा धनिसां, धनि प, ऐसा प्रयोग भी किया जाता है। रे प की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संगति से पंचमका महत्त्व है, अतः हमारी, मान्यतानुसार वादी स्वर पंचम और संवादी सा को मानना अधिक सुसंगत होगा । स्वर ग नि कोमल, बाकी के शुद्ध हैं । यह उत्तरांग प्रधान राग हैं, सारंगादि रागों के माफिक आरोह में नि शुद्ध लिया जाता है । गानसमय मध्यरात्रि का प्रचार में है, किन्तु मन्दिरो में संध्यारती के पश्चात् शयन और पौढवे की सेवा तक यह राग गाया जाता है ।

धैवत कोमल बाला प्रकार भी कोई मानते है, किन्तु वह प्रचार में नहिवत् है । कहा जाता है कि यह राग अल्लाउद्दीन खीलजी के समय में नायक गोपाल नामक कलावन्त की देन है, किन्तु हमारे मतानुसार नायक वैजु के समकालीन गोपाल नायक होना वास्तविक होगा ।

आरोह :— सारे ग, म, रेसा, मप, निप, निसां.

अवरोह :—सां, निप, मप, ग, म, रेप, ग, म, रेसा.

पकड :— सां, रेप, ग, स, (पनि), धनि, प, मप, गमरे, सा.

राग नायकी कान्हरा ताल—अर्ध आडा चौताल

सुघर सहेली सब मिलि आवो गावो मंगल गीत ।
पुत्र भयो श्रीवल्लभ प्रभुके, जिन चाख्यो नवनीत ॥१॥
आँगन लींपो चोक पुरावो चीतो भींत पछीत ।
सोंघे कुमकुम उवट न्हवावो, पहिरावो पट पीत ॥२॥
पोस असित नोमीको सुभ दिन, सरस लग जहां सीत ।
'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल, बजत बधाइ जगजीत ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

३		४		१	२		३		४		१	२	
ग	गम	रे	सारे	प	—	प	—	—	नि	प	ग	म	रे
सु	घऽ	र	सऽ	हे	ऽ	ली	ऽ	ऽ	मि	ल	आ	ऽ	वो
सा	म	प	ध	सां	—	—	नि	ध	नि	प	ग	म	रेसा
ऽ	गा	वो	ऽ	मं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ल	ऽ	गी	ऽ	तऽ

अन्तरा

३		४		१	२		३		४		१	२	
नि	ध	नि	नि	सां	—	—	सां	—	सां	—	नि	प	—
पु	ऽ	त्र	भ	यो	ऽ	ऽ	श्री	ऽ	ऽ	ऽ	व	ऽ	ऽ
ध	सां	रें	—	गं	गं	मं	रें	सां	नि	ध	नि	प	—
ल	ऽ	भ	ऽ	प्र	भु	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ	प्र	भु	ऽ
म	प	नि	सां	रें	—	सां	नि	ध	प	ध	नि	धनि	प
जि	न	चा	ऽ	ख्यो	ऽ	ऽ	न	ऽ	व	ऽ	नी	ऽऽ	त

संचारी

३		४		१	२		३		४		१	२	
ध	—	ध	ध	ध	—	नि	प	—	—	—	नि	—	—
आं	ऽ	ग	न	लीं	ऽ	ऽ	पो	ऽ	ऽ	ऽ	चो	ऽ	ऽ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	—	—	रें	नि	सां	—	नि	—	ध	—	नि	प	—
क	ऽ	ऽ	पु	रा	ऽ	ऽ	वो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	—	प	ध	नि	प	—	ग	—	म	रेसा	रे	—	सां
ची	ऽ	तो	ऽ	भीं	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ	पऽ	छी	ऽ	त

राग नायकी कान्हरा—ताल चर्चरी (झपताल अंग)

मेरो पिय रसियारी, सुनरी सखी तेरो दोस नहीं ।
नवल लालकों सबकोउ चाहत, कोन कोनके मन बसिया ॥१॥
एकनसों नेना जोरें एकनसों भौंह मरोरें, एकनसो मुख हँसिया ।
'कृष्णजीवन' लछीरामके प्रभु माइ, संग डोलत पुरनससियारी ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
प	प	ग	ग	म	रे	सा	ऩिसा	रे	सारें
पि	य	ऽ	र	सि	या	ऽ	ऽऽ	मे	रोंऽ
म	म	प	—	ध	नि	ध	नि	सां	—
सु	न	री	ऽ	स	खी	ऽ	ते	रो	ऽ
नि	नि	प	म	प	ग	गम	रे	ऩिसा	रें
दो	ऽ	स	ऽ	न	हीं	ऽऽ	मे	ऽऽ	रो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×		२			०		३		
म	प	निध	नि	नि	सां	सां	सां	—	—
न	व	लऽ	ऽ	ला	ऽ	ल	को	ऽ	ऽ
नि	सां	रें	—	रें	गं	मं	रें	सां	—
स	ब	को	ऽ	उ	चा	ऽ	ह	त	ऽ
नि	नि	धप	ध	म	प	प	ध	सां	—
को	ऽ	नऽ	ऽ	को	ऽ	न	के	ऽ	ऽ
सां	निध	नि	म	प	ग	म	रे	निसा	रे
म	नऽ	व	ऽ	सि	या	ऽ	मे	ऽऽ	रो

संचारी

×		२			०		३		
म	म	म	प	—	नि	ध	नि	प	प
ए	क	न	सों	ऽ	ने	ना	जो	ऽ	रें
नि	नि	सां	सां	—	रें	सां	निध	नि	प
ए	क	न	सों	ऽ	ओं	ह	मऽ	रो	रें
म	—	प	नि	प	ग	म	रे	सा	सा
ए	ऽ	क	ऽ	न	सों	ऽ	मु	ऽ	ख

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि सा	|	रे	ऽ	प	|	ग	म	|	रे	निसा	रे
हँ सि	|	या	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	|	री	ऽ	ऽ

राग नायकी कान्हरा—ताल चर्चरी (झपताल अंग)

लोचन लालची भये ।
रोके न रहत प्रेमके माते पलक कपाट दये ॥१॥
ले मन दूत पवन व्है निकसे बहुयौं श्यामपें गये ।
"सूरके" प्रभु खरेइ सोदागर बिनु ग्रथ मोल लये ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
सां	नि	ध	म	म	प	—	रेग	सा	रे
ला	ल	ची	—	भ	ये	—	लो—	च	न
प	प	ग	गम	रेसा	रे	—	नि	सा	—
ला	ल	ची	——	भ—	ये	—	—	—	—

अन्तरा

×		२			०		३		
म	प	नि	प	नि	सां	सां	सां	—	—
रो	—	के	—	न	र	ह	त	—	—
नि	सां	रें	—	सांरें	गं	गंमं	रें	नि	सां
प्रे	—	म	—	के—	मा	——	ते	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें	नि	ध	म	म	प	—	निप	सां	सांरें
प	ल	क	—	क	पा	—	ट—	—	द—
नि	प	नि	म	प	ग	म	रेग	सा	रे
ये	—	—	—	—	—	—	लो—	च	न

संचारी

×		२			०		३		
नि	प	म	—	म	प	—	प	—	मप
ले	—	म	—	न	दू	—	त	—	प—
सां	सां	नि	—	प	म	प	ग	ग	म
व	न	व्हे	—	—	नि	क	से	—	व
नि	प	ग	—	म	रे	—	नि	सा	—
हु	यीं	स्या	—	म	पे	—	ग	ये	—

राग नायकी (षाडव प्रकार)—ताल तीव्रा

ठाडे कुंजभवन ।

लटपटी पाग छुटी अलकावलि घूमत नयन सोहें अरुण बरन ॥१॥

कहा कहूं अंग अंगकी सोभा निरखत मन मुरझन ।

'गोविंद'प्रभुकी या छबि निरखत रतिपति भये हे सरन ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

२		३		×			२		३		×
म	गम	रे	ग	नि	प	—	म	—	प	निप	ग	मरे	सा
ठा	——	ड़े	—	कुं	—	—	ज	—	—	भ—	व	——	न

अन्तरा

२		३		×			२		३		×
म	प	नि	प	सां	—	सां	नि	सां	रें	रें	निसां	पनि	प
ल	ट	प	टी	पा	—	ग	छु	टी	अ	ल	का—	व—	ल
म	प	नि	सां	गं	—	मं	रें	रें	सांनि	सां	निनि	पम	प
घू	—	म	त	ने	—	न	सो	हैं	अरु	न	ब—	र—	न

संचारी

२		३		×			२		३		×
म	—	प	—	नि	म	प	म	—	निप	मप	ग	मरे	सा
क	—	हा	—	क	हूं	—	अं	—	ग—	अं—	ग	की—	—
रे	प	ग	म	रेरे	रे	सा	नि	नि	पम	प	ग	मरे	सां
सो	—	भा	—	निर	ख	त	म	न	मु—	र	झ	——	न

राग अडाना—संक्षिप्त विवरण

अडाना राग के दो प्रकार प्रचार में है। अेक काफी थाट का और दूसरा आसावरी थाट का। काफी थाट का अडाना प्राचीन माना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जाता है। प्राचीन ग्रन्थों में केवल 'रागतरंगिनी' ग्रन्थ में अडाना का नामोल्लेख प्राप्त होता हैं।१ किन्तु उसका स्वरवर्णन प्राप्त नहीं होता है। अडाना के सम्बन्ध में प्रतापसिंहजी के कथन को भातखण्डे-जी ने इस प्रकार उल्लेख किया है। "शास्त्र में तो ये सात सुरन से गाया है। निध पम गरे सा। याने सम्पूर्ण है। याको रात्रि के दूसरे प्रहर में गावनो।"

कुछ विद्वान लोग इस राग को 'रात का सारंग' भी कहते हैं। अष्टछाप—घराने की परम्परा में काफी थाट का अडाना ही प्राचीन माना जाता है। भातखण्डेजी के हि. सं. प. भा. ४ (शास्त्र), पृष्ठ ४२४ पर श्री टागोर के कथन का निम्न उल्लेख से इस बात की पुष्टि होती है। "आशावरी थाट का 'अडाणा' ही आधुनिक राग आहे। सुघराई, कानडा व सारंग ऐ तीन राग मिळून अडाणा उत्पन्न केला आहे।"

अष्टछाप परम्परा के काफी थाट के अडाने का समर्थन पण्डित आदितरामजी ने भी निम्न प्रकार किया हैं :—

अडाणाख्यः पूर्णरागो मध्यमग्रहसंयुतः।
रागः प्रथमके यामे गीयते विधुधैर्जनै॥

"यह राग सम्पूर्ण है, मध्यम स्वरग्रह है, मेघ व कान्हरा संयुक्त रुप है। गान्धार व निषाद कोमल के साथ शुद्ध निषाद भी सामिल रहता हैं।" श्रीजयसुखलाल शाह ने "कान्हडा के प्रकार" ग्रन्थ में स्पष्ट कहा है कि "प्राचीन ग्रन्थों में ग, नि, कोमल बताकर इसका समावेश काफी थाट के अन्तर्गत किया गया है। जिससे ज्ञात होता हैं कि यह एक समय शुद्ध धैवत राग से गाया जाता था।

१ : हिंदोल सुघराई स्यादडानो रागसत्तमः।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वैष्णव मन्दिरों में गाये जानेवाले पदों में जो हवेलीसंगीत के नाम से प्रचलित हैं। आज कभी कभी शुद्ध 'ध' वाले अडाना के पद सुनने में आते हैं।"

पण्डित भातखण्डेजीने क्रमिक भाग–४ में भी कहा है१ कि वर्गे ही ग्रंथकार या रागान्त तीव्र धैवत मानून त्याचा थाट काफी मानतात।" अडाना राग की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कोई कानडा और मेघ, और कोई सुघराई, कानडा व सारंग के मिलाप से बना हुआ राग मानते हैं। इस मान्यता के आधार पर अडाना राग में धैवत शुद्ध होना स्पष्ट होता है, क्योंकि मिलाप के उपर्युक्त सभी रागों का थाट काफी है।

अडाना राग का दूसरा प्रचलित प्रकार आसावरी थाट का माना जाता हैं। इस प्रकार का रूप केवल आधुनिक ग्रन्थों में दिखाई देता है। पण्डित भातखंण्डेजी ने अडाना को आसावरी थाट में सम्मिलित किया हैं। इस राग के वर्णन में लिखा हैं कि कुछ गुनीजनो के मतानुसार षाडव–षाडव जाति भी मानी जाती है। अतः कुछ विद्वानो का मत है कि इस राग में धैवत वर्ज्य था, किन्तु बाद में इसका प्रयोग होने लगा।

अडाना राग का विवरण :–

१. यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है। २. आरोह में ग ध दुर्बल हैं और इसका चलन ज्यादातर सारंग के अंग से ही किया जाता है। ३. परन्तु कहीं बार नि प ग म प सां इस तरह आरोह में गान्धार लिया जाता है और बीच में अवरोह में सां ध नि प इस तरह वक्र धैवत लिया जाता हैं। इस लिए इसकी जाति सम्पूर्ण मानना उचित है। ४. इस राग में ग नि कोमल और बाकी के स्वर

१ : हि. सं. प. मराठी आवृत्ति भाग ४, पृष्ठ ६६२

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शुद्ध हैं । ५. आरोह में शुद्ध निषाद लिया जाता है, किन्तु कई गुणीजनों के मतानुसार कोमल निषाद से कुछ ऊंचा और शुद्ध निषाद से कुछ नीचा प्रकार का स्वर लिया जाता है । ६. इस राग का चलन मध्य और तार सप्तकों में होता है । अतः यह राग उतरांगप्रधान माना जाता है । ७. वादी स्वर तार षड्ज और संवादी स्वर पंचम है । ८. इस राग का गानसमय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है, किन्तु कुछ गुणीजन दूसरा प्रहर भी मानते है । ९. पुष्टिसम्प्रदाय की प्रणाली में यह राग शयनसमय गाने की प्रथा है।

आरोहः—सा, रे म प, नि सां । **अवरोहः**—सां, ध नि प, म प, ग म, रे सा

पकड़ :—सां नि सां, ध नि प, म प सां ।

राग अडाना — ताल चौताल

जलकों गई सुघट नेहभरि लाई परी हे चटपटी दरसकी ।
इत मोहन गांस उत गुरुजन त्रास—चित्रलिखि ठाडी नाम धरत सखी परसकी ॥१॥
टूटे हार फाटे चीर नेनन बहत नीर, पनघट भई भीर सुधि न कलसकी ।
'नंददास' प्रभुसों प्रीति बाढी अति गाढी, फैल परी चायन सरसकी ॥२॥

स्थायी

							नि	प	नि	म	प
							ज	ल	कों	ऽ	ग
×		०		२		०		३		४	
सां	—	—	नि	प	म	म	—	म	प	नि	प
ई	ऽ	ऽ	सु	घ	ट	ने	ऽ	ह	भ	ऽ	रि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	ग	म	रे	—	सा	रे	म	प	निध	नि	सां
ला	ऽ	ऽ	ई	प	री	हे	ऽ	च	ट—	प	टी
रें	रें	सां	निध	नि	प	मप	नि	प	नि	म	प
द	र	सऽ	की	ऽ	ज	ल	कों	ऽ	ऽ	ऽ	ग

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	—	प	निप	नि	सां	—	—	सां	सां	सां
इ	त	ऽ	मो	ह—	न	गां	ऽ	ऽ	स	उ	त
नि	सां	सां	रें	सां	ध	नि	प	म	प	नि	सां
गु	रु	ऽ	ज	प	त्रा	ऽ	स	चि	त्र	लि	खि
गं	गं	मं	रें	—	सां	म	प	निप	नि	सां	—
ठा	ऽ	ढी	ना	ऽ	म	ध	र	त	स	खी	ऽ
रे	सां	सांरे	सां	निध	नि	प	नि	प	नि	म	प
प	र	स—	की	ऽ	ऽ	ऽ	ज	ल	कों	ऽ	ग

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	—	प	—	प	ध	ध	नि	प	—	धं
टू	टे	ऽ	हा	ऽ	र	फा	टे	ऽ	ची	ऽ	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	प	नि	सां	—	सां	नि	सां	निसां	ध	नि	प
नैं	ऽ	न	न	ऽ	व	ह	त	––	नी	ऽ	र
म	प	सां	नि	प	प	ग	ग	म	रे	—	सा
प	न	घ	ट	ऽ	भ	ई	ऽ	ऽ	भी	ऽ	र
नि	सा	—	ग	म	प	ध	ध	नि	प	—	—
सु	धि	ऽ	न	ऽ	क	ल	स	ऽ	की	ऽ	ऽ

आभोग

×		०		२		०		३		४	
म	—	प	ध	—	नि	सां	सां	—	सां	—	—
नं	ऽ	द	दा	ऽ	स	प्र	भु	ऽ	सों	ऽ	ऽ
सां	—	सांनि	रें	—	सां	नि	सां	रें	ध	नि	प
श्री	ऽ	तऽ	वा	ऽ	ढी	अ	ति	ऽ	गा	ऽ	ढी
गं	गं	गं	रें	—	सांरें	सां	—	ध	नि	सां	सां
फै	ऽ	ल	प	ऽ	रीऽ	चा	ऽ	ऽ	य	ऽ	न
रें	सां	सांरें	सां	ध	नि	सां	नि	प	नि	म	प
स	र	सऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ	ज	ल	कों	ऽ	ग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग बडाना—ताल चौताल

तेरी मोंहकी मरोरनतें ललितत्रिभंगी भये
अंजन दै चितये भयेजु स्याम वाम ।
तेरी मुसिकान देखि, दामिनी सी कोंध जात,
दीन व्हे याचत राधे आधो लियो नाम ॥ १ ॥
ज्यों ज्यों नचावे वाल, त्यों त्यों नाचत लाल,
अब तो मया कीजे, चलिये निकुंज धाम ।
'नंददास'प्रभु तुम बोलो तो बुलाय लेहु
उनको तो कलप बीते तेरी घरि जाम ॥ २ ॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	–	सां	रें	–	सां	नि	सां	सां	निध	नि	प
मों	–	ह	की	–	म	रो	–	र	न–	–	तें
म	म	–	प	नि	प	ग	ग	म	रे	–	सा
ल	लि	–	त	–	त्रि	भं	–	गी	भ	–	ये
नि	सा	ग	ग	म	म	म	प	–	नि	म	प
अं	–	ज	न	–	दे	चि	त	–	ये	–	भ
रें	–	सां	नि	सा	रें	सांनि	सां	पनि	प	निम	प
ये	–	जु	स्या	–	म	वा–	–	म	ते	––	री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	प	नि	म	प	नि	सां	सां	सां	—	सां
ते	—	री	मु	—	स	का	—	न	दे	—	खि
नि	सां	रें	रें	सां	सां	नि	सां	रें	सां	नि	प
द्रा	—	मि	नि	—	सी	कौं	—	घ	जा	—	त
म	प	नि	सां	रें	रें	गं	गं	मं	रें	—	सां
दि	—	न	व्हें	—	या	च	—	त	प्या	—	री
रें	सां	सां	नि	सां	रें	सांनि	सांप	नि	प	निम	प
रा	धे	—	आ	—	घो	लि	यो	—	ना	—	म

राग अड़ाना—ताल चौताल (द्रुपद)

बेनी निरखत भुजंग तजि पताल लोक गये
तेरे द्रग देखि मीन जल में दुरे हो ।
मुख देखे कलाहीन उडुगनपति व्योम बसे
दसनन द्युति देख तहां अनार दुरक परे हो ॥१॥

कुछ देखी चक्रवाक लागेरी निस जोग साध
तन देखि कंचन पावकमें जरि जरे हो ।
सिंघ बली कटि निहारी, कंचन करि विपति भारी,
खेमरसिकप्रभु निहारि डारत तृन तोरे हो ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	—	सां	—	सां	सां	रें	सां	सां	नि	प	प
वं	—	नी	—	नि	र	ख़	त	भु	जं	—	ग
म	प	सां	सां	नि	प	ग	ग	म	रे	—	सा
त	जि	प	ता	—	ल	लो	—	क	ग	—	ये
रे	नि	सा	रे	म	म	प	—	निप	नि	सां	सां
ते	—	रे	द्र	—	ग	दे	—	खि—	मी	—	न
रें	सां	—	निप	नि	प	सां	—	प	प	निम	प
ज	ल	—	मैं—	—	दु	रें	—	—	हो	——	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	—	प	नि	ध	नि	सां	—	सां	—	सां
मु	ख	—	दे	—	खे	क	ला	—	ही	—	न
नि	सां	रें	रें	सां	सां	नि	सां	रें	सां	नि	प
उ	हु	ग	न	प	ति	व्यो	—	म	ब	—	सें
म	प	नि	नि	सां	सां	गं	गं	मं	रें	—	सां
द	स	न	न	द्यु	ति	दे	—	ख	त	—	हाँ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें	रें	सां	सांनि	सां	सां	रें	सां	नि	प	निम	प
अ	ना	र	दु–	र	क	प	रे	–	हो	–	–

राग अडाना—ताल धमार

काल्ह तुम हा हा करि छूटे हो मोहन अब तुम वही ढंग कीने ।
इतनेही में भूलि गये हो निपट चतुर प्रवीने ॥१॥
एसे निर्लज तुम कबके भये हो सुघरराय रंगभीने ॥२॥

स्थायी

३				×					२		०		
सां	सां	सां	रें	सां	नि	सां	नि	–	प	–	म	म	प
का	ल्ह	तु	म	हा	–	–	–	–	–	–	क	रि	–
नि	प	प	मप	ग	ग	म	रे	–	सा	–	रे	नि॒	सा
छू	–	टे	हो–	मो	–	–	ह	–	न	–	अ	ब	–
रे	–	सा	–	सा	रें	–	सां	–	रें	सां	नि	ध	निप
तु	–	म	–	व	ही	–	–	–	ढं	ग	की	–	ने–

अन्तरा

×					२		०			३			
म	प	–	नि	म	प	–	सां	–	–	नि	सां	सां	–
इ	त	–	ने	–	–	–	ही	–	–	–	–	में	–
सां	–	नि	रें	–	सां	रें	सां	–	ध	नि	–	प	प
भू	–	–	लि	–	–	ग	ये	–	–	हो	–	–	निं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गं गं मं रें रें	सां रें	सां नि ध नि	सां सां सां रें
प ट — च तु	र म	वी — — ने	का ल तु म

अन्तरा—२

×	२	०	३
म प — नि म	प नि	सां सां —	नि सां सां —
ए — — से —	— नि	लँ ज —	तु — म —
सां सां नि रें —	सां रें	सां ध —	नि — प प
क व — के —	— भ	ये — —	हो — — सु
गं गं मं रें रें	सां रें	सां नि ध नि	सां सां सां रें
घ र रा — य	रं ग	भी — — ने	का ल तु म

राग अडाना—ताल तीव्रा

सब गोकुलको जीवन गोपाललाल प्यारो ।
सुंदर मुख निरखत ही नयन चेंन पावत अति
गोपी ग्वाल आंखिन को तारो ॥१॥
रूपकी निधि कामकी सिधि जानत सब प्रेम की विधि ।
धेनुं सेन साजकें गृह आवत सवारो ।
"छीतस्वामी" गिरिवरधर अपने कर कोमल
नख राख लियो गोबर्धन भारो ॥२॥

स्थायी

२	३	×	२		३	×
नि प	म प	सां — —	नि ध	नि प	म ग म
ए —	स ब	गो — —	कु ल	को —	जी — —

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रे — | सा सा | म प प | नि प | नि सां | रें नि सां
व — | न गो | पा — ल | ला — | — ल | प्या — —

नि प | निप मप |
रो — | स— ब— |

अन्तरा

×			२		३		×			२		३	
म	प	प	नि	प	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां
सुं	—	द	र	—	सु	ख	नि	र	—	ख	त	ही	—
सां	नि	सां	रें	—	—	सां	सां	नि	सां	निसां	रेंसां	नि	प
न	य	न	चे	—	—	न	पा	—	—	व—	त—	अ	ति
म	प	प	नि	सां	रें	रें	गं	—	मं	रें	रें	सां	—
गो	—	पा	ग्वा	—	—	ल	आं	—	—	खि	न	को	—
रें	नि	सां	नि	प	निप	मप							
ता	—	—	रों	—	स—	ब—							

संचारी

×			२		३		×			२		३	
सां	—	सां	नि	ध	नि	प	म	प	प	नि	ध	नि	प
रू	—	प	की	—	नि	धि	का	—	म	की	—	सि	धि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि — सां	सां —	नि सां	रें नि सां	नि ध	नि प
जा — न	त —	स ब	प्रे — म	की —	वि धि
सां — सां	नि प	म प	ग — म	रे —	सा सा,
धे — नु	से —	— न	सा — ज	के —	गृ ह,
नि सा सा	रे —	सा रे	ग — म	रे —	सा —
आ — व	त —	— स	वा — —	रो —	— —

आभोग

×	२	३	×	२	३
म प —	नि प	नि —	सां सां —	सां सां	रें सां
छी त —	स्वा —	मी —	गि रि —	व र	ध र,
सां नि सां	रें रें	सां रें	गं गं मं	रें सां	नि सां
अ प ने	क र	को —	म ल —	न ख	रा ख
रें रें सां	नि सांसां	सां सांरें	सांनि सां निप	नि म	प मप
लि यो —	गो वर	ध न—	भा— — रो—	ए —	स ब—

राग अडानो–ताल धमार

ततथेई बोलत डोलत गावत हसत हसावत ।
मटकत भौंह तट मुकुटकी चटक तामें, रिझवत लटकत आवत ॥१॥
हस्त चरन द्रग भेद दिखावत, संगीत जति लिये मान मिलावत ।
'कृष्णदास' गिरिधरन रासरस, रतिपति कोटि लजावत ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

३				×					२		०		
नि	प	निम	प	सां	—	—	नि	ध	नि	प	ग	—	म
त	त	थें—	ई	बो	—	—	ल	—	त	—	डो	—	—
रे	—	सा	—	म	म	प	नि	सां	रें	सांरें	सां	नि	प
ल	—	त	—	गा	व	त	ह	स	त	ह—	सा	व	त

अन्तरा

×					२		०			३			
म	प	—	नि	प	नि	—	सां	—	सां	रें	—	सां	—
म	ट	—	क	—	त	—	भौं	—	ह	त	—	ट	—
नि	सां	सां	रें	—	—	सां	रें	नि	सां	नि	—	प	—
मु	कु	ट	की	—	—	च	ट	क	—	ता	—	में	—
म	प	नि	सां	—	रें	—	गं	गं	मं	रें	—	सां	—
रि	क्ष	—	व	—	त	—	ल	ट	—	क	—	त	—
रें	नि	सां	नि	ध	नि	—	सां	नि	सां	नि	प	म	प
आ	—	—	—	—	व	—	त	—	—	त	त	थे	ई

संचारी

×					२		०			३			
सां	नि	—	ध	—	ध	—	नि	प	—	म	—	प	—
ह	—	—	स्त	—	च	—	र	न	—	द्र	—	ग	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	सां	—	रें	मां	नि	सां	नि	ध	—	नि	—	प	—		
भे	—	—	द	—	—	दि	खा	—	—	न	—	त	—		
सां	—	—	नि	प	म	प	ग	ग	म	रे	—	सा	—		
सं	—	—	गी	—	—	त	ज	ति	—	लि	—	ये	—		
म	—	—	प	—	नि	प	ग	—	म	रे	—	सा	—		
मा	—	—	न	—	मि	—	ला	—	—	व	—	त	—		

राग रायसा—संक्षिप्त विवरण

यह राग 'कान्हरा' का एक प्राचीन और अप्रचलित प्रकार है। 'नायकी' और 'शहाना' के संयोग से बना हुआ जो रायसा कानडा आजकल प्रचार में है वह हमारी परम्परासे भिन्न है। सम्प्रदाय की प्रणाली में अधिकतर बधाई, हिंडोला तथा होरी-धमार के पद प्राप्त होते है। नित्यक्रम के पद क्वचित् ही दृष्टिगोचर होते हैं। यह राग मध्यम ग्राम से याने मध्यम को षड्ज बनाकर गाने की प्रथा है। काफी थाट से उत्पन्न होता है। स्वर ग, नि, कोमल है तथापि आरोह में क्वचित् शुद्ध ग, नि का प्रयोग भी किया जाता है। जाति सम्पूर्ण है। कान्हरे के सभी प्रकारों का गानसमय मध्यरात्रि का माना जाता है, किन्तु मन्दिरो की सेवाप्रणाली में संध्यारती के बाद शयन के दर्शन तक यह राग गाया जाता है। वादी स्वर पंचम संवादी षड्ज हैं।

स्वरविस्तार :—

(१) सा, निध, प, निसा, रेग रेसा

(२) सा, निसा, रेग, रेसा, रेग मप, धप, गम, गरेसा,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि प ध, नि सा,

(३) पप, धप, गम, प, सां, निसां, निधप, मग नि सा,

(४) प सां, नि, पधनि, सां, नि ध प म ग नि सा,

राग रायसा—ताल अर्धआडा चौताल

झूलत राधामोहन, कालिंदीके कूल ।
सघन लताजु सुहावनी, चहुंदिस फूल फूल ॥१॥
सखी जुरि चहुंदिसते कमलनयनकी ओर ।
बोलत वचन अमृतमय 'नंददास' चित्तचोर ॥२॥

स्थायी

×	२		३		४		×	२		३		४	
सा	सा	सारे	नि	ध	प	धसा	ग	—	रे	सा	—	नि	सारे
झू	ल	त—	रा	—	धा	——	मो	—	ह	न	—	का	लिं—
ग	—	—	रे	—	—	—	प	प	—	प	—	ध	प
दी	—	—	के	—	—	—	का	लिं	—	दी	—	के	—
म	म	म	प	म	प	—	गम	रे	सा	नि	प	ध	सारे
कू	—	—	ल	—	—	—	झू—	ल	त	रा	—	धा	——

अन्तरा

×	२		३		४		×	२		३		४	
पप	प	प	प	—	ध	पध	सां	नि	ध	प	मग	रेसा	निसा
सघ	न	ल	ता	—	जु	सु—	हा	—	व	नी	——	चहुं	दिस

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	–	–	रे	–	–	–	पप	प	प	प	–	ध	प
फू	–	–	ले	–	–	–	चहुं	दि	स	फू	–	ले	–
म	ग	म	प	म	प	–	रेग	रे	सा	नि़	प़	ध़सा	रे
फू	–	–	ल	–	–	–	झू–	ल	त	रा	–	धा	–

संचारी

×	२		३		४		×	२		३		४	
सा	सा	सारे	नि	ध़प	ध़	सारे	ग	रे	सा	–	सारे	नि़	सारे
स	खी	जु–	री	––	च	हुं–	दि	स	तें	–	कम	ल	न–
ग	ग	–	रे	–	–	–	पप	प	प	प	प	ध	प
य	न	–	की	–	–	–	कम	ल	न	य	न	की	–
म	ग	म	प	म	प	–	ग	रे	सा	नि़	प	ध	सारे
ओ	–	–	र	–	–	–	स	खी	जु	री	–	च	हु–

राग सिंधूरा कान्हरा—सं. परिचय

सिंधूरा को सिंधूडा या सैंन्धवी भी कहते हैं। यह प्राचीन राग है। काफी थाट से उत्पन्न होता है। इस राग के आरोह में गान्धार और निषाद स्वर वर्ज्या होने से इस की जाति औडुय सम्पूर्ण मानी जाती हैं। षड्ज वादी तथा पंचम स्वर संवादी है। हर कोई समय गाया जा सकता है। दूसरे मतानुसार आरोह में निषाद कमी–कभी लिया जाता है। इस राग में काफी राग की छाया दिखाई देती है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

'रागविबोध' ग्रन्थ में तथा 'हृदयप्रकाश' ग्रन्थ में इस राग का वर्णन 'सिंघोडा' नाम से किया गया है ।

अरोह : में ग—नि वर्ज्य प्रकार का सिंधुरा कान्हरा

आरोहावरोह : सा, रे म प, ध, सां । सां नि ध प म ग, रे सां.

उपर्युक्त वर्णन सिंधूरा कान्हरा का है ।

सिंधूरा का दूसरा प्रकार प्रचार में है, जो सिंधूड़ा नाम से प्रसिद्ध है ।

स्वरविस्तार : (१) सा, रेमपधसां, मपसां, धसां, धसारें गं, रेंसां,
पधसां, धसां रेंसां, निप, सां, निप, मपगरे,
रेमरे गरेसा,
(२) मंपनिसां, रें गं रें सां, सां, निध, मपग, रे,
मग, रेसा. रेमपध, सां, रेंसा नि, पध, मपनिसां,
रेंगंरेंसां,

[इस राग की प्रकृति वीर एवं अद्‌भुत रस की होने से इसी रसके वर्णन के पदों में इस राग खिल उठता है । हमारे मन्दिरों की कीर्तन परम्परा के इसी रस से सबन्धित निम्न पद यहां स्वरलिपिसहित दिये गये हैं । (१) वीर रस, (२) अद्‌भुत रस, (३) अद्‌भुत शृंगार इस क्रममें हैं ।]

राग सिंधुरा (कान्हरा)—ताल चर्चरी

आज रघुपति चढे लंकगढ लेन को ।
अवनि चंचल भई सेस सूधी गई
कमठकी पीठ फटि मिलि गई रेंन को ॥१॥
होत अंदोल सागर सप्त दिगपाल
भये भयभीत अति उडि चले गेन को ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहति मंदोदरी सुनहु दसकंध दिय
ले मिलो सीय राजिवदल नेंनको ॥२॥
वे प्रगट जगदीस सो हि ईसको बल कहा,
एक वनचर आय जारि गयो एनको ।
हरिनारायन स्यामदासके प्रभुसों वैर करि कंत पावै न सुख
चेंन को ॥३॥

स्थायी

×			२		०		३		
रें	गं	रें	सां	सां	नि	नि	ध	म	प
आ	—	ज	र	घु	प	ति	च	ढे	—
ग	—	रे	ग	सा	रे	म	प	ध	पध
लं	—	क	ग	ढ	ले	—	न	को	—

अन्तरा

×			२		०		३		
म	म	म	प	ध	सां	ध	सां	सां	—
अ	व	नि	चं	—	च	ल	भ	ई	—
रें	गं	रें	सां	सां	नि	सां	सां	नि	ध
से	—	स	—	सू	धी	—	ग	ई	—
नि	सां	सां	नि	ध	ग	गम	ग	रे	सा
क	म	ठ	की	—	पी	——	ठ	फ	टि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें	रेंगं	रें	रें	सां	नि	सां	नि	ध	पध
उ	ड–	ग	ई	–	रे	–	न	कों	–

राग सिंधूरा (कानरा)–ताल सूलताल

कान्ह कुंवरके करपल्लव पर मानों गोवरधन नृत्य करे ।
ज्यों ज्यों तान उठत मुरलीकी त्यों त्यों लालन अधर धरे ॥
मेघ मृदंगी मृदंग बजावत दामिनी दमकि मानों दीप जरे ।
ग्वाल ताल दे नीके गावत, गायनके सुत सुरजु भरे ॥
देत असीस सकल गोपीजन बरसाको जल अमित झरे ।
अति अद्भुत अवसर गिरिधरको 'नंददास' के दुःख जु हरे ॥

स्थायी

×		०		२		३		०	
सां	नि	सां	रें	नि	नि	ध	नि	प	ध
का	–	न्ह	कुं	व	र	के	–	–	–
सां	नि	ध	प	ग	ग	रे	–	सा	–
क	र	प	–	ल्ल	व	प	–	र	–
रे	–	म	–	प	ध	ध	सां	–	सां
मा	–	नों	–	गो	व	र	ध	–	न
सांरें	गं	रें	सां	–	रें	नि	ध	प	ध
नृ–	–	त्य	–	–	क	रे	–	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×		०		२		३		०	
म	—	प	ध	सां	—	सां	—	—	सां
ज्यों	—	ज्यों	—	ता	—	न	—	—	उ
रें	रें	गं	रें	सां	—	नि	ध	प	—
ठ	त	मु	र	ली	—	की	—	—	—
गं	—	रें	रें	सां	—	नि	ध	प	ध
त्यो	—	त्यों	—	ला	—	ल	—	न	—
सां	नि	ध	म	प	ग	रे	म	प	ध
अ	ध	र	—	ध	रे	—	—	—	—

संचारी

×		०		२		३		०	
सां	—	सां	सां	नि	ध	नि	ध	प	ध
मे	—	घ	मृ	दं	—	गी	—	—	मृ
नि	—	ध	प	ग	—	रे	—	सा	—
दं	—	ग	ब	जा	—	व	—	त	—
रे	—	म	म	प	प	ध	नि	प	ध
दा	—	मि	नी	द	म	की	मा	—	नों

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	–	ध	प	ग	ग	रे	–	सा	–
दी	–	–	प	–	ज	रे	–	–	–

राग सिंधूरा (कान्हरा)—ताल धमार

जुगल वर आवत हें गठजोरे ।
संग सोभित ब्रखभाननंदिनी ललितादिक त्रन तोरे ॥१॥
सीस सहेरो वन्यो लालके निरखि हरखि चित चोरे ।
निरखि निरखि बलि जाय 'गदाधर' छबिन वढी कछु थोरे ॥२॥

स्थायी

×					२		०			३			
रें	गं	–	रें	–	सां	–	नि	–	–	ध	म	ध	प
आ	–	–	व	–	त	–	हें	–	–	ग	–	–	ठ
ग	–	–	रे	–	ग	सा	रे	म	–	प	–	ध	–
जो	–	–	रे	–	–	जु	ग	ल	–	व	–	र	–

अन्तरा

×					२		०			३			
म	–	प	नि	–	सां	नि	सां	सां	–	नि	सां	रें	गं
सं	–	–	ग	–	सो	–	भि	त	–	ब्र	–	ख	–
रें	सां	–	रें	नि	ध	प	म	प	–	नि	–	सां	–
भा	–	–	न	–	नं	–	–	द	–	नी	–	–	–
नि	नि	–	सां	–	सां	–	रें	नि		सां	–	सां	–
ल	लि	–	ता	–	दि	–	क	–		त्र	–	न	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें	नि	—	ध	—	|	प	ध	|	म	प	—	|	नि	—	सां	—
तो	—	—	रे	—	|	—	जु	|	ग	ल	—	|	व	—	र	—

राग बिहाग—सं. विवरण

थाट बिलावल से बिहाग राग उत्पन्न होता हैं। जाति ओडव—संपूर्ण है, क्योंकि इसके आरोह में रे, ध स्वर वर्जित हैं, और अवरोह संपूर्ण है। स्वर क्वचित् तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है, बाकी सब स्वर शुद्ध हैं वादी गन्धार और संवादी निषाद है। गान समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। विशेष : इस राग में तीव्र मध्मम का प्रयोग गुनीलोग विबादी के नाते से करना उचित्त समझते हैं। अवरोह में नि से प और ग से सा पर आते समय कुशलता रखनी पडती हैं। विहागरा राग की अपेक्षा सम्प्रदाय में बिहाग राग गानेकी प्रथा अष्टछापके समयके पश्चात् अधिक प्रचार में होने का सम्भवित है तथापि शयनसमय और तत्पश्चात् पोढवे की सेवा में गाये जाने बाले पदों की अधिक संख्या प्राप्त होती है। इस राग में आश्राय, विनंती, दीनता, वैराग्य इत्यादिक पद आजकल गाये जाते हैं।

पकड स्वर :—सा, गमप, गमग, रेसा.

आरोहावरोह :—साग, मप, निसां। सां, निधप, मग, रेसा।

राग बिहाग—ताल चौताल (ध्रुवपद)

बेठे व्रजराजकुंवर, प्यारी संग जमुनातीर।
सीतल बियार सखी मंद मंद आवे ॥१॥

अति उदार वैजयंती स्याम अंग सोमा देत।
कंठ भुजा मेल दोउ हस बिहस गावे ॥२॥

झीनो पट दिपत देह प्रीतम सों अति स्नेह।
गौर स्याम सोभा देत कहत न बनि आवे ॥३॥

'सूरदास' मदनमोहन मोहनीसे बने दोउ।
हस हस जात अंग अरगजा लावे ॥४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	—	प	ग	ग	म	प	ग	म	ग	सा	सा
वै	—	ठे	—	ब्र	ज	रा	—	ज	कुं	व	र
नि़	—	प़	नि़	सा	सा	सा	सा	म	ग	—	सा
प्या	—	री	सं	—	ग	ज	सु	ना	ती	—	र
नि़	सा	सा	ग	—	म	प	—	नि	नि	सां	सां
सी	—	त	ल	—	बि	चा	—	र	स	खी	—
नि	—	प	प	ग	म	प	ग	म	ग	—	सा
मं	—	द	मं	—	द	आ	—	—	वे	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	प	प	सां	—	सां	सां	—	रें	सां	—	सां
अ	ति	उ	दा	—	र	वै	—	ज	यं	—	ती
सां	—	सां	नि	—	प	प	—	सां	नि	—	प
स्या	—	म	अं	—	ग	सो	—	भा	दे	—	त
सां	—	गं	गं	गं	मं	गं	—	सां	सां	—	सां
कं	—	ठ	भु	जा	—	मे	—	ल	दो	—	उ
सां	नि	प	प	ग	म	प	ग	म	ग	—	सा
ह	स	—	बि	ह	स	गा	—	—	वे	—	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	—	ग	म	प	नि	ध	प	—	प
झी	—	नो	—	प	ट	दि	प	त	दे	—	ह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	म	प	प	नि	नि	सां	सां	नि	नि	—	प
श्री	—	त	म	—	सौं	अ	ति	स	ने	—	ह
नि	ध	प	म	ग	म	प	ग	म	ग	—	सा
गौ	—	र	स्या	—	म	शो	भा	—	दे	—	त
ऩि	सा	—	प	—	म	प	म	ग	सा	—	सा
क	ह	—	त	—	न	ब	नि	—	आ	—	वे

राग विहाग—ताल तीवा (मध्यलय)

पौढे माई मदन मोहन स्याम ।

अनन्य होइ चरणारविंद भज, सकल पूरन काम ॥१॥

अष्टसिद्धि नवनिधि द्वारें, जोग भोग विश्राम ।

ऊमापति सुकदेव नारद, रटत निसदिन नाम ॥२॥

सकल कला प्रबींन गिरिधर, राधिका भुज वाम ।

कहत 'कृष्णा' सुबस बसिये श्री नंद गोकुल गाम ॥३॥

स्थायी

×			२		३		×			२		३	
म	ग	म	प	—	नि	सां	नि	—	प	पम	प	गम	ग
म	द	न	मो	—	ह	न	स्या	—	म	पौ—	ठे	मा—	इ
सा	ग	म	पमं	प	ग	म	ग	—	म	ग	रे	सा	—
म	द	न	मो—	—	ह	न	स्या	—	—	—	—	म	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×			२		३		×			२		३	
प	प	प	सां	सां	सां	सां	सां	गंरें	सां	सां	निध	सां	नि
अ	न	न्य	हो	इ	च	र	णा	--	र	बि	द्-	भ	ज
प	ग	म	प	नि	सां	रें	सां	नि	धप	पमं	प	गम	ग
स	क	ल	पू	-	र	न	का	-	म-	पौ-	टे	मा-	इ

संचारी

×			२		३		×			२		३	
प	-	प	मं	प	ग	म	प	नि	ध	पमं	ध	प	-
अ	-	ष्ट	सि	धि	न	व	नि	-	ध	द्वा-	-	रे	-
म	ग	म	पमं	प	ग	म	ग	-	रे	सा	रे	सा	-
जो	-	ग	भो-	-	ग	वि	श्रा	-	-	-	-	म	-

राग बिहाग—ताल मठताल (सूलताल)

जैसो हों तैसो तिहारो श्रीवल्लभ, अब जिन छांडि देहु मोहि करतें ।
बांह गहेकी लाज मन धरि हो, नाहि भरोसो मोहि साधन बलतें ॥१॥
तुम तजि और ठौर नहिं मोकों, जासों कहों जाय दुख भरतें ।
'रसिक' सिरोमनि श्रीवल्लभ महाप्रभु, राखौ चरन सरन भव डरतें ॥२॥

स्थायी

×				२		३			
प	मं	ग	म	ग	-	सा	-	ऩि	-
जे	-	सों	-	हुं	-	ते	-	सो	-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प़	प़	ऩि	ऩि	सा	—	ग	—	सा	सा
ति	हा	—	रो	श्री	—	व	—	ल्ल	भ
ऩि	सा	ग	म	प	—	प	नि	सां	सां
अ	व	जि	न	छां	—	ड	दे	—	हु
ऩि	—	प	म॑	ग	म	ग	—	सा	—
मो	—	ही	—	क	—	र	—	तें	—

अन्तरा

×				२		३			
ग	म	प	प	सां	—	सां	—	—	—
वां	—	ह	ग	हे	—	की	—	—	—
गं	—	सां	—	नि	निं	सां	नि	—	प
ला	—	ज	—	म	न	ध	र	—	हौं
नि	सां	गं	मं	पं	मं॑	गं	—	सां	सां
ना	—	हीं	न	भ	रो	सो	—	मो	ही
नि	—	प	म॑	ग	म	ग	—	सा	—
सा	—	ध	न	ब	—	ल	—	तें	—

संचारी

×				२		३			
सा	सा	ग	म	प	—	प	—	—	—
तु	म	त्य	ज	औ	—	र	—	—	—
नि	—	प	—	ग	म	ग	—	सा	—
ठौ	—	र	—	न	हीं	मे	—	रे	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प़	प़	नि़	—	सा	—	ग	—	—	म		
जा	—	सो	—	जा	—	य	—	—	क्र		
प	म॑	ग	म	ग	—	सा	—	सा	—		
हों	—	दु	ख	भ	—	र	—	ते	—		

राग बिहागरा (विहागड़ा) सं. विवरण

बिहागरा—विहागड़ा राग को बिहाग की अपेक्षा प्राचीन राग माना जाता हैं। 'संगीत सार' नामक बंगाली ग्रन्थ में कहा है कि "वेहाग ये संस्कृत शास्त्रानुयायिक राग नहीं है, उसकी उत्पत्ति बिहंगडा राग से हुई है" [देखिये पं. श्रीभातखंडेजी कृत हिं. सं. पद्धति पु. १ गुजराती अनुवाद पृष्ठ—२१५]

अष्टछाप्र के आठों संगीताचार्योंने बिहागरा राग में ही पद—गान किया हैं, केवल श्री चत्रभुजदास और श्री छीतस्वामी की रचना में क्वचित ही, 'बिहाग' का उल्लेख प्राप्त होता है [देखिये कांकरौली प्रकाशन 'श्री चत्रभुजदास' तथा 'छीतस्वामी]'.

संगीत के शास्त्र ग्रन्थों में भी विशेषतः बिहागडा का ही नामोल्लेख प्राप्त होते हैं। पं. अहोबलने इस राग का उल्लेख निम्न प्रकार किया है :—

बिहागडे गनी तीव्रावारोहे तु रिवर्जिते।
गान्धारोद्ग्राहसम्पन्ने न्यासांशो निरचरो मतः ॥४४७॥

[सं. पारिजात]

भावार्थ—बिहागडा में गान्धार—निषाद दोनों तीव्र (शुद्ध) होते हैं और आरोही में ऋषभ स्वर वर्जित होता है। अवरोह सम्पूर्ण है, गाधार ग्रह स्वर है तथा निषाद स्वर पर न्यास है और वहीं स्वर अंश है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

'रागलक्षण ग्रन्थ' में बिहागडा का वर्णन इस प्रकार है :—

"मेलाच्चसंभवो धीरशंकराभरणान्चवैं,
बिहागडेति रागश्च सन्यासं सांशकग्रहम् ।
आरोहे रिधवर्ज्यं चाप्यवरोहे समग्रकम् ॥"

भावार्थ-विहागडा राग शंकराभरण थाट से उत्पन्न होता है। षड्ज अंश और न्यास है, आरोह में रि ध वर्ज्य हैं और अवरोह सम्पूर्ण है।

उपर्युक्त उल्लेखों में बिहागड़ा का थाट बिलावल (शंकराभरण) कहा हैं और पाडव-सम्पूर्ण तथा औडव-सम्पूर्ण जाति का उल्लेख प्राप्त होता हैं। प्रचार में षाडव-सम्पूर्ण जाति से यह राग गाया जाता है।

बिहागडा राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। वादी गान्धार और संवादी निषाद स्वर है। चलन बिहाग के समान है, किन्तु इसमें तीव्र मध्यम न होने से तथा कोमल निषाद लगने से एवं आरोह में धैवत का प्रयोग होने से भिन्नता स्पष्ट हो जाती है। आरोह में ऋषभ वर्ज्य तथा अवरोह सम्पूर्ण होने से जाति षाडव—सम्पूर्ण मानी जाती है। आरोह में धैवत दुर्बल रहता है और वक्र रूप से प ध नि प, इस प्रकार लिया जाता है। तीव्र निषाद का प्रयोग आरोह में तथा अवरोह में भी किया जाता है। कोमल निषाद का प्रयोग केवल अवरोह में ही होता है। 'सां नि ध प, नि ध प,' इस प्रकार कोमल निषाद लगने से खमाज का अंग भी आता है, 'सां नि प, गमग' तथा 'पम, ग सा' यह स्वर-समुदाय होने से यह राग स्पष्ट हो जाता है। बिहागड़ा में बिहाग की अपेक्षा मध्यम स्वर का कुछ अधिक महत्त्व होता है, मध्यम को न्यास स्वर भी माना जाता है। गानसमय रात्रिका दूसरा प्रहर प्रचार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

में है, किन्तु पुष्टिमार्गीय सेवाप्रणाली में यह राग शयन के दर्शन-समय तथा प्राय: शयनांतर मान—पौढवे के समय गाता जाता है ।

आरोह—सा, ग, म, प, नि सां । अवरोह—सां, निप, निधप, गमग, रेसानिधप, गमग, पमग, सा.

—

राग बिहागरा—ताल चौताल

प्यारी पग होलें होलें घर, जैसे तेरे नूपुर न बाजहिं ।
जागेगो ब्रजको लोग, नाहिंन सुनायो जोग,
हाँ हाँ री हठीली नेंक, मेरो कह्यो कर ॥१॥
जोलों ब्रजवीथिन माँहि, सघन कुंज—परछांहि,
तोलों मुख ढाँपि चलि, कुंवरि रसिकवर ।
'नंददास'प्रभु प्यारी, छिनहू न होउ न्यारी,
सरद उजियारी तामें जैसे कहूं रर ॥२॥

स्थायी

३		४		×		०		२		०	
ग	म	प	सां	नि	—	प	नि	ध	म	ग	सा
प्या	री	प	ग	हो	—	लें	हो	लें	—	घ	र
म	गम	प	ध	नि	ध	प	ध	ग	म	ग	सा
जे	से—	ते	रे	नू	पु	र	न	बा	—	ज	हिं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	म	गम	प	नि	नि	सां	सां	—	रें	सां	सां
जा	गे	——	गो	—	ब्र	ज	को	—	लो	—	ग
नि	सां	गं	गं	मं	गं	रें	सां	—	नि	—	प
ना	—	हिं	न	—	सु	ना	यो	—	जो	—	ग
ध	नि	ध	प	ग	म	म	प	—	नि	—	सां
हां	—	हां	री	—	ह	ठी	ली	—	ने	—	क
नि	ध	प	ध	ग	म	ग	सा	म	गम	प	सां
मे	रो	—	क	ह्यो	—	क	र	प्या	री—	प	ग

संचारी

×		०		२		०		३		४	
नि	ध	प	—	ग	म	ध	नि	ध	प	—	प
जो	—	लों	—	ब्र	ज	बी	थि	न	मों	—	हिं
प	म	ग	म	प	नि	सां	सां	—	नि	—	प
स	व	न	कुं	—	ज	प	र	—	छों	—	हिं
प	—	ध	नि	ध	प	ग	म	प	म	ग	सा
तो	—	लों	—	सु	ख	ढां	—	पि	च	—	लि
ऩि	सा	—	ग	म	प	म	ग	म	ग	—	सा
कुं	व	—	रि	—	र	सि	क	—	व	—	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग बिहागरा—ताल तीनताल

सुंदर जमुनातीररी, मनमोहन ठाडे ।
जबतें दृष्टि परी या मुख पर, तबतें रहत न धीर री ॥१॥

मृगमद तिलक अलक घुंघरारी, नासामुक्ता कीर री ।
'सूरदास'प्रभु बेनु बजावत, थाक्यो सरितानीररी ॥२॥

स्थायी

×		२		०		३	
सा	—	म	ग	प	प	नि	ध
सुं	—	द	र	ज	मु	ना	—
सां	—	नि	ध	प	—	म	ग
ती	—	—	र	री	—	म	न
गम	प	ग	मं	ग	—	सा	नि
मो—	—	ह	न	ठा	—	डे	—

अन्तरा

×		२		०		३	
प	प	नि	—	सां	—	सां	सां
ज	ब	तें	—	दृ	—	ष्टि	प

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निसां	गं	गं	मं	गं	रें	सां	निसां
री—	—	या	—	मु	ख	प	र—
नि	ध	प	मग	प	प	नि	नि
त	व	तैं	——	र	ह	त	न
सां	—	नि	ध	प	—	म	ग
धी	—	—	र	री	—	म	न

संचारी

×		२		०		३	
ग	म	ग	गम	प	प	म	गम
मृ	ग	म	द—	ति	ल	क	अ
पध	नि	ध	प	प	—	म	ग
ल—	क	घुँ	घ	रा	—	री	—
सा	—	ग	म	पध	नि	धप	म
ना	—	सा	—	मु—	——	क्ता—	—
ग	—	—	रे	सा	—	—	—
की	—	—	र	री	—	—	—

राग विहागडा–ताल धमार

प्रगट ह्वे मारगरीतिं दिखाई ।

परमानंदस्वरूप कृपानिधि, श्रीवल्लभ सुखदाइ ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करि सिंगार गिरिधरनलाल को, जब कर वेनु गहाइ ।
ले दरपन सनमुख ठाडे व्हैं, निरखि निरखि मुसिकाइ ॥२॥
विविध भांत सामग्री हरिको, करि मनुहार लिवाइ ।
जल अचवाय सुगंघसहित मुख, बीरी पान खवाइ ॥३॥
करि आरति अनोसर पट दै, बेठे निज गृह आई ।
भोजन करि विस्राम छिनक ले, निज मंडली बुलाइ ॥४॥
करत कृपा निज दैवी जीवन पर, श्रीमुखबचन सुनाइ ।
वेनुगीत पुनि जुगलगीतकी रस बरखा बरखाइ ॥५॥
सेवारीत प्रीति व्रजजनकी, निजजन हित प्रगटाई ।
'दास' सरन हरि वागधीसकी, चरन रेनुनिधि पाई ॥६॥

स्थायी

×	२	०	३
सां — — सां —	सां —	नि ध —	प — ध —
मा — — र —	ग —	री — —	त — दि —
नि — — सां —	सां —	नि ध प	म — ग —
खा — — ई —	प्र —	ग ट —	व्है — — —
नि ध प ग म	ग —	सा — —	ग — ग म
मा — — र —	ग —	री — —	त — दि —
प — — ग —	म —	ग — —	सा — — —
खो — — — —	— —	ई — —	— — — —

अन्तरा

×	२	०	३
प प — म —	ग म	प — —	नि — नि —
प र — मा —	— —	नं — —	द — स्व —

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	—	—	सां	—	गं	रें	सां	—	—	सां	—	सां	—
रू	—	—	प	—	क्र	—	पा	—	—	नि	—	धि	—
नि	—	—	सां	—	—	—	नि	ध	प	प	—	ध	—
श्री	—	—	व	—	—	—	ल्ल	भ	—	सु	—	ख	—
नि	—	—	सां	—	सां	—	नि	ध	प	म	—	ग	—
दा	—	—	ई	—	ग्र	—	क	ट	—	व्हे	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
प	प	—	प	—	प	—	ध	प	—	ग	—	म	—
क	रि	—	सिं	—	गा	—	—	र	—	गि	—	रि	—
प	प	—	नि	—	नि	—	सां	नि	—	प	—	—	—
ध	र	—	न	—	ला	—	—	ल	—	क्रो	—	—	—
नि	ध	प	म	—	ग	—	प	—	—	ग	—	म	—
ज	व	—	क	—	र	—	वे	—	—	नु	—	ग	—
प	—	—	ग	—	म	—	ग	—	—	सा	—	—	—
हा	—	—	—	—	—	—	ई	—	—	—	—	—	—

आश्रय का पद

राग बिहागरा–ताल धमार

भरोसो दृढ इन चरनन केरो ।

श्रीवल्लभ नखचंद्रछटा बिनु, सब जुग मांझ अंधेरो ॥१॥

साधन ओर नहीं या कलिमें, जासो होइ निवेरो ।

'सूर' कहा कहे द्विविध आंधरो, बिना मोलको चेरो ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×					२		०			३			
सां	सां	—	सां	—	सां	—	नि	नि	—	प	—	ध	—
दृ	ढ	—	इ	—	न	—	च	र	—	न	—	न	—
नि	—	—	सां	—	सां	—	नि̱	ध	—	प	—	—	—
के	—	—	रो	—	भ	—	रो	—	—	सो	—	—	—
ध	नि̱	ध	प	—	म	ग	सा	सा	—	ग	—	म	—
दृ	ढ	—	इ	—	न	—	च	र	—	न	—	न	—
प	—	—	ग	—	म	—	ग	—	—	रे	—	सा	—
के	—	—	—	—	—	—	रो	—	—	—	—	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
प	—	—	सां	—	—	—	सां	सां	—	सां	—	सां	—
श्री	—	—	व	—	—	—	ल्ल	भ	—	न	—	ख	—
सां	—	—	रें	—	सां	—	नि̱	ध	—	सां	—	नि	—
चं	—	—	द्र	—	छ	—	टा	—	—	बि	—	न	—
प	प	—	ग	—	म	—	प	—	—	नि	—	—	सां
स	ब	—	जु	—	ग	—	मां	—	—	झ	—	—	अं
नि̱	ध	—	प	—	सां	—	नि̱	ध	—	प	—	—	—
धे	—	—	रो	—	भ	—	रो	—	—	सो	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×					२		०			३			
प	—	—	प	—	प	—	प	—	—	ग	—	म	—
सा	—	—	ध	—	न	—	ओ	—	—	र	—	न	—
प	—	—	नि	—	—	—	सां	सां	—	नि	—	—	—
हीं	—	—	या	—	—	—	क	लि	—	में	—	—	—
ध	नि	ध	प	—	म	ग	सा	—	—	ग	—	म	—
जा	—	—	सो	—	—	—	हो	—	—	त	—	नि	—
प	—	—	ग	—	म	—	ग	—	—	रे	—	सा	—
वे	—	—	—	—	—	—	रो	—	—	—	—	—	—

'संगीत सुबोधिनी'

संगीत स्वरलिपि, स्वरक्षान तथा संगीत के पारिभाषिक शब्दों की सविस्तार प्रारंभिक माहिती के उपरान्त १५ रागों में लगभग–७० कीर्तनों को स्वरलिपि सहित अंकित किये गये है। जो इस ग्रन्थ में दि गई स्वरलिपियों से अतिरिक्त हैं. पं. भारखंडे तथा विष्णुदिगंबरजी की संस्थाओ के किंसी भी परीक्षा केन्द्र की दो वर्ष तक की परीक्षा के अभ्यास की दृष्टि से हिन्दी में प्रसिद्ध किया गया है। हवेली संगीत तथा परीक्षा दोनोका लाभ प्राप्त होगा।

न्यो. रु. २०/– (सजिल्द)

प्रकाशक : अष्टछाप संगीत कला केन्द्र, ६०, नायकनगर अहमदाबाद–१४

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग वसन्त—संक्षिप्त विवरण

भारतीय संगीत के प्राचीनतम रागों में वसन्त राग का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता हैं। यह राग ऋतुप्रधान है। वसंतऋतु में हर कोई समय गाने की शास्त्राक्षा है। जिस का यथार्थ पालन पुष्टि सम्प्रदाय की सेवाप्रणाली में आज तक हो रहा है। बसन्तपंचमी से लेकर पूर्णिमा तक यह राग मंगला से शयन पर्यन्त की सेवा तक यानि दिनभर इसी राग में कीर्तन गाये जाते हैं। इन सभी पदों को "वसन्त के पद' कहे जाते हैं। इन दिनों में होरी खेल की आरम्भ की सामान्य भावना प्रगट होती है। भगवान श्रीकृष्ण ने गोपीजनों के साथ व्रजमण्डल में चोवा, चन्दन, अगर, कुंकुमा, अबीर, गुलाल, कैसू—कुसुम, पिचका और पिचकाई इत्यादि के रंगविरंगी साधनों के माध्यम से विविध प्रकार की होरीखेल की लीलाओं का गुणगान वसन्त के ४० दिनों तक गाये जाते हैं। मघा शु. १५ के बाद होरी खेल की मात्रा क्रमशः बढती रहती हैं, और धुरेंटी (डोल—यात्रा) तक 'धमार' के पद गाये जाते हैं। ये पद समयानुसार विविध रागों के साथ विविध तालों में गाये जाते हैं, किन्तु अधिकतर 'धमार' ताल में गाये जाने की प्रथा होने के कारण सभी पदों को 'धमार के पद' कहाहे जाता है। पूर्णिमा से पश्चात् वसन्त के पद गौण हो जाते हैं तथापि डोलयात्रा तक यह राग गाया जा सकता है। अष्टछापसंगीतपरम्परा में वसन्त के चार प्रकार माने गये हैं। १. शुद्ध वसन्त २. ललित वसंत ३. हिंडोल वसन्त और ४. पंचम वसन्त। वसन्त के वे चारों प्रकार आज से अर्धशताब्दी पूर्व कितने उत्तम कीर्तनकारों से सुने जाते थे। उस समय के सुने हुए प्रकारों को लक्ष्य में रखकर प्रथम हम 'शुद्ध वसन्त' की चर्चा कर रहे हैं।

संगीतदर्पण :—

वसन्ती स्यात्तु संपूर्णा सत्रया कविता बुधैः।

संगीतसाराम्रत, पृष्ठ (१७—१८) :—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शंकराभरणीयो यो मेलः स्यात्तत्र चारभीं ॥
पूर्णा सांशग्रहन्यासा सांयंगेया शुभप्रदा ।
सपूर्णः सग्रहः सांशी रागांगमिति कथ्यते
इति शुद्ध वसन्तः ॥

राग कपद्रुम :—

वसन्ती स्यात्तु संपूर्ण षड्जांशग्रहन्याससंयुता ।
वसन्तकाले विदुषा प्रगीयते साधुना ॥

चतुर्दण्डप्रकाशिका :

रागः शुद्धो वसन्ताख्यो रागांगो गीयते प्रगे ।
शंकराभरणाख्यातरागमेलसमुद्भवः ॥

उपर्युक्त विधानों से स्पष्ट होता है कि यह शुद्ध वसन्त सम्पूर्ण जाति है और उन का मेल यानि थाट बिलावल (शंकराभरण) है तथा ग्रहन्यासस्वर षड्ज हैं ।

शुद्ध थाटके वसंत के संबंध में स्व. उस्ताद नजीरखां कहेते थे कि * "उन की परंपरा में यह प्राचीन वसंतको 'भरतमत–वसंत" कहलाता है । जो 'शुद्ध वसंत' है । कुछ ग्रंथो के मतानुसार हमारे शुद्ध वसंत में भी आरोह सा ग म ध निसां हैं ओर अवरोह में वक्र रूप से पंचम तथा शुद्ध रिषभ स्वर लिया जाता है । तथापि कवचित कोमल रिषभ का प्रयोग विवादी के नाते से किया जाय तो कोई राग हानी नहीं है ।

शंकराभरण थाटका वसन्त दाक्षिणात्य पद्धति में प्रचलित था । उत्तरीय संगीतपद्धति में अष्टछाप के समय में भी इसी थाटका वसन्त प्रचार में आया । इसी परंपरा अनुसार आज भी यह वसंत का प्रकार

---

० और००का
भारतखण्डे—संगीतशास्त्र (हिन्दी), पृष्ठ-२१०
* संगीत, मई अंक, सन १९५७

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

घुराने कीर्तनकारों से सुना जा सकता है, जो उपर्युक्त स्व. उस्ताद नजीरखां के कथनों से स्पष्ट होता है। ख्यालगायन की उत्पत्ति के पश्चात् इस राग में परिवर्तन होने पर आज प्रचार में कोमल ऋषभ, धैवत एवं दोनों मध्यमोंका पूर्वीथाट का प्रकार ही वसन्त माना जाता है।

अष्टछाप परम्परा में गाये जाने वाले इस शुद्ध वसन्त का थाट बिलावल (शंकराभरण) कहा जायगा। अतः इनमें लगने वाले सभी स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ऋषभ और पंचभ स्वर वर्ज्य हैं अतः उनकी जाति औडव सम्पूर्ण हैं। वसन्त के सभी प्रकारोंमें सप्तक के पूर्वांग में गौण रहने वाले दोनों ऋषभ उत्तरांग में चमक्ते रहते हैं। शुद्ध ऋषभ और पंचम का प्रयोग कुशलतापूर्वक किया जाता हैं। शुद्ध ऋषभ का प्रयोग अधिकतर तार सप्तक में ही होता है, जिससे रागका सौन्दर्य बढता है। तीव्र मध्यमको बचाकर षड्ज मध्यम और धैवत मध्यम की संगति में शुद्ध मध्यम को लेते समय वसन्त का शुद्ध प्रकार स्पष्ट होता है। वसन्त राग के सभी प्रकारों में वादी स्वर मध्यम, संवादी षड्ज (तार सप्त का) प्रचार में भरतमत वसंत, कृष्ण वसन्त, हेमन्त वसन्त, इत्यादि नाम हैं, किन्तु हमारी परम्परामें निम्न नाम प्राप्त होते हैं।

राग वसन्त (थाट शंकराभरण)—संक्षिप्त विवरण

थाट शंकराभरण (बिलावल), जाति औडव-सम्पूर्ण, स्वर सभी शुद्ध। समय वसन्त होरी के दिनों में वसन्तके सभी प्रकार किसी भी प्रहर.
मे। यह राग उत्तरागप्रधान है।

आरोह :— सा, गम, ध नि, सां

अवरोह :—सां, नि, ध, प, म, ग, रेसा

चलन :—सा, सा, म, म, मग, म, ग, मध, निसां, सां, सां, सांनिध, निध, निध, म, ग, मप, मग, म, ग, मग, रे सा, म, प, म, मप, मग, मध, नि, सां, सां, निध, प, मग, प, म, मध, सां, सां, सां, निध, मप, मग, मध, सां, सां, ध, रें, सां, निध, मप,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मग, मध, निसां, मग, मधनिसां, ध, मधनिसां, रें रें, सां, नि, धप, मग, मधनिसां ।

राग बसन्त (ललित अंग)

सम्प्रदाय का यह ललित बसन्तका थाट मारवा कहा जायगा। इस प्रकार नें दोनों मध्यम, रे कोमल तथा पंचम वर्ज्य होता है। पूर्वांग में निरेगम, ममग इस स्वरसमूह से ललितांग स्पष्ट होता है। निषाद का प्रयोग आरोह मे कम प्रमाण में होता है। पंचम वर्ज्य होने से जाति षाडव-षाडव है।

स्वर :—निरेगम, मग, मध, निसां

राग बसन्त (हिंडोल अंग)

सम्प्रदाय के लिखित पद संग्रहों में हिंडोल वसन्तका उल्लेख दिखाई देता है। इस प्रकार में दोनो मध्यम, पंचम वर्ज्य, ऋषभ कोमल, अन्य स्वर शुद्ध, आरोह में ऋषभ वर्ज्य.

जाति :—ओडव-षाडव

स्वर :—सा, सामम, ग, मध, निसा ।

मध, निसां, सां, रेंरेंसां, सां, निध, निसांगं, मंगंरें सां, निधमग, मधनिसां ।

इस राग के चलन में आरोह में ऋषभ वर्ज्य है, जैसे सागमगरेसा और ललित बसन्त में आरोह अवरोह दोनों में कोमल ऋषभ का प्रयोग किया जायगा। शुद्ध मध्यम की अपेक्षा तीव्र मध्यम का प्रयोग अधिक होता है।

राग बसन्त (पंचम अंग)

इस प्रकार में दोनो मध्यम, दोनो ऋषभ सहित सभी शुद्ध स्वरोंका प्रयोग होता है। विवादी स्वर के नाते से क्वचित् ध कोमल का प्रयोग भी हो सकता है। इस राग को कोई कृष्ण वसन्त भी कहते हैं शुद्ध वसंत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

के स्वरो में क्वचित् धनिध इस प्रकार के स्वर लगनेसे उसको कोई बसन्त बहार कहने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु यह हमारी समझ में नहीं आता। कोमल निषाद का प्रयोग विवादी स्वरके नाते से होता हो तो कोई हरकत नहीं है। सम्प्रदाय की दृष्टि से इस प्रकार को पंचम बसन्त कहना सुसंगत होगा।

राग ललित बसन्त–ताल तीव्रा

श्रीवल्लभ प्रभु करुनासागर, जगत—उजागर गाइये।
निरखि निरखि मंगल मुखकी छबि, बलि बलि बलि बलि जाइये ॥१॥
जिनकी कृपा-अनुग्रहतें श्रीगिरिधरलाल लडाइये।
अनायास सब सुखकों लहिये, जीवनको फल पाइए ॥२॥
चरन-परस तन रूप दरस, सबही दुख दूरि बहाइये।
श्रीवल्लभगुन गाइये यातें 'रसिक' कहाइये ॥३॥

स्थायी

×			२		३		×			२		३	
सा	म	—	म	म	म	म	मं	म	ग	मं	ध	सां	सां
श्री	व	—	ल्ल	भ	प्र	भु	क	रु	ना	सा	—	ग	र
रेंरें	सां	सां	नि	—	ध	ध	मध	नि	ध	मं	ग	रे	सा
जग	त	उ	जा	—	ग	र	गा—	—	इ	ये	—	—	—

अन्तरा

×			२		३		×			२		३	
धध	म	ध	सां	सां	सां	—	निरें	गं	मं	गं	रें	सां	सां
निर	खि	नि	र	खि	मं	—	गल	मु	ख	की	—	छ	बि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रेंसां	नि	ध	नि	धम	म	मं	म	ग	मं	ध	सा	–
चलि	व	लि	व	लिव	लि	जा	–	इ	ये	–	–	–

संचारी

×			२		३		×			२		३	
नि̣	रे	ग	म	म	–	म	मं	ग	म	मं	ध	सां	–
जि	न	की	कृ	पा	–	अ	नु	ग्र	ह	तें	–	श्री	–
रेंसां	नि	ध	मं	धसां	सां	नि	ध	मं	म	ग	रे	सा
गिरि	ध	र	ला	–	ल	ल	डा	–	इ	ये	–	–	–

राग बसंत (ललित अंग)—ताल त्रिताल (मात्रा १६)

खेलत बसंत निस पिय संग जागी ।
सखीवृंद गोकुलकी सींवा, गिरिवरधरपदरज—अनुरागी ॥१॥
नवल निकुंजमें गुंजत मधुप पिक, बिबिध सुगंध-छींट तन लागी ।
'कृष्णदास' स्वामिनी जुवतिजूथचूडामनि रिझवत प्रानपति राधा
बडभागी ॥२॥

स्थायी

०		३		×		२		०		३		×		२	
मं	धसां	सां	रें	सां	सां	सां	नि	ध	मं	मग	मं		ध	नि	सा
खे	ल	त	ब	सं	त	नि	स	पि	य	सं	ग	–	जा	–	गी	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

०	३	×	२	०	३	×	२	
ध	माध	निसां	सांसां	—रें	रेंसां	—नि	—ध	—
स	खी-	वृं-	दगो	—कु	लकी	—सीं	—वा	—
नि	रेंगं	मंमं	गंरें	सांसां	सांनि	धमध निसां	निध	मग
गिं	रिव	रध	रप	दर	जअ	नुरा- --	गी-	--

संचारी

०	३	×	२	०	३	×	२	
ग	रेंसा	निसाम	—म	ममं	मग	गमं	धनि	सां
न	वल	नि-कुं	—ज	मेंगुं	जत	मधु	पपि	क
सां	रेंसां	सांनि	धनिध	धम	मम	गमं	धसां	—
बि	बिध	सुगं	—ध	छीं—	टत	नला	—गी	—

राग बसंत (शुद्ध थाट)—ताल चौताल

लाल ललित ललितादिक संग लिये विहरतरी, बरबसंत ऋतुकला सुजान।
फूलनकी कर गेंदुक लिये पटकत पट उरज छिये, हसत लसत हिलिमिलि सब सकल गुणनिधान ॥१॥

खेलत अतिरस जो रह्यो रसना नहीं जान कह्यो,
निरखि परखि थकित भये सघन गगम जान।
"छीतस्वामी" गिरिवरधर, (श्री)विठ्ठलपदपद्मरेणु,
वर प्रताप महिमातें कियो कीरतिगान ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	—	सां	सां	सां	सां	रेंसां	नि	सां	नि	ध	ध
ला	—	ल	ल	लि	त	ल—	लि	ता	—	दि	क
ध	धनि	ध	प	म	ग	म	ध	नि	सां	नि	ध
सं	—	ग	लि	ये	—	बि	ह	र	त	री	—
म	म	म	म	—	ग	म	ध	नि	सां	—	—
ब	र	ब	सं	—	त	रि	तु	क	ला	—	—
गं	रें	रें	सां	—	सां	नि	ध	ध	प	म	ध
सुं	—	द	र	—	सु	जा	—	न	री	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
गं	गं	गं	गं	रें	रें	सां	सां	सां	सां	सां	—
फू	ल	न	की	क	र	गें	दु	क	लि	ये	—
सां	सां	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रें	सां	सां	—
प	ट	क	त	प	ट	उ	र	ज	छि	ये	—
सां	सां	नि	ध	म	ग	म	ध	प	ध	ध	ध
ह	स	त	ल	स	त	हि	ल	मि	लि	स	ब
रें	रें	रें	सां	सां	सां	नि	ध	ध	प	म	ध
स	क	ल	गु	न	नि	धा	—	न	री	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		०		२		०		३		४	
सां	—	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां	नि	ध	—
खे	—	ल	त	अ	ति	रं	ग	जु	र	हा	—
प	प	म	—	ग	ग	म	गम	ध	ध	ध	—
र	स	ना	—	न	हि	जा	—	त	क	हो	—
ध	नि	ध	प	म	ग	म	ध	प	ध	ध	—
नि	र	ख	ह	र	ख	थ	कि	त	भ	ये	—
ध	नि	ध	प	म	ग	म	ग	रें	सा	ग	म
स	ध	न	ग	ग	न	जा	—	न	री	—	—

राग—बसंत (शुद्ध थाट) ताल—धमार

गिरिधरलालकी बानिक उपर, आज सखी तृन टूटें री ।
चोचा चंदन अगर कुँमकुमा, पिचकाईन रंग छूटें री ॥१॥
लालके नैना रगमगे देखियत, अंग अनंगन लूटें री ।
'कृष्णदास' धनिधन्य राधका, अधरसुधा रस घूटें री ॥२॥

स्थायी

×					२		०			३			
ग	म	—	म	—	म	—	म	—	—	म	—	ग	—
गि	रि	—	ध	—	र	—	ला	—	—	ल	—	का	—
म	प	—	म	—	ग	—	म	ध	—	ध	—	ध	—
बा	—	—	नि	—	क	—	उ	—	—	प	—	र	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	ध	—	नि	—	सां	—	सां	—	—	नि	—	ध	—
आ	—	—	ज	—	स	—	खी	—	—	त	—	न	—
म	ध	—	नि	—	रें	—	सां	—	—	ध	—	प	—
तू	—	—	टे	—	—	—	री	—	—	—	—	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
ध	—	—	म	—	ध	—	सां	—	—	सां	—	सां	—
चो	—	—	वा	—	—	—	चं	—	—	द	—	न	—
सां	सां	—	सां	—	सां	—	नि	रें	—	सां	—	—	—
अ	ग	—	र	—	कु	—	म	कु	—	मा	—	—	—
नि	नि	—	ध	—	प	—	म	ग	—	म	—	ध	रें
पि	च	—	का	—	—	—	इ	न	—	रं	—	ग	—
सां	—	—	ध	—	म	—	ध	नि	—	सां	—	—	—
छू	—	—	टे	—	—	—	री	—	—	—	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
म	—	—	म	—	म	—	म	—	—	म	—	ग	—
ला	—	—	ल	—	के	—	नै	—	—	ना	—	—	—
म	प	—	म	—	ग	—	म	ध	—	ध	—	ध	—
र	ग	—	म	—	गे	—	दे	खि	—	य	—	त	—
म	ध	—	नि	—	सां	—	सां	—	—	नि	—	ध	—
अं	—	—	ग	—	अ	—	नं	—	—	ग	—	न	—
म	ध	—	नि	—	ध	—	प	—	—	म	—	—	—
लूं	—	—	टे	—	—	—	री	—	—	—	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आभोग

×					२		०			३			
गं	—	—	गं	—	गं	—	—	गं	—	रें	—	रें	—
कृ	—	—	ष्ण	—	दा	—	—	स	—	ध	—	न्य	—
सां	—	—	सां	—	सां	—	—	सां	—	नि	—	—	—
ध	—	—	न्य	—	रा	—	—	धि	—	का	—	—	—
ध	नि	—	ध	—	ध	—	म	ध	—	नि	—	सां	रें
अ	ध	—	र	—	सु	—	धा	—	—	र	—	स	—
सां	—	—	ध	—	म	—	ध	नि	—	सां	—	—	—
लू	—	—	टे	—	—	—	री	—	—	—	—	—	—

राग-बसंत, (शुद्ध थाट) ताल-धमार

खेलत वसंत गिरिधरनलाल ।
जहां लाग्यो अबीर गुलाल भाल ॥१॥

केसरि छिरकत नवलवाल ।
लपटावत चोवा अति रसाल ॥२॥

रही पाग ढरकि अर्ध भाल ।
देखत मनमथ अति भयो विहाल ॥३॥

चंदन लाग्यो दुहुं गाल ।
तब मुरली धर रिझवत गोपाल ॥४॥

श्रीगोवर्धनधर रसिकराइ ।
"चतुर्भुजदास बालिहारी जाइ ॥५॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

३   ×   २   ०

म — ग — | म ध — नि — | सां — | — सां —
खे — — — | ल त — ब — | सं — | — त —

नि — ध — | प प — म — | म — | — म —
गि — रि — | ध र — न — | ला — | — ल —

अन्तरा

३   ×   २   ०

सां — सां — | सां रें — रें — | — — | गं रें —
ज — हां — | ला — — ग्यो — | — — | अ बी —

सां — नि — | ध प — ध — | सां — | — सां —
श — गु — | ला — — ल — | भा — | — ल —

संचारी

×   २   ०   ३

ध — — नि — | सां — | सां सां — | नि — ध —
के — — स — | रि — | छि र — | क — त —

प प — म — | म — | — म — | ध — ध —
न व — ल — | बा — | — ल — | ल — प —

आभोग

×   २   ०   ३

सां — — रें — | रें — | सां — — | सां — — —
टा — — व — | त — | चो — — | वा — — —

नि ध — नि — | सां — | — सां — | म — ग —
अ ति — र — | सा — | — ल — | खे — — —

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग बसन्त (शुद्ध थाट)—ताल सूलताल

बसन्त रितु आई आयो पिया घर, फूले बन उपवम हों फूली सब तन ।
विरहविथा गई पतझर भई नई, उनई कोंपल आनंदित घन ॥१॥
मत्त मधुपगन गुंजत कूजत कोकिल धुनि, अलाप गावत सब ब्रजजन ।
"हरिबल्लभ" प्रभुकी बलि बलि जैये, केसेक रिझैये इनहीको मन ॥२॥

स्थायी

×		०		२		३		०	
सां	सां	—	सां	नि	ध	नि	ध	प	—
ब	सं	—	त	रि	तु	आ	—	ई	—
प	—	म	ग	ग	—	ध	ध	—	—
आ	—	यो	पि	या	—	घ	र	—	—
नि	ध	प	—	म	ग	म	ध	ध	ध
फू	—	ले	—	ब	न	उ	प	व	न
सां	—	रें	—	सां	—	नि	ध	प	म
हों	—	फू	—	ली	—	स	ब	त	न

अन्तरा

×		०		२		३		०	
ध	ध	म	ध	सां	—	सां	सां	—	—
वि	र	ह	वि	था	—	ग	ई	—	—
गं	गं	गं	गं	गं	रें	सां	सां	—	—
प	त	झ	र	भ	ई	न	ई	—	—
रें	रें	सां	—	नि	—	ध	—	ध	—
उ	न	ई	—	कों	—	प	—	ल	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	–	म	–	ग	ग	म	–	ध	–
आ	–	नं	–	दि	त	घ	–	न	–

संचारी

×		०		२		३		०	
सां	–	सां	सां	नि	ध	प	–	म	–
म	–	त्त	म	धु	प	ग	–	न	–
प	–	ग	ग	म	–	ध	ध	–	–
शुं	–	ज	त	कू	–	ज	त	–	–
नि	ध	सां	सां	सां	सां	सां	नि	ध	ध
को	–	कि	ल	धू	नि	अ	ला	–	प
नि	ध	म	म	ग	ग	म	ध	ध	ध
गा	–	व	त	स	व	व्र	ज	ज	न

राग वसन्त (हिंडोल वसंत)—ताल धमार

हरिरिह व्रजयुवतीशतसङ्गे ।

विलसति करिणीगणावृतवारणवर इव रतिपतिमानभङ्गे ॥ध्रुव॥ × × × × ×

"आगे प्रथमखण्ड, पृष्ठ १०९ पर देखिये।"

स्थायी

×					२		०			३			
सां	सां	–	सां	–	सां	–	नि	ध	–	नि	–	सां	–
व्र	ज	–	यु	–	व	–	ती	–	–	श	–	त	–
नि	ध	–	म॑	–	ग	–	म॑	ध	–	निं	–	सां	–
स	–	–	ङ्गे	–	–	–	ह	रि	–	रि	–	ह	–
नि	रें	–	सां	–	सां	–	सां	–	–	नि	–	ध	–
व्र	ज	–	यु	–	व	–	ती	–	–	श	–	त	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म॑	ध	—	म॑	—	ग	—	म॑	ग	—	रे॒	—	सा	—
स	—	—	—	—	—	—	ङ्ग	—	—	—	—	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
म॑	ध	—	नि	—	सां	—	सां	सां	—	सां	—	—	सां
वि	ल	—	स	—	ति	—	क	रि	—	णी	—	—	ग
रें॒	—	—	रें॒	—	रें॒	—	गं	रें॒	—	सां	—	सां	—
णा	—	—	वृ	—	त	—	वा	—	—	र	—	ण	—
नि	सां	—	नि	ध	म॑	ग	म॑	ध	—	नि	रें	सां	—
व	र	—	इ	व	र	ति	प	ति	—	मा	—	न	—
नि	ध	—	म॑	—	ग	—	म॑	ध	—	नि	—	सा	—
भ	—	—	ङ्ग	—	—	—	ह	रि	—	रि	—	ह	—

संचारी

×					२		०			३			
सा	—	—	सा	—	म	—	म	—	—	म	—	म	—
त्रि	—	—	भ्र	—	म	—	सं	—	—	भ्र	—	म	—
म॑	म	—	ग	—	ग	—	म॑	ध	—	नि	—	सां	—
लो	—	—	ल	—	वि	—	लो	—	—	च	—	न	—
रे॒	—	—	सां	—	सां	—	सां	—	—	नि	—	ध	—
धू	—	—	चि	—	त	—	सं	—	—	चि	—	त	—
म॑	—	—	ग	—	म॑	—	ग	—	—	रे॒	—	सा	—
सा	—	—	—	—	—	—	वं	—	—	—	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग वसन्त (पंचम अंग)–ताल चचैंरी (झपताल अंग)

ऋतु वसंत तरु लसंत मन हसंत कामिनी भामिनी सब अंगअंग रमत फागरी।
चर्चरी अति विकट ताल लागत संगीत रसाल उरप तिरप लास्य तांडव लेत लागरी॥१॥
बंदन बूका गुलाल छिरकत नेन भाल लाल गाल मृगज लेप अधर दागरी।
गिरिवरधर रसिकराय मेचक मुदरी लगाय कंचुकी पर छाप दीनी चकित नागरी॥२॥
बाजत रसना मंजीर कूजत पिक मोर कीर पवन धीर जमुनातीर महल बागरी।
"विष्णुदास" प्रभु प्यारी भेटत हंसि देत तारी कामकला निपट निपुन प्रेम आगरी॥३॥

स्थायी

×		२			०		३		
सां	सां	सां	सां	नि	रें	सां	सां	नि	ध
रि	तु	ब	सं	त	त	रु	ल	सं	त
नि	ध	ध	प	पम	गम	ध	ध	ध	–
म	न	ह	सं	त–	का–	–	मि	नी	–
म	म	म	म	ग	मं	ध	नि	सां	सां
भा	मि	नी	स	ब	अं	ग	अं	–	ग
गं	गं	गं	रें	सां	नि	ध	नि	मं	ध
र	म	त	–	–	फा	–	ग	री	–

अन्तरा

×		२			०		३		
ध	धध	मं	ध	नि	सां	सां	सां	–	सां
च	चंरी	अ	ति	बि	क	ट	ता	–	ल
गं	गं	गं	रें	रें	सां	सां	सां	–	सां
गा	व	त	सं	गी	त	र	सा	–	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सांरें	सां	सां	नि	धप	म	मग	मं	ध	ध
उऽ	प	ति	र	प-	ला	स्य-	तां	ड	व
रें	सां	सां	—	—	नि	ध	नि	मं	ध
ले	—	त	—	—	ला	—	ग	री	—

संचारी

×		२			०		३		
सां	सां	सां	—	सां	ध	प	म	—	म
चं	द	न	—	बू	का	गु	ला	—	ल
प	म	म	म	मग	मं	ध	सां	—	सां
छि	र	क	त	तकि	ने	न	भा	—	ल
रें	रें	सां	सां	सां	नि	नि	नि	ध	ध
ला	ल	गा	ल	मृ	ग	ज	ले	—	प
प	म	म	ग	ग	मं	ध	नि	ध	—
अ	—	ध	—	र	दा	—	ग	री	—

राग वसंत (पंचम अंग)—ताल धमार

जसोदा नहि बरजे अपनो बाल ।
अपनो बाल रसिया गोपाल ॥ध्रुव॥ स्नान करन गई जमुनातीर ।
कर कंकन आभरन धरे चीर । मेरी जलप्रवाह तन गई दीठ ।
पाछेतें कान्ह मेरी मलत पीठ ॥१॥ यह अन्न न खाय मुख पीवे न खीर ।
यह केतिक बार गयो जमुनातीर । हों बारी री ग्वालिन तेरो ज्ञान ।
यह पलना झूलै मेरो बारो कान्ह ॥२॥ वृंदावन देखे में तरून कान ।
घर आइके कैसे होत सयान । उठि लीरी ग्वालि जिय उपजी लाज ।
'सूरदास' ये प्रभुके काज ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

										म॑	—	ग	—
										ज	—	सो	—
×					२		०			३			
म॑	ध	—	नि	—	सां	—	रें	सां	—	नि	—	ध	—
द्वा	—	—	न	—	हिं	—	ब	र	—	जे	—	—	—
प	प	—	म	—	ग	—	म	ध	—	म॑	—	ग	—
अ	प	—	नो	—	बा	—	—	ल	—	ज	—	सो	—

अन्तरा

×					२		०			३			
सां	सां	—	रे	—	सां	—	—	सां	—	नि	—	ध	—
अ	प	—	नो	—	बा	—	—	ल	—	र	—	सि	—
म॑	ध	—	नि	—	सां	—	रें	सां	—	म॑	—	ग	—
या	—	—	गो	—	पा	—	—	ल	—	ज	—	सो	—

संचारी

×					२		०			३			
म	—	—	म	—	म	—	म	म	—	प	—	म	—
स्ना	—	—	न	—	क	—	र	न	—	ग	—	ई	—
ग	ग	—	म॑	—	ध	—	—	ध	—	म	—	ग	ख
ज	मु	—	ना	—	ती	—	—	र	—	क	—	र	अ
म॑	ध	—	नि	—	सां	—	सां	सां	—	नि	—	ध	—
कं	—	—	क	—	न	—	आ	भ	—	र	—	न	—
प	म	—	ग	—	म	—	ध	ध	—	सां	—	नि	—
ध	रे	—	—	—	ची	—	—	र	—	मे	—	री	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आभोग

×					२		०			३			
सां	रें	—	गं	—	गं	—	मं	गं	—	रें	—	सां	—
ज	ल	—	प्र	—	वा	—	—	ह	—	त	—	न	—
नि	ध	—	मं	—	ध	—	सां	सां	—	ध	—	प	—
ग	ई	—	—	—	दी	—	—	ठ	—	पा	—	—	—
प	ध	—	रें	—	सां	—	—	सां	—	नि	—	ध	—
छें	—	—	तें	—	का	—	—	न्ह	—	मे	—	री	—
प	ध	—	ग	—	मं	—	ध	ध	—	मं	—	ग	—
म	ल	—	त	—	पी	—	—	ठ	—	ज	—	सो	—

राग वसन्त (पंचम अंग) ताल—तीव्रा

खेल्त खेलत पोढी राधा, नवल लाल गिरिधर पिय संग ।
चोवा चंदन ओर अरगजा, झारत फिरत सकल सब अंग ॥१॥

बाजत ताल मृदंग अघोटी, वीना मुरली तानतरंग ।
'कृष्णदास' प्रभुकी छबि निरखत, मोहत कोटि अनंग ॥२॥

स्थायी

×	२	३	४			×	२		३		४	
सा	म	म	म	गम	म	प	म	ग	मं	ध	सां	—
खे	ल	त	खे	—ल	त	पों	ढी	—	रा	—	धा	—
सांरें	सां	सां	—	सांनि	ध	मंध	नि	ध	प	—	—	म
नव	ल	ला	—	लगि	रि	धर	पि	य	सं	—	—	ग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×	२		३		४		×	२		३		४	
ध	मं	ध	सां	—	सां	सां	गं	रें	रें	सां	सां	नि	ध
चो	वा	—	चं	—	द	न	ओ	र	अ	र	ग	जा	—
नि	ध	ध	मं	धनि	सां		रेंसां	नि	ध	मं	ध	सां	सां
झा	र	त	फि	रत	स		कल	स	ब	अं	—	—	ग

संचारी

×	२		३		४		×	२		३		४	
सा	सा	म	म	—	म	म	प	म	ग	मं	ध	सां	—
वा	ज	त	ता	—	ल	मृ	दं	ग	अ	धो	—	टी	—
रें	सां	—	नि	ध	म	—	ग	ग	मं	ग	रे	सा	—
बी	ना	—	मु	र	ली	—	ता	न	त	रं	—	ग	—

आश्रयका पद, राग वसन्त—ताल त्रिताल

हमारे श्रीविठ्ठलनाथ धनी ।
भवसागरतें तारि महाप्रभु, राखो सरन अपनी ॥१॥
जाको नाम रटत निसिबासर सेस सहस्र फनी ।
"छीतस्वामी" गिरिधरन श्रीविठ्ठल त्रिभुवन मुकुटमनी ॥२॥

स्थायी

×				२				०				३			
सा	—	म	म	म	—	म	म	मं	म	ग	ग	मं	ध	सां	सां
वि	—	ठ	ल	ना	—	थ	ध	नि	—	—	ह	मा	—	रे	श्री
—	रें	सां	सां	नि	—	ध	ध	मं	—	ग	—	मं	ग	रे	सा
—	वि	ठ	ल	ना	—	थ	ध	नी	—	—	—	—	—	—	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्तरा

×	२	०	३
ध ध म॑ ध	सां सां सां —	रें — सां सां	नि — ध ध
भ व सा —	ग र तें —	ता — रि म	हा — प्र भु
प — म ग	म॑ ध नि सां	रेंनिं ध प ग	म॑ ध सां सां
रा — खो स	र न अ प	नि — — ह	मा — रे श्री

संचारी

×	२	०	३
म — म —	म — म म	प म ग ग	म॑ ध नि सां
जा — को —	ना — म र	ट त नि सि	बा — स र
रें — सां सां	नि — ध ध	म॑ — ग —	म॑ ग रे सा
से — स स	ह — सा फ	नी — — —	— — — —

आभोग

×	२	०	३
ध ध म॑ ध	सां — सां सां	सां गं गं मं	गं रें सां सां
छी त स्वा —	मी — गि रि	ध र न श्री	वि — ठ ल
रें सा नि ध	म॑ ध नि सां	नि ध प ग	म॑ ध सां सां
त्रि भु व न	मु कु ट म	नी — — ह	मा — रे श्री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिशिष्ट-१

इस ग्रन्थ में आई हुई तालों की मात्रा व बोल

आजकल वहुत से लोग कोई भी पद इच्छानुसार ताल में गाते हुए सुनाई पडता है, किन्तु ध्यान रखना चाहिये कि अष्टछापीय परम्परा की गायकी द्रुपद-अंग की है अतः आजकल ख्याल-गायकी के त्रिताल, आडाचौताल, रूपक, दीपचन्दी, दादरा, एकताल, जूमरा, झपताल, सूलताल इत्यादि तालों का प्रयोग करना प्राचीन परम्परा से विसंगत दिखाइ देता है, क्योंकि इन सब तालों का प्रयोग ख्याल की उत्पत्ति के वाद प्रचार में आने लगे, जो अधिकतर तवलों में बजाये जाते हैं, किन्तु द्रुपद-गायकी में पखावज का ही प्रयोग किया जाता है। असल में एकताल का आधार चौतालसे, झपताल का चर्चरी से, सूलताल का मठताल से, रुपक का तीव्रा से, आडाचौताल का प्राचीन ध्रुव-तालसे, (द्रुत आडाचौताल जिसको अर्ध आडा-चौताल कहते हैं वह प्राचीन चम्पकताल है, जो हमारे यहाँ आडा-चौताल की अपेक्षा अधिक प्रचार में है.) दीपचन्दी और झूमरे का आधार धमार से तथा दादरे का प्राचीन रुपक ताल से और त्रिताल का प्राचीन त्रिपुट तथा पटताल एवं आदिताल के आधार पर रचना वनी हुई मानी जाती है, जो आठ मात्रा के ताल हैं, किन्तु ख्याल उत्पत्ति के बाद इसको विलम्बित करके १६ मात्रा का ताल त्रिताल प्रचार में आने लगा।

पुष्टिसम्प्रदाय के कीर्तनगानके उपयोगी तालोंकी मात्रा व बोल एवं इस ग्रन्थमें आने वाले तालों की मात्रा व बोल.

(१) प्राचीन ताल रूपक-मात्रा ६

१	२		३	४	५	६
धा	तिट	|	धा	दिं	ता	किट
×		|	२			

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(२) प्राचीन चम्पक ताल–मात्रा ७

१	२	३	४	५	६	७
धा	किट	तक	धुम	किट	धदि	गन
धात	धिन	नक	किट	तक	गदि	गन
×	२		३		४	

(३) तीव्रा (प्रचलित) ताल मात्रा ७*

१	२	३	४	५	६	७
धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन

(४) प्राचीन त्रिपुट (त्रिपट)–मात्रा ८

१	२	३	४	५	६	७	८
धा	तिट	ता	किट	तिट	कत	गदि	गन
×				२		३	

(५) प्राचीन पट ताल–मात्रा ८

१	२	३	४	५	६	७	८
धा	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
×	२	३		४	५	६	

(६) प्राचीन जत–ताल (आधुनिक त्रिताल)–मात्रा ८

१	२	३	४	५	६	७	८
धा	धीं	धागे	धीं	तक	तीं	धागे	धीं
×		२		०		३	

* प्राचीत तिस्र जाति त्रिपुट का यह एक प्रकार है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(७) प्राचीन मठताल–मात्रा १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धा	किट	तक	धुम	किट	धा	किट	तक	गदि	गन
×				२		३			

(८) ताल सूलताल–मात्रा १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	तिट	कत	गदि	गन
×			०	२		३		०	

(९) ताल चर्चरी (प्राचीन अंग)–मात्रा १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धा	गे	किट	धा	किट	ता	किट	धा	गदि	गनं
×			२		०		३		

(१०) ताल–चर्चरी (झपताल अंग)–मात्रा १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धा	–	धा	गे	कि	ट	किट	धा	कि	ट
×		२			०		३		

(११) प्राचीन अठताल (आधुनिक चौताल)–मात्रा १२

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
प्रा.	धा	कि	ट	धा	किट	धा	दिं	ता	किट	तक	गदि	गनं
चौ.	धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	किट	तक	गदि	गनं
	×				२				३		४	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(१२) प्राचीन ध्रुव ताल (आधुनिक आडा चौताल)–मात्रा १४

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	धा	किट	द्धा	गे	दिं	ता	क	द्धा	दिं	ता	किट	तक	गदि	गन
प्र० २	धा	आग	धा	गे	दिं	ता	तिट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
	×		२				३				४			

(१३) ताल प्राचीन धमार (प्राचीन जत ताल)–मात्रा १४

१	२	३	४	५	६	७	९	९	१०	११	१२	१३	१४
धा	–	–	धी	ट	धा	–	ग	दि	न्त	ति	स	ता	–
×			२				०			३			

(१४) ताल धमार–मात्रा १४

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क	धि	ट	धि	ट	धा	–	ग	ति	ट	ति	ट	ता	–
×					२		०			३			

(१५) ताल मत्त ताल–मात्रा १८ ×

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१८	१८
धा	–	धि	ड	न	क	धि	ड	न	क	ति	ट	क	त	ग	दि	ग	न
×		०		२		३		०		४		५		६		०	

* प्राचीन जत ताल का एक प्रकार

× यह प्राचीन खट ताल का परिवर्तनशील

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिशिष्ट–२

अष्टछापीय परम्परा की प्राचीन रागमालाएँ

नन्ददासकृत रागमालाएँ।

१. 'सारंग'नेनी री काहेको कियो हे एसो मान।

'नंददास' 'केदारो' करिके, योंही विहाइ गयो मान ॥३॥

देखिये ग्रन्थ–१, खण्ड–१, पृष्ठ–१८३।

२. मानिनी मान मेरो कह्यो काहेको रुसानी प्यारे 'स्याम' संग। सूधे क्यों न चित येरी मोतन 'हमीर' 'गौरी' 'कान्ह र'ह्यो तोसों संग ॥१॥ तू जिन 'नट'री नागरसों ए 'बडहंसि', तेरो 'आडनि' पट तजि दीजे मेरी आली। 'नायकी' क्यों न होत 'काफी'के वचन सुनि, 'ललित' हिये गहि रहो बनमाली ॥२॥ एरी 'धनवंती' 'आसा' रहे तेरी 'पूरिये' मनोरथ पिय मन। कहे 'नंददास' तो 'सुहा'ग 'देवगान' करत वो 'बिहाग' रात उठि अंकमाल बनठन ॥३॥

३. 'ए मन' मान मेरो कह्यो काहेको रुसानी प्यारे 'स्याम'सों सुधो क्यों न चितेरी। मोतन 'जेजेहुती' सौंति तेरी तिनहुकी जीत होति, 'सुघराइ' क्यों न करत 'बडहँसि' होति तेरी ॥१॥ करि विचार 'नायका' तू क्यों 'नट' जिन 'आडन' पर दिजेरी मेरी आली। 'काफी'के बंचन सुनत 'ललित' कहे रस लैये, केसे के रिझैये उनको मन ॥२॥ अरी धन्य व्हे जू 'आसावरि' रहिये तेरी उन आगे केसे भरोंरी दिन। 'नंददास' 'देसाख' कहत बचन सुन 'कान्हर' आय पायन परे कइ आभरन उठि मिल अंक मालवन ॥३॥

४. 'ए मन' मान मेरो कह्यो काहेको रिसानी प्यारी तू। ××× ××× 'द्वारकेश' प्रभु 'वसंत' खिलावत याही ते बढत 'सुहा'ग ॥ २ ॥

देखिये ग्रन्थ–१, खण्ड–१, पृष्ठ–२१०।

५. तृतीय गृह की प्रणालिकानुसार निम्न रागमाला सन्वतपंचमी के दिन शृंगारसमय गाई जाती है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भोर भयो जागे जाम लाल हो अब 'रामकली' उदे भयो भान । गुन की कली गुन पूरन प्यारी कहा अब होत 'देवगान' ॥२॥ भयो 'बिभास' आभास सब देखियत वलि बलि जाऊं तू सुनि लेरी कान। 'आसा' न करि तू अपुने प्रीतमकी 'सोरठ' समझि ले मन ही मन आन ॥२॥ 'सारंग' नाम जाको ताके पास जाय आली सो 'नट' भयो कहा करे अभिमान। चितवति चित 'पूरव' मुख बेठी 'मधुमाध' मद भयो तोकूं आन ॥३॥ ये क्रोध भयो 'गोरी' कौन गुनन ते 'एमन' कहा करों कहा कहूं आन। 'केदारु'न दुख मिट गयो 'कान्हर' तेरो जीवनप्रान ॥४॥ रेन विहाय गई प्यारी पिय पास गई मदनमोहन पिय अति ही सुजान। चलत 'हिंडोल' अंकमाल सोभा बनठन 'हरिदास'के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी 'ललित' चरन चित्त धरूं ध्यान ॥५॥

६. 'कानरो' 'कल्यान' गान 'केदारो' 'हिंडोल' तान 'टोडी' 'गोरी' 'मारु' बाजतरी 'धनासुरी'। 'सारंग' 'देवगंधार', 'गूर्जरी' 'मेघमल्हार', 'जंगला' 'बिभास'हुकी थोरी थोरी आंसुरी ॥२॥ 'सोरठ' सोहे अलाप, 'भेरो' पडे प्रभात नीके गावे 'नट'–नाट स्यामाजुकी आंसुरी। थकित रहे खग मृग चुगत नहिं तृन एसी छबि मोहन बजाई बांसुरी ॥२॥

७. 'श्री' राग करत ब्रजसुंदरी 'गोरी' 'ईमन'सों प्यारी तू 'सारंग'– नेनी धाई मोहन के परि पांई। तोहे 'कल्यान' हरि-मिल माधोसों जाई ॥१॥ प्यारी दे 'कानर' हृदयसूं कर जुध 'केदारे'की कोन गति। 'आसा' करत जलनिधिसुतासूं, उन जिय 'वसंत' ॥१॥ 'मारु'त त्रिविध तरनितनयातट , 'ललित' लता कुसुम रचित अभिराम कली। सिज्या रुचीरी 'मेघ' चातक जेसे चितवत तोहे त्रिया 'भोपालि'। 'देसांग' वांत तेरीं 'भैरव'की अब बेर निकट भई 'धनासरी' लघु पीतांबर कहै भजन 'नट' ॥३॥

८. मल्हार की रागमाला हिंडोरा कें भावकी

झुलत स्यामा प्यारी झुलवत आप बिहारी रमकि–रमकि झोटा देत हैं माई। रतनजडित खंभ दोऊ डांडी चार अति सुहाई, गावत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

'मल्हार' राग तान सुनाई ॥१॥ बरखि जलधार घननन गरजन करे दामिनी दमकि 'मारु'त जों धावे। देखिकें प्यारी तब दामिनिकी दमकि डरपि घनस्यामकों उरही लावे ॥२॥ मधुरे सुरसों रटत पपैया अरु दादुर झनकार। सारस हंस कोकिला कूजत, मधुप करत गुंजार ॥३॥ 'मालव' राग अलापत भामिनि, स्रवनन झलकत भाल। कबहुक उतरि स्यामा प्यारी, झुलवति मदनगोपाल ॥४॥ झूलनकों आई व्रजवनिता, बोलत बचन रसाल। झोटा देत सखी ललितादिक, 'काफी'सुर गावत बाल ॥५॥ तेसीय रितु पावस मन भावन पहरि कसूंभी चीर। 'कल्यान'के प्रभु गिरिधर संग इहि विधि क्रीडत जमुनातीर ॥६॥

९. *संग त्रियन बनमें खेलत रविजातट मुरलीधर मध्य रास नृत्यकला गुननिधान। सप्त सुरन तीन ग्राम गाय बजाय लिये आरोहि अवरोहि धुरन मुरन सम प्रमान ॥२॥ २. 'प्रथम राग भैरो' गाइये मन मोह लिये, चलतें अचल भये अचलतें चल भये, 'माल-कोस'की तान लेले बान वेधत हमारो प्रान ४. राग 'हिंडोल' मन कल्लोल मीठे बोल लेत मन मोल ॥२॥ ५. 'मेघ' ज्यों बरखत रस बुंदन घुमड विरहिनके मन हरे उमड। ६. 'श्री' राग गावत नेन नचावत ७. 'सोरठ' गाइये हो सुंदिर स्याम धुनि सुनि जागत तन मन काम ॥३॥ नवल 'केदारो' राग गावत लेत सुलप गति सुघर सुजान। ९. व्रजाधीश सरदरेन सुखविलास मदनमोहन पर वारों तन मन प्रान ॥ ४ ॥

*१. राग भैरवी–ताल ध्रुपद २. राग भैरव–ताल आडा चौताल। ३. राग मालकौस–ताल जूमरा। ४. राग हिंडोल–ताल त्रिताल। ५. राग मेघ मल्हार–ताल चर्चरी। ६. राग श्री–ताल सुरफाग। ७. राग सोरठ–ताल सवारी। ८. राग केदार–ताल धीमा त्रिताल। ९. राग भैरवी–ताल एकताल

---

* प्रत्येक तूक क्रमशः १ मल्हार–चौताल, २. मारु–चर्चरी, ३. सोरठ–आडचौताल (तेवरा), ४. मालव–त्रिताल, ५. काफी–धमार, ६. कल्यान –चलती।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिशिष्ट–३

द्रुपदगान की परम्परा

भारतवर्ष में द्रुपदगान की परम्परा के अवषेशों में देखा जाय तो (१) राज्याश्रित द्रुपदगायकों की परम्परा और (२) पुष्टिमार्गीय अष्टछापीय कीर्तनकारों की परम्परा, ये परम्पराएँ दृष्टिगत होती हैं। ये परम्पराएँ एकदूसरी से निकट होते हुए भी कुछ साम्य-भेद दृष्टिगत होते हैं, जिसका अत्र विचार करना उचित समझता हूं।

भारतीय संगीत के द्रुपद–अंगकी प्राचीन चार प्रकारों की बानी के सम्बन्ध में हम प्रथम भाग के दूसरे खण्ड में लिख चूके हैं। यह चारो बानियों की परम्परा का कोई सन्तोषजनक स्पष्टीकरण प्राप्त न होने से अष्टछापीय द्रुपद–अंग की गोबरधारी यानी गोबरहारी बानी का विवेचन भी किया गया है।

आजकल द्रुपद के घरानेदार गायकों की गायकी से अष्टछापीय परम्परा के कीर्तनों की द्रुपदगानशैली में जो कुछ भेद दिखाई देता है, जो हवेली–संगीत नाम से आज प्रचार में है वह, अन्य गायकों की गायकी से कैसे और कहां कहां अलग रहती है यह साम्य-भेद दो-तीन पच्चीसी के पूर्व विद्वानों को बताने जितने सरल थे वह उतनाही आज कठिन बन गया है तथापि यथामति यथानुभव निम्नांकित स्पष्टीकरण करना कर्तव्य समझता हूं।

१. गोबरधारी,* २. डागुरी, ३. खंडारी और ४. नौहारी इन चार बानियों की मान्यता का यदि स्वीकार किया जाय तो प्रचलित

---

* यहां "गोवर्धन" के पर्यायशब्द जैसा 'गोबर' को कहा गया है। पुष्टिसम्प्रदाय के प्रत्येक मन्दिर में तथा अन्य वैष्णवों के घर एवं व्रजमण्डल में घर–घर में दिवाली के दूसरे दिन गोबर के गोवर्धन बना कर पूजा करने का आज भी रिवाज चालू है।

आजकल द्रुपदगानमें दूगन, चौगुन, छगुन, अठगुन, सवाई, दौढी आदि प्रकार लिंये जाते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्रुपदगान की शैलियों में आज गोबरधारी और डागुरी बानियों की झांकी अधिकतर दिखाई देती है। पुष्टिसम्प्रदाय का संगीत साहित्य से भरा हुआ है और यह साहित्य संगीत के माध्यम से गाया जाता है। भगवान् प्रति चित्तवृत्ति लगाने के लिये भगवत्सेवा का मुख्य कर्तव्य समझा जाता है।

द्रुपद के ये लयप्रकार गणित से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार की परिपाटी होने के कारणों में यह भी एक मान्यता है कि उपर्युक्त लय-प्रकारों की ओर गायक का ध्यान चला जाता है इस लिये कीर्तन का उद्देश भगवान् की लीला की भावना का जिन पदों में चिन्तन रखना चाहिये वह टूट जाता है और गणित की गिनती में सुलझ जाता है।

हमारे यहां बन्दिश अनुसार अधिकतर मध्यलय में सीधे सादे गाने की प्रथा है। समयानुसार क्वचित् विलम्बित में गाया जाता है, किन्तु इनमें विलम्बित गति का प्रमाण एक सेकन्ड से अधिक होना ठीक नहीं है।

जिस राग का द्रुपद गाना हो उसी राग का परिचय कराना यही आलाप का मतलब है। आजकल द्रुपद के गान-वादन के कलाकार १-२ घण्टे तक आलाप करते रहते हैं और गीत को दश मिनट में ही पूरा करते हैं। ऐसा कृत्य हमारी कीर्तनगान की द्रुपद-परम्परा में किया नहीं जाता। वास्तव में यह आलाप द्रुपद-प्रबन्धों की बन्दिशों के आधार पर किया जाता है। इस आलाप में गायक लोग नोम-तोम, तनन, री, रे, ना इत्यादि शब्दों का प्रयोग करते हैं। कहा जाता है कि ये शब्द घराने के ऊगम के पश्चात् प्रचार में आने लगे।

जिस बन्दिश का द्रुपद पेश करना हो उसी बन्दिश के आलाप करने की पद्धति के विरुद्ध अन्य स्वर की सूरावली करते हुए भी नजर आते हैं। जैसे बिहाग के कुछ द्रुपद धमारो में नि से प और ग से सा की मींड के प्रयोग के अतिरिक्त ध और रे लिये नहीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जाते हैं । इस प्रकार के बन्दिशों की चीजों के पूर्व आलाप में ध और रे का भी प्रयोग करना विसंगत कहा जायेगा ।

हमारी प्रणाली में आलापचारी विशिष्ट प्रकार के उत्सव-त्यौहार और कीर्तन के आरम्भ में और ऋतुपरिवर्तन के आगम-समय गाये जाने वाले राग के कीर्तन के पहिले उसी राग की आलापचारी की जाती है, जिससे भगवन्नाम के माध्यम से राग के आगम का परिचय हो जाता है ।

"गीर्वाणमध्यदेशीयभाषासाहित्यराजितम्" तदनुसार हमारे कीर्तनगान में भाषा-साहित्य को मुख्य माना जाता है । यह साहित्य भगवान् की विविध लीलाओं से निर्भर है, जिसको वेदमन्त्रोच्चार के समान महत्ता दी गई है, अतः सम्प्रदाय की भावना और साहित्यिक सम्बन्ध को भूलना नहीं चाहिये । काव्य के शब्द, राग, रचना की सूरावली, आवर्तन, ताल, मात्रा, इत्यादि ध्रुपदगान में आवश्यक माने गये हैं ।

(१) चौताल में गाये जाने वाले ध्रुपदों में अधिकतर चार आवर्तन होते हैं । क्वचित् तीन आवर्तन के ध्रुपद भी दृष्टिगत होते हैं । प्राचीन परम्परानुसार प्रत्येक पंक्ति में चार आवर्तन किये जाते हैं । (अ) प्रत्येक आवर्तन में दो, तीन या चार शब्दों का समावेश होता है । (ब) जिनमें लघु गुरु दृष्टि से बारह मात्रा का एक आवर्तन बनता है । (क) जिनमें शब्दों के खण्ड तथा ताल के खण्ड भिन्न होते हैं ।

(१) दो शब्दों का प्रत्येक आवर्तन देखिये ।

शब्दोंके खण्ड ।

(अ) तेसोई । वृन्दावन ॥ तेसीय । हरितभूमि ॥
तेसीय । बीरबधू ॥ चलत । सुहाई ॥ (हिंडोला का पद)

(ब) वृन्दावन । बंसीबट ॥ कुंज कुंज । जमुनातट ॥ (रास का पद)

लघु गुरु अनुसार बारह मात्राओं का आवर्तन निम्न प्रकार ।

_ वृं- | दा- | व न | बं- | सी- | ब ट |

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(२) एक आवर्तन में तीन शब्दों का उदाहरण।

(अ) केसरकी । धोती । पहिरे ॥ (बधाई)

(ब) चलहु । राधिके । सुजान ॥ (रास का पद)

चल | हुरा | –धि | के– | सुजा | –न

(३) एक आवर्तन में चार शब्दों का उदाहरण।

(अ) बेठे | हरि | राधे | संग ॥ (कुंज का पद)

(ब) आज | औंर | काल्ह | और ॥ (नित्य शृंगार)

(अ) बे– | ठे– | हरि | रा– | धे– | संग

(ब) आ– | ज ओ | –र | का– | ल्ह ओ | –र

उपर्युक्त उदाहरणों के पश्चात् शब्दों के खण्ड तथा ताल के खण्ड की भिन्नता को ध्यान में रखना महत्त्वपूर्ण है। ताल के खण्ड दो मात्राओं के माने जाते तो छ खण्ड होते हैं और शब्दों के खण्ड की ओर देखा जाय तो अधिकतर तीन तीन मात्राओं की संगत से और क्वचित् ६ मात्राओं में शब्द का खण्ड पूर्ण होता है।

(२) चौताल के बाद मठताल यानी आज के सूलताल में गाये जाने वाले पदों की बन्दिश का विचार करें। जिनमें प्रथम शब्दों के खण्ड अलग बता कर उनकी मात्राओं के अनुसार ताल के खण्ड भी बताये गये हैं। इस तालमें भी आवर्तन की संख्या चार तथा प्रत्येक आवर्तन में शब्दों की संख्या दो या तीन होती है। इस ताल की मुख्य पहचान यह है कि मठताल का प्रथम खण्ड चार मात्राओं का होने से प्रत्येक पंक्ति के प्रथम शब्द की लघु गुरु मिला कर मात्रा चार होनी चाहिये। पश्चात् दूसरे या तीसरे शब्द की मात्राएँ खण्ड के अनुसार रखीं जाती हैं।

जैसे

आवन । कहि । गये ॥ अजहू । न । आये ॥

सब निस । बीती । मोहे ॥ गिनतही । तारे ॥

आ–वन । कहि । –गये– ॥ अजहू । न– । आ–ये–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(३) सम्प्रदाय के कीर्तनों में 'चर्चरी' ताल के पदों की संख्या कम नहीं है। आजकल उनकी प्राचीनता दिखाई नहीं देती। उनका स्थान आधुनिक झपताल ने पकड़ लिया है, अतः सम्प्रदाय की प्राचीन चर्चरी ताल की पहचान के लिये निम्न बात ध्यान में रखनी चाहिये।

इस ताल के पदों में भी अधिकतर चार आवर्तन होते हैं। प्रत्येक आवर्तन में अधिकतर तीन शब्द होते हैं, जिनमें प्रत्येक पंक्ति के प्रथम शब्द की मात्राएँ तीन होती हैं, अतः प्रथम खण्ड तीन मात्राओं का ही था, जो आजकल झपताल अंग में दो मात्राओं का प्रचार में है।

शब्दों के खण्ड—

आज । नंदलाल । मुख ॥ चंद्र । नेन न । निरखि ॥

परम । मंगल । भयो ॥ भवन । मेरे ॥

मात्राओं के खण्ड

आ–ज । नंद । ला– । लमुख ॥ चं–द्र । ने– । नन । नि र ख

परम । मं– । गल । भयो– ॥ भवन । मे– । रे– । –––

चौताल धमार आडाचौताल इत्यादि ध्रुपद–पद्धति के कीर्तन के उठाव का आरम्भ विशेष कर के सम से होता रहता है, किन्तु भिन्न भिन्न बन्दिश के अनुसार दूसरी तीसरी और चौथी ताल से या खाली से उठाव वाले पदों की संख्या भी कम नहीं हैं, किन्तु खेद की बात है कि इस प्रकार के गाने वाले कीर्तनगायक आजकल कम नजर आते हैं।

पुराने कीर्तनकार पढेलिखे नहीं थे तथापि वे अपनी याददास्त के लिये उत्सव त्यौहार हिंडोरा वसन्तधमार इत्यादि समय गाये जाने वाले कीर्तनों को अलग अलग जैसे भी उनको लिखना आता था इस प्रकार वे लिख कर गुटका (संग्रह) बना रखते थे। इसमें बन्दिश अनुसार उठाव लिखा हुआ कहीं कहीं दृष्टिगोचर होता है।

जैसे कि चौताल में सम से आरम्भ होने वाले कीर्तन के पास (उठान सम से), ग्यारहवी मात्रा से आरम्भ होने वाले कीर्तन के पूर्व

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(उठान चौथी से) और नव मात्रा से आरम्भ होने वाले के पूर्व (उठान तीसरी से) तत्पूर्व सातवीं मात्रा से आरम्भ होने वाले के पूर्व (उठान खाली से) इस प्रकार लिखा हुआ दृष्टिगोचर होता है। इस ग्रन्थ में इस प्रकार के भिन्न भिन्न उठाव वाले पद स्वरलिपि में निबद्ध किये हुए हैं, जिनके अभ्यास से उसी उठाव के अन्य पदों का ज्ञान प्राप्त करने में सरलता होगी।

जैसे चौताल की भिन्न भिन्न बन्दिश के पदों के उदाहरण इसी पुस्तक में से दिये जा रहे हैं।

(अ) उठान सम से

(१) आजुको सिंगार देख्यो—राग विलावल, पृष्ठ १०८

(२) आगे गाय पाछे गाय—राग पूर्वीकल्याण, पृष्ठ २५२

(ब) उठान दसवीं मात्रा से

(१) हेली रसमय श्रीवल्लभसुत—राग टोडी, पृष्ठ १४९

(२) तेरी भौंहकी मरोरनतें—राग अडाना, पृष्ठ ३७९

(क) उठान नवमी मात्रा से

(१) सब मिलि आवो गावो—राग आसावरी, पृष्ठ १३७

(२) आज धनि भाग हमारे—राग कान्हरा, पृष्ठ ३५३

(ड) उठान आठवीं मात्रा से

(१) ए आजु अरुन अरुन डोरे—राग अल्हैया विलावल, पृष्ठ ११०

(२) जलको गई सुघर नेह भरि लाई—राग अडाना, पृष्ठ ३७६

(ई) उठान सातवीं मात्रा से

(१) भलोरे मेई आये हो पिय—राग गौड सारंग, पृष्ठ १९७

(२) बल बल हो तनक तनक—राग ईमन, पृष्ठ ३०२

इस प्रकार ताल धमार में गाये जाने वाले पदों की ओर भी ध्यान रखना जरूरी है। धमार के पदों के उठाव में दो प्रकार प्राप्त होते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(१) सम से उठाने वाले और (२) सम के पूर्व दो, चार और कुछ अधिक मात्राओं से उठान वाले पद। सम से उठान वाले पद में विशेष करके आधुनिक दीपचन्दी और अर्धआडाचौताल यानि चपकताल के अंग का आभास होता हैं, क्योंकि धमार के साथ झांझ बजाने में एक मान्यतानुसार १, ४, ६, ८, ११ और १२ मात्रा पर तालस्थान बताते हैं, यानि १४ मात्राओं में ६ ठोके बजाते हैं, किन्तु हमारी मान्यतानुसार आठवीं मात्रा का ठोका वर्ज्य कर के १, ४, ६, ११ और १३ इन पांच ठोके देना उचित है।

दूसरे प्रकार में समताल के पूर्व उठान वाले धमारों में १, ६, ११ और १३ वीं मात्रा पर ताल और आठवीं मात्रा पर खाली बताना योग्य मानता हूं। ये दोनों प्रकारों के उदाहरण इस ग्रन्थ में से प्राप्त होंगे।

इसके अतिरिक्त हमारे ध्रुपद भक्तिप्रधान होने से गायक को काव्य के भाव दृष्टि समक्ष रखना होता है, क्योंकि कीर्तनभक्ति का हेतु भगवान् में मन लगाना यही है और राज्याश्रित ध्रुपद-घराने के गायकों का ध्यान लोकरंजन की ओर तथा अपनी प्रशंसा बढ़ाने की वृत्ति के कारण आजकल शब्दों की तोड–मरोड़ तथा सरगम के स्वरों का प्रयोग उपरांत आड़ी–तेड़ी लयों में तिहाई आदि का प्रयोग किया जा रहा है। जो अष्टछापपरम्परा में लिया नहीं जाता है। इस प्रकार की संक्षिप्त समालोचना की अधिक चर्चा स्थलसंकोच के कारण यहाँ समाप्त करता हूं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग अड़ाना "तेरी भौंहकी मरोरनते" संचारी (अनु. पृष्ठ ३८०)

×		०		२		०		३		४	
सां	–	–	नि	ध	ध	नि	प	प	प	–	प
ज्यो	–	–	ज्यो	–	न	चा	–	वे	बा	–	ल
नि	सां	–	रें	–	सां	नि	सां	–	नि	–	प
त्यों	–	–	त्यों	–	ना	च	त	–	ला	–	ल
सां	सां	–	नि	प	प	ग	–	म	रे	–	सा
अ	व	–	तो	–	म	या	–	–	की	–	जे
नि	सा	–	रे	ग	प	नि	ध	नि	प	–	प
च	ली	–	ये	–	नि	कुं	–	ज	धा	–	म

"अद्भुत डोल बना" पद की संचारी (अनु. पष्ठ ७६)

×					२		०			३			
सां	सां	–	सां	–	सां	–	ध	–	–	प	–	ष	–
प	र	–	म	–	बि	–	चि	–	–	त्र	–	र	–
नि	–	–	ध	प	म	–	ग	म	–	प	–	–	–
ज्यो	–	–	वि	–	श्व	–	क	र	–	मा	–	–	–
नि	–	–	ध	–	प	–	म	ग	–	ग	म	प	म
ही	–	–	रा	–	–	–	ला	–	–	ल	–	–	म
ग	म	–	ग	–	म	–	रे	–	–	सा	–	–	–
नी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

"डोल झूलत है" पद का संचारी (अनु. पृ. ४१४)

×					२		०			३			
ध	प	ग	प	–	प	–	ध	–	–	प	–	–	–
छि	र	–	क	–	त	–	चो	–	–	वा	–	–	–
नि	–	–	ध	–	ध	–	नि	ध	–	प	–	प	–
चं	–	–	द	–	न	–	बं	–	–	द	–	न	–
ध	ध	–	प	–	प	–	ग	रे	–	सा	–	रे	–
उ	ड	–	त	–	अ	–	बी	–	–	र	–	गु	–
प	–	–	रे	–	–	–	सा	–	–	–	–	–	–
ला	–	–	–	–	–	–	ला	–	–	–	–	–	–

आसीस के रसिया (संचारी आभोग अन्तरानुसार)

चिरजीयौ होरीको रसिया ।
जौंलौं सूरज चंद उजेरो, तौंलौं ब्रजमें तुम बसिया ॥१॥
नित-नित आवो होरी खेलनकों, नित-नित गारी हंसिया ।
'सूरदास' प्रभु तिहारे मिलनकों पीत पिछोरी कटि कसिया ॥२॥

स्थायी

×		२		०		३		×		२		०		३	
प	नि̣	नि̣	–	सां	–	नि̣	सा	रे	प	म	म	रे	–	सा	सा
जी	–	यो	–	हो	–	री	–	को	–	र	सि	या	–	चि	र
रे	नि̣	सां	–	–	–	सा	नि̣								
जी	–	यो	–	–	–	चि	र								

अंतरा

×		२		०		३		×		२		०		३	
नि	–	नि	–	सा	–	नि	सा	रे	म	रे	सा	रे	नि̣	सा	–
जों	–	लों	–	सू	–	र	ज	चं	–	द	उ	जे	–	रो	–
प	–	प	ध	प	म	म	रे	रे	प	म	म	रे	–	सा	सा
तों	–	लों	–	ब्र	ज	में	–	तु	म	ब	सि	या	–	चि	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

परिशिष्ट—४

संदर्भ—ग्रन्थसूचि

संस्कृत

१. कठोपनिषद्
२. गीतगोविन्द
३. छांदोग्योपनिषद्
४. तैतरीयसंहिता
५. दशश्लोकी—निम्बार्काचार्य
६. नारदपंचरात्र
७. पद्मपुराण
८. भरतनाट्यशास्त्र
९. भक्तिसूत्र—नारद
१०. भक्तिसूत्र—शाण्डिल्य
११. श्रीमद्भागवत
१२. महाभारत—शान्तिपर्व
१३. लक्ष्यसंगीत
१४. वेदचतुष्टय
१५. स्कन्दपुराण
१६. संगीतदर्पण
१७. संगीतपारिजात
१८. शतपथब्राह्मण

हिन्दी

१९. अष्टछापपरिचय
२०. अष्टछाप के वाद्ययन्त्र
२१. कांकरौली का इतिहास
२२. कृष्णदास (अधिकारी)
२३. कुम्भनदास
३४. खटऋतुवर्णन
२५. श्रीहरिरायजी का पदसाहित्य
२६. चतुर्भुजदास
२७. चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता
२८. छीतस्वामी
२९. तालदीपिका
३० तृतीय गृह—कीर्तनप्रणालिका
३१. द्रुपदस्वरलिपि
३२. २५२ वैष्णवन की वार्त्ता
३३. नित्यपदसंग्रह
३४. परमानन्दसागर
३५. प्राचीनवार्त्तारहस्य
३६. भरत का संगीतसिद्धान्त
३७. भारतीय तालमंजरी
३८. मृदंगसागर
३९. मारिफुन्नगमात
४०. रागकल्पद्रुम
४१. बसंतपदसंग्रह
४२. रागविज्ञान
४३. वर्षोत्सवपदसंग्रह
४४. स्वामी हरिदासजी
४५. सूरसारावली
४६. संगीतशास्त्र
४७. संगीतसम्राट् तानसेन
४८. हितचौरासी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४९. हिन्दुस्तानसंगीतपद्धति–भातखण्डे, शास्त्र भा. १, २; ३, ४,
५०. हिन्दुस्तानसंगीतपद्धति, क्रमिक भाग २ से ६

गुजराती

५१. उत्तर हिन्दुस्तानी संगीतनी संक्षिप्त ऐतिहासिक समालोचना
५२. गायनवादन पाठमाला
५३. गोस्वामी कनैयालाल महाराजनुं 'जीवन'
५४. गुजरातमां संगीतनुं पुनर्जीवन
५५. मूलाधार
५६. वैष्णवधर्मनो संक्षिप्त इतिहास
५७. संगीतकलाधर
५८. संगीतकीर्तनपद्धति अने नित्यकीर्तन
५९. संगीतादित्य
६०. संगीतशास्त्र
६१. श्रीविठ्ठलेशचरितामृत

हिन्दी मासिक–"कल्याण–भगवन्नाम महिमा और प्रार्थना अंक", 'वल्लभीयसुधा', गुर्जर मासिक–'अनुग्रह' और 'वैश्वानर'

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai